

LOK SABHA DEBATES

(Original Version)

Thirteenth Session

(Seventeenth Lok Sabha)



(Vol. XXVII contains Nos. 1 to 4)

LOK SABHA SECRETARIAT

NEW DELHI

EDITORIAL BOARD

Utpal Kumar Singh
Secretary-General
Lok Sabha

Mamta Kemwal
Joint Secretary

Bishan Kumar
Director

Narad Prasad Kimothi
Sunita Thapliyal
Joint Director

Meenakshi Rawat
Anil Kumar Chopra
Editor

© 2023 Lok Sabha Secretariat

None of the material may be copied, reproduced, distributed, republished, downloaded, displayed, posted or transmitted in any form or by any means, including but not limited to, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of Lok Sabha Secretariat. However, the material can be displayed, copied, distributed and downloaded for personal, non-commercial use only, provided the material is not modified and all copyright and other proprietary notices contained in the material are retained.

C O N T E N T S

Seventeenth Series, Vol. XXVII, Thirteenth Session, 2023/1945 (Saka)

No. 4, Thursday, September 21, 2023/ Bhadra 30, 1945 (Saka)

<u>S U B J E C T</u>	<u>P A G E S</u>
FELICITATIONS ON PASSING THE CONSTITUTION (ONE HUNDRED AND TWENTY-EIGHTH AMENDMENT) BILL, 2023	9
REFERENCES BY THE SPEAKER	
(i) International Day of Peace	10
(ii) Success of Chandrayan – III Mission and Other Achievements of Our Nation in Space Sector	11-13
PAPERS LAID ON THE TABLE	14-28
COMMITTEE ON ESTIMATES	
27 th Report	29
STANDING COMMITTEE ON HOME AFFAIRS	
245 th Report	29
STANDING COMMITTEE ON EDUCATION, WOMEN, CHILDREN, YOUTH AND SPORTS	
356 th Report	29
STANDING COMMITTEE ON TRANSPORT, TOURISM AND CULTURE	
355 th to 359 th Reports	30
STANDING COMMITTEE ON HEALTH AND FAMILY WELFARE	
149 th Report	31

STATEMENT BY MINISTER

Status of implementation of the recommendations/
observations contained in the 44th Report of the
Standing Committee on Communications and
Information Technology on Demands for Grants
(2023-2024) pertaining to the Department of Posts,
Ministry of Communications

Shri Devusinh Chauhan 32

**MOTION RE: 45TH REPORT OF BUSINESS
ADVISORY COMMITTEE**

33

**DISCUSSION REGARDING 'SUCCESS OF CHANDRAYAAN-III
MISSION AND OTHER ACHIEVEMENTS OF OUR NATION IN
SPACE SECTOR'**

34-173,
176-387

Shri Raj Nath Singh 34-48

Dr. Shashi Tharoor 48-62

Shri A. Raja 64-72

Prof. Sougata Ray 72-79

Shri Lavu Srikrishna Devarayalu 80-85

Shri Prataprao Jadhav 86-88

Shri Dileshwar Kamait 89-91

Prof. Achyutananda Samanta 91-93

Shri Ramshiromani Verma 94

Shri Kotha Prabhakar Reddy 95-98

Shrimati Supriya Sadanand Sule 99-103

Shri Prince Raj 104-106

Shri Jayant Sinha	107-114
Shri Karti P. Chidambaram	115-119
Shri K. Subbarayan	120-122
Shri Sumedhanand Saraswati	123-126
Shrimati Dimple Yadav	126-127
Shri S. Jagathrakshakan	128-130
Shri Hasnain Masoodi	131-137
Dr. Satya Pal Singh	138-144
Shri Francisco Sardinha	145-147
Shri S. Venkatesan	148-151
Shri Tejasvi Surya	152-160
Shrimati Aparupa Poddar	161-163
Shri Malook Nagar	164-165
Shrimati Anupriya Patel	165-169
Dr. M. P. Abdussamad Samadani	170-173
Shri Syed Imtiaz Jaleel	176-178
Shri Uday Pratap Singh	179-181
Shrimati Hemamalini	182-183
Shri Ram Mohan Naidu Kinjarapu	184-189
Shri Pratap Chandra Sarangi	189-196
Adv. Dean Kuriakose	197-200
Shri Margani Bharat	201-204
Shri Arvind Sawant	205-207

Shrimati Sangeeta Kumari Singh Deo	208-211
Shri N.K. Premachandran	212-215
Shri Thomas Chazhikadan	216-218
Shri Bhartruhari Mahtab	219-221
Shri Saumitra Khan	222-223
Shri P. Ravindhranath	224-225
Shri M. Badruddin Ajmal	226-229
Shri Hanuman Beniwal	230-232
Dr. Sujay Vikhe Patil	233-236
Shri Benny Behanan	237-240
Kunwar Danish Ali	241-244
Shri Vinod Kumar Sonkar	245-247
Dr. D. Ravikumar	248-250
Dr. Thol Thirumaavalavan	251-252
Dr. Shrikant Eknath Shinde	253-257
Shri Ravneet Singh	258-261
Dr. Jitendra Singh	262-289
Shri Adhir Ranjan Chowdhury	290-304
Shri Ritesh Pandey	305-307
Kumari Goddeti Madhavi	308-309
Dr. Sukanta Majumdar	310-313
Shri Sushil Kumar Rinku	314-315
Shri D.M. Kathir Anand	316-318

Shri Asit Kumar Mal	319
Shri Raju Bista	320-322
Shri Jasbir Singh Gill	323-324
Shri Shyam Singh Yadav	325-326
Shrimati Rama Devi	327-329
Shri Rahul Ramesh Shewale	330-333
Shri Anil Firojiya	334-335
Dr. Amar Singh	336-337
Shri Shankar Lalwani	338
Shri R.K. Singh Patel	339-340
Shri Kuruva Gorantla Madhav	341-342
Shri Janardan Singh Sigriwal	343-344
Shri Sanjay Seth	345-346
Shri Dilip Saikia	347-348
Shri Jugal Kishore Sharma	349-350
Shrimati Pratima Mondal	351-352
Shri Santosh Pandey	353-354
Shri Vijay Kumar Dubey	355
Shri Hemant Patil	356
Shri Sangam Lal Gupta	357-359
Shri Prasun Banerjee	360
Shri Sushil Kumar Singh	361-362
Dr. Kalanidhi Veeraswamy	363-366

Shri Ramesh Bidhuri	367-371
Shri Jagdambika Pal	372-379
Shri Manoj Kotak	380
Shri P. P. Chaudhary	381-383
Shri Bidyut Baran Mahato	384-385
Shri Sunil Kumar Singh	386-387
RESOLUTION RE: SUCCESS OF CHANDRAYAN – III MISSION AND OTHER ACHIEVEMENTS OF OUR NATION IN SPACE SECTOR	387-388
RESOLUTION RE: APPROVAL OF AMENDMENT OF SECOND SCHEDULE TO CUSTOMS TARIFF ACT, 1975	174-175
VALEDICTORY REFERENCE	389-390
NATIONAL SONG	390

OFFICERS OF LOK SABHA

THE SPEAKER

Shri Om Birla

PANEL OF CHAIRPERSONS

Shrimati Rama Devi

Dr. (Prof.) Kirit Premjibhai Solanki

Shri Rajendra Agrawal

Shri Kodikunnil Suresh

Shri A. Raja

Shri P.V. Midhun Reddy

Shri Bhartruhari Mahtab

Shri N.K. Premachandran

Dr. Kakoli Ghosh Dastidar

SECRETARY GENERAL

Shri Utpal Kumar Singh

LOK SABHA DEBATES

LOK SABHA

Thursday, September 21, 2023/ Bhadra 30, 1945 (Saka)

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock.

[**HON. SPEAKER** *in the Chair*]

**FELICITATIONS ON PASSING THE CONSTITUTION (ONE HUNDRED
AND TWENTY-EIGHTH AMENDMENT) BILL, 2023**

माननीय अध्यक्ष : माननीय प्रधान मंत्री जी ।

... (व्यवधान)

प्रधान मंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी) : आदरणीय अध्यक्ष जी, आपने मुझे बोलने के लिए अनुमति दी, समय दिया, इसके लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ ।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं सिर्फ दो-चार मिनट लेना चाहता हूँ । कल भारत की संसदीय यात्रा का एक स्वर्णिम पल था । इस स्वर्णिम पल के हकदार इस सदन के सभी सदस्य हैं, सभी दलों के सदस्य हैं, सभी दल के नेता भी हैं । सदन में हों या सदन के बाहर हों, वे भी उतने ही हकदार हैं ।

इसलिए, मैं आज आपके माध्यम से इस बहुत महत्वपूर्ण निर्णय में और देश की मातृशक्ति में एक नई ऊर्जा भरने में कल का यह निर्णय और आज राज्य सभा के बाद जब हम अंतिम पड़ाव भी पूरा कर लेंगे, देश की मातृशक्ति का जो मिजाज बदलेगा, जो विश्वास पैदा होगा, वह देश को नई ऊंचाइयों पर ले जाने वाली एक अकल्पनीय, अप्रतिम शक्ति के रूप में उभरेगा, यह मैं अनुभव करता हूँ ।

इस पवित्र कार्य को करने के लिए आप सबने जो योगदान दिया है, समर्थन दिया है, सार्थक चर्चा की है, सदन के नेता के रूप में मैं आज आप सबका, पूरे दिल से, सच्चे दिल से आदरपूर्वक अभिनंदन करने के लिए खड़ा हुआ हूँ, धन्यवाद करने के लिए खड़ा हुआ हूँ ।

नमस्कार ।

माननीय अध्यक्ष : सभी दलों के नेताओं ने कल समर्थन दिया है । माननीय प्रधान मंत्री जी ने सबको आभार व्यक्त कर दिया है । सदन के नेता जब आभार प्रकट करते हैं, तो वह पूरे सदन का आभार होता है ।

... (व्यवधान)

श्री सुदीप बन्दोपाध्याय (कोलकाता उत्तर) : सर, मुझे एक मिनट के लिए बोलने दीजिए । ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप इसके बाद बोलिएगा ।

... (व्यवधान)

11.03 hrs

REFERENCES BY THE SPEAKER

(i) International Day of Peace

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, 21 सितंबर का दिन अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस के रूप में मनाया जाता है।

सभी राष्ट्रों और लोगों के बीच शांति के आदर्शों के स्मरण और उन्हें सुदृढ़ बनाने के लिए इस वर्ष का अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस का विषय है – “शांति के लिए कार्य : हैश टैग वैश्विक लक्ष्यों के लिए हमारी आकांक्षा”।

भारत विश्व शांति को प्रोत्साहन देने के लिए सदैव विभिन्न देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने, परस्पर संवाद के माध्यम से आपसी टकरावों का समाधान करने और वैश्विक एवं क्षेत्रीय शांति और अहिंसा के आदर्शों को संरक्षित एवं संवर्धित करने के लिए प्रतिबद्ध रहा है। हमारी संस्कृति सदियों से अहिंसा की रही है।

आइए, हम इस अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस पर ऐसे विश्व के निर्माण के लिए संवाद, संवेदनशीलता, सहिष्णुता और सहयोग की भावना से काम करें, ताकि हम एक शांतिपूर्ण विश्व का स्वप्न साकार कर सकें।

(ii) Success of Chandrayan – III Mission and Other Achievements of
Our Nation in Space Sector

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, अंतरिक्ष के क्षेत्र में हमारी महत्वपूर्ण उपलब्धियों के लिए पूरे देश को बधाई देते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है। इन उपलब्धियों से प्रत्येक भारतीय गौरवान्वित हुआ है और वैश्विक स्तर पर हमारे देश का कद बढ़ा है।

23 अगस्त, 2023 को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास उतरने वाला पहला देश बनकर हमने एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। चंद्रयान-3 मिशन की सफलता हमारे वैज्ञानिकों की अथक प्रतिबद्धता का प्रमाण है, जो निरंतर ब्रह्मांड के सुदूर क्षेत्रों तक पहुँचने का प्रयास करते आए हैं। इस सदन के माध्यम से, मैं इस अभूतपूर्व उपलब्धि के लिए इसरो के सभी वैज्ञानिकों और इंजीनियरों और भारत के लोगों को बधाई देता हूँ।

भारत विश्व कल्याण के लिए अपनी सफलताओं और उपलब्धियों को दूसरों के साथ साझा करने में विश्वास रखता है। इसलिए, हमने चंद्रयान-3 की सफलता को विश्व के वैज्ञानिक समुदाय और पूरी मानवता को समर्पित किया है। हमारे प्रज्ञान रोवर ने हमें चंद्रमा पर सल्फर, ऑक्सीजन, एल्युमीनियम, कैल्शियम, आयरन जैसे तत्वों की मौजूदगी सहित अन्य अमूल्य जानकारी भेजी है, जिससे अंतरिक्ष के बारे में मानव ज्ञान में वृद्धि होगी और भावी अभूतपूर्व खोजों का मार्ग प्रशस्त होगा।

23 अगस्त को "राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस" के रूप में मनाना उचित होगा। यह एक ऐसा दिन होगा जो हमारी भावी पीढ़ियों को जीवन में उच्च महत्वाकांक्षाएं रखने और उन्हें साकार करने के लिए कड़ी मेहनत करने के लिए प्रेरित करता रहेगा। मैं चंद्रमा पर चंद्रयान-2 के पदचिह्न को 'तिरंगा पॉइंट', और चंद्रयान-3 के लैंडिंग स्थल को 'शिव शक्ति पॉइंट' का नाम दिए जाने का स्वागत करता हूँ। ये नाम हमारी सदियों पुरानी विरासत के सम्मान के साथ ही हमारी वैज्ञानिक महत्वाकांक्षाओं और प्रयासों के प्रतीक हैं।

अंतरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्र में प्रगति को जारी रखते हुए, चंद्रयान-3 की सफलता के 10 दिनों के भीतर, हमने 2 सितंबर 2023 को अपना पहला सौर मिशन, आदित्य-एल1 लॉन्च किया। यह सूर्य का

अध्ययन करने वाला हमारा पहला वैज्ञानिक मिशन है जिससे सूर्य के भीतर होने वाली भौतिक प्रक्रियाओं और पृथ्वी पर उनके प्रभाव के बारे में हमारी जानकारी में वृद्धि होगी ।

चंद्रयान-3 और आदित्य-एल1 सफल अंतरिक्ष कार्यक्रम होने के साथ ही भारत की वैज्ञानिक और तकनीकी शक्ति के उदय और हमारी प्रतिभा और क्षमता के प्रतीक हैं । इन दोनों मिशनों में बड़ी संख्या में महिला वैज्ञानिकों ने आगे बढ़कर नेतृत्व किया, जिससे नए भारत के निर्माण में महिलाओं के योगदान का पता चलता है । इन दोनों मिशनों को पूरी तरह से भारत में ही डिजाइन और निर्मित किया गया है । हमारे अंतरिक्ष कार्यक्रम की जो बात दूसरों से अलग करती है, वह है - हमारी सभी परियोजनाओं की कम लागत। इससे अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में हमारी बढ़ती क्षमताओं के साथ-साथ हमारे वैज्ञानिकों की प्रतिभा का भी परिचय मिलता है । इन उपलब्धियों के फलस्वरूप भारत ने अंतरिक्ष के क्षेत्र में विश्व के अग्रणी देशों में अपनी जगह बना ली है ।

ये सभी उपलब्धियाँ प्रधान मंत्री, माननीय श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार के अथक प्रयासों से संभव हुई हैं । प्रधान मंत्री बनने से बहुत पहले से ही श्री मोदी की अंतरिक्ष में गहरी रुचि रही है और चंद्रयान मिशनों के साथ उनका गहरा भावनात्मक जुड़ाव रहा है। 2008 में जब चंद्रयान-1 का सफल प्रक्षेपण हुआ तो वह इसरो गए और व्यक्तिगत रूप से वैज्ञानिकों को बधाई दी । 2019 में, जब अंतिम समय में कुछ तकनीकी खराबी के कारण चंद्रयान-2 वांछित उद्देश्य प्राप्त नहीं कर पाया, तो उन्होंने हमारे वैज्ञानिकों के बीच जाकर उन्हें विफलताओं की चिंता किए बिना लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रयास करते रहने के लिए प्रेरित किया ।

कोविड-19 के समय, जब पूरी दुनिया संकट से जूझ रही थी, ऐसे में प्रधान मंत्री, श्री नरेंद्र मोदी जी इस विपदा का उपयोग अवसर के रूप में करते हुए अंतरिक्ष सहित देश की अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण सुधार लाने के लिए प्रयासरत रहे । उनके इन्हीं प्रयासों के फलस्वरूप हम विश्व अंतरिक्ष शक्ति बनने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं । पिछले कुछ सालों में अंतरिक्ष स्टार्ट-अप की संख्या में रिकॉर्ड वृद्धि हुई है । पिछले साल, निजी क्षेत्र में निर्मित पहले रॉकेट विक्रम - एस का प्रक्षेपण हुआ । युवा स्कूली छात्रों ने दो उपग्रह - आज़ादीसैट और आज़ादीसैट-2 लॉन्च किए । अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हमें महत्वपूर्ण

सफलताएँ मिली हैं जैसे पुनः प्रयोज्य प्रक्षेपण वाहनों का परीक्षण। एक बार में 104 उपग्रह लाँच करके हम विश्व रिकॉर्ड बना रहे हैं।

इन उपलब्धियों के परिणामस्वरूप, भारत के बारे में दुनिया का नजरिया बदला है और हमारे देश को लेकर विश्व समुदाय के दृष्टिकोण में बदलाव आया है। यह प्रधान मंत्री, श्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व और विज्ञान और नवाचार को बढ़ावा देने के कारण ही संभव हुआ है।

हमारा सफल अंतरिक्ष कार्यक्रम उनके "जय विज्ञान, जय अनुसंधान" के आह्वान का सबसे बड़ा प्रमाण है। यह विज्ञान और नवाचार का सबसे अच्छा उदाहरण है जिससे स्टार्ट-अप, एमएसएमई को बढ़ावा मिला है, रोजगार अवसरों का सृजन हुआ है और हमारे विकास को गति मिली है। कृषि, मत्स्य पालन, संचार, नेविगेशन, राष्ट्रीय सुरक्षा सहित हमारी अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में योगदान के माध्यम से, हमारा अंतरिक्ष कार्यक्रम देश के लोगों के जीवन में गुणात्मक परिवर्तन ला रहा है।

हमें विश्वास है कि इन उपलब्धियों से हमारी आने वाली पीढ़ियों को बड़े सपने देखने और अपने सपनों को साकार करने के लिए कड़ी मेहनत करने की प्रेरणा मिलेगी। सभी देशवासी 2047 तक एक विकसित भारत के लिए मिलकर कार्य करने के लिए स्वयं को पुनः समर्पित करेंगे।

मुझे विश्वास है कि यह प्रतिष्ठित सदन इन ऐतिहासिक उपलब्धियों में प्रधान मंत्री के नेतृत्व की सराहना करने, भारत के लोगों, विशेष रूप से युवाओं का उत्साहवर्धन करने तथा महिलाओं के योगदान के साथ ही सभी संगठनों और व्यक्तियों के योगदान की सराहना करने में मेरा साथ देगा।

11.10 hrs

PAPERS LAID ON THE TABLE

माननीय अध्यक्ष: अब पत्र सभा पटल पर रखे जाएंगे।

आइटम नंबर 1, श्री अश्विनी कुमार चौबे।

उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अश्विनी कुमार चौबे): महोदय, मैं निम्नलिखित पत्र सभा पटल पर रखता हूँ:

(1) पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 3 के अंतर्गत जारी निम्नलिखित अधिसूचनाओं की एक-एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण):-

(एक) का.आ.1094(अ) जो 16 अप्रैल, 2014 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा राष्ट्रीय तटीय जोन प्रबंध प्राधिकरण की अवधि को 15 जुलाई, 2014 तक बढ़ाया गया है।

(दो) का.आ.1244(अ) जो 9 मई, 2014 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा 6 जनवरी, 2011 की अधिसूचना सं. का.आ.19(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं।

(तीन) का.आ.1622(अ) जो 27 जून, 2014 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा, उसमें उल्लिखित, अध्यक्ष और सदस्यों से मिलकर बने लक्षद्वीप तटीय जोन प्रबंध प्राधिकरण का गठन इस आदेश के प्रकाशित होने की तारीख से 3 वर्ष की अवधि के लिए किया गया है।

(चार) का.आ.3252(अ) जो 22 दिसम्बर, 2014 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा सीआरजेड अधिसूचना 2011 में कतिपय संशोधन किए गए हैं।

- (पांच) का.आ.2082(अ) जो 30 जुलाई, 2015 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा 6 अप्रैल, 2015 की अधिसूचना सं. का.आ.934(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं।
- (छह) का.आ.2266(अ) जो 20 अगस्त, 2015 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा, उसमें उल्लिखित, अध्यक्ष, सदस्यों और सदस्य सचिव से मिलकर बने अंडमान और निकोबार तटीय जोन प्रबंध प्राधिकरण का पुनर्गठन इस आदेश के प्रकाशित होने की तारीख से 3 वर्ष की अवधि के लिए किया गया है।
- (सात) का.आ.2569(अ) जो 18 सितम्बर, 2015 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा, उसमें उल्लिखित, पश्चिम बंगाल तटीय जोन प्रबंध प्राधिकरण का पुनर्गठन इस आदेश के प्रकाशित होने की तारीख से 3 वर्ष की अवधि के लिए अधिसूचित किया गया है।
- (आठ) का.आ.1421(अ) जो 13 अप्रैल, 2016 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा, उसमें उल्लिखित, आंध्र प्रदेश तटीय जोन प्रबंध प्राधिकरण का पुनर्गठन इस आदेश के प्रकाशित होने की तारीख से 3 वर्ष की अवधि के लिए अधिसूचित किया गया है।
- (नौ) का.आ.2060(अ) जो 10 जून, 2016 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा, उसमें उल्लिखित, केरल प्रदेश तटीय जोन प्रबंध प्राधिकरण का पुनर्गठन इस आदेश के प्रकाशित होने की तारीख से 3 वर्ष की अवधि के लिए अधिसूचित किया गया है।
- (दस) का.आ.3324(अ) जो 26 अक्टूबर, 2016 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा, उसमें उल्लिखित, गोवा तटीय जोन प्रबंध

प्राधिकरण का पुनर्गठन इस आदेश के प्रकाशित होने की तारीख से 3 वर्ष की अवधि के लिए अधिसूचित किया गया है।

(ग्यारह) का.आ.1154(अ) जो 18 मार्च, 2016 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा, उसमें उल्लिखित, गुजरात तटीय जोन प्रबंध प्राधिकरण का पुनर्गठन इस आदेश के प्रकाशित होने की तारीख से 3 वर्ष की अवधि के लिए अधिसूचित किया गया है।

(बारह) का.आ.1212(अ) जो 23 मार्च, 2016 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा 6 जनवरी, 2011 की अधिसूचना सं. का.आ.19(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं।

(तेरह) का.आ.1213(अ) जो 23 मार्च, 2016 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा 6 जनवरी, 2011 की अधिसूचना सं. का.आ.20(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं।

(चौदह) का.आ.4097(अ) जो 20 दिसम्बर, 2016 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा, उसमें उल्लिखित, दमन और दीव तटीय जोन प्रबंध प्राधिकरण का पुनर्गठन इस आदेश के प्रकाशित होने की तारीख से तीन वर्ष की अवधि के लिए अधिसूचित किया गया है।

(पंद्रह) का.आ.4162(अ) जो 23 दिसम्बर, 2016 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा 6 जनवरी, 2011 की अधिसूचना सं. का.आ.19(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं।

(सोलह) का.आ.621(अ) जो 23 फरवरी, 2017 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा 6 जनवरी, 2011 की अधिसूचना सं. का.आ.20(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं।

- (सत्रह) का.आ.622(अ) जो 23 फरवरी, 2017 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा 6 जनवरी, 2011 की अधिसूचना सं. का.आ.19(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं।
- (अठारह) का.आ.679(अ) जो 1 मार्च, 2017 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा, उसमें उल्लिखित, कर्नाटक तटीय जोन प्रबंध प्राधिकरण का पुनर्गठन इस आदेश के प्रकाशित होने की तारीख से तीन वर्ष की अवधि के लिए अधिसूचित किया गया है।
- (उन्नीस) का.आ.1393(अ) जो 3 मई, 2017 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा 6 जनवरी, 2011 की अधिसूचना सं. का.आ.19(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं।
- (बीस) का.आ.2444(अ) जो 2 अगस्त, 2017 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा 6 जनवरी, 2011 की अधिसूचना सं. का.आ.19(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं।
- (इक्कीस) का.आ.2445(अ) जो 2 अगस्त, 2017 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा 6 जनवरी, 2011 की अधिसूचना सं. का.आ.20(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं।
- (बाईस) सा.का.नि.1227(अ) जो 9 अक्टूबर, 2017 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा 6 जनवरी, 2011 की अधिसूचना सं. का.आ.19(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं।
- (तेईस) का.आ.274(अ) जो 17 जनवरी, 2018 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा, उसमें उल्लिखित, लक्षद्वीप तटीय जोन प्रबंध प्राधिकरण का गठन इस आदेश के प्रकाशित होने की तारीख से तीन वर्ष की अवधि के लिए किया गया है।

- (चौबीस) का.आ.1002(अ) जो 6 मार्च, 2018 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा 6 जनवरी, 2011 की अधिसूचना सं. का.आ.19(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं।
- (पच्चीस) का.आ.3197(अ) जो 2 जुलाई, 2018 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा 6 जनवरी, 2011 की अधिसूचना सं. का.आ.19(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं।
- (छब्बीस) का.आ.3303(अ) जो 6 जुलाई, 2018 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा, उसमें उल्लिखित, तमिलनाडु तटीय जोन प्रबंध प्राधिकरण का पुनर्गठन इस आदेश के प्रकाशित होने की तारीख से तीन वर्ष की अवधि के लिए अधिसूचित किया गया है।
- (सत्ताईस) का.आ.3312(अ) जो 6 जुलाई, 2018 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा, उसमें उल्लिखित, महाराष्ट्र तटीय जोन प्रबंध प्राधिकरण का पुनर्गठन इस आदेश के प्रकाशित होने की तारीख से तीन वर्ष की अवधि के लिए अधिसूचित किया गया है।
- (अट्ठाईस) का.आ.3546(अ) जो 20 जुलाई, 2018 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा, उसमें उल्लिखित, ओडिशा तटीय जोन प्रबंध प्राधिकरण का गठन इस आदेश के प्रकाशित होने की तारीख से तीन वर्ष की अवधि के लिए किया गया है।
- (उनतीस) का.आ.3840(अ) जो 3 अगस्त, 2018 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा 6 जनवरी, 2011 की अधिसूचना सं. का.आ.20(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं।

- (तीस) का.आ.4290(अ) जो 5 सितम्बर, 2018 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा 6 जुलाई, 2011 की अधिसूचना सं. का.आ.3303(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं।
- (इकतीस) का.आ.5096(अ) जो 3 अक्टूबर, 2018 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा, उसमें उल्लिखित, पुदुचेरी तटीय जोन प्रबंध प्राधिकरण का पुनर्गठन इस आदेश के प्रकाशित होने की तारीख से तीन वर्ष की अवधि के लिए अधिसूचित किया गया है।
- (बत्तीस) का.आ.5953(अ) जो 3 दिसम्बर, 2018 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा, उसमें उल्लिखित, पश्चिम बंगाल तटीय जोन प्रबंध प्राधिकरण का पुनर्गठन इस आदेश के प्रकाशित होने की तारीख से तीन वर्ष की अवधि के लिए अधिसूचित किया गया है।
- (तैंतीस) का.आ.4137(अ) जो 18 नवम्बर, 2019 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा, उसमें उल्लिखित, राष्ट्रीय तटीय जोन प्रबंध प्राधिकरण का पुनर्गठन इस आदेश के प्रकाशित होने की तारीख से दो वर्ष की अवधि के लिए अधिसूचित किया गया है।
- (चौतीस) का.आ.4620(अ) जो 26 दिसम्बर, 2019 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा 31 अक्टूबर, 2019 की अधिसूचना सं. का.आ.3975(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं।
- (पैंतीस) का.आ.5188(अ) जो 14 दिसम्बर, 2021 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा, उसमें उल्लिखित, महाराष्ट्र तटीय जोन प्रबंध प्राधिकरण का पुनर्गठन इस आदेश के प्रकाशित होने की तारीख से तीन वर्ष की अवधि के लिए अधिसूचित किया गया है।

- (छत्तीस) का.आ.5119(अ) जो 3 नवम्बर, 2022 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा 1 मई, 2020 की अधिसूचना सं. का.आ.1423(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं।
- (सैंतीस) का.आ.6071(अ) जो 27 दिसम्बर, 2022 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा, उसमें उल्लिखित, गोवा तटीय जोन प्रबंध प्राधिकरण का पुनर्गठन इस आदेश के प्रकाशित होने की तारीख से तीन वर्ष की अवधि के लिए अधिसूचित किया गया है।
- (अड़तीस) का.आ.5097(अ) जो 3 अक्टूबर, 2018 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा, उसमें उल्लिखित, अंडमान और निकोबार तटीय जोन प्रबंध प्राधिकरण का पुनर्गठन इस आदेश के प्रकाशित होने की तारीख से तीन वर्ष की अवधि के लिए अधिसूचित किया गया है।
- (उनतालीस) का.आ.4566(अ) जो 28 सितम्बर, 2022 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा 13 दिसम्बर, 2021 की अधिसूचना सं. का.आ.5188(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं।
- (चालीस) का.आ.803(अ) जो 14 मार्च, 2017 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा 8 जून, 2016 की अधिसूचना सं. का.आ.2060(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं।
- (2) उपर्युक्त (1) में उल्लिखित पत्रों को सभा पटल पर रखने में हुए विलम्ब के कारण दर्शाने वाला विवरण (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

[Placed in Library, See No. LT 10075/17/23]

विद्युत मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा भारी उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री कृष्ण पाल): अध्यक्ष महोदय, मैं ब्रिज एंड रुफ कंपनी (इंडिया) लिमिटेड तथा भारी उद्योग मंत्रालय के बीच वर्ष 2023-

2024 और 2024-2025 के लिए हुए समझौता ज्ञापन की एक-एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) सभा पटल पर रखता हूँ।

[Placed in Library, See No. LT 10076/17/23]

रेल मंत्रालय में राज्य मंत्री; कोयला मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा खान मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दानवे रावसाहेब दादाराव): अध्यक्ष महोदय, मैं खान और खनिज (विकास और विनियमन) अधिनियम, 1957 की धारा 28 की उप-धारा (1) के अंतर्गत निम्नलिखित अधिसूचनाओं की एक-एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) सभा पटल पर रखता हूँ: -

- (1) का.आ. 3684(अ) जो 17 अगस्त, 2023 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा अगस्त, 2013 के 17वें दिन को उस तारीख के रूप में अधिसूचित किया गया है, जिस तारीख को खान और खनिज (विकास और विनियमन) संशोधन अधिनियम, 2023 प्रवृत्त होगा।

[Placed in Library, See No. LT 10077/17/23]

- (2) का.आ. 3685(अ) जो 17 अगस्त, 2023 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा अगस्त, 2013 के 17वें दिन को उस तारीख के रूप में अधिसूचित किया गया है, जिस तारीख को अपतट क्षेत्र खनिज (विकास और विनियमन) संशोधन अधिनियम, 2023 प्रवृत्त होगा।

[Placed in Library, See No. LT 10078/17/23]

- (3) सा.का.नि. 642(अ) जो 31 अगस्त, 2023 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुए थे तथा जिनके द्वारा खान मंत्रालय, भारत सरकार के आदेश सं. एम.VI-16/15/2021-खान VI, दिनांक 12 अगस्त, 2021 द्वारा जारी 'प्रत्यायित प्राइवेट अन्वेषण अभिकरणों की अधिसूचना के लिए मार्गदर्शी सिद्धांत' के अनुसार मेसर्स एंजीओटेक कंसल्टेंट को 'प्रवर्ग क अन्वेषण अभिकरणों' के अंतर्गत अधिसूचित किया गया है।

[Placed in Library, See No. LT 10079/17/23]

- (4) का.आ.3890(अ) जो 1 सितम्बर, 2023 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा 16 दिसम्बर, 2021 की अधिसूचना सं. सा.का.नि.860(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं।

[Placed in Library, See No. LT 10080/17/23]

- (5) खनिज (नीलामी) संशोधन नियम, 2023 जो 1 सितम्बर, 2023 के भारत के राजपत्र में अधिसूचना सं. सा.का.नि. 648(अ) में प्रकाशित हुए थे।

[Placed in Library, See No. LT 10081/17/23]

- (6) सा.का.नि. 669(अ) जो 14 सितम्बर, 2023 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुए थे तथा जिनके द्वारा खान मंत्रालय, भारत सरकार के आदेश सं. एम.VI-16/15/2021-खान VI, दिनांक 12 अगस्त, 2021 द्वारा जारी किए गए 'प्रत्यायित प्राइवेट अन्वेषण अभिकरणों की अधिसूचना के लिए मार्गदर्शी सिद्धांत' के अनुसार मेसर्स कार्तिकेय एक्सप्लोरेशन एण्ड माइनिंग सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड को 'प्रवर्ग क अन्वेषण अभिकरणों' के अंतर्गत अधिसूचित किया गया है।

[Placed in Library, See No. LT 10082/17/23]

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री पंकज चौधरी): अध्यक्ष महोदय, मैं निम्नलिखित पत्र सभा पटल पर रखता हूँ: -

- (1) केंद्रीय माल और सेवा कर अधिनियम, 2017 की धारा 166 के अंतर्गत निम्नलिखित अधिसूचनाओं की एक-एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण):-

(एक) सा.का.नि. 612(अ) जो 17 अगस्त, 2023 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुए थे तथा जिसके द्वारा 19 जून, 2017 की अधिसूचना संख्या सा.का.नि. 609(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं तथा एक व्याख्यात्मक ज्ञापन।

(दो) का.आ. 3683(अ) जो 17 अगस्त, 2023 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसका आशय मैसर्स यूनाइटेड स्पिरिट्स लिमिटेड के पक्ष में

जारी कारण बताओ नोटिस के संबंध में सामान्य न्यायनिर्णयन प्राधिकरण नियुक्त करना है तथा एक व्याख्यात्मक ज्ञापन।

- (तीन) सा.का.नि. 624(अ) जो 25 अगस्त, 2023 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुए थे तथा जिसके द्वारा 10 नवम्बर, 2020 की अधिसूचना संख्या सा.का.नि. 699(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं तथा एक व्याख्यात्मक ज्ञापन।
- (चार) सा.का.नि. 625(अ) जो 25 अगस्त, 2023 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुए थे तथा जिसके द्वारा 24 मई, 2023 की अधिसूचना संख्या सा.का.नि. 385(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं तथा एक व्याख्यात्मक ज्ञापन।
- (पांच) सा.का.नि. 626(अ) जो 25 अगस्त, 2023 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुए थे तथा जिसके द्वारा 17 जुलाई, 2023 की अधिसूचना संख्या सा.का.नि. 508(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं तथा एक व्याख्यात्मक ज्ञापन।
- (छह) सा.का.नि. 627(अ) जो 25 अगस्त, 2023 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुए थे तथा जिसके द्वारा 28 जून, 2019 की अधिसूचना संख्या सा.का.नि. 452(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं तथा एक व्याख्यात्मक ज्ञापन।

[Placed in Library, See No. LT 10083/17/23]

- (2) सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 की धारा 159 के अंतर्गत निम्नलिखित अधिसूचनाओं की एक-एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण):-

- (एक) का.आ.3419(अ) जो 31 मार्च, 2023 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा 3 अगस्त, 2001 की अधिसूचना संख्या का.आ. 748(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं तथा एक व्याख्यात्मक ज्ञापन।
- (दो) अधिसूचना सं. 57/2023- सीमाशुल्क (एन.टी.) दिनांक 3 अगस्त, 2023 जो आयातित और निर्यातित माल के निर्धारण के प्रयोजनार्थ कतिपय विदेशी मुद्राओं को भारतीय मुद्रा में अथवा भारतीय मुद्रा को विदेशी मुद्राओं में संपरिवर्तित करने

के लिए विनिमय दर में संशोधन के बारे में है तथा एक व्याख्यात्मक ज्ञापन।

(तीन) का.आ.3640(अ) जो 14 अगस्त, 2023 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा 3 अगस्त, 2001 की अधिसूचना संख्या का.आ. 748(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं तथा एक व्याख्यात्मक ज्ञापन।

(चार) अधिसूचना सं. 61/2023- सीमाशुल्क (एन.टी.) दिनांक 17 अगस्त, 2023 जो आयातित और निर्यातित माल के निर्धारण के प्रयोजनार्थ कतिपय विदेशी मुद्राओं को भारतीय मुद्रा में अथवा भारतीय मुद्रा को विदेशी मुद्राओं में संपरिवर्तित करने के लिए विनिमय दर में संशोधन के बारे में है तथा एक व्याख्यात्मक ज्ञापन।

(पांच) अधिसूचना सं. 62/2023- सीमाशुल्क (एन.टी.) दिनांक 25 अगस्त, 2023 जो आयातित और निर्यातित माल के निर्धारण के प्रयोजनार्थ कतिपय विदेशी मुद्राओं को भारतीय मुद्रा में अथवा भारतीय मुद्रा को विदेशी मुद्राओं में संपरिवर्तित करने के लिए विनिमय दर में संशोधन के बारे में है तथा एक व्याख्यात्मक ज्ञापन।

(छह) का.आ.3851(अ) जो 31 अगस्त, 2023 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था तथा जिसके द्वारा 3 अगस्त, 2001 की अधिसूचना संख्या का.आ. 748(अ) में कतिपय संशोधन किए गए हैं तथा एक व्याख्यात्मक ज्ञापन।

(सात) अधिसूचना सं. 64/2023- सीमाशुल्क (एन.टी.) दिनांक 6 सितम्बर, 2023 जो आयातित और निर्यातित माल के निर्धारण के प्रयोजनार्थ कतिपय विदेशी मुद्राओं को भारतीय मुद्रा में अथवा भारतीय मुद्रा को विदेशी मुद्राओं में संपरिवर्तित करने के लिए विनिमय दर में संशोधन के बारे में है तथा एक व्याख्यात्मक ज्ञापन।

(आठ) अधिसूचना सं. एफ़.सं. 461/07/2023-सीयूएस V दिनांक 28 अगस्त, 2023 जिसके द्वारा सिक्किम में ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड (जीएलओएफ) जोखिम पर पायलट परियोजना के कार्यान्वयन के लिए उपकरणों के आयात के लिए तदर्थ छूट को अधिसूचित किया गया है तथा एक व्याख्यात्मक ज्ञापन।

(नौ) अधिसूचना सं. एफ़.सं. 460/01/2023-सीयूएस V दिनांक 29 अगस्त, 2023 जिसके द्वारा अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ द्वारा भारत में स्कूलों के बीच वितरण के लिए 1.15 मिलियन फुटबॉल के आयात के लिए तदर्थ छूट के अनुरोध को अधिसूचित किया गया है तथा एक व्याख्यात्मक ज्ञापन।

[Placed in Library, See No. LT 10084/17/23]

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF COMMUNICATIONS

(SHRI DEVUSINH CHAUHAN): Sir, I beg to lay on the Table a copy of the Quality of Service (Code of Practice for Metering and Billing Accuracy) Regulations, 2023 (Hindi and English versions) published in Notification No. F. No. C2/8(1)/2021-QoS. in Gazette of India dated 12th September, 2023 under Section 37 of the Telecom Regulatory Authority of India Act, 1997.

[Placed in Library, See No. LT 10085/17/23]

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY

WELFARE (DR. BHARATI PRAVIN PAWAR): Sir, I beg to lay on the Table: -

- (1) A copy of the National Commission for Allied and Healthcare Professions 5th (Removal of Difficulties) Order, 2023 (Hindi and English versions) published in Notification No. S.O.2232(E) in Gazette of India dated 19th May, 2023, under sub-section (2) of Section 69 of the National Commission for Allied and Healthcare Professions Act, 2021.

- (2) Statement (Hindi and English versions) showing reasons for delay in laying the papers mentioned at (1) above.

[Placed in Library, See No. LT 10086/17/23]

- (3) (i) A copy of the Annual Report (Hindi and English versions) of the All India Institute of Medical Sciences, Jammu, for the years 2019-2020 and 2020-2021.
- (ii) A copy of the Review (Hindi and English versions) by the Government of the working of the All India Institute of Medical Sciences, Jammu, for the years 2019-2020 and 2020-2021.

- (4) Statement (Hindi and English versions) showing reasons for delay in laying the papers mentioned at (3) above.

[Placed in Library, See No. LT 10087/17/23]

- (5) (i) A copy of the Annual Report (Hindi and English versions) of the All- India Institute of Medical Sciences, Jammu, for the year 2021-2022, alongwith Audited Accounts.
- (ii) A copy of the Review (Hindi and English versions) by the Government of the working of the All-India Institute of Medical Sciences, Jammu, for the year 2021-2022.

- (6) Statement (Hindi and English versions) showing reasons for delay in laying the papers mentioned at (5) above.

[Placed in Library, See No. LT 10088/17/23]

- (7) (i) A copy of the Annual Report (Hindi and English versions) of the All India Institute of Medical Sciences, Deoghar, for the year 2021-2022, alongwith Audited Accounts.
- (ii) A copy of the Review (Hindi and English versions) by the Government of the working of the All India Institute of Medical Sciences, Deoghar, for the year 2021-2022.
- (8) Statement (Hindi and English versions) showing reasons for delay in laying the papers mentioned at (7) above.

[Placed in Library, See No. LT 10089/17/23]

- (9) (i) A copy of the Annual Report (Hindi and English versions) of the All India Institute of Speech and Hearing, Mysuru, for the year 2021- 2022, alongwith Audited Accounts.
- (ii) A copy of the Review (Hindi and English versions) by the Government of the working of the All India Institute of Speech and Hearing, Mysuru, for the year 2021-2022.
- (10) Statement (Hindi and English versions) showing reasons for delay in laying the papers mentioned at (9) above.

[Placed in Library, See No. LT 10090/17/23]

- (11) A copy each of the following Notifications (Hindi and English versions) issued under sub-section (3) of Section 16 of the Indian Nursing Council Act, 1947:-
- (i) The Indian Nursing Council (Diploma in Public Health Nursing), Regulations, 2020 published in Notification No.

F.No. 11-1/2019-INC in Gazette of India dated 10th October, 2022.

- (ii) The Indian Nursing Council (Post Basic Diploma in Ayurveda Nursing – Residency Program) Regulations, 2022 published in Notification No. F.No. 11-1/2022-INC in Gazette of India dated 23rd February, 2023.

[Placed in Library, See No. LT 10091/17/23]

11.16 hrs

COMMITTEE ON ESTIMATES

27th Report

डॉ. संजय जायसवाल (पश्चिम चम्पारण): अध्यक्ष महोदय, मैं स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय से संबंधित 'सीजीएचएस के अंतर्गत विभिन्न पहलों का मूल्यांकन' विषय के बारे में प्राक्कलन समिति (2023-24) के 21वें प्रतिवेदन (17वीं लोक सभा) में अंतर्विष्ट टिप्पणियों/सिफारिशों पर सरकार द्वारा की-गई-कार्रवाई पर समिति का 27वां प्रतिवेदन (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) प्रस्तुत करता हूँ।

11.16½ hrs

STANDING COMMITTEE ON HOME AFFAIRS

245th Report

SHRI VISHNU DAYAL RAM (PALAMU): I beg to lay the 245th Report (Hindi and English versions) of the Standing Committee on Home Affairs on 'Prison – Conditions, Infrastructure and Reforms'.

11.17 hrs

**STANDING COMMITTEE ON EDUCATION, WOMEN,
CHILDREN, YOUTH AND SPORTS**

356th Report

श्री जगन्नाथ सरकार (रणघाट): अध्यक्ष महोदय, मैं शिक्षा, महिला, बाल, युवा और खेल संबंधी स्थायी समिति के 'उच्चतर शिक्षा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 का कार्यान्वयन' के बारे में 356वां प्रतिवेदन (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) सभा पटल पर रखता हूँ।

11.17½ hrs

**STANDING COMMITTEE ON TRANSPORT, TOURISM
AND CULTURE**

355th to 359th Reports

SHRI TAPIR GAO (ARUNACHAL EAST): I beg to lay the following Reports (Hindi and English versions) of the Standing Committee on Transport, Tourism and Culture:-

- (1) Three Hundred Fifty-fifth Report on the Action Taken by the Government on the recommendations/ observations of the 3 Committee contained in its Three Hundred Thirty-ninth Report on Demand for Grants (2023-24) of Ministry of Civil Aviation.
 - (2) Three Hundred Fifty-sixth Report on the Action Taken by the Government on the recommendations/ observations of the Committee contained in its Three Hundred Fortieth Report on Demand for Grants (2023-24) of Ministry of Culture.
 - (3) Three Hundred Fifty-seventh Report on the subject 'Development of Niche Tourism (including Spiritual Tourism), Theme-based Tourist Circuits and Potential Tourist Spots'.
 - (4) Three Hundred Fifty-eighth Report on the subject 'Development and Expansion of Existing and New National Inland Waterways'.
 - (5) Three Hundred Fifty-ninth Report on the subject 'Functioning of Archaeological Survey of India'.
-

11.18 hrs

STANDING COMMITTEE ON HEALTH AND
FAMILY WELFARE

149th Report

DR. MAHESH SHARMA (GAUTAM BUDDHA NAGAR): Sir, I beg to lay the 149th Report (Hindi and English versions) on the subject 'Implementation of Pradhan Mantri TB Mukh Bharat Abhiyan' of the Standing Committee on Health and Family Welfare.

11.18½ hrs

STATEMENT BY MINISTER

Status of implementation of the recommendations/ observations contained in the 44th Report of the Standing Committee on Communications and Information Technology on Demands for Grants (2023-2024) pertaining to the Department of Posts, Ministry of Communications*

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF COMMUNICATIONS (SHRI

DEVUSINH CHAUHAN): Sir, in pursuance of the Direction 73A of the hon. Speaker, Lok Sabha, I beg to lay a statement regarding the status of implementation of the recommendations/ observations contained in the 44th Report of the Standing Committee on Communications and Information Technology on Demands for Grants (2023-2024) pertaining to the Department of Posts, Ministry of Communications.

* Laid on the Table and also placed in Library, See No. LT 10074/17/23.

11.19 hrs

**MOTION RE: 45TH REPORT OF BUSINESS
ADVISORY COMMITTEE**

**THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS, MINISTER OF COAL AND
MINISTER OF MINES (SHRI PRALHAD JOSHI):** I beg to move:

“That this House do agree with the Forty-fifth Report of the Business
Advisory Committee presented to the House on 20th September, 2023.”

माननीय अध्यक्ष : प्रश्न यह है:

“कि यह सभा 20 सितम्बर, 2023 को सभा में प्रस्तुत कार्य मंत्रणा समिति के 45वें
प्रतिवेदन से सहमत है।”

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

11.20 hrs

**DISCUSSION REGARDING SUCCESS OF CHANDRAYAAN-III
MISSION AND OTHER ACHIEVEMENTS OF OUR NATION IN
THE SPACE SECTOR**

माननीय अध्यक्ष : आईटम नंबर – 14, चंद्रयान-3 मिशन की सफलता और अंतरिक्ष क्षेत्र में हमारे राष्ट्र की अन्य उपलब्धियों के बारे में आज चर्चा होगी।

मैं सभी माननीय सदस्यों से आग्रह करता हूँ कि वे सभी अपने विचार रखें। मैं सबको पर्याप्त अवसर दूंगा। लेकिन सभी सदस्य बोल लें, ऐसी मेरी अपेक्षा है।

... (व्यवधान)

SHRI N. K. PREMACHANDRAN (KOLLAM): Sir, kindly inform the House under what rule this discussion is being held. Is it being held under Rule 184 or 193? ...

(Interruptions)

माननीय अध्यक्ष : आईटम नंबर -14, इसका विषय मैंने शुरू किया है।

श्री राजनाथ सिंह जी।

रक्षा मंत्री (श्री राज नाथ सिंह): अध्यक्ष महोदय, इस गरिमामयी सदन में चंद्रयान-3 और आदित्य एल-1 की सफलता पर अपनी बात रखने के लिए आपने मुझे अवसर दिया है। इसके लिए मैं अपनी तरफ से आपके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

अध्यक्ष महोदय, चंद्रयान-3 की सफलता हमारे लिए निश्चित रूप से एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। जैसा आपने भी अभी अपने संबोधन में कहा है। क्योंकि एक तरफ दुनिया के कई ऐसे विकसित देश हैं, जो हमसे कहीं अधिक साधन संपन्न होते हुए भी चांद पर पहुंचने के लिए अब भी प्रयासरत हैं, तो वहीं दूसरी तरफ बेहद सीमित संसाधनों से चांद के दक्षिण ध्रुव पर पहुंचने वाले हम दुनिया के पहले देश बन गए हैं।

अध्यक्ष महोदय, मैं मानता हूँ कि यह उन सभी लोगों के लिए गौरव का विषय है, जो अपने राष्ट्र और राष्ट्र की उपलब्धियों पर गर्व करते हैं।

अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले मैं इसरो के साइंटिस्ट्स और ब्रॉडर इंडियन साइंटिफिक कम्युनिटी को इस सफलता के लिए हृदय से बधाई देता हूँ। यह हमारे इसरो के वैज्ञानिकों की बौद्धिक क्षमता, उनकी लगन और राष्ट्र के विकास के प्रति उनके समर्पण का ही प्रतिफल है। मैं ऐसा मानता हूँ कि हमारा राष्ट्र आज विज्ञान की दुनिया में अग्रणी राष्ट्रों की पंक्ति में आ कर खड़ा हो गया है। आज केवल मुझे ही नहीं, सरकार को ही नहीं, सदन को ही नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र को अपने देश के वैज्ञानिकों पर गौरव की अनुभूति हो रही है।

अध्यक्ष महोदय, मैं विज्ञान का एक छात्र रहा हूँ। मैं फिजिक्स का शिक्षक भी रहा हूँ। यहां पर मौजूद हमारे कई ऐसे साथी हैं, जो साइंस बैकग्राउंड से हैं और उन्हें मैं अच्छी तरह से जानता हूँ। हम सभी यह बात जानते हैं कि स्पेस साइंस, विज्ञान का एक फ्रंटियर एरिया हुआ करता है, जिस पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, क्वांटम फिजिक्स, एस्ट्रो फिजिक्स और जेनेटिक्स विज्ञान के फ्रंटियर एरियाज हैं। उसी प्रकार स्पेस साइंस भी विज्ञान का एक फ्रंटियर एरिया है। इस एरिया में प्रगति करने के लिए निश्चित तौर पर हमें एक टॉप क्लास साइंटिफिक ईको सिस्टम चाहिए होता है। हमें उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा भी चाहिए और उच्च गुणवत्ता के शिक्षक भी चाहिए। उसके लिए एजुकेशनल इंस्टिट्यूशंस भी चाहिए। इंडस्ट्री चाहिए होती है, जो साइंटिफिक प्रोडक्ट्स का निर्माण कर सके।

अध्यक्ष महोदय, मेरे कहने का अर्थ यह है कि अगर चंद्रयान-3 ने चंद्रमा पर अपने कदम रखे हैं, यह एक ओर इसरो की सफलता तो है ही साथ ही यह इस बात का भी द्योतक है कि हमारे देश का साइंटिफिक ईको सिस्टम, जिसमें करोड़ों-करोड़ों भारतीयों ने जाने-अनजाने अपना योगदान दिया है, वह आज शेप ले रहा है। यह दिखाता है कि हमारे स्कूल्स, हमारे कॉलेजेस और यूनिवर्सिटीज में साइंस की पढ़ाई बेहतर हो रही है और हमारी इंडस्ट्रीज भी अच्छी गुणवत्ता वाले प्रोडक्ट्स सप्लाई कर रही है।

अध्यक्ष महोदय, हमें अच्छे छात्र, अच्छे टीचर्स और रिसर्चर्स आज मिल रहे हैं। इसलिए आज हम किसी उपलब्धि तक पहुंचते हैं तो उसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं, जिन्होंने इस यात्रा में अपना किसी भी प्रकार का सहयोग दिया है और राष्ट्र के भीतर साइंटिफिक टेम्परामेंट को जन्म दिया है।

अध्यक्ष महोदय, जब मैं यहां साइंटिफिक टेम्परामेंट की बात कर रहा हूं तो उससे मेरा मतलब कुछ वैज्ञानिक उपकरणों के केवल डेवलप कर देने भर से नहीं है। यह हमारे कहने का तात्पर्य नहीं है। यदि मैं साइंटिफिक टेम्परामेंट की बात कर रहा हूं तो साइंटिफिक टेम्परामेंट्स से मेरा आशय यह है कि वैज्ञानिकता और तार्किकता दोनों हमारी सोच में हों। वह हमारी बात और व्यवहार में हो और हमारे स्वभाव में भी हो। जब हम विज्ञान का विषय पढ़ें, तभी हम साइंस से दो-चार हुए, बल्कि हम आर्ट्स, म्यूजिक और साथ ही साथ एस्थेटिक्स भी पढ़ें हैं। हम उसमें भी साइंटिफिक एप्रोच रख सकते हैं।

अध्यक्ष महोदय, मैं यहाँ पर साइंटिफिक टेम्परामेंट की बात कर रहा हूँ। हम सब इस संबंध में बड़े भाग्यशाली हैं कि यह टेम्परामेंट प्राचीन काल से ही हम भारतवासियों को विरासत में मिला हुआ है। आप देख लें, चाहे हमारे प्राचीन ग्रंथ और वेद हों, आप उपनिषद् देख लें या फिर स्मृति ग्रंथ देख लें, सर्वत्र आपको विज्ञान या फिर विज्ञान से युक्त विचारों के दर्शन करने को मिलेंगे।... (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, मैथ्स, साइंस, मेडिसीन, लॉजिक आदि से जुड़े जितने भी सूत्र हैं, वे हमारी प्राचीन ग्रंथों में भी दिखाई देते हैं, जो ग्रंथ हमारी संस्कृति का आधार हैं। इनके मैं उदाहरण दे सकता हूँ, लेकिन लंबा समय लगेगा, इसलिए मैं विस्तार में नहीं जाना चाहता हूँ।

अध्यक्ष महोदय, कभी-कभी कुछ लोगों द्वारा यह भी कहा जाता है और कुछ ऐसे लोग हमारे सदन में भी हो सकते हैं कि हमारी सांस्कृतिक विरासत और साइंटिफिक टेम्परामेंट के बीच विरोधाभास है। कुछ ऐसे भी मानने लोग हमारे देश में हैं, यहां तक कहा जाने लगा कि अगर आप साइंटिफिक टेम्परामेंट के हैं तो आप पीपल की पूजा कैसे कर सकते हैं, आप नीम की पूजा कैसे कर सकते हैं, आप तालाब की पूजा कैसे कर सकते हैं, या फिर आप गाय को माता कैसे कह सकते हैं?

अध्यक्ष महोदय, अगर आप वैज्ञानिक की तरह सोचते हैं तो मूर्ति पूजा कैसे कर सकते हैं, यह कहने वाले लोग हमारे देश में हैं।

महोदय, बात तो अब यहाँ तक होने लगी है कि संस्कृति का विरोध करना, विरासत का विरोध करना, यह प्रगतिवाद है, यानी प्रोग्रेसिव होने का सूचक हो गया है। प्रगतिवाद वह नहीं रह गया, जो प्रगति की बात करे, बल्कि प्रगतिवाद वह हो गया है, जो अपनी संस्कृति और विरासत का केवल विरोध करे, वह भी इसलिए कि उसे विरोध करना है। पूछा जाने लगा कि भारतीय संस्कृति और विज्ञान का भला आपस में क्या लेना-देना है? इन दोनों में आपस में क्या रिश्ता है? भारत में कभी धर्म और विज्ञान का सामंजस्य रहा ही नहीं है, यह भी कहने वाले लोग हैं। विपक्ष के हमारे कुछ मित्रों का ऐसा भी आरोप रहता है, क्योंकि राज्य सभा में मैंने सुना था कि भारतीय संस्कृति और विज्ञान एक साथ चल ही नहीं सकते हैं। ऐसी उनकी मान्यता है।

अध्यक्ष महोदय, इनका ऐसा मानना है कि संस्कृति विज्ञान की विरोधी होती है। मैं इस सदन के माध्यम से उनके इन प्रश्नों का जवाब देने के लिए अपनी तरफ से कोशिश करूंगा। भारत में यदि कोई व्यक्ति यह कहता है कि हमारी संस्कृति विज्ञान की विरोधी है तो मुझे लगता है कि उस व्यक्ति को न तो हमारी संस्कृति का 'स' मालूम है और न ही विज्ञान का 'व' मालूम है। हमारे जो भी साथी विज्ञान का उद्गम पश्चिम के विचारों से मानते हैं, उन्होंने अगर इतिहास पढ़ा होगा तो उन्हें निश्चित रूप से मालूम होगा कि पश्चिम में ऐसे अनेक उदाहरण देखने को मिले हैं, जहां चर्च और धर्म की मान्यताओं के खिलाफ जाने पर, वैज्ञानिक बातें कहने पर, व्यक्तियों को जहर दे देना या उन्हें जिंदा जला देना, यह आम बात सी हो गई थी।

अध्यक्ष महोदय, उनको अपने वैज्ञानिक विचार छिपाकर कहने पड़ते थे और आज से लगभग दो हजार साल पहले आर्यभट्ट ने जब कहा था कि हमारी पृथ्वी अपने एक्सेस पर घूमती है तो क्या उनका विरोध हुआ था? वराहमिहिर ने जब यह सिद्धांत दिया कि पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल हर वस्तु को अपनी तरफ खींचता है तो क्या किसी व्यक्ति ने वराहमिहिर के इस सिद्धांत को अधर्म कहा था। जब भी भारत में किसी ने कोई नया वैज्ञानिक सिद्धांत दिया है तो भारतीय समाज ने उस व्यक्ति को ऋषि के रूप में प्रतिष्ठित किया है।

मेरा मानना है कि संस्कृति के बगैर, कल्चर के बगैर विज्ञान और विज्ञान के बगैर कल्चर, यह संस्कृति अधूरी है। संस्कृति और विज्ञान, दोनों एक-दूसरे से जुड़ने के बाद ही पूर्णता को प्राप्त करते हैं। दोनों को एक-दूसरे का पूरक कहा जा सकता है, क्योंकि दोनों ही मनुष्यता के लिए भी आवश्यक हैं। इसका एक छोटा सा, लेकिन बहुत ही महत्वपूर्ण उदाहरण मैं आपके सामने रखना चाहूंगा।

अध्यक्ष महोदय, लगभग दो वर्ष पहले उत्तराखंड में भूस्खलन के रूप में एक दुर्भाग्यपूर्ण आपदा आई थी। मैं समझता हूँ कि इस सदन के सभी सम्मानित सदस्यों को इसकी जानकारी होगी जिसके कारण एक सुरंग में हमारे कुछ मजदूर फंस गए थे। अब इससे निपटने के लिए यहां पर विज्ञान की भूमिका सामने आई। हमने सेंसर आदि के माध्यम से यह पता लगाया कि मजदूर सुरंग में कहां फंसे हुए हैं। इसके बाद हमने हेलीकाप्टर से उन लोगों को वहां से निकालने में भी कामयाबी हासिल की। जैसे ही सुरंग से पहले मजदूर को बाहर निकाला गया, कोई अन्यथा न ले, बाहर निकलते ही उसने दोनों हाथ ऊपर करके बड़ी तेजी के साथ जय घोष किया – बंदी विशाल की जय। इस वाकिये ने सारी दुनिया को बताया कि धर्म और विज्ञान किस तरह से आपस में जुड़े हुए हैं। एक-दूसरे से धर्म और विज्ञान अलग नहीं हैं, बल्कि एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। निश्चित रूप से विज्ञान ने उस मजदूर को सुरंग से बाहर निकालने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई, इसमें कहीं कोई दो मत नहीं है। लेकिन, उन मजदूर बंधुओं को सुरंग के भीतर जिसने जिजीविषा की शक्ति प्रदान की, जिसने साहस प्रदान किया, जिसने मनोबल प्रदान किया, जिसने आखिरी समय तक प्रयास करते रहने की शक्ति प्रदान की, वह और कुछ नहीं, हमारा सांस्कृतिक विश्वास ही था, जिसने कि यह सम्बल उन्हें प्रदान किया। वह हमारी कल्चर, हमारी संस्कृति ही थी जिसने सुरंग में फंसे उस मजदूर को यह भरोसा दिलाया कि वह इस संकट से बचकर निकल जाएगा, उसके ईश्वर इस संकट से उसे निकाल लेंगे, यह उसका विश्वास था, भरोसा था।

अध्यक्ष महोदय, हमारी आस्था, हमारी संस्कृति इंकलूजिव नेचर की है, समावेशी स्वभाव की है। हमारा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, हमें अखिल मानवता के बंधुत्व का पाठ पढ़ाता है। हम सबने देखा कि जियो पॉलिटिकल दृष्टि से काफी कठिन वैश्विक परिस्थितियों के बावजूद हम जी-20 समिट का, हमारे

प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हम सफल आयोजन कर सके एवं न्यू देल्ही डिक्लेरेशन पर भी हम कंसेंसस जुटाने में पूरी तरह से कामयाब रहे। इसके पीछे हमारे प्रधान मंत्री द्वारा हमारी प्राचीन ज्ञान परम्परा से दिया गया संदेश है, जिसने पूरी मानवता को एक सूत्र में बांध दिया है। प्रधान मंत्री जी ने ही कहा था, 'One Earth, One Family, One Future'. भारत का यही विश्वास, भारत का यही बन्धुत्व का भाव, प्रधान मंत्री जी ने जी-20 की सफलता पर भी मुखरित किया, जब उन्होंने यह कहा था कि यह केवल भारत की सफलता नहीं है, बल्कि पूरे विश्व की सफलता है।

अध्यक्ष महोदय, विज्ञान तो वैल्यू न्यूट्रल होता है। यह वैल्यू न्यूट्रल क्या है, मैं आगे इसको विस्तार में बताने की कोशिश करूंगा। चन्द्रयान जैसे अन्तरिक्ष यान हों या परमाणु के भीतर छिपी शक्ति हो या फिर डीएनए एडिटिंग की टेक्नोलॉजी हो, विज्ञान हमेशा मूल्य निरपेक्ष होता है, यानी वैल्यू न्यूट्रल होता है। विज्ञान हमें परमाणु शक्ति का ज्ञान दे सकता है, लेकिन वह संस्कृति ही है, कल्चर ही है, जो हमें मार्ग दिखलायेगी कि उस परमाणु शक्ति का उपयोग हम ऊर्जा के रूप में स्वयं के विकास में करते हैं या फिर हथियार के रूप में अन्य का विनाश करने में करते हैं। कहते हैं कि, *with great power comes great responsibility*. इसलिए जैसे-जैसे हमारी शक्ति बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे हमारे संस्कारों का महत्व भी स्वाभाविक रूप से बढ़ता जाता है।

प्रारंभ में मानव के पास बहुत सारे विकसित हथियार नहीं थे, ऐसे में यदि उससे कुछ नुकसान भी होता था तो बहुत बड़े पैमाने पर नहीं होता था। आज जब मानव के पास परमाणु शक्ति आ गई है और मानव ने चन्द्रमा तक पहुंचने के भी रास्ते खोज लिए हैं, तब ऐसी शक्तियों का दुरुपयोग भी उसी पैमाने पर संभव है और इस संभावना को नकारा नहीं जा सकता है। इसे मैं एक उदाहरण के माध्यम से सदन में रखना चाहूंगा।

जब जर्मन फिलास्फर नीत्शे ने *God is dead*. कहकर अपने महामानव को सामाजिक नैतिकता से मुक्त किया तो उसका नतीजा जर्मनी में नाजीवाद के कहर के रूप में प्रकट हुआ था। जर्मनी में हुए नरसंहार में मानवता को खत्म करने के लिए जो ऑपरेटर्स और उपकरण प्रयोग में लाए गए थे, जिन हथियारों और केमिकल्स का प्रयोग हुआ था, वे निश्चित रूप से सभी विज्ञान की

ही देन थे । लेकिन नैतिकता और मानवीयता के गुणों के अभाव में उन सभी वैज्ञानिक खोजों का किस प्रकार दुरुपयोग हुआ, इसे हम सभी अच्छी तरह जानते हैं ।

सेकंड वर्ल्ड वार में हिरोशिमा और नागाशाकी पर जो बम गिराये गए थे, वे भी निश्चित ही विज्ञान की ही देन थे । वे विज्ञान की शक्ति के प्रतिनिधि थे, लेकिन धार्मिक और नैतिक शक्ति का अभाव था । अगर उनके भीतर धार्मिक और नैतिक शक्तियां प्रबल होतीं तो इतिहास को इस काले कृत्य से बचाया जा सकता था । इसलिए विज्ञान कितनी भी प्रगति कर ले, वह संस्कृति और संस्कारों के बिना सदैव अधूरा रहेगा, ऐसी हमारी मान्यता है ।

मार्टिन लूथर किंग ने कहा है, Science gives man knowledge, which is power; religion gives man wisdom, which is control.

एक बात पर हम सभी को ध्यान देने की जरूरत है । जिस टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल वैज्ञानिक किसी यान को चांद या मंगल पर भेजने के लिए करते हैं, कमोवेश उसी टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल मिसाइल में भी काफी हद तक किया जाता है । पहला उपयोग मानवता के विकास में होता है, जबकि दूसरा उपयोग मानवता के विनाश के लिए होता है । किंतु सभी का अपना-अपना इंट्रेस्ट है, सभी की अपनी-अपनी रुचि है । कुछ राष्ट्रों का ध्यान पहले वाले उपयोग पर अधिक होता है और कुछ राष्ट्रों का ध्यान दूसरे वाले उपयोग पर अधिक होता है । कई बार कुछ लोगों का यह भी आरोप रहता है कि अब देश में ऑलरेडी जमीनी विकास के इतने कार्य करने के लिए पड़े हैं, जिनमें रिसोर्सेज की जरूरत है, संसाधनों की जरूरत है । ऐसे में चंद्र यान जैसे मिशन भेजने की क्या आवश्यकता है? इन प्रश्नों का भी जवाब मैं आपकी अनुमति से सदन के समक्ष रखना चाहूंगा ।

जब हम इस प्रकार के मिशन भेजते हैं या फिर हम किसी प्रकार की वैज्ञानिक प्रगति करते हैं तो इसका जमीनी विकास से किसी भी प्रकार का विरोधाभास नहीं होता है । हम यदि स्पेस रिलेटेड कोई भी मिशन भेजते हैं तो बाहरी तौर पर देखने में सिर्फ स्पेस से रिलेटेड लग सकता है लेकिन वास्तव में उसका प्रभाव आम जनमानस पर भी पड़ता है, इस सच्चाई को भी नकारा नहीं जा सकता है ।

हमारे स्पेस प्रोग्राम भारत का नाम तो रौशन करते ही हैं, लेकिन इसके साथ ही इन मिशन्स का बहुआयामी उपयोग भी होता है, उसका प्रभाव आम जनता के ऊपर भी बहुत ज्यादा पड़ता है। स्पेस मिशन में अनेक प्रकार से सहायता प्रदान करते हैं, जैसे हम यदि इसके माध्यम से रेन फॉल पैटर्न यानी वर्षा होने का जो पैटर्न है, अगर इसका बेहतर प्रिडिक्शन कर रहे हैं तो हमारे किसान बंधु-बंधुओं के लिए फायदेमंद काम होगा। यदि हम इसके माध्यम से क्षेत्रवार साइक्लोन को प्रिडिक्ट करते हैं तो कोस्टल एरिया में रहने वाले लोगों के लिए भी लाभदायक होगा। इस प्रकार के प्रिडिक्शन हमारे मछुआरों के लिए लाभदायक सिद्ध होंगे। मैंने केवल एक-दो उदाहरण दिए हैं। बाकी स्पेस अप्लीकेशन्स से डेवलपमेंट में मदद मिलती है, उससे भी सदन के अधिकांश सदस्य अच्छी तरह परिचित हैं। इस सबसे भी महत्वपूर्ण बात यह होती है कि जब भी इस प्रकार का स्पेस मिशन, चन्द्रमा या सूर्य की भेजते हैं तो सूदूर गांव में बैठे किसी बच्चे के मन में साइंटिफिक टेम्परामेंट स्वाभाविक रूप से जगता है। उसके भीतर भी इस बात की अलख जगती है कि वह भी आगे चलकर कुछ ऐसे ही करेगा। उसके अंदर प्रेरणा आती है कि वह भी एक दिन वह वैज्ञानिक बनकर भारत का नाम दुनिया में रोशन करेगा। उसकी यही कुछ करने की तमन्ना राष्ट्र को स्वाभाविक रूप से आगे ले जाने का काम करती है।

चन्द्रयान-3 की सफलता से कितने रामानुज, कितने भाभा या साराभाई अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़े होंगे, यह हमें आज नहीं बल्कि कुछ वर्षों बाद पता चलेगा। माननीय प्रधान मंत्री मोदी जी के नेतृत्व में हम संस्कृति और विज्ञान दोनों को समान रूप से महत्व देते हुए आगे बढ़ रहे हैं। ऐसा बिल्कुल भी नहीं है कि अगर हम एक को महत्व दे रहे हैं तो दूसरे का महत्व कम हो जाएगा। यह कोई जीरो सम गेम नहीं है।

अध्यक्ष जी, हमारे ऋषियों, मनीषियों ने वर्षों पहले विज्ञान को न केवल धर्म के साथ जोड़ा, बल्कि लोगों को इसके व्यावहारिक ज्ञान के बारे में भी बताया है। उनका मानना था कि यदि विज्ञान को सुव्यवस्थित ढंग से संवारकर मनुष्य के कल्याण के लिए लगाया जाए तो स्वाभाविक रूप से वह अपने आप धर्म बन जाता है। यही वजह है कि हमारे वेद, उपनिषद, दर्शन आदि जितने भी धर्म ग्रंथ हैं, हम

उनमें विज्ञान स्वाभाविक रूप से पिरोया हुआ पाते हैं। उदाहरण के तौर पर वैदिक रिच्युल्स में जियोमेट्री का सिद्धांत पाया जाता है। मैं सदन को बताना चाहता हूँ कि हम हवन कुंड बनाते हैं तो वह भी प्राचीन जियोमेट्रिक कन्सेप्ट पर ही आधारित होता है। यह हमारी जनता के मन में, उनकी सोच में पूरी तरह से रचा-बसा है। यही कारण है कि बड़े-बड़े वैज्ञानिक सांस्कृतिक विरासत की महत्ता को अच्छी तरह स्वीकार करते हैं।

अध्यक्ष जी, चन्द्रयान-3 की सफलता के नायक डॉ. एस. सोमनाथ, जिनका पूरा सदन ने अभिनंदन किया है, उनके साथ सारे वैज्ञानिकों का भी अभिनंदन किया था। डॉ. एस. सोमनाथ जी ने भी इस बात की ओर इशारा किया था कि वेदों में कई वैज्ञानिक पृष्ठभूमि वाली बातें कही गई हैं। भारत के प्रसिद्ध गणितज्ञ श्री श्रीनिवास रामानुजन का संस्कृत के प्रति इतना गहरा विश्वास था कि वे अपने गणित के क्षेत्र में किए गए किसी भी कार्य को स्पिरिचुअलिज्म, आध्यात्म का ही अंग मानते थे। जो लोग यह कहते हैं कि हमें अपनी संस्कृति से विरक्त होकर विज्ञान को अपनाना चाहिए, दरअसल उन लोगों को समझना पड़ेगा कि संस्कृत और विज्ञान एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं, बल्कि संस्कृत और विज्ञान एक-दूसरे के पूरक हैं।

अध्यक्ष महोदय, मैं देश का रक्षा मंत्री हूँ। मेरे ऊपर रक्षा मंत्रालय का दायित्व है और मैं देश की सुरक्षा का कार्यभार देख रहा हूँ। जब मैं यहां आ रहा था तब मैंने रास्ते में सोचा कि देश का रक्षा मंत्री होने के नाते चन्द्रयान-3 की सफलता को किस नजरिए से देखता हूँ। इसके संबंध में मैं कुछ बातें आपके समक्ष रखना चाहता हूँ। मैं अपनी बात पर आऊँ, इसके लिए मैं आपको थोड़ा पीछे ले जाना चाहूँगा और आपके माध्यम से सदन के समक्ष कुछ उदाहरण रखना चाहूँगा।

सदन के सभी लोग अच्छी तरह से अवगत हैं कि कुछ ही समय पहले माननीय प्रधान मंत्री मोदी जी के प्रयासों से काशी तमिल संगमम का भव्य और सफल आयोजन किया गया था। उसके कुछ समय बाद उनके द्वारा सौराष्ट्र तमिल संगमम का भी आयोजन किया गया था। इसके पहले का एक और उदाहरण है, आप देखिए कि सरकार के प्रयासों से कैसे उज्जैन में बाबा महाकाल के क्षेत्र में भव्य कोरिडोर का निर्माण किया गया। विश्व की प्राचीनतम नगरी, ज्ञान नगरी काशी में बाबा विश्वनाथ

धाम के परिसर के पुनरुद्धार का काम किया गया और प्रधान मंत्री मोदी जी ने बाबा विश्वनाथ जी के चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित किए। इसके साथ ही मैं राम मंदिर का एक और उदाहरण देना चाहता हूँ। श्री राम चन्द्र जी देश के जनमानस में निवास करते हैं, उन राजा जी का अयोध्या में निवास करना कितना मुश्किल कार्य हो गया था, जाने कितनी पीढ़ियाँ इस प्रतीक्षा में ही निकल गईं कि रामलला के मंदिर का निर्माण कभी होगा या नहीं होगा।

सैंकड़ों वर्षों से राम मंदिर बनने का सपना पाले बैठे उन भक्तों ने इसे बस एक सपना भर ही मान लिया था। कभी न पूरा होने वाला सपना, ऐसा मान लिया था। लेकिन, माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकार का प्रयास देखिए कि आज अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण का कार्य बड़े जोर-शोर के साथ चल रहा है।

अध्यक्ष महोदय, राष्ट्र में सांस्कृतिक उत्कर्ष के नये युग का प्रारंभ हुआ है। राष्ट्र के प्रयासों से भगवान राम अपने नये अवतार में जल्द ही जनता के सामने होंगे। यह भारतवासियों की, मैं समझता हूँ कि एक बहुत बड़ी और बहुत शानदार उपलब्धि होगी।

अध्यक्ष महोदय, इस प्रकार के कुछ और उदाहरण देखिए। गंगा जैसी अनेक नदियों का पुनरुद्धार किया गया। हम देशव्यापी अभियान चलाकर गंगा, यमुना और नर्मदा जैसी नदियों की सफाई और उनके संरक्षण का कार्य कर रहे हैं। ... (व्यवधान) ऐसे ही अनेक उपक्रम सरकार द्वारा किए जा रहे हैं जो हमारी संस्कृति और परंपरा से जुड़ी चीजों को सहेजने और सुरक्षित रखने का काम कर रहे हैं। आप सभी राष्ट्र के उपयुक्त विकास के लिए अनेक प्रकार की सुरक्षा से भी, मैं समझता हूँ कि सदन के सम्मानित सदस्य अच्छी तरह से अवगत होंगे। आप सभी सीमा सुरक्षा, आर्थिक सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा और पर्यावरण सुरक्षा के बारे में, मैं समझता हूँ हम सभी समय-समय पर चर्चा करते रहे हैं।... (व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी (बहरामपुर): चीन के बारे में चर्चा करने की आपकी हिम्मत है? ... (व्यवधान)

श्री राज नाथ सिंह: हमारे पास पूरी हिम्मत है। ... (व्यवधान)

अधीर रंजन जी, इतिहास में मत ले जाइए। ... (व्यवधान) हमने आपकी बात सुन ली। ... (व्यवधान) अब आप मेरी बात सुनिए। ... (व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी: आपने कहा था कि यथास्थिति बहाल होगी, लेकिन नहीं हुई। ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य, जब हम आपको मौका देंगे, तब बोलिएगा। सबको पर्याप्त समय और पर्याप्त अवसर मिलेगा।

... (व्यवधान)

श्री राज नाथ सिंह: अध्यक्ष महोदय, मैं बताना चाहता हूं, मैं बीच में कहीं पर अपने-आप को डेविएट नहीं करना चाहता हूं। मैं चर्चा करने को तैयार हूं और सीना चौड़ा करके चर्चा करने के लिए तैयार हूं। ... (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, अब तो स्पेस ऑफ साइबर सुरक्षा और स्पेस ऑफ साइबर सिक्योरिटी जैसे नये-नये डायमेंशन्स भी इसमें जुड़ गए हैं। ... (व्यवधान) इसके साथ ही सिक्योरिटी का एक और भी आयाम है, जिसमें सुरक्षा उतनी ही आवश्यक है, जितनी बाकी सबमें हैं। वह डायमेंशन है- हमारी संस्कृति का और हमारी कल्चर का। अगर इसे मुझे कोई नाम देना हो तो उसे मैं सांस्कृतिक सुरक्षा और कल्चरल सिक्योरिटी का नाम यहां देना चाहूंगा। जब मैं यहां कल्चर अथवा संस्कृति के बारे में कुछ कह रहा हूं तो उससे मेरा मतलब हमारी जीवन पद्धति और हमारी लाइफ सिस्टम से है। संस्कृति से मेरा मतलब हमारे खान-पान, वेश-भूषा, रीति-रिवाज, रहन-सहन और हमारे विचारों से है। ... (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, किसी राष्ट्र की अस्मिता को अक्षुण्ण रखने के लिए जिस तरह से वहां की सीमाई सुरक्षा और बाकी अन्य चीजों की सुरक्षा आवश्यक होती है, उसी प्रकार उसकी अस्मिता को बनाये रखने के लिए वहां की संस्कृति की सुरक्षा भी उतनी ही आवश्यक होती है। इन उदाहरणों से मैंने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि हमारी सरकार भारतीय सांस्कृतिक विरासत को तवज्जो देते हुए सांस्कृतिक सुरक्षा के प्रति भी उतनी ही गंभीर है, जितनी अन्य बाकी सुरक्षा के प्रति गंभीर है।

अध्यक्ष महोदय, जब आज यहां पर चन्द्रयान की चर्चा हो रही है, तो मैं इस सांस्कृतिक पुनर्जागरण के इन उदाहरणों को आपके सामने क्यों रख रहा हूं? वैसे तो ये दोनों निश्चित रूप से अलग-अलग विषय हैं, इसमें कहीं दो मत नहीं हैं। पर ध्यान से देखेंगे, तो इस सदन के सभी सम्मानित सदस्य यह पाएंगे कि इनके भीतर एक गहरा संबंध है, इन दोनों के बीच एक गहरा रिश्ता है।

अध्यक्ष महोदय, कोई विश्व का इतिहास उठाकर देखे, तो आप पाएंगे कि कोई भी ऐसा राष्ट्र नहीं है, कोई भी ऐसा समाज नहीं है, जिसने सांस्कृतिक पुनर्जागरण के बिना आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और वैज्ञानिक प्रगति की हो। दुनिया में ऐसा कोई देश नहीं मिलेगा। जब तक संस्कृति समाज को जीवंत नहीं करती, उन्नत नहीं करती, उसे एक दिशा नहीं देती, तब तक समाज जड़ बना रहता है।

अध्यक्ष महोदय, अगर हम अपनी आगामी पीढ़ी को यही बताएंगे कि अब तक हमारा जितना भी वैज्ञानिक विकास हुआ है, वह केवल बाहरी देशों के ज्ञान की नकल पर ही हुआ है, तो क्या हम अपने बच्चों को इस क्षेत्र में किसी भी सूरत में आगे बढ़ा पाएंगे? अगर अंग्रेजों ने हमें अब तक यही पढ़ाया हो कि हमारा सारा का सारा ज्ञान दूसरे देशों की कॉपी भर है, उनकी नकल भर है, तो क्या डॉ. सोमनाथ एवं इसरो के अन्य वैज्ञानिक भारतीय ज्ञान के बल पर कभी चांद तक पहुंचने का सपना शायद कभी न देख पाते? अगर उन्हें इस बात का विश्वास हुआ, अगर उनके मन में संकल्प जगा, तो इसलिए कि उन्हें मालूम था कि उनके पूर्वज आर्यभट्ट थे, उनके पूर्वज वराहमिहिर थे। उन्हें मालूम था कि उनके पूर्वज भास्कराचार्य थे, उनके पूर्वज ब्रह्मगुप्त थे और उनके पूर्वज सवाई जयसिंह थे। इसलिए उनको यह प्रेरणा प्राप्त हुई।

अध्यक्ष महोदय, हम सोचें कि एक बच्चा है, जिसे समाज की प्रगति में केवल विदेशी नाम पढ़ाए जा रहे हैं। दूसरा बच्चा है, जिसे ऐसे नाम पढ़ाए जा रहे हैं, जो उसके अपने समाज से रहे हैं। ऐसे में आप किस बच्चे से अधिक कांफिडेंस और मनोबल की उम्मीद करेंगे? यह स्वाभाविक है, वैसे तो मुझे बाहरी नामों से कोई एतराज नहीं है। ज्ञान-विज्ञान में उनका भी महत्वपूर्ण योगदान है, मैं यह भी स्पष्ट करना चाहूंगा। पर हमारे बच्चों के मन-मस्तिष्क में केवल और केवल यदि बाहरी नाम छाए रहे, तो

ऐसी स्थिति में बच्चा अपने बल पर समाज के विकास के सपने को जीवन में कभी नहीं देख सकता है। उसको सपने भी आएंगे, तो बाहर के समाज के विकास के ही सपने आएंगे।

अध्यक्ष महोदय, जब हम महिलाओं और छोटी बच्चियों को इंस्पायर करने की बात करते हैं, तो हम यह प्रयास करते हैं कि उनके सामने वूमन आइकन का उदाहरण रखें। जब हम भारतीय बच्चों को इंस्पायर या प्रेरित करने का प्रयास करते हैं, तो क्या हमारा यह कर्तव्य नहीं होना चाहिए कि हम उनके सामने भारतीय आइकन्स का भी उदाहरण प्रस्तुत करें? इसलिए अगर हमें अपने समाज, अपने राष्ट्र को आगे ले जाना है, तो हम अपने समाज और संस्कृति से सीखें। हमारे अपने आइकन्स को अपनी बात-व्यवहार में प्रतिष्ठित करें और उनका अनुकरण करें। यही हम सभी के लिए श्रेयस्कर होगा।

अध्यक्ष महोदय, मैं यहां एक और बात कहना चाहूंगा और वह यह है कि चन्द्रयान-तीन की सफलता में देश की नारी की शक्ति के योगदान की मैं यहां पर चर्चा करूंगा। पूरा सदन अच्छी तरह से जानता है कि इस मिशन में महिला वैज्ञानिकों का भी बहुत बड़ा एवं महत्वपूर्ण योगदान है। अगर यह मिशन इतना सफल हो पाया है, तो इसके पीछे हमारे देश की नारी शक्ति का समर्पण, उनका त्याग और राष्ट्र को नई पहचान देने की उनकी तमन्ना रही है। संसद का यह विशेष सत्र नारी शक्ति वंदन विधेयक को समर्पित सत्र है। इसलिए मैं इसकी चर्चा कर रहा हूँ।

मैं ऐसे में नारी शक्ति वंदन विधेयक को इसरो की महिला वैज्ञानिकों और उनके साथ भारत की पूरी फीमेल साइंटिफिक कम्युनिटी को कृतज्ञ राष्ट्र की ओर से मैं प्रस्तुत इस नारी शक्ति वंदन विधेयक को उपहार के रूप में देखता हूँ। यह सदन और राष्ट्र इसरो की महिला वैज्ञानिक और हर भारतीय बेटों को नमन करता है, उनकी सराहना करता है और उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है।

अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी बातों को यहां विस्तार रूप से रखना चाहूँ तो यह है कि चंद्रयान-3 की सफलता कोई एक्सेप्शन नहीं है, यह कोई अपवाद नहीं है, यह सहस्राब्दियों से चली आ रही हमारी सामाजिक, हमारी सांस्कृतिक और वैज्ञानिक धारा का एक स्वाभाविक और सहज रूप से विकास है। इस सफलता के सूत्र हमारे अतीत में ही छिपे हैं। ऐसा अतीत, जहां वैज्ञानिकता हमारे यहां एक स्वभाव के रूप में विद्यमान थी, जहां विज्ञान और आस्था के बीच एक पूर्ण सामंजस्य था।

हालांकि, विदेशी आक्रांताओं के चलते कुछ समय के लिए थोड़ा पिछड़ापन आ गया था, लेकिन हम एक बार फिर से हुंकार भरते हुए पहले से भी अधिक ताकत के साथ उठ खड़े हुए हैं और हम सूरज, चांद, तारे छूने के लिए तैयार हैं और वहां पहुंच रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय, जिस देश में बुद्धि के देवता श्री गणेश प्रथम पूज्य हों और हम ओम श्री गणेशाय बोलकर ही कोई काम प्रारंभ करते हैं। जहां विद्या की देवी सरस्वती प्रथम आराध्या हो, वह देश तो स्वाभाविक रूप से साइंटिफिक टेम्परेमेंट को आत्मसात करते हुए सदैव एक नॉलेज सोसायटी रहा है। हमारे यहां कहा गया है – 'तेजस्विनावधीतमस्तु', यानी, *may what we study be resplendent*, की प्रार्थना करने वाले भारतीयों को सिर्फ चंद्रयान तक ही नहीं रुकना है, बल्कि इसके आगे जाना है। अभी अंतरिक्ष में अनेक लक्ष्य हमारा इंतजार कर रहे हैं। अभी हम भारतीयों को कई मानदंड यहां स्थापित करने हैं। मैं अपने वैज्ञानिकों के कामयाबी की एक-दो चर्चा करके अपनी बात यहां समाप्त करना चाहूंगा। हमारे वैज्ञानिकों का करिश्मा देखिए कि भारत द्वारा अब तक लांच किए गए 424 विदेशी उपग्रहों में से 389 प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार के पिछले 9 वर्षों में लॉन्च किए गए हैं। विदेशी उपग्रहों के सफल प्रक्षेपण के साथ भारत का अंतरिक्ष क्षेत्र दुनिया में बहुत तेजी से एक प्रमुख स्थान हासिल कर रहा है। भारत द्वारा अब तक लांच किए गए 424 विदेशी उपग्रहों में से 389 प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी नेतृत्व वाली सरकार के पिछले नौ वर्ष में लॉन्च किए गए थे। इसके अलावा 174 मिलियन अमेरिकी डॉलर में से 157 मिलियन अमेरिकी डॉलर की कमाई पिछले 9 वर्षों में हुई। इसी तरह से अब तक की अर्जित 256 मिलियन यूरो में से 223 मिलियन यूरो मोदी शासन के पिछले 9 वर्षों के दौरान आए हैं। मैं यह भी सदन की जानकारी में लाना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय, मैं एक बार फिर अपने वैज्ञानिक समुदाय को बधाई देता हूं और आशा करता हूं कि जल्द ही हम आगे नए मिशनों को भी अंजाम देंगे, ऐसा मेरा पक्का विश्वास है और समस्त देशवासियों का भी विश्वास है। अभी तो यह शुरुआत ही है, आने वाले समय में हमारा हाथ मंगल और शनि तक भी पहुंचेगा और हमारा देश वहां भी अपना परचम लहराएगा, जहां अब तक कोई नहीं पहुंच

पाया है। मैं इन्हीं शब्दों के साथ अपनी वाणी को विराम देता हूँ और सदन की ओर से राष्ट्र के वैज्ञानिकों को नमन करता हूँ।

DR. SHASHI THAROOR (THIRUVANANTHAPURAM): Thank you very much, hon. Speaker.

I am honoured really to stand before this House and to speak on behalf of my party on a matter of great pride for Indians everywhere in the world about the success of our lunar mission Chandrayaan-3. According to the topic you have given us in the Revised List of Business, it is “Success of Chandrayaan-3 mission and other achievements of our nation in the space sector”. I think my respected friend, Shri Rajnath Singh, treated us to a lecture on a slightly different subject. On 23rd August, we scripted history as our unmanned moon mission’s lander module made a flawless soft landing making us only the fourth country to achieve this feat and the first to reach the uncharted South Pole of Earth’s only natural satellite, the moon.

12.00 hrs

It is fitting, Sir, there is a view proposed that we observe August 23rd as National Space Day in future. How far we have come since the late 1950s when a classic photograph by Henri Cartier-Bresson showed Indian rocket parts being transported on the bullock cart. Let me take you back nonetheless to when our nation’s scientists led by Dr. Vikram Sarabhai began to develop the contours of India’s national space programme in the early 1960s. Back then, the coastal village of Thumba in the outskirts of Thiruvananthapuram was identified as an

ideal location given its latitude and natural geological features to allow for rocket launches and allied research.

Imagine, friends in this House, a sleepy village with golden beaches and palm-fringed coconut trees populated largely by an overwhelmingly Catholic community of fisher folk. The catch, however, was that the community of scientists had identified a piece of an area of land which housed in Thumba the St. Mary Magdalene Church and the residence of the Bishop himself Peter Bernard Pereira, his own official residence. Now, any other community or any other part of the world even, the matter might have been put to rest right there. After all, the idea, the thought of displacing an active spiritual establishment would certainly have evoked outrage and fury, especially in today's India. But in this relatively obscure part of India, in Thiruvananthapuram, where a decision of national importance and scientific progress presented itself, the community chose to make a remarkably patriotic choice, a choice for development and progress.

When initial conversation with politicians and bureaucrats made little headway, something special happened. One day, when Bishop Pereira was sitting in his little office in church, he had a knock on the door. He said, 'Who is this?' A man in a white suit came and said, 'I am Dr. Vikram Sarabhai.' Dr. Sarabhai explained the importance of this area to India's scientific research and space. The Bishop understood the proposed mission of the scientists and he told Dr. Sarabhai, 'Come to my church on the following Sunday.' So, during the Sunday service, Dr. Sarabhai was there and Bishop Pereira presented a proposition before the congressional. He said, 'My children, I have a famous

scientist with me who wants our church and the place I live in for the work of space science research.' He said, 'Dear children, science seeks truth by reasoning. In one way, science and spiritualism seek the same divine blessings for doing good to the people. My children, can we give God's abode for a scientific mission?' The answer from the congregation was quite literally a resounding "Amen". The church and the Bishop's house as well as other neighbouring inhabited areas were handed over without protest to Dr. Sarabhai and his team.

Thus was established in 1962, the Thumba Equatorial Rocket Launching Station or TERLS, which would later be renamed Vikram Sarabhai Space Centre after the death of the legendry Dr. Sarabhai nine years later. A year after TERLS was established, India launched its first two-stage rocket, our first foray into space from Thiruvananthapuram. As our late President Dr. APJ Abdul Kalam, who was part of the original launch team in 1963 and he went on to work from the church building himself, he wrote later looking back at this remarkable episode.

Today, among us, Prof. Vikram Sarabhai is not there, Rev. Dr. Bernard Peter Pereira is not there but those who are responsible for the creation and make the flower blossom will themselves be a different kind of a flower as described in the Bhagwat Gita. He quotes the Gita, 'See the flower, how generously it distributes perfume and honey. It gives to all, gives freely of its love. When its work is done, it falls away quietly. Try to be like the flower unassuming despite all its qualities.'

12.04 hrs(Shri Rajendra Agrawal *in the Chair*)

That is what a lot of ISRO's foundations have been, unassuming, but with the power to change the world. One of the world's oldest and most ambitious, it rose from the Physical Research Laboratory, established in Ahmedabad in 1947, the year of our Independence and the brutal partition with Pakistan.

Our visionary first Prime Minister Jawahar Lal Nehru then created the Indian National Committee for Space Research or INCOSPAR marking our country's official entry into space exploration. This Committee was setup on the recommendation of the Scientific Advisory Committee to the Cabinet for the promotion and exploration of space and its utilisation for peaceful purposes, a Committee led by the legendary Homi Bhabha. Then, in 1962, as we have seen, TERLS was established. On 15th August, 1969, on our 22nd Independence Day, under the trusted guidance of Vikram Sarabhai INCOSPAR and TERLS became the Indian Space Research Organisation (ISRO) giving Indian space science a developmental boost.

There was a tragic set back, as I mentioned when Dr. Sarabhai died suddenly of a heart attack at the age of just 52. Dr. Satish Dhawan, the Head of the Indian Institute of Science in Bangalore was invited by then Prime Minister Indira Gandhi to lead the organisation because she knew that the vision and legacy of Vikram Sarabhai could only be fulfilled by someone like Dhawan. He accepted the invitation though on a condition that the Headquarters be shifted to Bangalore and guided ISRO as a leader who is still admired by many.

In July of 1979, our first Satellite Launch Vehicle failed, and Mr. Dhawan, an exemplary leader, took responsibility for it. He gave a statement saying: “Dear friends, we have failed today. I want to support my technologists, my scientists, my staff, so that next year they succeed”. The very next year, they did succeed. This is ISRO’s history. Every setback became a stepping stone to greater success.

We Indians are proud of our space programme for good reason. Since then, ISRO has undertaken missions to the Moon -- Chandrayaan – I, II and III, and the failure of Chandrayaan - II became a stepping stone to the success of Chandrayaan – III; to Mars -- the Mangalyaan Mars Orbiter Mission; and we have created our own launch vehicles and satellites. Moreover, of course, as the Speaker has said, India has launched the solar observatory Aditya-L1 this month and aims to put two or three people into low Earth orbit by the end of this year to emulate the legendary Rakesh Sharma who orbited the planet on a Soviet spacecraft in 1984.

Notably, Indian space research is the only programme which has been a civilian programme from the very beginning. We have focussed on the development angle like the use of space for rural development, weather forecasting, and communication in addition to high-end research. This is just the beginning. India’s space programme is set, literally to sky-rocket. Experts predict that India could account for at least 10 per cent of the global space economy in the next decade, up sharply from two per cent currently.

India's space programme bolsters our development having made important contributions even in seemingly unrelated areas such as disaster management, education, healthcare, agriculture, fisheries and urban planning. Moreover, it serves India's global diplomacy as well enhancing our credibility and influence. Those who once scoffed at the idea that a poor developing country aspired to send rockets into space must concede that India is now a technological force to be reckoned with in the world.

To my mind, there is yet another sterling triumph within India's Chandrayaan moment. It has become a good occasion to recognise the alumni of unsung engineering colleges everywhere in India. Indians are rightly and justifiably obsessed with the IITs, but Chandrayaan-3's landing -- especially four years after failure of Chandrayaan-2 -- was attributed to many scientists from far less glamorous educational backgrounds. While the ISRO Chairman, S. Somanath is a product of TKM College of Engineering in Kollam represented by my friend Premachandran, at least eight of his other colleagues graduated from the College of Engineering (CET), Thiruvananthapuram.

Somanath's institution was founded in 1956 by a successful Muslim cashew merchant, Thangal Kunju Musaliar abbreviated soon enough to TKM and has gone on to establish a stellar local reputation.

CET in my constituency, established in 1939 as the first engineering college in the then Travancore State, retains its record and repute as the premier engineering college in the State of Kerala. You may guess. At least, seven more engineers from CET were involved in the Chandrayaan-3 success and there were

other alumni from small engineering colleges of Tamil Nadu and from small towns throughout India. We have had graduates of these small colleges contributing to ISRO. Let us face it. Yes indeed, in the first launch, it was Dr. Abdul Kalam. We must proudly salute these alumni of these unsung engineering colleges who serve the public sector with dedication and are the backbone of national enterprises like ISRO. As I wrote on social media at that time, "If IITians went to Silicon Valley, CETians took us to the moon".

I would also like to point out that many of the stalwarts in our space programme have been women scientists and engineers. Some 20 per cent of ISRO's key personnel are women and as women increasingly excel in science and technology studies, this number may only go up. Unlike in our Parliament and Legislative Assemblies, they would not need reservations either.

I can tell you this from experience of addressing many convocations. I have been giving away prizes in many convocations of science and technology and engineering colleges – I am in favour of reservations though – that even when the women students are all minority, maybe, 20-30 per cent of the student body, they are 90 per cent of the medal winners, prize winners, and all other winners. This is becoming increasingly a women's field and we will all be the better for it.

Now, the only thing that disappoints me today is that some in the Government seek to make this their moment to bask in glory, and polarise the country by speaking as if all space endeavours began only in 2014; first in the ancient years of the Vedas and then in 2014. That is what we hear. The truth is that our space successes are a consequence of continuity in our national

governance and what has been achieved today stands on the shoulders of many past achievements as I have described to you with my stories earlier. Any mature democracy would recognise that grooming the brilliance of our scientists, developing infrastructure, R&D and global synergies on technology cannot be achieved unilaterally by any one Government. This is the achievement of successive years of making the right governance choices. For example, we have heard so much about Aditya L1 Mission which began in 2006. It took seventeen years to be conceived, planned, executed, and finally launched this year. Thus, the Chandrayaan triumph is truly pan India, across the political divide; it does not belong to any person or any one party. If we all came together yesterday to affirm the solidarity for the women's reservation Bill, let us also come together to recognise the collective contributions of all the Governments in bringing glory to India's space endeavour.

After all, who can deny that India owes its remarkable progress in space exploration in large part to Pandit Nehru's dedication to developing a scientific temper amongst the Indian people, his understanding of technology's role in national development and his faith in the country's scientists. India was indeed beset by poverty, illiteracy, food insecurity, and disease. Nehru ji knew that it must and could aim for the stars. We did not have much money and we relied on ourselves – Nehru's doctrine of self-reliance. Though he did not use the word *Atmanirbharta*, the concept was there. Within very tight budgetary constraints, he had an enduring influence in India's space programme exemplified by ISRO's decision even in this Chandrayaan-3 to take a slower and fuel-saving approach to

the moon. Both Mangalyaan and Chandrayaan-3 were the least expensive ventures of their kind costing about a tenth of equivalent NASA missions. They cost even less than Hollywood depictions of space. Mangalyaan cost less than the Hollywood film 'Gravity' and Chandrayaan-3 cost less than 'Interstellar'. The shoestring budget was only Rs. 615 crore. It was also much cheaper than the expenditure on G-20. This is not just a small fraction of what the US spent, but not even a third of China's budget for its own Moon mission. ISRO's last forty years' spending is equivalent to NASA's six months of expenditure.

That is the history we have to understand. But they should not be punished for it. I am looking at my good friend Jitendra Singh there. The Department of Space's budget has shockingly been slashed by eight per cent, down to Rs. 12,543 crore from Rs. 13,700 crore that we were all presented in the Budget Estimates. The cuts are highest in space technology including the human spaceflight centre as well as developmental and operational projects involving satellite launch vehicles. And in space science, including space missions, it has been cut by 32 per cent. Why? NASA has been allocated USD 25.4 billion in 2023, and ISRO has the equivalent of USD 1.5 billion. That is the situation. Our Government needs to be more generous.

Now, I want to stress that ISRO's strengths extend well beyond frugality. With Chandrayaan-3, India has also demonstrated familiarity with the major types of interplanetary spacecraft, orbiters, landers and rovers. The Chandrayaan-3 rover is rudimentary, but it speaks to an important focus area for the Indian space programme, the planning and implementation of high-tech scientific missions. The

data from Chandrayaan-3's scientific instruments will be crucial because the mission will be the first to physically, chemically, and thermally characterise the soil, subsoil, and air near the moon's South Pole on location. No other country has done this. India has some measure of technological superiority now compared to most of the space-faring countries, and it should press the advantage by going to more places in the solar system. And of course, We must conduct stellar science.

The better space-based scientific instruments currently operated by India are largely concerned with earth-observation and remote sensing. With a focus on indigenous development of technologies and techniques, we have become a premier manufacturer of both launch vehicles and satellites and a sought-after provider of low-cost launch services to other countries. Our Polar Satellite Launch Vehicle with 24 successful flights has a proven track record. The world record, the launch of 104 satellites in one go has already been applauded by the hon. Speaker. So, we have all of this to talk about.

Chandrayaan-3's success strengthens the confidence with which India faces the world. The country has spent the year, as we all know, presiding over the G-20, and as has been pointed out by my colleague, we spent much more on it than we did on ISRO or on the Chandrayaan Mission. But it is an influential voice for the Global South. This adds to our prestige in our cloud. We are also playing leading roles in other international bodies. How these relationships and India's global role generally and more broadly will evolve remains to be seen. We are having unfortunate controversies going on this week with Canada. But

nonetheless, the country's achievements in space undoubtedly strengthen our diplomatic hand, not least because of the respect they inspire in other countries. ... (*Interruptions*) I will just take two or three minutes.

The foreign countries that have used India's space programme to launch their own satellites and benefit from space co-operation include France, a space partner since 1964, which has supported India's development of launch vehicles, satellites, applications and human spaceflight, and has also launched several satellites using our PSLV and GSLV. Russia, another long- time collaborator on various aspects of space exploration including some of these same things supplied key components for the crew module of Gaganyaan; and the US, with which India has a strategic partnership in space, covering areas such as earth-observation, satellite navigation, space science, planetary exploration, launch services and human spaceflight. So, France, Russia and US are all involved with us.

ISRO tells that India has pursued bilateral and multilateral relations with space agencies and space-related bodies with the aim also of strengthening existing ties with these countries, taking up new scientific and technological challenges, refining our space policies and defining international frameworks for exploitation and utilisation of outer space for peaceful purposes. This is the diplomatic strength I am talking about. The US, Israel, Singapore, Canada, Germany, Indonesia, Japan, Luxembourg, the Netherlands, South Korea, the UK have all launched their satellites using our Indian PSLV and GSLV.

As a result, the Government has earned \$174 million from these launches alone. It is all the more a pity that our Government has trimmed the budget for space education and research between last year and this one, even though on the whole, our expenditure on space has gone up. Educating the next generation of Indian space pioneers – I know that Jitendra ji will tell us about that – ought to receive more funding.

I will conclude by recalling the proud moment when India's lander touched down on the Moon and Prime Minister Narendra Modi wisely resisted parochial triumphalism of the kind we have seen later, and hailed the achievement as a victory for all of humanity. But he also correctly noted that the achievement mirrors the aspirations and capabilities of 1.4 billion Indians. By showcasing its technological prowess, India's space program reminds the world not only of our innovative capabilities, but also of our capacity to help shape solutions to global challenges in other areas, from cyberspace regulation to peace-keeping. Looking up at the sky after Chandrayaan-3, Indians can contemplate a glorious global future. We are showing the world that India can be a standard-setter, rather than just a follower of rules made by developed countries.

New horizons beckon, for the world is now our canvas! Or should I even say, the whole universe? Jai Hind. ... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Do you want to say something?

... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: We are on the Moon now.

... (*Interruptions*)

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY (SHRIMATI ANUPRIYA PATEL): Have some patience. It is not my speech.... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: She is a Member also.

... (*Interruptions*)

SHRIMATI ANUPRIYA PATEL: Sir, I just want to intervene for a minute. It is just an intervention. Have patience. It is something very important.

I want to make an observation. Dr. Shashi Tharoor ji, you know he is a very learned and senior Member. It is very enriching to listen to his ideas, every time he participates in the debate. So, he said a lot of good things. But I did not want to disrupt him in the middle of his speech. But I hope I heard him correctly. He said something in between which I do not much agree to. So, he mentioned, if I heard him correctly, I will repeat, that there are lots of women, there are lots of girls who are entering the field of science and technology. Hopefully, we would see many of them working under our space programmes. So, unlike our Parliament, they would not need reservation to be a part of the space programmes. I do not much agree to this. It is not very appropriate. ... (*Interruptions*) Please, it is in a healthy light. ... (*Interruptions*) Listen to me; let me complete. ... (*Interruptions*) Just yesterday, we passed a very historic Bill providing reservation to women inside the Parliament. ... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Shri A. Raja.

... (*Interruptions*)

SHRIMATI ANUPRIYA PATEL: So, it does not sound very appropriate. ...

(Interruptions)

माननीय सभापति : अब आप बैठ जाइए ।

... (व्यवधान)

माननीय सभापति : श्री हैबी ईडन जी, आप बैठ जाइए । इस ढंग से यह डिबेट तो नहीं चल सकती है।

... (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: No, please sit down.

... *(Interruptions)*

SHRI ADHIR RANJAN CHOWDHURY : Sir, I think, she has failed to understand

... *(Interruptions)*

माननीय सभापति : आप बैठ जाइए ।

... (व्यवधान)

SHRIMATI ANUPRIYA PATEL: Sir, your Party has supported this very historic Bill which means you agree to the idea of providing reservation to women ...

(Interruptions)

माननीय सभापति : आप अपनी बात बाद में कह लीजिएगा । आप बैठ जाइए ।

... (व्यवधान)

माननीय सभापति : श्री थरूर जी, आप प्लीज बैठ जाइए ।

... (व्यवधान)

माननीय सभापति : श्री अधीर रंजन जी, आप बैठ जाइए ।

... (व्यवधान)

माननीय सभापति : मैडम, आप भी बैठ जाइए ।

... (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: Nothing is going on record now.

... (*Interruptions*) ...*

माननीय सभापति : श्री अधीर रंजन जी, आप बैठ जाइए।

... (व्यवधान)

माननीय सभापति : श्री थरूर जी, आप क्या कहना चाहते हैं?

... (व्यवधान)

DR. SHASHI THAROOR: Sir, I would like to clarify – since the hon. Minister is also a good friend – that she appears to have misunderstood the thrust of my remarks. I would like to clarify that I meant no disrespect to either women in general or the very many hon. women in this House who have been elected without any benefit or reservation for all these years. We have said that we need reservation because the numbers are not enough. That is why we passed the Women's Reservation Bill yesterday. I am saying that in science and technology, we already have 20 per cent women in ISRO, and the numbers are going up. That is my point.

माननीय सभापति : माननीय मंत्री जी, क्या आपको कुछ कहना है?

... (व्यवधान)

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY, MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF EARTH SCIENCES, MINISTER OF STATE IN THE PRIME MINISTER'S OFFICE, MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PERSONNEL, PUBLIC GRIEVANCES AND PENSIONS, MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT

* Not recorded.

OF ATOMIC ENERGY, AND MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF

SPACE (DR. JITENDRA SINGH): Hon. Chairperson, Sir, we need not carry this further because I am very sure, and I trust my friend, that Shashi ji has never been anti-women. ... *(Interruptions)*

HON. CHAIRPERSON: Yes, now, Mr. A. Raja.

... *(Interruptions)*

HON. CHAIRPERSON: It should be in good humour always.

... *(Interruptions)*

SHRI A. RAJA (NILGIRIS): Mr. Chairperson, Sir, I must express my gratitude for inviting me to speak on this important issue. ... *(Interruptions)*

माननीय सभापति : चंद्रमा पर इतना हल्ला-गुल्ला नहीं होना चाहिए ।

... (व्यवधान)

माननीय सभापति : अधीर जी, आप प्लीज बैठ जाइए ।

... (व्यवधान)

माननीय सभापति : चंद्रमा शांति और शीतलता का प्रतीक है, इसलिए इतना हंगामा नहीं होना चाहिए।

... (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: Now, Mr. A. Raja.

Only Mr. A. Raja's speech is going on record.

... *(Interruptions)*

SHRI A. RAJA: Sir, how can I speak? ... *(Interruptions)*

HON. CHAIRPERSON: You can now speak.

SHRI A. RAJA: The House must come in order. ... *(Interruptions)*

माननीय सभापति : आप सब प्लीज बैठ जाइए । You are not helping the Chair.

... (*Interruptions*)

माननीय सभापति : आप सब प्लीज बैठ जाइए ।

... (व्यवधान)

माननीय सभापति : आप प्लीज बैठ जाइए, यह अनावश्यक है ।

... (व्यवधान)

SHRIMATI SUPRIYA SADANAND SULE (BARAMATI): Hon. Chairperson, Sir, what is this? They do this every day. ... (*Interruptions*) Yesterday also, same thing happened. राकेश सिंह जी, देखिए, अभी डिबेट भी शुरू नहीं हुआ है । ... (व्यवधान) राकेश सिंह जी, आप लीड कीजिए । ... (व्यवधान) He has not even started speaking. The Chair should give us protection. ... (*Interruptions*) What is this? ... (*Interruptions*) They do this every time. ... (*Interruptions*)

SHRI A. RAJA(NILGIRIS): Hon. Chairperson, Sir, I must express my gratitude for granting me this opportunity to say a few words on Chandrayaan-3.

Sir, of course, I decided not to speak because of my health, more specifically my throat is not cooperating with my voice. However, having heard the speech which was delivered by hon. Defence Minister, Shri Raj Nath Singh ji, I am constrained to stand for a few minutes before this august House.

Hon. Chairperson, Sir, yesterday, the hon. Prime Minister was very magnanimous when he said that no one can claim exclusive credit for Chandrayaan-3; these are the common efforts and endeavours put by the team of our scientists with political and scientific will. In spite of that, we must be very magnanimous on behalf of DMK in saying that the role of the Prime Minister or

this Government in bringing this Chandrayaan-3 cannot be undermined. We want to wish and greet the Government.

Hon. Chairperson, Sir, I will now come to the latter part. Once universe and galaxy were treated as a riddle for mankind. In 1950s, various countries including the USA used to send satellites to the moon and other planets. Thereafter, came Russia and China. No doubt, India has got an exalted position today because Chandrayaan-3 has been launched and smooth landing has been effected.

Hon. Chairperson, Sir, the parity which we claim today along with America, Russia and China will give a message that India is second to none in space research hereafter.

Sir, between 1957 and 1958, when Soviet Union launched Sputnik 1, Sputnik-2 and Sputnik-3, the US launched Alpha. Pandit Jawaharlal Nehru shared this news in the Parliament that this is new age, "age of Sputnik".

I must share in this House that Tamil is one of the classical languages recognised by the world and also by the Government. Sir, Tamil has deep-rooted scientific measures in the literature. The hon. Defence Minister said that Sanskrit is having such a tremendous potential in science. I am not defaming any language. Admittedly, this country is having two cultures based on the Tamil and Sanskrit. Shri C.P. Ramaswami is a known educationist, who served as the Vice-Chancellor and later as Diwan of Travancore. Shashi ji may be well aware about his knowledge and prose. He admitted that there are two cultures in the country. One is headed by Sanskrit by way of Aryan culture and one is Tamil on the basis of Dravidian culture.

Having heard this from the Defence Minister, now, I am entitled to say what Dravidian and Tamil language says about the science. You cannot imagine this. I read Tolkappiyam. About 3500 years back, nobody will believe, it said that this country was not created by a single man; this country was produced by evolution of science. How? *Nilam, neer, thee, vali, visambodu kalantha ayindhin mayakkam ivvulagam*. What does this mean in English? Sir, there is a metabolic change out of water, land, fire, air and space which we call Pancha Bhudhas. The entire earth is made up of these Pancha Bhudhas. You cannot create a new thing. Today, this new building has come up. Does it mean to say that Delhi's weight has gone up? No, for this bench, somewhere else a tree has been cut of. After 2500 years, this was scientifically put in a proper phrase by Newton that the weight of the universe is constant.

Three hundred years back, Newton said that the weight of the universe is constant, whereas 3500 years back, Tolkappiyam said, *Nilam, neer, thee, vali, visambodu kalantha ayindhin mayakkam*, metabolic change of water, land, space and everything. Are we not entitled to feel pride that it was said 3500 years back?

HON. CHAIRPERSON: Yes, we should be.

SHRI A. RAJA: Everybody believed that the earth is static and other planets are revolving around the Sun. It was believed even by the Christianity, even by the Hindus and even by the Islam. But 2000 years back, Thiruvalluvar said '*suzhandrum erpinnathu ulagam, adhanal uzhandhum uzhave thalai*'. Thiruvalluvar said the earth is revolving 2000 years back at the behest of agriculture and at the behest of ploughing. This is the science.

Sir, Bharathiyar said '*vaanai alappom, kadal meenai alappom, Chandra mandalathai kandu thelivom*'. What does this mean? We will measure the Space. Poet Bharathiyar who is a scholar in Sanskrit said in Tamil, we will measure the Space, we will measure the sea and fishes and also the ocean, We will study and do research on the Moon which will benefit the mankind. These are all in the Tamil literature. You cannot find fault with the Tamil literature with regard to the science. You cannot show one incident to say that the Tamil language is travelling against the science.

Sir, Bharathiyar was a leading Tamil and Sanskrit scholar. Inspite of that, when the science comes, he did not stick to mythological beliefs.

Sir, today I feel proud to be a student of Dravidian school of thought, It was designed by Periyar EVR, articulated by Dr. Annadurai, and came to power with dedication our respected leader Kalaingar Karunanidhi, Along with them, today the number one Chief Minister of Tamil Nadu hon. Muthuvel Karunanidhi Stalin, we welcome the measures that are taken by the Government to put the Chandrayaan in the correct orbit.

By putting Chandrayaan in the correct orbit, the mythological illusion has been removed. That is the success of the Dravidian concept. At this hour, I must extend my congratulations to all the scientists involved in the scientific team on space and more specifically to the contributions of Tamilians, that is, Shri Mayilsamy Annadurai in Chandrayaan-1, Shri Sivan in Chandrayaan-2 and Shri Veeramuthuvel in Chandrayaan-3. We are proud of these scientists. They did not even study in private schools and private colleges. They belong to OBCs and

very ordinary families. They belong to ordinary gullible mass and studied in government schools. In spite of that, they have contributed to such a level that India has reached the moon. It is not due to the contributions made by students from convent schools or any other exalted institutions abroad but from government colleges and schools. They did not know Hindi and Sanskrit. They know only Tamil and English. In spite of that, they have reached such an exalted position.

I would like to look at the history of space and research since 1952. My friend, Shri Shashi Tharoor rightly said that Indian National Committee for Space Research (INCSR) was set up by Pandit Jawaharlal Nehru under the Chairmanship of Vikram Sarabhai and it was later renamed as ISRO.

Sir, I am disturbed about one thing. When such a remarkable phenomenon has taken place and the nation feels proud, we must introspect on other modes of thoughts and views.

I heard the Defence Minister very patiently. I recalled from my memory and checked things up with documents in the Parliament just an hour back. In 2004 when I was in my 30s, I was Minister of State for Health in the Council of Ministers headed by Shri Vajpayee. He is known for protecting raj dharma in politics. At that time, a motion moved by hon. Member, Shri Jaipal Reddy of Andhra Pradesh, a veteran leader in Congress. The motion was to drop three Cabinet Ministers from the Cabinet. One of the persons whom he named was Dr. Murli Manohar Joshi, the then Minister of HRD. The motion was moved by Shri Jaipal

Reddy and the House heard him in rapt attention. Dr. Murli Manohar Joshi was there. Shri Atal Behari Vajpayee was there. Shri Jaipal Reddy said:

“I have always regarded Dr. Murli Manohar Joshi as a genius scholar. But my philosophical problem with him is that he has confused history with mythology, philosophy with theology and astronomy with astrology.”

He further said that Mr. Joshi wanted to change the syllabus and wanted to give a safer syllabus for his students. He said: “I am entitled to call you in the House that you are a textbook terrorist.”

Sir, no doubt I was part of the BJP Government then. The reason is something different and this is not the place to elucidate it.

HON. CHAIRPERSON: Nothing is different. Allies keep changing.

SHRI A. RAJA: Sir, the accusation that was made by Mr. Murli Manohar Joshi still continues as per the words of the Defence Minister, Shri Rajnath Singh. There is no doubt that the Government has done a great job. When satellites were successfully launched by America and Russia, Prime Minister, Pandit Nehru wrote to a letter. Please note that India was not able to send the satellites. In spite of that, the Prime Minister wrote a letter to all the Chief Ministers as “Intrusion of man into outer space”. This is very important. The letter further says:

“ In our narrow world, we are entangled with all kinds of rivalries in the name of caste, creed and religion and national conflicts which have no meaning in this new age of science and space.”

Sir, when Chandrayaan was sent to the moon, naturally your mind and heart must enlarge. However, I feel with all sincerity, that on the one side you are sending Chandrayaan to space and on the other side, your heart and brain are going down. This is contradictory.

My senior leader Shir T.R. Baalu is here. Sethusamudram Project was a dream project for us. * ... (*Interruptions*) It is very painful... (*Interruptions*)

डॉ. निशिकांत दुबे (गोड्डा): सर, मेरा पॉइंट-ऑफ-ऑर्डर है ।... (व्यवधान)

माननीय सभापति: क्या पॉइंट-ऑफ-ऑर्डर है?

Shri Raja, some Point of Order is there. It should be heard.

डॉ. निशिकांत दुबे: सर, भारत के संविधान का अनुच्छेद-25 यह कहता है कि कोई भी आदमी किसी भी धर्म को मानने के लिए स्वतंत्र है और किसी आदमी को यह आज़ादी नहीं है कि वह उसके धर्म के ऊपर, आस्था के ऊपर अटैक करे ।... (व्यवधान)

महोदय, यह भारत का संविधान कहता है ।... (व्यवधान) ये बार-बार हमारे ऊपर अटैक कर रहे हैं । हम सनातन धर्म को मानते हैं, हम हिन्दू हैं और आपको हमारे ऊपर अटैक करने का कोई अधिकार नहीं है ।... (व्यवधान)

माननीय सभापति : ठीक है, इसे देख लेंगे ।

... (व्यवधान)

माननीय सभापति : आप लोग बैठ जाइए ।

HON. CHAIRPERSON: Shri Raja, now please continue and be careful. Sometimes, mythology and history are mixed with each other. They cannot be separated altogether. Please take care of those things.

SHRI T. R. BAALU (SRIPERUMBUDUR): He should withdraw his Point of Order.

* Expunged as ordered by the Chair.

HON. CHAIRPERSON: His point is taken here. Shri A. Raja, please continue. We should be careful. I am repeating the words. Sometimes, mythology and history are mixed with each other.

... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: In our country, it is a tradition to tell the history through mythology.

SHRI A. RAJA: Sir, without any reservation and cutting across the political parties, we are ready to shower encomiums upon this Government and the Prime Minister. There is no doubt about it. But am I not entitled to talk about the other side also?

Chandrayaan 3 was landed very successfully on the Moon. No doubt, we are celebrating it. The world should know where India is going as the fourth super power after USA, Russia and China. I am also an Indian and I am having my own pride towards the country and towards the Prime Minister.... (*Interruptions*)

But my heart is bleeding. On one side, the Prime Minister is jubilant for Chandrayaan 3; and on the other side, the Prime Minister was very proud to launch Vishwakarma Scheme. For what purpose? You want to launch the scheme to enslave a barber of 18 years old to be a barber forever, to enslave a shoemaker to be a shoemaker forever, to enslave a goldsmith to be a goldsmith forever, to enslave a carpenter to be a carpenter forever... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Please come to the topic of Chandrayaan only. Viswakarma Yojana is not to be discussed here.

... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: There could be different interpretations. Shri Raja, please do not go into those details.

SHRI A. RAJA: Sir, the advertisement has appeared in the newspaper...
(*Interruptions*) You can see the photographs... (*Interruptions*) A man is making a shoe...(*Interruptions*) A goldsmith is working... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: No, Shri Raja, it does not mean like that.

... (*Interruptions*)

SHRI A. RAJA: Sir, let me complete first.

Nehru's political and scientific temper was assessed by David Mitchell.

He said: "The arrival of humanity on the moon was interpreted by Nehru as an opportunity to emancipate humanity in general and India in particular from the shackles of superstition impeding progress and advancement in scientific and technological fields."

How are we viewing the Chandrayaan? It is not a mere scientific glory; you should give equal sociological effect to the common people to maintain equality and to make science accessible to everybody.

Finally, Sir, I plead the Government should not to give any unscientific colour to Chandrayaan. Countries like America, USSR, and China did not do that. ... (*Interruptions*) Please, put the name Vikram Sarabhai on Chandrayaan-3 mission. ... (*Interruptions*)

PROF. SOUGATA RAY (DUM DUM): Sir, I rise to speak on the success of Chandrayaan. ...(*Interruptions*) I congratulate Shri S. Somanath and all the scientists of ISRO. ... (*Interruptions*)

माननीय सभापति : माननीय सदस्य सुनिए, आपकी कोई भी बात रिकॉर्ड में नहीं जा रही है। आप बैठ जाइए।

... (व्यवधान)

माननीय सभापति : आपको बोलने का अवसर मिलेगा।

... (व्यवधान)

माननीय सभापति : बिधूड़ी जी, आप बैठ जाइए। जब आपको अवसर मिलेगा, तब आप अपनी बात कहिएगा, अपना तर्क रखिएगा। अभी जो बात कही जा रही है, आप उसको सुनिए।

... (व्यवधान)

PROF. SOUGATA RAY: Sir, I congratulate Shri S. Somanath and all the scientists of ISRO. ... (*Interruptions*) I want to mention that there are many scientists from Bengal in the Chandrayaan Project. ... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: There are scientists from Bengal, Tamil Nadu, Kerala, and other States but they are all Indian scientists. Dada, you know the delicacies of things.

... (*Interruptions*)

माननीय सभापति : आप बैठ जाइए। He does not need your support. Sougata da, every scientist from any region or any part of India is an Indian scientist.

... (*Interruptions*)

PROF. SOUGATA RAY: When we were watching Chandrayaan's soft landing on the moon on TV, we saw the Chandrayaan and then suddenly the Prime Minister's photograph came. The whole country wanted to see the soft landing of Chandrayaan and they saw the Prime Minister's photograph. Why should this happen? The Mission Chandrayaan is not the result of one particular individual'

effort, it is the result of 50 years of scientific work done by hundreds of scientists throughout the country.

Sir, I was very pleased to hear Rajnath Singh ji who spoke on scientific temperament. The man who spoke of scientific temperament in this country was Jawaharlal Nehru. Scientific temperament means, you do not accept anything without experiment and logic. Science is knowledge which is certain and systematic. I am, like Rajnath Singh ji, a former professor of physics. But in my physics, while speaking on Chandrayaan, I do not bring Ram Mandir like Rajnath Singh ji did.

There is no connection between the two. ... (*Interruptions*) Sir, I am not yielding. ... (*Interruptions*)

Sir, I want to say that when somebody in top position says that Ganesha had plastic surgery in the ancient days, I do not accept this. ... (*Interruptions*) When somebody says that Kauravas were born through In Vitro Fertilisation, I do not accept this. ... (*Interruptions*) When somebody says that in Ramayana, the Pushpak Rath was a discovery by the ancient Indians, I do not accept this. ... (*Interruptions*) I only accept that which is proved by science. Let me make it very clear. ... (*Interruptions*)

डॉ. निशिकांत दुबे : चेयरमैन सर, यह हमारे आस्था का विषय है। यह ऐसा नहीं बोल सकते हैं। इसे प्रोसीडिंग से निकालना पड़ेगा।... (व्यवधान)

PROF. SOUGATA RAY: Sir, let me give the background. ... (*Interruptions*) In 1957, the Soviets sent the Sputnik to the space. ... (*Interruptions*) In 1961, Yuri Gagarin became the first person to go to space. ... (*Interruptions*) In 1963,

Valentina Tereshkova became the first woman to go to space. ... (*Interruptions*) It was at that time that Pandit Jawaharlal Nehru felt that we must work in the field of space science. ... (*Interruptions*) In 1962, he set up the INCOSPAR (the Indian National Committee for Space Research) headed by Dr. Vikram Sarabhai, a Cosmic Ray Physicist. ... (*Interruptions*) Nehru ji died in 1964. In 1969, when Indira Gandhi ji was the Prime Minister, the ISRO was set up. In 1972, when Indira Gandhi ji was still the Prime Minister, the Department of Space was set up. So, whatever is happening today is in continuation to what Dr. Vikram Sarabhai started in 1962. It is his legacy. He unfortunately died in 1971 in Thumba, the place which he liked so much. ... (*Interruptions*)

India got the first success during the launch of Aryabhata which was completely designed and fabricated in India, and launched by a Soviet Kosmos-3M rocket from Kapustin Yar on 19th April, 1975. ISRO has successfully launched almost 150 satellites since 1975.

ISRO has established major Space systems for communication, television broadcasting, meteorological services, resources monitoring and management, and space-based navigation services. ISRO has its headquarters in Bengaluru. Its activities are spread across various centres. Launch vehicles are built at Vikram Sarabhai Space Centre, Thiruvananthapuram. Satellites are designed and developed at U.R. Rao Satellite Centre, Bengaluru. Integration and launching of satellites and launch vehicles are carried out from Satish Dhawan Space Centre in Sriharikota, Andhra Pradesh. Development of liquid stages including cryogenic

stage, a very cold stage, is done at Liquid Propulsion Systems Centre at Bengaluru.

ISRO has carried out 125 spacecraft missions and planned several missions including Gaganyaan and interplanetary missions such as Chandrayaan (LUPEX), Shukrayaan, and Mangalyaan (MOM 2).

ISRO, our own organisation, has surpassed NASA in efficiency, resourcefulness, and cost-effectiveness. In 2005, NASA lost the solar mission that cost 550 billion dollars. Now, ISRO has launched a similar solar mission, Aditya L1, at a cost of 55 million dollars only. That is one-tenth of the cost of NASA's mission. There are four types of satellites sent by ISRO. One is the communications satellite which helps our communications; the second is the observation satellite which takes pictures of the earth; the third is the navigational satellite; and the fourth is the astronomical satellite. These works are going on. What is great about Chandrayaan is that so far, we are using rockets to send satellites around the earth. They are called geo-synchronised satellites, which means they are moving at the same speed as the earth, or the Polar Satellite Launch Vehicles which are placed in space. Now, for the first time, we have gone ahead from a satellite. Our rocket has taken a lander and a rover onto the surface of the moon. We failed in Chandrayaan 2. Our lander had crash-landed. This time there was no crash; the lander landed very softly. For one day, it sent messages from the moon, but they have to be jettisoned.

We are all very happy that India has achieved this, but we must have things in perspective. We are talking of a moon, not a moon-landing, but sending a

lander onto the moon. There is a propulsion module, and there is a landing module. The propulsion module takes it from the earth's orbit to the moon's orbit. Then, the landing module goes to the moon surface.

आपको याद दिलाना चाहता हूं कि सोवियत ने वर्ष 1957 में स्पुतनिक भेजा। हमने मून में अभी एक साफ्ट लैंडर भेजा। वर्ष 1969 में आज से 54 साल पहले Neil Armstrong stepped on the moon as a man. He said, small step for me but a giant leap for the mankind. हम लोग 54 साल पीछे हैं। अभी तक हम मून में कोई इंसान को लैंड करा सकें, ऐसी टेक्नोलॉजी नहीं बना पाये। इसमें अच्छा काम कर रहे हैं। यह भी सही है कि स्पेस प्रोग्राम में जो पैसा लगता है, यह खर्च करना मुश्किल है। जितेन्द्र सिंह जी का बजट कटता है, उनका उतना वेत भी नहीं है, बजट मेन्टेन नहीं कर पाते हैं। गरीब देश में, डेवलपिंग देश में स्पेस प्रोग्राम रखना मुश्किल है। यह आसान बात नहीं है। हमें बैलेंस करके चलना चाहिए। हमारा जो सैटेलाइट सिस्टम है, इसने बहुत सर्विस दी है। They predict weather; कब तूफान आ रहा है। They predict crop development. GPS in cars also based on satellite tracking. I want to say that Chandrayaan 3 has demonstrated safe and soft landing on the lunar surface. It has demonstrated rover roving on the moon and conducting *in situ* scientific experiments

13.00 hrs

What are the technologies present there? The technologies are laser-based altimeters, velocimeters, inertial measurement to measure gyro-based surface, propulsion system, navigational guidance and control, hazard detection and avoidance, and landing leg mechanism. यह सब इंडिया में डेवलप किया गया है। यही हमारे लिए गर्व की बात है। गर्व से बोलो, लैंडर पे लोड है, इसमें चन्द्रा, चन्द्रशेखर के नाम पर चन्द्रा सरफेस थर्मोफिजिकल एक्सपेरिमेंट है। It is to measure the thermal conductivity and temperature. It contained instruments for lunar seismic activity. Then there is

Langmuir Probe to estimate the plasma density and its variations. I am concluding. I am not discussing anything controversial. मुझे बोलने दिया जाए। मुझे यही कहना है कि हम आगे बढ़े हैं, लेकिन बहुत दूर जाना पड़ेगा। You see, nobody has mentioned Kalpana Chawla. She went by the Columbia Space Shuttle. Her craft exploded in 2003, and she along with seven others died. Today, I pay respect to Kalpana Chawla who was an Indian born astronaut. आज क्या है, एक साल किसका पूरा हुआ? फ्रैंक रूबियो नासा के एक एस्ट्रोनॉट हैं, वह एक साल से स्पेस में हैं। एक साल से इंसान स्पेस में है। He is set to return to earth this fall after setting the record for the longest single spaceflight by an astronaut. He arrived at the International Space Station on 21st September, 2022 and will return home after 371 days in space. Rubio and his fellow crew members conducted dozens of scientific investigations and technology demonstrations.

वर्ष 1958 में नासा का सेट अप हुआ। उस समय सोवियत यूनियन आगे था, उसने पहले स्पूतनिक भेजा। पहले 'Man in Space' भेजा। लाइका मर गया, लेकिन वेलनटीना टेरेश्कोवा पहुंच गया। आप लक्ष्य सिनेमा ऋतिक रोशन का देखें होंगे, लाइफ में एक लक्ष्य होना चाहिए। लक्ष्य यही है कि हम देश को आगे बढ़ाएंगे। देश में इन लोगों के बीच जो कुसंस्कार है, इसे दूर करेंगे। देश को विज्ञान और टेक्नोलॉजी में आगे लेकर जाएंगे तभी हमारा काम पूरा होगा। अभी भी इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन घूम रहा है। एस्ट्रोनॉट उधर ही रहता है, घर जैसा है, एस्ट्रोनॉट उधर ही खाता है। फ्रैंक रूबियो ने ऐसा किया है। अभी चीन ने एक इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन बना दिया। Americans have gone. Chinese have gone. So, the Chinese are also in the Space Station now. बहुत सारा काम करना है। इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन है, उसमें नासा, रूस, जापान, यूरोप, कनाडा शामिल है।

HON. CHAIRPERSON: One more speaker is there from your Party.

प्रो. सौगत राय (दमदम): महोदय, हमको यही कहना है कि हमारा स्पेस में रैंक अभी छठा है। हम किसके पीछे हैं, नासा, रूस, जापान, यूरोप, कनाडा और चीन। चीन बहुत आगे बढ़ गया है। इस चर्चा में मैं जवाहर लाल नेहरू को प्रणाम करता हूँ, इंदिरा गांधी को प्रणाम करता हूँ, इन्होंने स्पेस प्रोग्राम को आगे बढ़ाया।

मैं डॉ. साराभाई को प्रणाम करता हूँ। मैं सतीश धवन और यू.आर. राव को भी प्रणाम करता हूँ कि इन सब लोगों ने मिलकर स्पेस प्रोग्राम आगे बढ़ाया। इसमें बीजेपी का कोई कंट्रीब्यूशन नहीं है, साइंटिस्ट्स का कंट्रीब्यूशन है और इसी लक्ष्य की ओर आगे बढ़ेंगे। धन्यवाद।

माननीय सभापति: श्री लावू श्रीकृष्णा देवरायालू

... (व्यवधान)

श्री राहुल रमेश शेवाले (मुम्बई दक्षिण-मध्य): माननीय सभापति जी, यहां पर बोला गया कि महाराष्ट्र में गणेश चतुर्थी पर गणेश जी की प्लास्टिक सर्जरी हुई। यह बात रिकॉर्ड से निकाल देनी चाहिए। ... (व्यवधान)

माननीय सभापति: जब आपके बोलने का समय आएगा, तब आप इस बात को बोलिएगा।

... (व्यवधान)

SHRI LAVU SRI KRISHNA DEVARAYALU (NARASARAOPET): Sir, please do not count this in my time.(Interruptions)

माननीय सभापति: इसको देख लेंगे। यदि आपत्तिजनक बात होगी तो उसे देख लिया जाएगा।

... (व्यवधान)

माननीय सभापति: श्री लावू श्रीकृष्णा देवरायालू

13.06 hrs*(Shri Kodikunnil Suresh in the Chair)*

SHRI LAVU SRI KRISHNA DEVARAYALU: Thank you very much, Sir. It is good to see you in the new Chair in the new Parliament. I thank my party's Floor Leader, Midhun Reddy garu for allowing me to speak on the third day of the session in this New Parliament Building. The YSR Congress and all its Members of Lok Sabha and Rajya Sabha congratulate ISRO for its achievements. We are indebted to them for all the scientific achievements that they have done in the last 70 years or so.

When I was asked to speak on this subject, the first quote that came to my mind was that of Sir Issac Newton. He said, "I was able to see further because I was standing on the shoulders of giants." We are able to accomplish Chandrayan Mission because there were many people who have contributed to it. My predecessor speaker, Professor Sougata Ray, has just mentioned a few names like Vikram Sarabai, Satish Dhawan, U.R. Rao, Madhavan Nair, Kasturi Rangan, etc. All these people have contributed to space exploration. It is because of them that we are able to achieve success in sending Chandrayan-III to the Moon. I would also congratulate Mr. S. Somanath and his team who are able to place the lander on the far side of the Moon.

When I was watching it as all of us did, I was very happy for three different reasons. The first reason was that it was launched from Sriharikota, Andhra Pradesh, which is my Telugu land. It has been found to be lucky for all the launches as they have all been successful. The second reason for which I was really happy was this. When I was going through the profiles of all the contributors

to this success, I found that majority of the scientists involved in this project came from State-run Universities or engineering colleges run by the State Governments. It is a great achievement. They did not come from any IITs or NIITs. They have just come from the State-run Universities.

The third reason why we should all be happy is the participation of women in this endeavour. They were all dressed beautifully in Kanchi *sarees* but they have the vigour to make sure that our Chandrayan Mission is successful.

Sir, a lot of questions have been raised in Western media like why India is doing this activity when there is so much poverty in the country. I want to say that there are three reasons for this. The first one is that we want to cross the frontiers of science and space exploration. It would not happen just like that. As *dada* mentioned earlier, in 1965, man was able to land on Moon. But from the last 55 years, the space exploration of most of the countries has actually gone back. It would not happen just accidentally as it was in the case of i-Phone which we have in our hand. iPhone1 to iPhone15 have happened accidentally. Unless some sort of impetus is given, some sort of iteration is given at some point of time, it does not happen just accidentally. That is what has been happening in space exploration.

As a country that is growing, as a country that is in the top five economies of the world, this is the time to push the boundaries.

The second reason is that we have to dream big for the next generation and we have to prove to the next generation that anything can be possible in India. But being a Member of the Standing Committee on Education, Women, Children, Youth And Sports, I was able to go through the funding that was

available to most of the colleges where people like Somanath have gone to. There was TKM College in the constituency of Premachandranji.

There is a funding called RUSA which was given to the State Universities and there was an allocation of around Rs, 8,120 crore. It has been almost same for the last four to five years. If you look at the spending, it is not even 60 per cent. This spending is expected to take the State Universities and State-run universities, from where the scientists who are working in ISRO are coming from, to a higher level. Somehow, this funding is not able to reach them. Whenever we ask for reasons, it is told that the States are not contributing 30 per cent or 40 per cent which they are supposed to. This is the reason they always come up with. In this whole process, who is the person that is actually losing? It is the scientific community of this country which is losing. The hon. Minister is here and I hope that the point would be taken so that the scheme can be altered and the maximum amount of fund can be utilised by all the State Universities and the State Governments.

Coming to the participation of women, Shashi Tharoorji has mentioned about it and some comments were also made from the other side. There is 20 to 25 per cent women participation in ISRO which has a workforce of almost 16,000. If you look at the STEM graduates from India, who are pursuing science, technology, engineering and mathematics, 43 per cent of them are women. When we look at other countries, it is only 34 per cent in the US, 31 per cent in Canada and 38 per cent in the UK. We are far ahead of them. Also, 30 per cent of the research papers across 186 fields – I got this information from SCOPE – are

being published by women, but only 14 per cent of women are participating in STEM-related jobs.

Yesterday, we were very proud that we had passed the Women's Reservation Bill, but women have been putting their efforts for almost 15 to 16 years to graduate and coming out with these degrees, but they are not able to participate in the workforce. Unless we come up with new schemes to encourage them, unless we place the money where we talk to place it, this situation is not going to improve.

Hon. Minister, Dr. Jitendra Singh is also here, I wish to say something about the National Research Foundation. We always get time to ask him questions only on Friday, but somehow the House gets adjourned and we never get the opportunity to ask him questions. The National Research Foundation was envisaged almost four years back with an outlay of Rs. 50,000 crore – that has been mentioned – and until now, not a single rupee, correct me if I am wrong, has been actually given out to any of the IITs, NITs or State-funded universities. For the last four years, all these institutes have actually been waiting for it.

DR. JITENDRA SINGH: When my turn to speak comes, I will elaborate on that because it is still being structured.

SHRI LAVU SRI KRISHNA DEVARAYALU: Yes, Sir. Please elaborate on one more point. We thought that this whole amount of Rs. 50,000 is coming from the State Government, but we have been told that Rs. 36,000 crore are supposed to be mopped up from the private sector. I shall be grateful if he may explain to us how he is going to do that.

DR. JITENDRA SINGH: Since I do not want to interrupt you, I will elaborate when my turn to speak comes. Almost Rs. 36,000 crore will be coming from the non-government sources. ... (*Interruptions*)

SHRI LAVU SRI KRISHNA DEVARAYALU: Actually, we are one of the lowest spending countries when it comes to research. Only 0.7 per cent of GDP is our spending on research. That is why, I expect the hon. Minister to elaborate it when he speaks.

I have been speaking to a lot of startups which are in the space exploration sector. Most of them have come up with requests. You have PLI, Production Linked Incentive Scheme for all the industries from food sector to steel to every other industry. But somehow this PLI Scheme is not being implemented for this space technology. So, the Minister can actually take it up.

The second suggestion that they came up with is regarding GST exemptions for private satellite launch service providers. There is this company called Skyroot which is based out of Hyderabad. Most of the cost that happens is during the launch. Skyroot is trying to reduce the cost, like SpaceX is doing. They are trying to reduce it indigenously. Some sort of encouragement can be given with regard to this. That will be a big favour to them.

Let me put this on record. There is no disrespect to our scientific community or anything like that. If you look at GSLV-MK-IV – correct me if I am wrong – it can only put four tonnes into the geostationary orbit whereas Long March-5, which is the Chinese one, can put almost 14 tonnes in the same orbit. Also, in the lower orbit, GSLV-MK-IV can only place seven tonnes of satellite.

Whereas Long March-5, which is the Chinese one, can put almost 25 tonnes in the lower orbit. There is a huge difference between our payload capacity and their payload capacity. This can be closed down only if the participation of private players is encouraged in this whole thing. So, I wish the Government make efforts in this regard. Our scientific community is doing exceedingly well with the frugal funding that is available to them. But they will do much, much better if the funding can be increased and also if private participation is included.

I will end by saying what our Prime Minister keeps on quoting: "*Abhi samay hai, aur sahi samay hai*". So, I think this is the right time for all of us because India is a country with young population and with a lot of aspirations. This is the right time for the Treasury Benches to actually put the money where they are saying. Thank you very much.

श्री प्रतापराव जाधव (बुलढाणा) : सभापति जी, आज चन्द्रयान-श्री मिशन की सफलता और अंतरिक्ष क्षेत्र में हमारे राष्ट्र की अन्य उपलब्धियों के बारे में जो चर्चा हो रही है, आपने मुझे इस पर बोलने का अवसर दिया, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

सभापति जी, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन का गठन 15 अगस्त, 1970 में ग्रहों की खोज और अंतरिक्ष विज्ञान अनुसंधान को आगे बढ़ाने, राष्ट्रीय विकास में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी विकसित करने और उपयोग करने की दृष्टि से किया गया था। मुझसे पहले बहुत सारे सदस्यों ने यहां पर बहुत सारी बातें कहीं हैं। मैं उनको दोहराऊंगा नहीं। आज़ादी के बाद से अब तक भारत ने अंतरिक्ष का सफर शानदार तरीके से तय किया है। साइकिल व बैलगाड़ी से शुरू हुई हमारी अंतरिक्ष की यात्रा मंगल और चांद तक पहुंच गई है और हम सूरज की तरफ भी निकल चुके हैं। आज भारत मानव को अंतरिक्ष में भेजने की तैयारी भी कर रहा है।

सभापति महोदय, 19 अप्रैल, 1975 को भारत ने अपना पहला उपग्रह आर्यभट्ट रूस के प्रक्षेपण केन्द्र से सफलतापूर्वक प्रक्षेपित कर अंतरिक्ष की दुनिया में भारत के सुनहरे भविष्य के लिए नींव तैयार की थी। आर्यभट्ट उपग्रह का निर्माण इसरो के लिए बड़ी चुनौती थी, क्योंकि उस समय न तो भारतीय वैज्ञानिकों के पास आधारभूत सुविधाएं थीं और न ही पर्याप्त संसाधन थे। लेकिन भारतीय वैज्ञानिकों के जज्बे के आगे समस्याएं छोटी हो गईं और इसरो के तत्कालीन अध्यक्ष प्रोफेसर सतीश धवन के मार्गदर्शन में युवा टीम ने आर्यभट्ट का निर्माण किया था।

सभापति जी, हमारे वैज्ञानिकों 22 सितंबर, 2008 को 1,380 किलोग्राम का चन्द्रयान-एक भेजा था, जो 14 नवंबर, 2008 को चन्द्रमा की सतह पर पहुंचा था। चांद पर तिरंगा लहराते ही भारत चन्द्रमा पर अपना झंडा लगाने वाला चौथा देश बन गया।

सभापति जी, यह सिलसिला यहीं नहीं रुका। प्रधान मंत्री श्री मोदी जी के नेतृत्व में नेविगेशन के कार्यक्रम में भी बहुत तेजी आई। कारगिल युद्ध के दौरान अमेरिका ने अपना नेविगेशन सिस्टम भारत को देने से मना कर दिया था, जिससे हमारी सेना को कारगिल की पहाड़ियों पर दुश्मनों के छिपे हुए ठिकानों का पता लगाना मुश्किल हो गया था, लेकिन हमारे सैनिकों ने अदम्य साहस का परिचय

दिया और कारगिल युद्ध में विजय प्राप्त की। तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेई जी ने ठान लिया कि भारत अपना नेविगेशन सिस्टम तैयार करेगा। माननीय प्रधान मंत्री श्री मोदी जी के नेतृत्व 11 अप्रैल, 2018 को इसरो ने नेवीगेशन उपग्रह आईआरएनएसएस लॉन्च किया। यह स्वदेशी तकनीकी से निर्मित था। इसके साथ ही भारत के पास अब अमेरिका के जीपीएस सिस्टम की तरह अपना नेवीगेशन सिस्टम है।

सभापति जी, 27 मार्च 2019 को इसरो ने एक और बड़ी उपलब्धि हासिल की। इन दिनों सैटेलाइट से एक लाइव भारतीय सैटेलाइट को नष्ट करने में सफलता मिली। अंतरिक्ष में सैटेलाइट को मार गिराने वाला भारत चौथा देश बन गया है। इतना ही नहीं, 1 अप्रैल 2019 को इसरो ने इलेक्ट्रॉनिक इंटेलीजेंस उपग्रह समेत 29 उपग्रहों को एक साथ प्रक्षेपित किया। इनमें 28 विदेशी उपग्रह शामिल थे। पहली बार इसरो ने एक ही मशीन से तीन अलग-अलग कक्षाओं में उपग्रहों को स्थापित किया। इसरो के समक्ष बहुत चुनौतियां थीं, जैसे कि अंतरिक्ष यात्रियों को प्रशिक्षित करने और मानव अंतरिक्ष उड़ान के लिये लॉन्च व्हीकल की उन्नत तकनीक की कमी थी। श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र में तकनीकी दक्षता का अभाव, निजी क्षेत्र की सीमित भूमिका, परियोजना का धीमा क्रियान्वयन, सरकार द्वारा पर्याप्त समर्थन नहीं होना, बजट की कमी, लेकिन जब केंद्र में माननीय श्री मोदी जी के नेतृत्व में एनडीए की सरकार आई तो परियोजनाओं के क्रियान्वयन में तेजी आई और बजट की कमी भी दूर हुई।

सभापति जी, चंद्रयान-2 से मिली सीख और राष्ट्रीय स्तर के विशेषज्ञों द्वारा दिए गए सुझावों के आधार पर चंद्रयान-3 पर काम किया और सफल प्रक्षेपण किया और अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में लंबी छलांग लगाई। इसरो के वैज्ञानिकों की इस बड़ी कामयाबी से देशभर में खुशी की लहर आई। दुनिया ने भारत की बड़ी उपलब्धि को खुले दिल से सेल्यूट किया। मुझे यह बताते हुए बड़ा गर्व महसूस हो रहा है कि मैं लोक सभा क्षेत्र बुलढाणा से में आता हूं। चन्द्रयान मिशन में जो सिल्वर स्टरलिंग ट्यूब्स लगी हैं, वे मेरे लोक सभा क्षेत्र बुलढाणा के खामगांव तहसील में बनाई गई थी। महाराष्ट्र के हिंगोली भूमि का एक शुष्क हिस्सा दुनिया के सबसे महत्वाकांक्षी विज्ञान कार्यक्रमों में से गुरुत्वाकर्षण तरंगों का अध्ययन

करने के लिए एलआईजीओ वेधशाला का स्थल बनने जा रहा है। यह असाधारण प्रयास वैज्ञानिक अनुसंधान और नवाचार के लिए सरकार के दृढ़ समर्थन का एक चमकता उदाहरण है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत ने अभूतपूर्व वैज्ञानिक अन्वेषण का एक युग देखा है, जिसने हमारे देश को वैश्विक वैज्ञानिक उपलब्धि में सबसे आगे खड़ा कर दिया है। हिंगोली के परिदृश्य को सुशोभित करने के लिए तैयार एलआईजीओ इंडिया प्रोजेक्ट अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक सहयोग के शिखर का प्रतिनिधित्व करता है। यह प्रधानमंत्री मोदी जी के दृढ़ नेतृत्व द्वारा समर्थित ब्रह्मांड के रहस्यों का पता लगाने के हमारे देश के संकल्प का प्रतीक है।

सभापति महोदय, यहां पर बहुत सारी बातें कही गईं और ब्रह्माण्ड के बारे में भी यहां पर बोला गया, लेकिन हमारे सनातन धर्म के हिन्दू ग्रंथ में भी हम ब्रह्माण्ड में ब्रह्मा, विष्णु, महेश को मानते हैं और कुछ लोग ब्रह्मा, विष्णु, महेश के जो कार्य हैं, उनको अंग्रेजी में गॉड कहते हैं।

सभापति महोदय, मैं दो मिनट में खत्म करूंगा। ब्रह्मा, विष्णु, महेश को गॉड मानते हैं। यहां जी का मतलब जनरेट करना, ओ का मतलब ऑपरेट करना और डी का मतलब डिस्ट्रॉय करना होता है। ब्रह्मांड निर्माण, उसकी रक्षा और उसकी समाप्ति, यह तीनों हमारे ब्रह्मा, विष्णु, महेश में समायी हुई है।

महोदय, मैं इसका श्रेय वैज्ञानिकों को देने के साथ-साथ हमारे ऋषि-मुनियों को भी इसका श्रेय दूंगा, जिन्होंने अपने ग्रंथों में, जो पांच हजार साल नहीं, कई हजार साल पहले हिन्दू धर्म के ग्रंथों में इन सभी चीजों का उल्लेख किया गया है। आज चन्द्रयान का उल्लेख यहां हो रहा है, जब बचपन में हमें समझ भी नहीं थी तो हमारी माँ, हमारी नानी, हमारी दादी, हमको चन्द्रमा की लोरियां सुना-सुनाकर सुलाती थी, खाना खिलाती थी। हमारे दिल में पहले से ही चन्द्रमा के प्रति उत्सुकता थी। यह हमारे दिल में पहले से ही मौजूद थी और आज हमें यह भी महसूस हो रहा है कि हमारा देश और हमारे देश का तिरंगा चन्द्रमा पर जाकर लहरा रहा है। मैं हमारे वैज्ञानिकों को और उनको पूरा सपोर्ट करने वाली हमारी एनडीए सरकार को, आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपना भाषण समाप्त करता हूँ। धन्यवाद।

श्री दिलेश्वर कामैत (सुपौल): माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे चंद्रयान-3 की सफलता पर बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ।

महोदय, मैं सबसे पहले भारतीय वैज्ञानिकों का आभार व्यक्त करता हूँ कि उन लोगों के प्रयास से हमारे देश का नाम गौरवान्वित हुआ है। सभी भारवासियों के लिए यह एक बड़े गर्व की बात है कि भारतीय वैज्ञानिकों ने चांद पर अपना यान भेजा है। अब हम सभी देशवासियों को यह उम्मीद रखनी चाहिए कि हमारे वैज्ञानिकों की मेहनत सफल हो। जैसा कि हम जानते हैं भारत ने सबसे पहली बार वर्ष 2008 में चांद पर अपना यान भेजा था। उसके बाद 10 से 15 साल की मेहनत के बाद दोबारा यह समय आया है कि हमारा यान फिर से चांद पर अपना कदम रखा है। चंद्रयान-3 का लॉन्च सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र, श्रीहरिकोटा से 14 जुलाई, 2023 शुक्रवार को भारतीय समय के अनुसार दोपहर 2:35 बजे हुआ था। यह यान चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास की सतह पर 23 अगस्त, 2023 को भारतीय समय के अनुसार सायं 06:04 बजे के आसपास सफलतापूर्वक उतर चुका है। इसी के साथ भारत चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक अंतरिक्ष यान उतारने वाला पहला और चंद्रमा पर उतरने वाला चौथा देश बन गया है। इसके अलावा भारत एवं भारतीय वैज्ञानिकों को अंतरिक्ष के क्षेत्र में एक नई पहचान प्राप्त हुई है। अब हम सभी देशवासियों को अपने वैज्ञानिकों का समर्थन करना चाहिए। हम सभी को उनके द्वारा किए गए इस कार्य के लिए उनको प्रोत्साहित करना चाहिए।

महोदय, चंद्रयान-3 के मिशन का उद्देश्य चंद्रमा की सतह पर सुरक्षित लैंडिंग का प्रदर्शन करना, चंद्रमा पर रोवर के चलने का प्रदर्शन करना और इन-सीटू यानी चांद की सतह पर ही वैज्ञानिक प्रयोगों का संचालन करना है। मिशन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, लैंडर में कई उन्नत प्रौद्योगिकियां मौजूद हैं, जैसे कि लेजर और आरएफ आधारित अल्टीमीटर, वेलोसीमीटर, प्रोपल्शन सिस्टम आदि। ऐसी उन्नत तकनीकों को पृथ्वी की स्थितियों में सफलतापूर्वक प्रदर्शित करने के लिए कई लैंडर विशेष परीक्षण, जैसे इंटीग्रेटेड कोल्ड टेस्ट, इंटीग्रेटेड हॉट टेस्ट और लैंडर लेग मैकेनिज्म प्रदर्शन परीक्षण की योजना बनायी गयी है और इसे सफलतापूर्वक पूरा किया गया है।

महोदय, चंद्रयान-3 के माध्यम से भारत का लक्ष्य अपनी तकनीकी कौशल, वैज्ञानिक क्षमताओं और अंतरिक्ष अन्वेषण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करना है। यह सफलता अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष समुदाय में भारत की स्थिति को और मजबूत करेगा। यह मिशन युवा पीढ़ी को विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित में करियर बनाने के लिए प्रेरित करेगा तथा विश्व में भारत की प्रतिष्ठा को बढ़ाने का काम भी करेगा।

महोदय, इस अवसर पर मैं कहना चाहता हूँ कि भारत ने पहली बार वर्ष 2008 में चांद पर अपना चंद्रयान भेजा था और वर्ष 2008 में ही हमारे संसदीय क्षेत्र सुपौल तथा कोसी में भयानक विनाशकारी बाढ़ आई थी तथा बहुत बड़े स्तर पर जान-माल की क्षति हुई थी। साथ ही कई रेल मार्ग भी ध्वस्त हो गए थे, जिसकी वजह से आज भी कुछ खंडों पर रेल परिचालन का शुभारंभ नहीं हो सका है।

महोदय, मैं सदन के माध्यम से माननीय प्रधान मंत्री जी एवं रेल मंत्री जी से आग्रह करता हूँ कि पूर्वी मध्य रेलवे के समस्तीपुर मंडल के अंतर्गत ललितग्राम से फारबिसगंज तक सी.आर.एस. का इंस्पेक्शन 11 जनवरी, 2023 को हो चुका है, किन्तु अभी तक उक्त खंड पर रेल परिचालन का शुभारंभ नहीं हुआ है और बस मालिकों द्वारा जनता का शोषण हो रहा है, जबकि कई बार माननीय रेल मंत्री जी से मैंने सम्पर्क करके उनका इस ओर ध्यान आकर्षित किया है। मेरी मांग है कि उस पर अतिशीघ्र रेल परिचालन का शुभारंभ किया जाए। जोगबनी-दानापुर तथा जोगबनी-सहरसा एक्सप्रेस ट्रेन का शुभारंभ भी किया जाए, जिसे रेलवे बोर्ड के द्वारा जोगबनी से चलने वाली ट्रेन, जिसकी नई समय सारणी निर्गत हो चुकी है, उसे भी हरी झंडी दिखाकर उसके परिचालन का शुभारंभ किया जाए। साथ ही राजधानी एक्सप्रेस गाड़ी संख्या 12567-12568 का सरायगढ़ या सुपौल तक विस्तार किया जाए, जिससे सुपौल जिला सहित कोसी तथा सीमावर्ती क्षेत्र की सारी जनता को इसका लाभ मिले।

महोदय, इसी के साथ मैं पुनः अपने पूरे संसदीय क्षेत्र की जनता की तरफ से हार्दिक धन्यवाद एवं बधाई देता हूँ और ईश्वर से यह प्रार्थना करता हूँ कि आप सभी वैज्ञानिकों के कार्य क्षेत्र में सूर्य की

तरह तेज प्रकाश बना रहे और इसी तरह देश को सर्वोच्च सम्मान मिलता रहे। इन्हीं शब्दों के साथ बहुत-बहुत धन्यवाद।

PROF. ACHYUTANANDA SAMANTA (KANDHAMAL): I would like to thank the hon. Chair to grant me this wonderful opportunity to participate in the discussion regarding success of Chandrayaan-3 Mission and other achievements of our nation in the space sector.

It is my first address in this House of New Parliament Building that has brought with it the historic passage of *Nari Shakti Vandan Adhiniyam*. And today, we are to discuss the yet another momentous milestone of soft landing of Chandrayaan-3 near the South Pole of the moon, making Bharat the fourth country to achieve a soft landing on the moon, after the US, the Soviet Union and China. On 23rd August, all of us were glued to the screens and were watching updates of what was happening second by second as if it were some international cricket match. The whole of India watched it with heart through live streams with fingers crossed, becoming a part of this majestic lunar mission. When it landed, there was celebration and joy all over. It was the victory of each of 140 crore Indians. It was really the day when we saw the best of the poetic and literary references of *Chand* in relation with the space achievement - *Chaand Pe Ghar*, *Chanda Mama ke Pass*, *Chaand Dilaunga* and so on. The President of Russia acknowledged the impressive progress made by India in science and technology. The President of South Africa celebrated the moment as a significant achievement for the BRICS coalition, while the Prime Minister of Nepal termed it

'historic'. The European Space Agency was thoroughly impressed. And the United States praised the success for its inspirational and historic significance.

We acknowledge and celebrate the significant contributions of Indian scientists who made this possible. It is their efforts and perseverance that paid off. They are shining examples of knowledge, dedication, and expertise. The exceptional analytical abilities of our scientists, their steadfast commitment to exploration, and relentless drive to overcome challenges consistently places India at the forefront of global scientific achievements.

Their quest for excellence and curiosity not only solidify our global reputation, but also inspire others to dream big and contribute to the world's knowledge. The involvement of large number of women scientists who have contributed to the success of Chandrayaan-3 and India's space programme in general motivates aspiring women scientists like no one else.

In this regard, I am happy that several scientists from our State Odisha played significant roles in ISRO's Chandrayaan-3 lunar exploration mission. Debasish Mohapatra, Sarat Kumar Das, Atal Krushna Khatua and Nagaraju and so many Odias have contributed in this Mission. I have to congratulate hon. Prime Minister Shri Narendra Modi ji for his visionary and exemplary leadership to inspire India's space programme for human welfare and scientific progress. He has always encouraged science and innovation. Under his leadership, a series of reforms have been ushered in which have made research and innovation easier. The celebration of 23rd August as the 'National Space Day' is an example of his love, respect and belief in Indian Space Programme. Chandrayaan-3's triumph

serves as a remarkable affirmation of Prime Minister Shri Narendra Modi ji's resounding message, "Jai Vigyan, Jai Anusandhan." I have to express my thanks for his leadership of including common man, everyone in the process, whether it is sports, or space launch or G-20. Thanks for *Jan Bhagidari*.

Similarly, it has a huge impact. It has opened up a wave of opportunities for several sectors that could boost India's economic growth. It has opened up a new horizon of opportunities for several start-ups and companies involved in sectors such as space technology, aerospace, defence and R&D. It will also boost private investment in allied sectors. Coupled with higher budgetary allocation, it will ultimately contribute to economic growth. It also paves the way for an increased scientific temper amongst the youth of India, an accelerated pathway for self-reliance in emerging sectors and technologies, and instilling confidence to be amongst the top three economies of the world, solidifying the "Made in India" image.

Lastly, the future of the Indian space sector is vibrant with several major initiatives and projects in progress, continuing Government funding and private-sector collaboration, India is poised to make an indelible imprint in the field of space exploration and technology. India is and will continue to be in the forefront of space technology race.

With these words, I conclude my speech.

श्री रामशिरोमणि वर्मा (श्रावस्ती): सभापति महोदय, आपने मुझे महत्वपूर्ण विषय चन्द्रयान-3 की सफलता पर अपने विचार रखने का मौका दिया है। इसके लिए हम आपको हृदय से धन्यवाद देते हैं। मुझे गर्व है कि इस नये सदन में अपनी पार्टी की तरफ से बोलने का पहली बार मौका मिला है। इसके लिए हम अपनी पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन कुमारी मायावती जी का दिल से आभार व्यक्त करते हैं।

महोदय, चन्द्रयान-3 की सफल प्रक्षेपण से अपना पूरा देश गर्वान्वित महसूस कर रहा है। अब हम वैश्विक मानचित्र पर अपना स्थान राकेट प्रक्षेपण के संदर्भ में अंकित कर चुके हैं। इस सफल प्रक्षेपण हेतु मैं इसरो के वैज्ञानिकों, इंजीनियरों सहित उक्त चन्द्रयान के लिए काम करने वाले समस्त कर्मचारियों को भी, जो दिन-रात मेहनत करके चन्द्रयान-3 को सफल बनाया है और आज विश्व में भारत पहले स्थान पर अंतरिक्ष प्रक्षेपण के मामले में पहुंच चुका है।

मैं और मेरी बहुजन समाज पार्टी एवं देश के सभी सम्मानित नागरिकों की तरफ से इसरो के सभी वैज्ञानिकों को दिल से धन्यवाद देता हूं। हम विश्वास करते हैं कि समय-समय पर देश की जनता की मांग को देखते हुए नित्य प्रतिदिन हमारे वैज्ञानिक अपनी लगन, परिश्रम और मेहनत से सफल अंतरिक्ष प्रक्षेपण करते रहेंगे। इसी के साथ मैं अपने लोक सभा क्षेत्र श्रावस्ती की सम्मानित जनता-जनार्दन की तरफ से भी समस्त वैज्ञानिकों को बधाई देता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री कोथा प्रभाकर रेड्डी (मेडक): सर, मुझे नए सदन में पहली बार बात करने का मौका मिला, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

Hon. Chairperson, Sir, I extend my heartfelt congratulations to all of us on the notable achievement of Chandrayaan-3. Today, as I stand here, I want to reflect on ISRO's history which started from a tiny outhouse of great scientist Sarabhai ji to becoming a powerful counterpart of elite international space agencies of the world. As we know Pandit Jawaharlal Nehru and scientist Sarabhai are considered amongst the founding fathers of Indian space programme, ISRO, which today is known for its unique and cost-effective technologies.

In this regard, we express our heartfelt gratitude to all the hon. Prime Ministers, starting with Nehru ji to our current Prime Minister Narendra Modi ji, for their invaluable contributions in transforming ISRO's trajectory into a historic one. I pay my respects to all the scientists from Aryabhata to Somanath ji for having contributed so much to the nation's mission to space.

ISRO, through its hard work and achievements has become a great role model not just for other countries but also amongst the private companies invested in space explorations. When ISRO was set up in the 1960s, Moon and Mars missions were not on the agenda, even in the faraway future. The aim was to initiate space exploration expeditions to learn more about the world of space for the benefit of our people.

With such clear objectives, even in times when the country was still struggling with issues of poverty and limited resources, ISRO's leaders developed

a style that produced maximum benefits with the minimum of effort. We are very grateful to the contributions of our brilliant scientists and leaders of ISRO since its inception. The journey of ISRO from the 1960s to today has simply been remarkable.

Chandrayaan's successful landing on the south pole of the moon was a joyous and historic moment for the country. The country joined the elite club of the countries to soft-land on the moon. This successful landing on the south pole of the moon, which no country has ever achieved so far, also shows the technological progress that India has made so far and scientific capabilities and commitment to work of our Indian scientists and engineers.

The success of Chandrayaan-3 is not only an achievement for the country to fulfil global aspirations but also it opens up avenues for economic growth across various sectors. It is believed to bolster the 'Make in India' initiative and contribute to the growth of domestic companies which are engaged in developing satellite systems and telecommunications.

The success of this great mission has also paved the way for fostering a heightened scientific mindset among India's youth, accelerating the journey toward self-reliance in emerging sectors and technologies, and instilling the confidence to position ourselves among the top three economies globally.

While talking about many achievements of ISRO, it is equally important to also talk about the extensive role played by Telangana for the same. The Telangana State is emerging as the commercial hub for all space-related products and services. It is well known that over 30 per cent of the components

used in ISROs highly acclaimed Mars Orbiter Mission is supplied by SMEs based in Hyderabad.

I can proudly say that we are the first State to officially talk about Metaverse, and the most receptive State to encourage youth in the realm of space and beyond. This was not a dream that turned out to be true overnight, rather it was the vision and mission of our Chief Minister, Shri K. Chandrashekar Rao and our IT Minister, Shri K.T. Rama Rao. With the launch of SpaceTech Framework in April 2023, the Telangana Government under the leadership of Shri K. Chandrashekar Rao unveiled the aim of bolstering private industry's involvement in the space technology sector. This Framework has been the 'magic potion' to establish the State as a globally recognised one-stop destination in technology, and we are emerging closer to that dream.

By launching the SpaceTech Framework and implementing the planned initiatives, the Telangana State intends to further enhance the ecosystem and realize its vision of promoting the domestic production of launch vehicles, satellite systems and their components, ground equipment manufacturing and various other facilities within the State of Telangana, that no State Government in India can match.

Guided by the vision of Chief Minister, Shri K. Chandrashekar Rao and the dedicated efforts of Shri K.T. Rama Rao, young individuals at T-Hub, established by the Telangana Government, are achieving remarkable feats across various domains with their exceptional talents. Telangana is pushing boundaries, achieving a significant milestone in the nation's startup and private satellite launch

history. Hyderabad startup companies opened doors of new opportunities in the Indian space sector. One notable achievement is the startup company Skyroot Aerospace Private Limited which has successfully pioneered India's maiden private rocket launch Vikram-S, setting a remarkable precedent. This is an epitome of the Telangana Government's unwavering support for the young individuals who are showcasing their talents to the world and transforming their brilliant ideas into reality through their startups.

Further, coming to the latest national achievement of Chandrayaan-3, there is no doubt that the mission has displayed the fact that India will soon emerge as a prominent player as a cost-effective satellite launcher. It is expected that it will augment India's contribution to the global space economy by 8-10 per cent in the coming decade.

HON. CHAIRPERSON: Hon. Member, please conclude.

SHRI KOTHA PRABHAKAR REDDY: Moreover, experts believe that the triumph of Chandrayaan-3 is poised to exert an enduring influence on India's domestic markets, as it is expected to alter foreign investors' perspectives on India's prowess in space research.

Thank you, Sir.

HON. CHAIRPERSON: Now, hon. Member, Shrimati Supriya Sadanand Sule ji.

SHRIMATI SUPRIYA SADANAND SULE (BARAMATI): Thank you, hon. Chairperson, Sir.

Is there a Cabinet Minister present in the House? ... (*Interruptions*) Not MoS. ... (*Interruptions*) Such an important debate is going on and there is not one Cabinet Minister present here.

HON. CHAIRPERSON: We can expect the Ministers.

SHRIMATI SUPRIYA SADANAND SULE: Sir, you must please put on record how serious they are about Chandrayaan-3. We are so proud of what has happened. ... (*Interruptions*) Sir, you must give a ruling that there has to be one Cabinet Minister here. ... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Message will be conveyed to the Ministers.

SHRIMATI SUPRIYA SADANAND SULE: Hon. Chairperson, Sir, please put it on record that there is not one Cabinet Minister present for such an important debate. ... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Your point is noted. It will be conveyed to the Ministers.

श्रीमती सुप्रिया सदानंद सुले : सर, आप रूलिंग दीजिए ।... (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: You can start now.

SHRIMATI SUPRIYA SADANAND SULE: There is not a single Cabinet Minister present here. That is really shameful.

Hon. Chairperson, Sir, I would like to take this opportunity to congratulate the success of Chandrayaan-3. I would like to congratulate every scientist and technocrat that has contributed in this 60-year journey. I would like to congratulate everybody who has contributed in their way.

The success of Chandrayaan-3 is about competencies, capabilities, and capacities of people who have contributed in 60 years.

Sir, I was very fortunate enough to grow in the city of Mumbai which had Nehru Science Centre and Nehru Planetarium. I was brought up completely with a scientific temper. I see this whole debate has scientific issues with absolute respect to Rajnath Singh Ji who I will always look up to.

Today, in his speech, I had a slight disappointment because I was expecting him to give us the vision of tomorrow's Chandrayaan-4, 5, 6, Aditya L-1 further but that really lacks. I was little disillusioned today and I am very strong about tradition, about values, about culture and heritage. These are all the things we are all brought up with but today, as a proud Indian, I feel from the Treasury Benches that completely lacked in the Speech that came from him.

I will not repeat the points which Dr. Tharoor and Prof. Ray have raised but I would definitely put it on record that it was like Pandit Jawaharlal Nehru and Dr. Sarabhai whom we grew up learning and reading about. It was Dr. EV Chitnis also who substantially contributed in the growth story of ISRO and it was, of course, Prof. Dhawan, Dr. Brahm Prakash who was one of the best meteorologists India has ever had, Dr. U.R. Rao, Dr. Nair, Dr. Kasturirangan, Dr. Krishna, Dr. Sivan and now Dr. Somanath who has contributed to the growth of ISRO where we are today.

Sir, the hon. Prime Minister always talks about indigenous growth of India. I would like to put it on record that I was very fortunate enough to get elected from a Constituency Baramati in Pune district in Maharashtra. I am very proud and

happy to share with you there is an industry over 100 years started by Walchand Hirachand. It is called Walchand Nagar Industries which 100 years ago started innovation under that leadership and the entire Walchand Hirachand family have contributed to the growth of that area which is Indapur which is in my Constituency and also Walchand Nagar and they have made immense contribution by making parts to this entire Chandrayaan जो यह पूरा चंद्रयान बना है, उसमें वालचंदनगर और इंदापूर की बहुत बड़ी देन है। यह सब वालचंद हीराचंद ग्रुप ने बनाया है। 100 सालों से यह फैक्ट्री इस क्षेत्र में काम कर रही है। मैं रिकॉर्ड पर लाना चाहूंगी कि इन्होंने 100 सालों में जो काम किया है, जिसे हम इंडीजिनस-आत्मनिर्भर भारत कहते हैं, इसमें वालचंद ग्रुप का बहुत बड़ा योगदान है। ISRO के जहां पार्ट्स बनते हैं, वह मेरा निर्वाचन क्षेत्र है। यह मेरा सौभाग्य है कि मैं ऐसे निर्वाचन क्षेत्र से चुनकर आती हूँ।

13.51 hrs

(Dr. (Prof.) Kirit Premjibhai Solanki *in the Chair*)

सर, जब इनोवेशन की बात होती है, तो और भी कई बातें हैं। खेद शिवपुर, जो एरिया मेरे निर्वाचन क्षेत्र में है, वहां बीसीबी इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनी है, जहां भानूदास भोसले, सुजाता भोसले, संदीप चव्हाण हैं। ये उस एरिया में हैं, जिन्होंने चिप्स बनाई हैं, जो इस चंद्रयान में गई हैं। अतः मेरे निर्वाचन क्षेत्र के दो बड़े कॉन्ट्रिब्यूशंस हैं। एक वालचंद ग्रुप का कॉन्ट्रिब्यूशन है और दूसरा बीसीबी इलेक्ट्रॉनिक्स का कॉन्ट्रिब्यूशन है। I feel very proud when I stand here where we are praising about Chandrayaan and these are all indigenous products ये सारी कंपनियां बहुत पुरानी हैं। एक कंपनी तो 100 साल पुरानी है और दूसरी कंपनी 15-20 साल पुरानी है। So, I just would like to put the record straight. There are other companies which are doing wonderful work in my Constituency like the hydrogen technology, be it Wipro, be it KPIT, Tatas, Mahindras. They all have contributed to all these works that are going on in the development of New India.

Sir, the whole thing which Dr. Tharoor also mentioned and Prof. Ray also said was the spirit of inquiry and the spirit of questioning. In the entire debate of today, somewhere I feel that we are very proud of our glorious tradition – be it in mathematics, be it in metallurgy and be it in astronomy. India is very proud. Two thousand years ago, mathematics was done about this. जब तक आपका गणित अच्छा नहीं है, तब तक लाइफ में कुछ नहीं हो सकता। So, we have such rich tradition. So, instead of getting trapped into stories which people were talking about earlier in the debate, I am not condescending. It is wonderful. Whatever your mother has taught, you can never be wrong but we must not forget the rich tradition of mathematics, metallurgy and astronomy which India is so proud of because श्रद्धा तो होनी चाहिए, लेकिन अंधश्रद्धा नहीं होनी चाहिए। आप श्रद्धा रखिए, आपको जो सिखाया गया है, उस पर आप विश्वास रखिए। In a democracy, it is your right but the problem is that which I get worried when people in position of power who are sitting on that side of Parliament today talk about issues which actually surprise me when we are talking about the scientific temper.

मेरे महाराष्ट्र में पिछले हफ्ते एक डॉक्टर आया था, जो लोगों पर ब्लैकैट्स डालता है। ब्लैकैट डालने के बाद वह लोगों से बोलता है कि आपकी तबियत ठीक हो जाएगी। आप सोचिए, एक तरफ हम लोग चंद्रयान-3 की बात कर रहे हैं और दूसरी ओर भारतीय जनता पार्टी का एमएलए बोल रहा है कि ब्लैकैट डालिए, आपकी तबियत ठीक हो जाएगी। ऐसे कैसे चलेगा? इसीलिए, श्रद्धा जरूर होनी चाहिए, लेकिन अंधश्रद्धा नहीं होनी चाहिए।

सर, आपको याद होगा be it Shri Dabholkar, Smt. Gowri Lankesh, Shri Govind Pansare and Shri Kalburgi Ji, what were they? How did they die? It is because of this whole conflict which we are in and I think this was a debate where we only

should discuss about scientific temper. श्रद्धा होना चाहिए, लेकिन अंधश्रद्धा के खिलाफ महाराष्ट्र में भी दाभोलकर जी ने बहुत बड़ा मूवमेंट चलाया था। हमारे यहाँ बिल भी है, अंधश्रद्धा के खिलाफ सबको एक्शन लेना चाहिए और जहाँ पार्लियामेंट में अंधश्रद्धा के बारे में कहा जाता है, Somebody like me who believes in questioning and wants the next generation, तो चन्द्रयान में बैठकर हम हमारे बच्चों को अंधश्रद्धा सिखाएंगे तो देश कैसे आगे जाएगा?

So, we have to have a scientific temper and I would like to quote Dr. A.P.J. Abdul Kalam. He said that dreams are not those which will come while you are sleeping. Dreams are not those which come into reality while you are sleeping but dreams are those that you cannot sleep before fulfilling them.

So, I pay a rich tribute to every scientist and technocrat of this country who have contributed for the last six decades to make Chandrayaan-3 a reality.

Thank you very much.

14.00 hrs

श्री प्रिंस राज (समस्तीपुर) : महोदय, धन्यवाद ।

आज आपने मुझे चन्द्रयान-3 की सफलता और स्पेस सेक्टर में भारत की उपलब्धियों पर बोलने का मौका दिया है । मैं अपनी और अपनी पार्टी की तरफ से आपका धन्यवाद व्यक्त करता हूँ।

महोदय, आज इस नए सदन में प्रथम भाषण देते हुए मुझे काफी खुशी और काफी गर्व महसूस हो रहा है । आज का विषय कोई राजनीतिक विषय तो नहीं है और न ही इस पर राजनीति करनी चाहिए । कल राज्य सभा में इस पर चर्चा हो रही थी और आज लोक सभा में इस पर चर्चा हो रही है । कई माननीय सदस्यों को हमने सुना है । जैसे कल लोक सभा में महिला आरक्षण बिल पर चर्चा हो रही थी और आज चन्द्रयान-3 पर चर्चा हो रही है । कुछ माननीय सदस्यों के भाषण से हमें ऐसा लगा कि यह क्रेडिट टेकिंग मूवमेंट बन गया है । जब महिला आरक्षण बिल लाया गया, तो उस समय कहा गया कि यह बिल हम पहले लेकर आए । अब चन्द्रयान-3 पर बात हो रही है तो कहा जा रहा है कि इसरो की स्थापना हमने की । हमें लगता है कि इस तरह की राजनीति आज नहीं होनी चाहिए । आज मुख्यतः हमें अपने विषय पर रहना चाहिए ।

महोदय, आज इस मंच के माध्यम से हम अपने वैज्ञानिकों, इंजीनियर्स, रिसर्चर्स और उन सभी कर्मचारियों को बधाई देते हैं और उनको धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने भारत देश का नाम पूरी दुनिया में रोशन किया है । आदित्य एल-1 की जो सफल लॉन्चिंग हुई है, उसके लिए भी हम उन्हें बहुत-बहुत शुभकामनाएं देते हैं । यह स्पेस मिशन सिर्फ एक स्पेस मिशन नहीं है । यह आत्मनिर्भर भारत की ओर एक बहुत बड़ा कदम है । हमने सभी को धन्यवाद दिया, लेकिन हम चाहेंगे कि हम अपनी उन महिला वैज्ञानिकों को विशेषकर धन्यवाद दें, जिन्होंने अपना योगदान इस सफल स्पेस मिशन में दिया है । हम उन्हें धन्यवाद देना चाहेंगे कि किस तरीके से उन्होंने अपने योगदान की बदौलत एक पिकचर बदली है, एक इमेज बदली है । कल हम लोग यहाँ पर महिला आरक्षण बिल के ऊपर चर्चा कर रहे थे । इसकी जरूरत क्यों पड़ी? इसकी जरूरत इसलिए पड़ी क्योंकि अब सभी सेक्टर्स में हमारी माताओं-बहनों ने अपना-अपना स्थान बना लिया है, चाहे वह डॉक्टर्स हों, नर्स हों, इंजीनियर्स हों, डिजाइनर्स हों,

एडवोकेट्स हों, जज हों, पायलेट्स हों, लेकिन कहीं न कहीं सदन में, विधान सभाओं में उनकी कमी हमेशा रही है। कल के बिल के पास होने से हमें लगता है कि यह कमी भी पूरी हो जाएगी। जिस तरीके से हमने महिला वैज्ञानिकों को विशेषकर धन्यवाद दिया, क्योंकि उन्होंने सोच बदली है। पहले कहा जाता था कि हिन्दुस्तान की महिलाओं का काम सिर्फ चूल्हे तक सीमित है, खाना बनाने तक उनका काम है, लेकिन हमारी महिलाएं सिर्फ यहीं तक सीमित नहीं हैं।

सभापति जी, एक और सच्चाई है जिसे बहुत लोग देख नहीं पाते हैं, समझ नहीं पाते हैं कि हाउस वाइफ केवल खाना बनाने के लिए ही नहीं होती हैं। वह महिला उस घर की होम मिनिस्टर होती है, वह महिला उस घर की फाइनेंस मिनिस्टर होती है, वह महिला उस घर की हेल्थ मिनिस्टर होती है, वह महिला उस घर का सपोर्टिंग सिस्टम होती है। उस घर के निर्माण में महिला का बड़ा योगदान रहता है।... (व्यवधान)

श्रीमती सुप्रिया सदानंद सुले : सभापति जी, सदन में कोई केबिनेट मिनिस्टर नहीं है।

माननीय सभापति : वे आ रहे हैं और यहां मंत्री जी भी उपस्थित हैं।

... (व्यवधान)

श्री प्रिंस राज : महोदय, यह बात दुनिया समझ नहीं पाती है कि भारत में एक तरफ माताएं, बहनें चांद को करवाचौथ वाले दिन पूजती हैं और दूसरी तरफ हमारी माताएं, बहनें उसी चांद पर सफलतापूर्वक चन्द्रयान-3 की लैंडिंग करती हैं। यह हमारी संस्कृति और शिक्षा को दर्शाता है। माननीय प्रधान मंत्री जी ने बिलकुल सही कहा कि 'चंदा मामा अब दूर के नहीं हैं।' विश्व के अन्य देशों के मुकाबले हम लोगों का स्पेस मिशन का बजट बहुत कम है और इतने कम बजट में भी हमने बहुत उपलब्धियां प्राप्त कीं। अन्य देशों ने भी प्रयास किया, लेकिन भारत ही प्रथम ऐसा देश है, जिसने दक्षिण ध्रुव में सफलतापूर्वक पहली लैंडिंग की। इसके लिए हम अपने साइंटिस्टों को बहुत-बहुत बधाई देते हैं क्योंकि उन्होंने आत्मनिर्भरता की तरफ बढ़ते हुए भारत की पहचान बनाई है। हम अपने प्रधान मंत्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी को भी धन्यवाद अदा करेंगे क्योंकि बुरी परिस्थिति में भी उन्होंने देश के साइंटिस्टों का साथ दिया और उनका हौसला बढ़ाया। उन्होंने साइंटिस्टों को हिम्मत दी, उनका नेतृत्व किया और इसी

का परिणाम है कि आज हम लोगों ने एक सफल स्पेस मिशन पूरा किया। उनके कुशल नेतृत्व में हमने कोरोना काल में स्वदेशी वैक्सीन का निर्माण किया। आज देश डिफेंस सेक्टर में इक्विपमेंट्स बना रहा है और उनको एक्सपोर्ट भी कर रहा है। हम वहां गए थे और देखा था। आज देश और दुनिया नए भव्य संसद भवन को भी देख रही है। चन्द्रयान-3 की सफल लैंडिंग हो या आदित्य-एल1 की सक्सेसफुल लांचिंग हो, यह दर्शाता है कि आज भारत आत्मनिर्भर बनता जा रहा है और वह दिन दूर नहीं है, जब आदरणीय प्रधान मंत्री जी की सोच के अनुसार वर्ष 2047 में भारत विकसित देशों की सूची में अपना नाम दर्ज कराएगा।

महोदय, मैं ज्यादा समय न लेते हुए अपने सभी साइंटिस्टों, महिला साइंटिस्टों, इंजीनियर्स, रिसर्चर्स, कर्मचारियों और उन सभी लोगों का जो इस मिशन से जुड़े थे, उनका नमन करता हूं और पुनः उन्हें बधाई देता हूं। धन्यवाद।

श्री जयंत सिन्हा (हजारीबाग): महोदय, मैं आपका, परम आदरणीय प्रधान मंत्री जी का, अपनी पार्टी का और विशेष रूप से हजारीबाग की जनता का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ, क्योंकि उनके सहयोग और आशीर्वाद से मुझे पुराने सदन, जो ऐतिहासिक और सुंदर सदन है, में बोलने के अवसर मिले और आज इस भव्य और आधुनिक भवन में भी बोलने का मुझे अवसर मिल रहा है। इसके लिए आप सभी को हृदय की गहराइयों से कोटि-कोटि धन्यवाद।

सभापति जी, जैसा माननीय प्रधान मंत्री जी ने कहा कि यही समय है, सही समय है, अमृत काल का समय है और बड़ी तेजी से देश बदल रहा है। देश में परिवर्तन आ रहे हैं और हम सभी माननीय सदस्यों को और देश की जनता को लग रहा है कि हम रोज-रोज इतिहास को रच रहे हैं। कल ही हमने महिला आरक्षण के लिए संवैधानिक संशोधन किया, जो स्वर्णिम अक्षरों में इतिहास में लिखा जाएगा। इसके पहले 19 सितम्बर को हम पुराने सदन से इस भव्य सदन में आए और इतिहास रचा। 9 और 10 सितम्बर को जब जी-20 का शिखर सम्मेलन हुआ, तब भी हम लोगों ने नई दिल्ली में इतिहास रचा। आज चूंकि हम चन्द्रयान-3 की सफलता का जिक्र कर रहे हैं, जब 23 अगस्त को चन्द्रयान ने चन्द्रमा के साउथ पोल पर सॉफ्ट लैंडिंग की, तब भी हम लोगों ने दुनिया का इतिहास रचा, भारत का इतिहास रचा।

हम यहां अपना योगदान दे रहे हैं, इतिहास रच रहे हैं। इतिहास रचा जा रहा है। आज भारत विश्व में 'विश्व मित्र' और 'विश्व गुरु' के रूप में उभरता चला जा रहा है। यह इसलिए उभर रहा है क्योंकि अगर हममें समृद्धि है तो हममें सादगी भी है। अगर हममें शक्ति है तो हममें एक शांति भी है। अगर हमारा साइंस है तो हमारे संस्कार भी हैं। अगर कोई समझता है कि यदि हम संस्कार की बात करें तो हम साइंस की बात नहीं कर रहे हैं, विज्ञान की बात नहीं कर रहे हैं तो यह बिल्कुल गलत बात है। विपक्ष के हमारे कई साथियों ने कहा कि हम लोग संस्कार की बात थोड़ा ज्यादा करते हैं, साइंटिफिक टेम्पर की बात थोड़ा कम करते हैं। यह उनका मानना था। लेकिन, हमारे इतिहास में प्राचीन समय से ही एक संतुलन रहा है, संस्कार में भी और साइंस में भी। अगर हम अथर्ववेद में मुण्डकोपनिषद में जाएं तो वहां से जो मूल मंत्र निकल कर आया, वह आज हमारे राज्य का मूल मंत्र है - सत्यमेव जयते। अगर

हम किसी भी चीज से प्रेरित हैं तो हम 'सत्यमेव जयते' से प्रेरित हैं – 'Truth alone triumphs'. अगर विज्ञान कुछ भी है तो वह सत्य है, वह टुथ है। मैं खुद विज्ञान का छात्र हूँ, इंजीनियर हूँ। प्रोफेसर साहब बैठे हैं, वे भी साइंटिस्ट हैं। उन्हें मालूम है कि जो साइंटिफिक मेथड है, जो साइंटिफिक टेम्पल है, that is a process of discovery of the truth. और वह हम लोगों के संस्कार में लिखा हुआ है। इसलिए, आज हमारा साइंस चन्द्रमा पर पहुंचा है क्योंकि हमारे संस्कार हमें 'सत्यमेव जयते' की प्रेरणा देते हैं। जैसे अभी बहुत वक्ताओं ने कहा है और मैं भी अपनी बात उसमें जोड़ना चाहूंगा कि अगर हम साइंस की बात करें तो उसमें हमारे बहुत सारे लोगों ने अपना योगदान दिया है। अगर ये योगदान हैं तो उसे हम वर्ष 1960 या 1962 से आरम्भ न करें, हम अपने संस्कार और इतिहास के बारे में भी सोचें, जहां भारत में आर्यभट्ट जैसे, भास्कराचार्य जैसे, ब्रह्मगुप्त जैसे, वराहमिहिर जैसे वैज्ञानिक थे, जिन्होंने विश्व को गिनती सिखाई, विश्व को ट्रिगोनोमेट्री सिखाई, विश्व को एस्ट्रोनॉमी सिखाई। यहां प्रोफेसर साहब और हमारे जो सभी साइंटिफिक साथी हैं, उन्हें यह अच्छी तरह से मालूम है। ये हमारे संस्कार हैं, ये हमारे साइंटिफिक संस्कार हैं। उसके बाद पीढ़ी-दर-पीढ़ी, कड़ी-दर-कड़ी जो चलती आई, उसमें यह बात सही है इसमें पंडित नेहरू जी का भी योगदान है। वर्ष 1960 में, फिर वर्ष 1962 में उन लोगों ने इसरो को आरम्भ किया। उसके बाद सभी माननीय प्रधान मंत्रियों का सहयोग है। इन्दिरा गांधी जी का सहयोग है। उन्होंने सतीश धवन जी को वापस बुलाया। वे कैल्टेक में पढ़ रहे थे। उन्हें उन्होंने वापस बुलाया। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस से फिर वह इसरो गए। उनका बहुत बड़ा योगदान था। इसी प्रकार, हमारे भारत के बहुत सारे ऐसे वैज्ञानिक रहे हैं, जिन्होंने मुझे प्रेरणा दी है, जैसे सी.वी. रमण साहब, मेघनाथ साहा साहब, विक्रम साराभाई, होमी भाभा, एच.जी.एस. मूर्ति, वमन पटवर्द्धन, परम आदरणीय ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी, सतीश धवन जी, इसरो के सभी जो चेयरमैन रहे हैं, जैसे सतीश धवन जी, राधाकृष्णन जी, शैलेश नायक जी, किरण कुमार जी, शिवन जी और अब सोमनाथ जी, यू.आर. राव जी, कस्तूरीरंगन जी, माधव नायर जी, इन सबको हमें धन्यवाद देना है। इन सबको तो हमें धन्यवाद देना ही है, लेकिन हमारी जो सभी साइंटिफिक कम्युनिटी में, न सिर्फ आई.आई.टी., दिल्ली में, जहां से मैं हूँ या और सभी आई.आई.टी. में, बल्कि हमारे जो सैंकड़ों

इंजीनियरिंग कॉलेजेज हैं, उन्हें भी धन्यवाद देना है। हजारीबाग में भी विनोबा भावे इंजीनियरिंग कॉलेज है। वहां से हमारे इंजीनियर आए हैं, जिन्होंने इसरो में और साइंस में अपना योगदान दिया है। अभी बिद्युत जी बता रहे थे कि जमशेदपुर से भी बहुत सारे लोग ऐसे हैं, जो इसरो से जुड़े रहे हैं, त्रिवेंद्रम से लोग जुड़े हुए हैं, चेन्नई से लोग जुड़ रहे हैं। हमारे पूरे भारत से इतने सारे साइंटिस्ट्स और इंजीनियर्स हैं, जिनके सहयोग और समर्थन के कारण हम आगे जा रहे हैं। इन सबको हम धन्यवाद करते हैं। हम सबका नमन करते हैं।

हम सबको प्रणाम करते हैं। लेकिन अगर एक व्यक्ति का योगदान इसमें स्मरणीय रहा है, अकल्पनीय रहा है, अतुल्य रहा है, तो हमारे परम आदरणीय प्रधानमंत्री जी का योगदान रहा है। हम सबको धन्यवाद देते हैं, लेकिन नेतृत्व और जो अतुल्य योगदान हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी का रहा है, वह इतिहास कभी नहीं भूलेगा। उसको विपक्ष के हमारे साथी भले ही भूल जाएं, लेकिन इतिहास उनको भूल नहीं सकता है। ... (व्यवधान) अगर आप साइंटिस्ट्स हैं, अगर फैक्ट्स से आपको कोई ताल्लुक है तो इसको आप न भूलें। मैं इसको सिर्फ राजनैतिक तौर से नहीं कह रहा हूँ। मैं तर्क और तत्वों के आधार पर कह रहा हूँ कि प्रधानमंत्री जी का योगदान विशेष और अकल्पनीय क्यों रहा है? मैं आपको बताता हूँ। आप जान लीजिए कि वर्ष 2013-14 में इसरो का जो बजट था, वह 5,600 करोड़ रुपये था। आज के समय इसरो का बजट दोगुना से ज्यादा हो गया है, 12-13 हजार करोड़ रुपये हो गया है। यह हम लोगों ने 9 वर्षों में किया है। यह माननीय प्रधानमंत्री जी का योगदान है। यहां सभी जानते हैं, सभी अनुभवी माननीय सदस्य हैं, उन्हें मालूम है कि ऐसे बहुत कम विभाग हैं। सभापति महोदय जी, भारत सरकार में ऐसे बहुत कम विभाग हैं, जो सीधा प्रधानमंत्री जी से जुड़े हुए हैं और प्रधानमंत्री जी के अधिकार क्षेत्र में ही आते हैं और डिपार्टमेंट ऑफ स्पेस उनके ही तहत है। अगर इसमें बजट को दोगुना से ज्यादा कर दिया है, यह माननीय प्रधानमंत्री जी ने किया है तो इसे आपको स्वीकार करना पड़ेगा।

दूसरा, आप यह भी जान लीजिए और सुप्रिया जी ने भी कहा है, मैं बिल्कुल उनका समर्थन उस बात पर करता हूँ कि हमारे प्राइवेट सैक्टर का भी इसमें बहुत बड़ा योगदान रहा है। फिर चाहे

वालचन्द कंपनी हो, चाहे एलएण्डटी की बात करें और विशेष तौर पर, क्योंकि झारखण्ड के मेरे साथी यहां बैठे हुए हैं, एचईसी रांची का भी सहयोग इसमें रहा है, जो क्राइयोजेनिक इंजिन बना है, वह एचईसी रांची में ही बनाया गया है तो प्राइवेट सैक्टर का योगदान रहा है। लेकिन वर्ष 2020 में माननीय प्रधानमंत्री जी का निर्णय था कि स्पेस का जो पूरा सैक्टर है, इसको हम लोग प्राइवेट सैक्टर के लिए खोल दें, इसको लिब्रलाइज़ कर दें। उसके बाद हम लोगों ने प्राइवेट सैक्टर को इतना प्रोत्साहन दिया है, इतना सहयोग दिया है कि आज स्पेस में 140 स्टार्ट-अप्स आ चुके हैं और हमारे स्पेस का ईको सिस्टम बहुत तेज़ी से बढ़ता चला जा रहा है। यह निर्णय भी माननीय प्रधानमंत्री जी का था। जैसे उन्होंने बजट को दोगुना किया, वैसे ही उन्होंने स्पेस को लिब्रलाइज़ कर के 140 करोड़ स्टार्ट-अप्स को योगदान दिया।

तीसरा, जब हम लोगों ने इस तरीके से लिब्रलाइज़ किया तो विश्व में नंबर वन तथा सबसे अफॉर्डेबल और किफायती तरीके से अगर कोई सैटेलाइट को geosynchronous orbit में डाल सकता है तो वह इसरो ही डाल सकता है। पिछले कुल वर्षों में हम लोगों ने कुल-मिला कर 400 फॉरन सैटेलाइट्स को अर्थ ऑर्बिट में डाला है, जिससे इसरो को 3300 करोड़ रुपये का रेवन्यु मिला है। वह भी माननीय प्रधानमंत्री जी की सोच थी कि इसरो को हम लोग पूरे तरीके से ओपन अप कर के सैटेलाइट लॉन्च में हम लोग ले आएंगे। इस तरीके से अगर किसी को भी पूरे तरीके से श्रेय इस सफलता का मिलना चाहिए तो वह माननीय प्रधानमंत्री जी को मिलना चाहिए। यह हम सब लोग स्वीकार करते हैं।

सभापति महोदय, इसरो का इतिहास बहुत दिनों से चलता आया है। मैं चंद्रयान पर आता हूँ। लेकिन अगर हमें चंद्रयान को समझना है तो पहले आर्यभट्ट सैटेलाइट को समझना होगा, जो सोवियत संघ ने सन् 1975 में अर्थ ऑर्बिट में डाला। उसके बाद हम लोगों का खुद का लॉन्च व्हीकल सैटेलाइट सन् 1980 में गया। फिर रोहिणी सैटेलाइट गया, इनसैट सैटेलाइट गया, आईआरएस सैटेलाइट गया। ये सभी सैटेलाइट्स गए। हम लोगों ने इसकी एक लंबी कड़ी बनाई। हम लोगों ने नए-नए लॉन्च व्हीकल्स तैयार किए। पोलर सिंक्रोनस लॉन्च व्हीकल, जीएसएलवी तैयार किए। फिर हमने

छात्रों के लिए भी स्मॉल सैटेलाइट्स को लॉन्च करने की क्षमता दी। फिर मंगल यान को भी हम लोगों ने मार्स के ऑर्बिट में अपना सैटेलाइट भेजा। आप लोगों ने याद होगा कि तब हम लोगों ने सभी जगह कहा था कि इतने किफ़ायती तरीके से हम लोग कर रहे हैं कि हॉलिवुड की पिक्चर से भी कम के बजट में हम लोग मंगल यान के द्वारा मार्स तक पहुंच सकते हैं। यह हमारी क्षमता है। अगर यह क्षमता है और माननीय प्रधान मंत्री जी इस काम में लगे हुए हैं और पूरा भारत इस काम में लगा हुआ है तो हमें समझना चाहिए कि स्पेस और चांद पर पहुंचना कितना प्रेरणा का स्रोत है और कितने दिनों से इसको एक लक्ष्य बनाया गया।

उसमें मैं अमेरिका की भी बात करना चाहता हूं। जो अमेरिकन स्पेस कैपेबिलिटीज हैं, उससे हम सब लोग प्रेरित हैं। खासकर जॉन एफ. कैनेडी का एक बहुत ही जाना-माना भाषण है, जिसे मैं अभी कोट करना चाहूंगा। जॉन एफ. कैनेडी ने जो कहा था, उसे हम लोगों को याद करना चाहिए। जॉन एफ. कैनेडी ने वर्ष 1962 में कहा था- "Why some say the moon, Why choose this as our goal?" This applies to India. "Why some say the moon, Why choose this as our goal? And they may well ask, why climb the highest mountain?" That is because it is there. New hopes for knowledge and peace are there. We chose to go to the moon this decade and do the other things, not because they are easy. We chose to go to the moon – this applies to India – not because they are easy but because they are hard. अगर हम लोग बड़े-बड़े लक्ष्य हासिल करने के लिए अपनी आकांक्षाओं को बनाते हैं, अगर हम इस भवन का निर्माण तीन-चार सालों में कर सकते हैं, तो इसलिए नहीं कि यह आसान काम है, इसलिए कि यह मुश्किल काम है। Not because they are easy, but because they are hard, we chose to go to the moon.

It is not easy to build this Parliament building in three or four years. It is not easy, but because it is hard we have chosen to build it. It is hard to build all the roads, the highways, and everything else. But because it is hard, we want to do it

because that is the new India we want to build. It is hard to be able to feed 80 crore people with the Garib Kalyan Yojana - क्योंकि मुश्किल है, इसलिए हम इसको करने के लिए प्रतिबद्ध हैं और हमने करके दिखाया है। It is not because it is easy, but because it is hard. And it is hard. अगर कोई समझता है कि चंद्रयान चांद पर पहुंच गया और कोई भी इसे कर सकता है तो मैं आपको लूना-25 के बारे में बताना चाहता हूँ। आप जानिए कि अगर वर्ष 1950 में स्पेस रेस चालू हुआ और अगर जॉन एफ. कैनेडी ने कहा कि हम लोगों को वर्ष 1960 में ही मून पर पहुंचना है तो क्यों किया, क्योंकि उनके सामने एक चुनौती थी, एक कम्प्टीशन था। वह कम्प्टीशन किसके साथ था, वह सोवियत यूनियन के साथ था, क्योंकि सोवियत यूनियन ने स्पेस फ्लाइट और स्पेस का पायनियरिंग किया था। यूरी गैगरिन के बारे में भी आप सबको याद होगा। उस स्पेस रेस के कारण जॉन एफ. कैनेडी ने कहा कि we must get to the moon. वही सोवियत यूनियन, वही स्पेस प्रोग्राम और उसी समय जब चंद्रयान अगस्त महीने में मून के साउथ पोल पर पहुंच रहा था, तब उनका जो लूना-25 था, वह भी अगस्त में फेल हो गया। Not because it is easy, but because it is hard that we go to the moon.

The Russians who developed and pioneered space flight were the ones who were not able to succeed. They tried a South Pole landing, but they failed. They used a 30 kg robotic launcher and a 1,750 kg launch mask, not because it was easy. What did we do? Instead of putting a 1,750 kg launch mask, Professor Saheb, we put a 4,000 kg launch mask and a much larger payload on Chandrayaan 3. We put it into earth orbit. we moved it out of earth orbit into the lunar orbit. And then on August 23, at 6.04 p.m., I am sure everybody here must have been spellbound watching. I will also tell you that the number of concurrent users on the ISRO channel on YouTube that day was the highest number of views ever recorded.

पूरा भारत उस ऐतिहासिक क्षण को यूट्यूब के चैनल पर देख रहा था। 23 अगस्त को छह बजे हमारा चंद्रयान चांद पर पहुंचा और साउथ पोल की लैंडिंग हुई। उस समय 14 दिनों तक साइंटिफिक एक्सपेरिमेंट्स चलें - not because it is easy. The Russians were not able to do it. It is hard but we did it. And we accomplished something that the Russians were not able to accomplish because it is hard, not because it is easy. That is the India we are building; that is the India we want to see; that is the India our Prime Minister wants to see.

इसी कारण हमें चंद्रयान में सफलता मिली। हमारे सभी साइंटिस्ट्स और इंजीनियर्स को सफलता मिली। मुझे निजी तौर पर भी बहुत खुशी हुई। मुझे बहुत गर्व हुआ। हजारीबाग के भी कई लोग उससे जुड़े हुए थे। मेरी उनसे फोन पर भी बात हुई। जब हमने उनसे बात की तो वे हर्ष से गदगद थे, क्योंकि इतना बड़ा लक्ष्य हम लोगों ने हासिल किया। लेकिन, यह तो एक और ही कड़ी है, अभी हमें और बहुत दूर जाना है, बहुत दूर जाना है। चांद पर तो हम पहुंच ही गए, फिर आदित्य एल-1 तो हम लोगों को सूरज की तरफ ले गया। सूरज पर हम लोग एक्सपेरिमेंट्स करेंगे। क्रोना पर भी एक्सपेरिमेंट्स हो रहे हैं। क्रोना के बारे में भी स्टडी हो रही है। वह भी बहुत ऐतिहासिक है।

हम लोगों की सोच यह है कि हम लोग जल्द ही गगनयान के द्वारा, मैं आपको बता दूं कि हमारे एस्ट्रोनॉट्स वगैरह की ट्रेनिंग हो गई है, हमारे पास रॉकेट लांच की पे लोड कैपेसिटी है। हम लोग कुछ लोगों को 400 किलोमीटर सैटेलाइट के पार गगन यान के द्वारा स्पेस में ले जाना चाहते हैं। मैन स्पेस फ्लाइट पर भी हम लोग जाना चाहते हैं। यह हमारा लक्ष्य है। यहां हम लोग पहुंचना चाहते हैं। इसके द्वारा जो हम लोगों का स्पेस का इकोसिस्टम बन रहा है, उसे भी हमें समझना चाहिए। यह हमारे माननीय प्रधान मंत्री जी की दूरदर्शी सोच है कि हमें सिर्फ इन मिशन्स में सफल नहीं होना है, बल्कि हमें मिशन्स से और आगे बढ़कर पूरे स्पेस की इंडस्ट्री, पूरे स्पेस का इकोसिस्टम भी बनाना है। हमें क्यों इस तरीके से बनाना है, क्योंकि जब स्पेस का इकोसिस्टम बनता है तो बहुत सारी एडवांस टेक्नोलॉजीज़ में भी हम उसके द्वारा बहुत आगे बढ़ जाते हैं। हम लोग डेवलपमेंट के तौर पर इन

एडवांस टेक्नोलॉजीज़ पर अपना कंट्रोल हासिल करना चाहते हैं। यह बहुत ही जरूरी है। मैं हमारे भारत रत्न, पूर्व राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम जी का एक कोट आपको बताना चाहता हूँ।

“ISRO’s vision was clear. If Indians were to play a meaningful role in the comity of nations, they must be second to none in the application of advanced technologies to real life problems.”

That is our hon. Prime Minister’s vision. We use the space ecosystem to develop the knowledge, the ability and the capability to deal with these advanced technologies. Whether they pertain to material science, whether they pertain to telecommunications, whether they pertain to remote sensing, whether they pertain to forecasting, all of these different advanced technologies in computing and in semi-conductors, will come within our capability set, if we are able to push this space ecosystem.

I will conclude, Chairman, Sir, with the vision that our 140 start-ups become thousands of start-ups; that we generate tens of unicorns; and they become among the world’s leading space companies while pushing these advanced technologies, taking India not just to the moon, not just to the sun but to the stars. That is the new India that we are building, not because it is easy, but because it is hard; and we want progress of all.

Thank you very much.

SHRI KARTI P. CHIDAMBARAM (SIVAGANGA): Sir, there are certain events in a nation's history which uplift the entire national mood. Sir, 23rd August, 2023 was definitely a golden moment in our history when millions in India unabatedly watched the landing of Chandrayaan-3 successfully on the uncharted part of the moon. It was really an epoch-making day and it was a day which lifted up the spirits of entire India. This spirit was lifted up by ISRO which is manned by people like T.K. Anuradha, M. Vanitha, Lalithambika, Kalpana Kalahasthi, Mangala Mani, Sohan, Subhashish Nayak and the Project Director Veeramuthuvel from Villupuram and by its former Director, Sivan. These are people who come from small towns. They studied mostly in the Government schools and in non-private colleges but not in the very glamorous institutions. They lifted up the spirit of India through ISRO. So, I am sure this House and the entire nation pay great tribute to them.

It is not surprising that our Defence Minister, who was a Physics Lecturer, veered into philosophy, veered into spiritualism, and veered into faith. Every physicist, including Oppenheimer, who is the Father of the Atom Bomb, eventually became a philosopher. I am sure our Defence Minister has got a philosophical side too.

The point is, we confuse spiritualism with faith. I agree that science and spiritualism have a very close connection. I agree that philosophy and science have a close connection. But sometimes, we confuse faith to be spiritualism and science. Faith cannot be questioned because if it is questioned, an Ayatollah will

give a fatwa; a clergy will expel you from the church or a self-styled godman will tell you that you are a heretic.

So, faith is not questioned, but spiritualism is questioned and science is questioned. What is questioned is what can be science; what cannot be questioned can only be faith. So, let us not confuse faith with spiritualism. Sir, I am a believer in God. I have faith in astrology; I have faith in astrology; I have faith in God; and I have faith in ritualism. That is my faith, but that should not be confused with spiritualism or science. What is science must be experimentally proved and must be tested. Spiritualism is also tested. Nothing which is permanent can be science because science is constantly questioned. But faith we believe is permanent and cannot be questioned. Let us never confuse that. In today's world, faith, myth, mythology and fables are being used by charlatans in the guise of science. In today's political environment, this confusion is getting even worse. So, it is very important that we maintain the scientific temper of India which has been showcased by ISRO and the various scientists I listed out.

Sir, it is actually baffling. With this landing on the Moon, people have said that we have launched the cheapest Moon Mission in the world because this Moon Mission was cheaper than the two Hollywood movies which were produced about space. I completely agree with that. But it also poses some very serious questions to us as a people, as a nation. I am not pointing fingers at the Government. How can we, as a nation which is able to land on the uncharted part of the Moon, still have manual scavenging? How can we not build roads which do not go away in one monsoon? While we have this great scientific capacity, where

have we lost? I completely understand our heritage and our history which has been very closely associated with science and astronomy. In Tamil Nadu, you come to the Brihadeeswara Temple, you will talk about that building for thousands of years. But I am not sure whether we are going to talk about this New Parliament Building thousand years from now. I am not sure whether this building will last thousand years from now. Where have we lost that? That is where we really need to focus.

I am completely in agreement that we must research, we must test and we must go back to our roots to find out where we lost the science which we already had. How can we, as a people, have this contrast – landing on the Moon and having manual scavenging at the same time? How can we be there? We are launching satellites for everybody else, but cannot manage a road in the monsoon. Why can we not do that? There is something seriously wrong in our society if we cannot leverage on the scientific advancements that we are making. We really need to reach up. There are geniuses in every town and in every village. ISRO has been the classic example of little town India. ISRO is not about Ivy League schools; ISRO is not about IITs; ISRO is not about Oxford and Cambridge. ISRO's success is about the genius of India. If you want to, call it Bharat as well. We need to unleash that genius. How do we do that? I have a proposal for the Government.

Please institute fellowships, scholarships and internships for ISRO in government schools, particularly aimed at government schools. I must confess that you are very good in running national campaigns. Please run a national

campaign and identify the next Kalpana Chawla, identify the next Vikram Sarabhai from the government schools of India. You run a nationwide programme and encourage people to believe that they can also be a part of it. Until this landing on the Moon happened, many people did not even know that ISRO was there. Many people do not know that they can become scientists. Here, we have a living example of people from small towns, who went to government schools, becoming great scientists. You run a national campaign, run fellowships, run scholarships and run internships. You open the doors of ISRO to the average Indian who is so curious, who is inspired by ambition, who is inspired by aspiration, to be a part of it.

Sir, this is a great day and a great time in our lives. It is important for us to merge our historic scientific knowledge with modern science, but let us never ever confuse ourselves with charlatans who confuse faith and who use that as a propaganda. I am a firm believer in Lord Ganesha. Many years ago, they were telling that Lord Ganesha's idols were drinking milk, but nobody ever explained that it was actually capillary effect of a porous body which was sucking up the liquid. They tell us that the first plastic surgery was conducted on Ganesha, without ever telling how the circumference of an elephant's trunk can be fitted on a human body.

Sir, faith is different and spiritualism is different. Spiritualism is questioned, but faith is not questioned. But let us never ever confuse that. I am not disparaging any faith. I am a man of faith. I believe in God; I believe in rituals; and I even believe in astrology. But that should never take away the scientific

temperament of India. We must be a scientific nation, build on the foundations, and answer these contrasting questions which are being posed to us.

Sir, I once again salute the unsung heroes of ISRO and hope that we unleash the true potential of India.

Thank you very much.

*** SHRI K. SUBBARAYAN (TIRUPPUR):** Hon. Chairman Sir. Science liberates humans from superstitions. Superstitions and disbeliefs among human beings create a situation of negativity and negative thoughts all around. Therefore there is an urgent need to liberate humanity from superstitions in our country. Science will be a helping hand in a very big way. We should thank Pandit Jawaharlal Nehru in the first instance. Pandit Nehru is an unforgettable leader, who with his visionary thoughts and ideas, had laid down the path and direction for development of our country. Pandit Nehru had sown the seeds. Those seeds have now grown to benefit us as Chandrayaan-1, Chandrayaan-2 and Chandrayaan-3. We are getting new details about moon through the success of these projects. I extend my sincere gratitude to Pandit Nehru for this wonderful contribution.

The success of Chandrayaan-3 is due to our consistent efforts undertaken during the last 50 years and more. With the success of Chandrayaan mission, all the false disbeliefs about moon have been quashed. Chandrayaan-3 has tried to change the veracity of information as to what was depicted about moon so far. All superstitions have been proved wrong. I extend my heartfelt congratulations and gratitude to all the scientists and the supporting staff who have helped to make this Mission of Chandrayaan a grand success. The Constitution of India talks about the scientific temper. But those who took oath and allegiance in the name of Constitution, which talks about scientific temper, are misleading the people in a

* English translation of the speech originally delivered in Tamil.

wrong path and with misinformation. In India such a dangerous situation is very much visible. These are the matters which are to be viewed with great concern.

We can only find solutions to these issues with the help of Science. Measures are to be taken in that direction. India has witnessed a stellar achievement in the field of Space Science and we are so proud to be Indians. We should once again think with gratitude that only because of the seeds sown by Pandit Jawaharlal Nehru this success was possible for us to achieve. This exalted position has been reached by us because of him. We have to look at Constitution of India with great concern. Scientific temper as mentioned and highlighted in the Constitution of India has not been spread among Indians. Only when we take this scientific temper to each and every citizen, Indians will come out of superstitions, and get a clarity of thought about what is truth. As of now the need to encourage scientific advancement has grown multi-fold. Tamils have played a major role in Chandrayaan-1, Chandrayaan-2 and Chandrayaan-3 projects. Scientists belonging to Tamil Nadu have very much contributed in depth in all these 3 projects. India has come to know about the standard of education that prevails in Tamil Nadu through the success stories of Chandrayaan-1, Chandrayaan-2 and Chandrayaan-3.

14.36 hrs

(Shri A. Raja *in the Chair*)

The sharpness and strength of Tamil Nadu in educational development are very much visible now. The success stories of Chandrayaan-1 Chandrayaan-2 and Chandrayaan-3 have stood as a testimony for looking at Tamil Nadu so closely and with a sense of learning from it. I want to urge upon the Union

Government that science exhibition should be organised in all villages and other places. People should be taught about scientific temper. Only then we can be honest and truthful to our Constitution. With this I conclude. Thank you.

श्री सुमेधानन्द सरस्वती (सीकर): सभापति महोदय, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया। सबसे पहले मैं माननीय अध्यक्ष जी के प्रति बहुत-बहुत आभार व्यक्त करना चाहूंगा कि उन्होंने एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय चंद्रयान-3 की सफलता के ऊपर चर्चा करने का मौका दिया। इसके साथ ही मैं यह भी कहना चाहूंगा कि हमारे देश के वैज्ञानिकों ने एक सफल कार्यक्रम आयोजित किया। 14 जुलाई को चंद्रयान-3 ने पृथ्वी से उड़ान भरी और 23 अगस्त को सफलता पूर्वक चंद्रमा के दक्षिण ध्रुव पर उतरा। वहां का वातावरण भी अलग रहता है। वहां माइनस 200 डिग्री तक तापमान रहता है और अंधकार छाया रहता है। वैसे स्थान के ऊपर यान को उतारने वाला भारत दुनिया का प्रथम देश बना। इसलिए, मैं देशवासियों को, माननीय प्रधान मंत्री जी को और अपने सभी वैज्ञानिकों को बहुत-बहुत बधाई, साधुवाद देना और आभार व्यक्त करना चाहूंगा। मैं यह भी कहना चाहता हूं कि हमारा देश ऋषियों और मुनियों का देश है। अभी चिदम्बरम जी बोल रहे थे, उससे पहले हमारे कई वक्ताओं ने इस विषय को रखा। हम कई बार भटक जाते हैं। जब कभी अध्यात्म और धर्म की बात आती है तो हम विचलित होने का प्रयास करते हैं। जब हम अपने प्राचीन साहित्य, इतिहास और वेदों को देखते हैं तो हमारे यहां प्राचीन साहित्य में इस प्रकार का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। हम अपने प्राचीन ऋषियों को देखते हैं। ऋषि का अर्थ क्या है? 'ऋषयोः मंत्र दृष्टारः', जो मंत्र पर विचार करता है, चिंतन करता और मनन करता है। मैं तो कहूंगा कि जो आधुनिक वैज्ञानिक हैं, ये हमारे आधुनिक ऋषि हैं। इन्होंने देश को आगे बढ़ाया है और देश का नाम समुज्ज्वल किया है। यदि हम रामायण काल को देखें तो उसमें भी हमारे यहां बहुत सारे इस प्रकार के वैज्ञानिक थे। रामायण में 'पुष्पक विमान' का उल्लेख मिलता है। वह साउंडलेस था। हमारे यहां भास्कराचार्य जी का ग्रंथ 'वृहद विमान शास्त्र' है। एक संस्कृत का विद्यार्थी होने के नाते मैंने उस ग्रंथ को अच्छी तरह से पढ़ा है। उसमें जिस प्रकार के विमानों का उल्लेख मिलता है, आज भी हम साउंडलेस विमान तैयार नहीं कर पाए हैं। जब वे विमान रात्रि में उड़ते थे तो वे अंधेरे में भी दिखाई देते थे। उस स्थान तक पहुंचने के लिए अभी हमारे और दुनिया के वैज्ञानिकों को अध्ययन और रिसर्च करनी पड़ेगी। हमारे यहां दर्शन के भी विद्वान थे, गौतम थे, कणाद थे और कपिल थे। उन्होंने अणु और परमाणु के ऊपर जो विचार किया, हमने उन

दर्शनों को कई बार नास्तिक दर्शन कह दिया। जिस ग्रंथ के अंदर धर्म की चर्चा है, हम उसको भी नास्तिक कह देते हैं। जब धर्म की चर्चा होती है तो हम उसको अंधविश्वास कह देते हैं। जब तक इन दोनों का समन्वय नहीं होगा, मैं हमेशा एक बात कहा करता हूँ कि जैसे एक पक्षी उड़ान भरता है, पक्षी के एक पंख को बांध दीजिए, एक पंख को बांधने के बाद पक्षी उड़ान नहीं भर सकता है।

यदि मनुष्य अपने जीवन में पूर्ण विकास करना चाहता है, यदि कोई भी देश पूर्ण विकास करना चाहता है, तो वह बिना अध्यात्म के आगे नहीं बढ़ सकता है। अध्यात्म से विल पावर मिलती है और विल पावर क्या करती है? जैसा कि आपने देखा है, एक साल पहले हमारा एक यान असफल हुआ था। माननीय प्रधानमंत्री जी हमारे वैज्ञानिकों के बीच में गए और उनकी पीठ थपथपाई और उनका धीरज बंधाया। यदि हम उस समय निराश और हताश हो जाते और हमारे अंदर विल पावर नहीं होती, तो हम आगे नहीं बढ़ सकते थे। उसका परिणाम यह निकला कि विल पावर के कारण, आत्मबल के साथ हम आगे बढ़े और आगे बढ़ते-बढ़ते एक साल के बाद हमारे वैज्ञानिकों ने वह काम करके दिखा दिया, जिसका लोहा पूरी दुनिया ने माना है।

मैं एक निवेदन और करना चाहूंगा। जहां हमारे वैज्ञानिक माननीय सोमनाथ जी की टीम ने काम किया है, उसके साथ ही साथ जो और भी लोग थे, जैसे प्रायः मैं कई बार एक बात करता हूँ कि एक गाड़ी है। वह कई करोड़ रुपये की है, अगर उसमें से वाल्व निकाल दिया जाए, तो टायर में हवा नहीं रुकेगी। चाहे लाखों-करोड़ों रुपये का इंजन हो, अन्य साधन हों, यदि हम वाल्व की कीमत को नहीं समझेंगे, तो वह गाड़ी नहीं चल सकती है।

आज हम इस भव्य भवन में बैठे हैं, नई पार्लियामेंट में हैं। इसमें एक सामान्य कर्मचारी ने भी, जिसने छोटा-सा काम किया है, जो पानी देने का काम करता था, सीमेंट और गारा बनाने का काम करता था, पत्थर पकड़ने का काम करता था, गाड़ी में पत्थर लादने का काम करता था, उसका भी उतना ही योगदान है, जितना किसी आर्किटेक्ट ने इस भवन को बनाया और उसमें इंजीनियर ने सहयोग दिया। ठीक इसी प्रकार से जो हमारा यान चन्द्रमा पर पहुंचा, चन्द्रमा पर पहुंचने तक यान में

जितने लोगों को सहयोग रहा है, एक सामान्य कर्मचारी जो उनकी टीम में काम करता था, वह भी उसमें भागीदार था।

मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ। हमारा देश तो इतना समृद्ध था। हमारी संस्कृति में स्पष्ट है कि – “एतद्वेशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः। स्वं स्वंचरित्रं शिक्षेरन्पृथिव्यां सर्वमानवाः।” हमारे देश के ऋषियों के समय नालंदा जैसी यूनिवर्सिटी थी। अभी जी-20 सम्मेलन हुआ है। माननीय प्रधानमंत्री जी जहां खड़े थे, उसके बैकग्राउंड में नालंदा विश्वविद्यालय की फोटो लगाई गई थी। वह इसलिए लगाई गई कि वहां दुनिया के विद्वान आए थे, दुनिया के नेता और राष्ट्राध्यक्ष आए थे, जब उन्होंने उसको देखा, तो वे उनको बता भी रहे थे और समझा भी रहे थे कि हमारे देश की स्थिति कभी ऐसी थी। हम बीच के समय गुलामी की जंजीरों में जकड़े थे और गुलाम होने के कारण हम विकास नहीं कर पाए थे। हमारी जो प्राचीन धरोहर थी, अगर हम उस धरोहर का स्मरण करेंगे, उस पर अनुसंधान करेंगे, तो हम और आगे बढ़ सकते हैं।

अभी तो हमारे देश ने उड़ान भरी है। अभी हम चन्द्रमा के साथ-साथ सूर्य की तरफ बढ़े हैं। सूर्य का अध्ययन करने के लिए हमारे वैज्ञानिक जो काम कर रहे हैं और बहुत सारे ग्रह-उपग्रह हैं। मैं जब प्राचीन साहित्य को पढ़ता हूँ, तो उसमें उल्लेख मिलता है कि अन्य ग्रहों के ऊपर भी मनुष्य जीवन हो सकता है। इस पर हमारे वैज्ञानिक रिसर्च कर रहे हैं। मैं इसलिए सबसे ज्यादा आभार वैज्ञानिकों को देना चाहूंगा, कोई भी वैज्ञानिक किसी काम को करता है, तो फुल स्टॉप नहीं लगाता है। वह आगे के लिए रिसर्च और अनुसंधान का काम छोड़ देता है। इसलिए मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि हमारे जितने भी वैज्ञानिक हैं, उन्होंने चन्द्रयान-श्री पर जो काम किया है, देश की आज़ादी के बाद से जब से इसरो का काम प्रारंभ हुआ है या हमारे जितने अन्य रिसर्च सेंटर्स हैं, वहां काम प्रारंभ हुआ है, मैं उन सबका आभार व्यक्त करता हूँ।

खासतौर से जो महिला आरक्षण बिल पास हुआ है, मैं उन महिलाओं का भी बहुत-बहुत आभार व्यक्त करूंगा जो इसमें शामिल थीं। नंदिनी हरिनाथ, डॉक्टर रितु करिधल श्रीवास्तव जी, मीनल जी, अनुराधा टी. के. सहित अनेक महिलाएं इसमें शामिल थीं। मेरे क्षेत्र की भी एक बेटा इस टीम में शामिल

थी। मैं उन सबको बहुत-बहुत बधाई देना चाहूंगा। मैं आशा करूंगा कि हम अपने प्राचीन अध्यात्म की धरोहर को लेकर, प्राचीन दर्शन शास्त्र और वेदों की धरोहर को लेकर, आधुनिक विज्ञान का समन्वय करके इस देश को आगे बढ़ाने का प्रयास करेंगे।

पुनः मैं माननीय प्रधानमंत्री जी का आभार व्यक्त करना चाहूंगा। कई बार यह कहा जाता है कि आप उनको धन्यवाद क्यों दे रहे हैं। किसी के किए गए उपकार को न मानना कृतघ्नता होती है। हमारा शास्त्र कहता है कि दुनिया में सभी पापों का प्रायश्चित हो सकता है, लेकिन कृतघ्नता का प्रायश्चित नहीं हो सकता है। इसलिए हमें उन सभी लोगों के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए, जिन्होंने इसमें अपना योगदान दिया है। माननीय प्रधानमंत्री जी ने पर्याप्त मात्रा में बजट दिया है। जिस दिन प्रधानमंत्री जी विदेश की धरती से यहां पहुंचे, मैं प्रायः सुबह टेलीविजन नहीं देखता हूं। मैं सुबह एक्सर्साइज कर रहा था, तो मैंने टेलीविजन ऑन किया, मैंने देखा कि प्रधानमंत्री जी सीधे बेंगलुरु गए।

उन्होंने वैज्ञानिकों के सामने जाकर कहा कि मैं आपके दर्शन करने के लिए आया हूं। दुनिया का एक सबसे बड़ा नेता हमारे साइंटिस्ट के सामने जाकर कहता है कि मैं आपके दर्शन करने के लिए आया हूं तो आप अनुमान लगा सकते हो कि हमारे साइंटिस्ट का कितना प्रोत्साहन बढ़ा होगा, कितना उत्साह बढ़ा होगा। उत्साह बढ़ने पर ही आदमी काम करता है।

मैं पुनः माननीय प्रधानमंत्री जी और हमारे सभी वैज्ञानिकों का बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं। आशा करूंगा कि हमारा देश दुनिया की बुलंदियों को नापे और यह देश आगे बढ़ता चला जाए। हमारे प्राचीन ऋषियों के जो भाव थे, वे भाव सफल हों। धन्यवाद। जय भारत।

SHRIMATI DIMPLE YADAV (MAINPURI): Sir, moon signifies wisdom, intuition, birth, death, reincarnation and a spiritual connection. Both science and spirituality are the safeguards of humanity and mankind. Spirituality, science and philosophy are all interlaced and interconnected. Sanatana Dharma is all about spirituality. Moon also signifies powerful feminine energy.

Yesterday, we passed the Women's Reservation Bill. So, I would like to congratulate all the women of the country. I would also repeat the demand of the Samajwadi Party that the OBC women should have reservation in the Women Reservation Bill because भाजपा का जो अस्तित्व है, जो भाजपा सरकार में है, वह ओबीसी वोट बैंक की वजह से ही है। हम ओबीसी महिलाओं का हक, सम्मान और अधिकार तथा उनको जो राजनैतिक अधिकार मिलना चाहिए, हम उनको उससे दूर नहीं रख सकते हैं।

As we know, Chandrayaan-3 landed successfully on 23rd August, 2023 on the moon's south pole. With this great achievement, India has also become a member of Artemis Accord. I would like to congratulate all the scientists of ISRO from its very inception, Dr. Vikram Sarabhai, Prof. Satish Dhawan Dr. Homi J. Bhabha, Dr. A. P. J. Abdul Kalam, Shri G. Madhavan Nair, Dr. E. V. Chitnis, Dr. K. Sivan and the current ISRO Chief, Shri S. Somanath, and all the supporting technicians and staff. This achievement belongs to all the scientists and the community alone. Let us not lower our dignity in taking the credit of our dear scientists of the country. Let us all take pride in it.

Such a space programme has always been an instrument of inspiration for the country and the tool of developmental aspirations of the country. It is a moment of great pride for the country, for each and every citizen of this country. We salute all the scientists. *Jai Hind!*

SHRI S. JAGATHRAKSHAKAN (ARAKKONAM): Sir, renowned astronomer Galileo from the West had discovered moon in 1670 AD. But our Tamil poets and scholars had spoken about the moon mission way back in second century itself which can be seen in our Sangam literature. Tamil literature is a testament to the fact that Tamils knew the scientific method of measuring the distance of planets, their atmosphere, the sky, their movements and time scales.

Tamil Sangam poets sang songs about various planets and galaxies in the sky including moon. In 1930s, our Tamil poet Maha Kavi Bharathiyar sang a song about moon in his new 'Aatthi Choodi' that we will explore moon. Also, our Great Tamil scholar, Kavingar Kannadasan predicted this day in early 1966 in his song:

"Chandranai Thedi Sendru Kudiyiruppuma

Tamizhukku Sedhi Solli Azhaithu Koluoma"

It means that we will go in search of moon and live there. And we will inform our Tamil language to come there and be with us. This is our love for our language which is equal to our life.

Our great leader and late Prime Minister, Madam Indira Gandhi ji pioneered this mission and sent Shri Rakesh Sharma to the space in 1984. He was the first Indian to go to the space. We all remember the memories of Shri Rakesh Sharma briefing Madam Indira Gandhi about his feeling of seeing the beauty of mother India from the space.

We have a long history of our initiatives to explore the moon. Whether it is history or politics, South is always special. India's third lunar mission Chandrayaan-3 made India the first country to successfully land near the moon's

South Pole. Besides the study, Chandrayaan-3 is going to explore moon's history, and search of water, ice on the moon, and other materials. It is making us feel very proud about our nation. India may be the fourth nation to launch this Mission, and the third to successfully accomplish this, but it is the first developing nation to achieve this feat as the others were all developed countries.

We are not only technologically strong, but also our techniques such as soft-landing ensured achieving this mission at the lowest possible cost. No country has ever attempted a soft-landing on the moon's South Pole. The US, China, and Russia have attempted soft-landing on Moon's equatorial region, but attempting the same on Moon's south polar region is considered difficult due to the rough terrain. As we have achieved this, it will open new chapters for India.

Chandrayaan Mission's entire cost is roughly Rs. 650 crore, whereas Hollywood film Avatar's budget was around Rs. 1970 crore. This is a proof of testament of our self-reliance and the strength of our own technologies and inventions which was possible on account of "Make in India" initiatives started long ago.

With India emerging as the world's fifth largest economy, we are able to show country's prowess in security and technology. The new satellite centre in Thoothukudi Kulasekarapattinam, which you are planning to inaugurate, will go a long way in promoting the launch of lighter spacecraft and will also bring the much needed foreign exchange.

The success of Chandrayaan-3 could contribute significantly to India's space economy, projected to be worth USD 13 billion by 2025. And I wish all the

success for our first solar mission Aditya-L1. We are proud of our beloved Chief Minister of Tamil Nadu, Thiru M.K Stalin, whose Government has also contributed to the Dravidian model. Mission director Thiru Veeramuthuvel of Chandrayaan-3 and Mission Director of Aditya-L1, Tmt. Nigar Shaji, both are from Tamil Nadu. They significantly completed their primary education from Tamil Nadu Government schools in their mother language Tamil, and rose to such heights and brought pride to our India and Tamilians.

We thankfully remember our Tamil scientists Dr. A.P.J. Abdul Kalam, Dr. Mylswamy Annadurai, popularly known as Moon Man of India, Dr. Sivan, Dr. Veeramuthuvel and other Tamil scientists at this proud moment. I appreciate them and we are proud of our State being part of such a commendable Mission of our country.

With these words, I conclude my speech.

श्री हसनैन मसूदी (अनन्तनाग): चेयरमैन साहब, आपका बहुत शुक्रिया आपने मुझे इस बहस में बोलने की इजाजत दी

जनाब, चंद्रयान-3 की जो सॉफ्ट लैंडिंग हुई है, उस पर सारे मुल्क को फख्र होना चाहिए। हमें उन साइंसदानों पर फख्र है, जो इस मिशन से जुड़े रहे और छोटे से छोटे साइंटिस्ट और टेक्नाक्रेट्स से लेकर इसरो के चेयरमैन तक मुबारकबादी के काबिल हैं।

जनाब, जब हम इस पर इत्मेनान का इजहार करते हैं तो हमें डिनाई नहीं करना चाहिए। सरकार का हक बनता है कि हम उसकी सराहना करें और उसको मुबारकवाद दें। प्राइम मिनिस्टर साहब और जितेन्द्र सिंह जी इसके साथ वाबस्ता रहे। इनका भी वही हक बनता है, लेकिन जब हम यह बात करते हैं तो हम सबको यह ज़हन नशीन करना चाहिए कि यह एक कंटिन्यूटी का मामला है। हमारा यह जितना भी सफर रहा है, इसकी शुरुआत आज से 50-60 साल पहले हो गई थी, जब इसरो को कयाम-अमल में लाया गया। पहले इस मुल्क में एक साइंटिफिक टेम्परामेंट बनाने के लिए पंडित जवाहर लाल नहेरू और उनके जो साथी थे, उनका योगदान रहा और जम्मू कश्मीर में बाबा ए कौम, जनाब शेर ए कश्मीर शेख अब्दुल्ला ने एक साइंटिफिक टेम्परामेंट बिल्ड-अप किया।

वे खुद साइंस में पोस्ट ग्रेजुएट थे। उन्होंने सन् 1930 से पहले मास्टर्स डिग्री हासिल किया था। उनका इस पर बड़ा जोर रहा कि एक साइंटिफिक टेम्परामेंट बिल्डअप हो जाए। जम्मू कश्मीर की यूनिवर्सिटीज से जो फारिग हो गए हैं या बाकी यूनिवर्सिटीज से फारिग हो गए हैं, उनका पूरी दुनिया में बहुत सराहनीय रोल है और मुल्क में भी सराहनीय रोल है। इसरो की शुरुआत 1960 के दहाई में हुई। उस वक्त खते इफलास से नीचे बड़ी कसीद तादाद रहती थी, जब पीएल-480 की बात होती है तथा जब ग्रीन रेवोल्यूशन नहीं आया था, तब इस पर तवज्जो रही थी। उस समय से इस पर फोकस रहा था। उसी का परिणाम चन्द्रयान-3 है। इसके बाद नए प्रयास हो रहे हैं और नए मिशन्स तशकील दिए जा रहे हैं, वे भी इस समय हमें आगे ले जाएंगे। इससे हमारी तरक्की की मंजिलें हैं, वे और आगे बढ़ेंगी।

14.57 hrs*(Dr. Kakoli Ghosh Dastidar in the Chair)*

मैडम, हमें इतने पर ही नहीं रुकना है। हमें उनको क्रेडिट देना चाहिए, जो पहले दिन से इसके साथ वाबस्ता रहे, जिन्होंने पहले दिन से साइंटिफिक टेम्परामेंट बिल्डअप करने के लिए अपना काम किया, उसे हमें और आगे लेकर जाना है। उसके लिए दो-तीन चीजें जरूरी हैं। एक यह है कि आज की तारीख में इसरो को और बाकी स्पेस के रिसर्च प्रोग्राम्स को सेटायर किया जा रहा है। वह नहीं होना चाहिए। We should not rest on our laurels. हम शाबाशी का लिहाफ ओढ़कर न रहें। हमारे मुल्क में इस वक्त जो मामले दरपेश हैं और अभी इस प्लेनेट पर 150 करोड़ लोग रह रहे हैं, उनके मसाईल हैं। उन मसाईल से नजरें ओझल नहीं कर सकते हैं। उन पर हम अटेंशन कम नहीं कर सकते हैं। आज जैसे हेल्थ केयर का मामला है। मैं जम्मू कश्मीर की बात करूंगा। हेल्थ केयर में बड़े गैप्स हैं। सेफ ड्रिंकिंग वाटर में बड़े गैप्स हैं। इस शाबाशी में हम कहीं वह न भूल जाएं, जो वहां पर हमारी मसाईलें हैं, वहां पर हमारी जो आबादी है, उसके जो मसाईल हैं, उनको अपनी नजरों से ओझल न करे। उस पर फोकस कम न करें। हमारी इस वक्त की जो मसाईल हैं, उन पर तवज्जो देने की जरूरत है। हम सिर्फ शाबाशी पर नहीं रहेंगे।

मैडम, जम्मू कश्मीर का एक बहुत बड़ा मसला है। आज कनाडा के प्राइम मिनिस्टर ने एक एडवाइजरी जारी की है कि जो वहां के नागरिक हैं, वे यहां न आए और उसका समर्थन और लोगों ने किया है। यह एक बड़ी परेशानी का मामला है। हम कैसे अपनी जम्हूरियत की बात करेंगे। जम्मू कश्मीर में डेढ़ करोड़ लोग हैं, उनको जम्हूरी हुकूक हासिल ही नहीं हैं। वहां पर 10 सालों से एक चुनी हुई हुकूमत रही है। यह सही बात है कि यह इस विषय से बाहर है, लेकिन मेरा कहने का मकसद है कि हम सिर्फ शाबाशी का लिहाफ ओढ़कर अपने मसलों से गाफिल न हो जाए।

इसरो के चन्द्रयान का जो प्रोग्राम है, उसमें एक और इत्मेनान की बात है कि सारे विषयों में हमारा गौरव यह रहा कि हम साउथ पोल पर लैंड कर पाए। दूसरी बात यह है कि इसके साथ जो सारे साइंटिस्ट वाबस्ता थे, वे ख्वातीन साइंटिस्ट भी हैं और हर कम्युनिटी से हैं। मुस्लिम भी हैं और बाकी कम्युनिटीज से भी हैं और ये सभी अपने मुल्क में ही पढ़े हैं, कोई विदेश से पढ़कर नहीं आया है तो

इससे हमें अहसास होना चाहिए कि हमारे पहले प्राइम मिनिस्टर के बाद हमारी जो बड़ी यूनिवर्सिटीज़ हैं, उनकी उन्होंने दाग बेल डाली, जो कहते थे कि भिलाई, बोकारो जैसे सारे इंस्टीट्यूशन्स नए हिन्दुस्तान के टेम्पल्स हैं।

15.00 hrs

वे उसे यह कह कर बुलाते थे, ताकि वे पनपें, मुल्क का साइंटिफिक टेम्परामेंट पनपे। यह बड़ी फख्र की बात है कि जो भी इसके साथ बावस्ता रहा, छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा जो वैज्ञानिक रहा, उन सभी ने यहां तालीम हासिल की। हर सेगमेंट ऑफ सोसायटी, उससे वाबस्ता है, उससे आए हुए हैं और कम्युनिटी से आए हुए हैं।

मैं इस सरकार को बधाई देता हूं, उन वैज्ञानिकों को बधाई देता हूं, जिनके साथ वाबस्ता है। साथ ही, मैं यह तलकीन भी करता हूं कि हमें उनको भूलना नहीं चाहिए, जिन्होंने इसकी दागबेल डाली। अगर हम किसी इमारत की पांचवीं मंजिल तामीर करें तो इसका मतलब नहीं है कि हम उनको भूल जाएं, जिन्होंने इस इमारत की बुनियाद डाली और चार मंजिलें बनाईं। बाकी, हमारा जो लक्ष्य है, आगे का मिशन है, कहा गया है:

सितारों से आगे जहां और भी है,

अभी इश्क के इम्तिहां और भी हैं।

अभी हमें और आगे जाना होगा। हमें और कामयाबियां हासिल करनी होगी। जब सब का सहयोग होगा, सभी को मान्यता देंगे और सबको रिकॉग्नाइज करें तब हमारे लिए गौरव होगा, शाबाशी होगी। शुक्रिया।

[جناب حسنین مسعودی صاحب (اننت ناگ): شکریہ چیرمین صاحب، آپ کا بہت بہت شکریہ، آپ نے مجھے اس بحث پر بولنے کی اجازت دی۔

جناب، چندریان-3 کی جو سوفٹ لینڈنگ ہوئی ہے، اس پر سارے ملک کو فخر ہونا چاہیے۔ ہمیں ان سائنسدانوں پر فخر ہے، جو اس مشن سے جڑے رہے، اور چھوٹے سے چھوٹے سائنٹسٹ اور ٹیکنوکریٹس سے لیکر اسرو کے چیرمین تک مبارکبادی کے قابل ہیں۔

جناب، جب ہم اس پر اطمینان کا اظہار کرتے ہیں تو ہمیں ڈینائی نہیں کرنا چاہیے۔ سرکار کا حق بنتا ہے کہ ہم اس کی سراہنا کریں اور اس کو مبارکباد دیں۔ وزیر اعظم صاحب یا جتیندر سنگھ جی جو اس کے ساتھ وابستہ رہے ہیں ان کا بھی وہی حق بنتا ہے۔ لیکن جب ہم یہ بات کرتے ہیں، تو ہم سب کو یہ ذہن نشین کرنا چاہیے کہ یہ ایک کنٹینیوٹی کا معاملہ ہے۔ ہمارا یہ جتنا بھی سفر رہا ہے، اس کی شروعات آج سے 50-60 سال پہلے ہو گئی تھی۔ جب اسرو کا قیام عمل میں آیا تھا۔ پہلے اس ملک میں سائنٹفک ٹیمپرامینٹ بنانے کے لئے پنڈت جواہر لال نہرو اور ان کے جو ساتھی تھے، ان کا اہم رول رہا اور جموں کشمیر میں بابائے قوم، جناب شیر کشمیر شیخ عبداللہ نے ایک سائنٹفک ٹیمپرامینٹ بلڈ کیا، وہ خود سائنس میں پوسٹ گریجویٹ تھے۔ سال 1930 میں پہلے ماسٹرس حاصل کیا تھا۔ ان کا بہت بڑا زور رہا کہ ایک سائنٹفک ٹیمپرامینٹ بلڈاپ ہو جائے۔ جموں کشمیر کی یونیورسٹیز سے جو فارغ ہو گئے ہیں یا باقی یونیورسٹیز سے فارغ ہو گئے ہیں، ان کا پوری دنیا میں قابلِ تعریف رول ہے اور ملک میں بھی بہت قابلِ تعریف رول ہے۔ اسرو کی شروعات 1960 کی دہائی میں ہوئی۔ اس وقت خطِ افلاس کے نیچے بڑی کثیر تعداد رہتی تھی، جب پی۔ایل۔480 کی بات ہوتی ہے۔ جب گرین ریولوشن نہیں آیا تھا، تب اس پر توجہ رہی تھی۔ اس وقت سے اس پر فوکس رہا

تھا۔ اسی کا نتیجہ چندریان 3، ہے۔ اس کے بعد نئی کوششیں ہو رہی ہیں، نئے مِشنس کو تشکیل دیا جا رہا ہے، وہ بھی اس وقت ہمیں آگے لے جائیں گے۔ اس سے ہماری ترقی کی منزلیں اور آگے بڑھیں گی۔

جناب، ہمیں اتنے پر ہی نہیں رُکنا ہے۔ ہمیں جہاں تک ان کو کریڈٹ دینا چاہیے جو پہلے دن سے اس کے ساتھ وابستہ رہے ہیں، جنہوں نے پہلے دن سے سائنٹفک ٹیمپرامینٹ کے بلڈاپ کرنے کے لئے کام کیا، اسے ہمیں اور آگے لیکر جانا ہے۔ اس کے لئے دو-تین چیزیں ضروری ہیں۔ ایک یہ کہ آج کی تاریخ میں اِسرو کو اور باقی اسپیس کے ریسرچ پروگرامس کو سیٹائر کیا جا رہا ہے، وہ نہیں ہونا چاہیے۔ We should not rest on our laurels۔ دوسری بات یہ ہے کہ ہم شاباشی کا لحاف اوڑھ کر نہ رہیں۔ ہمارے ملک میں اس وقت جو معاملے درپیش ہیں، جو کہ ابھی اس پلینیٹ میں 150 کروڑ لوگ رہ رہے ہیں، ان کے مسائل ہیں۔ ان مسائل سے نظریں اوجھل نہیں کر سکتے۔ ان پر ہم اٹینشن کم نہیں کر سکتے ہیں۔ جیسے ہیلتھ کیئر کا معاملہ ہے۔ میں جموں کشمیر کی بات کروں گا۔ ہیلتھ کیئر میں بڑے گیپس ہیں، سیف ڈرننگنگ واٹر میں بڑے گیپس ہیں۔ اس شاباشی میں کہیں ہم وہ نہ بھول جائیں، جو وہاں پر ہمارے مسائل ہیں، وہاں پر جو ہماری آبادی ہے، اس کے جو مسائل ہیں، ان کو اپنی نظروں سے اوجھل نہ کریں۔ اس پر فوکس کم نہ کریں۔ ہمارے اس وقت کے جو مسائل ہیں، ان پر توجہ دینے کی ضرورت ہے، ہم صرف شاباشی پر نہیں رہیں گے۔

جناب، جموں کشمیر کا ایک بہت بڑا مسئلہ ہے۔ آج کینڈا کے وزیر اعظم نے ایک ایڈوائزری جاری کی ہے کہ جو وہاں کے ناگرک ہیں، وہ یہاں نہ جائیں اور اسکا سپورٹ اور لوگوں نے بھی کیا ہے۔ یہ ایک بڑی پریشانی کا معاملہ ہے۔ ہم کیسے اپنی جمہوریت کی بات کریں گے۔ جموں کشمیر میں ڈیڑھ کروڑ لوگ ہیں،

انکو جمہوری حقوق حاصل ہی نہیں ہیں۔ وہاں پر 10 سالوں سے ایک چُنی ہوئی حکومت رہی ہے۔ یہ سبھی بات ہے کہ یہ اس موضوع سے باہر ہے، لیکن میرے کہنے کا مقصد ہے کہ ہم صرف شاباشی کا لحاف اوڈھ کر غافل نہ ہوجائیں اپنے مسئلوں سے۔

اسرو کے چندریان کا جو پروگرام ہے، اس میں ایک اور اطمینان کی بات ہے کہ سارے وشیوں میں ہمارا گورو ہے کہ ہم ساؤتھ پول پر لینڈ کرائے۔ دوسری بات یہ ہے کہ اس کے ساتھ جو سارے سائنسدان وابستہ تھے، وہ خواتین سائنسدان بھی ہیں، اور ہر کمیونیٹی سے ہیں، مسلمس بھی ہیں اور باقی کمیونیٹی سے بھی ہیں اور یہ سبھی اپنے ملک میں ہی پڑھے ہیں، کوئی غیر ملک سے پڑھ کر نہیں آیا ہے تو اس سے ہمیں یہ احساس ہونا چاہیے کہ ہمارے پہلے پرائم منسٹر کے بعد ہماری جو بڑی یونیورسٹیز ہیں، ان کی انہوں نے داغ بیل ڈالی، جو کہتے تھے کہ بھلائی، بوکارو سارے ادارے نئے ہندوستان کے ٹیمپلس ہیں۔ وہ اسے یہ کہہ کر بُلاتے تھے تاکہ وہ پنپیں، ملک کا سائنٹفک ٹیمپرامینٹ پنپے۔ یہ بڑے فخر کی بات ہے کہ جو بھی اس کے ساتھ وابستہ رہا، چھوٹے سے چھوٹا اور بڑے سے بڑا جو سائنسدان رہا، ان سبھی نے یہاں تعلیم حاصل کی۔ ہر سیگمینٹ آف سوسائٹی اس سے وابستہ ہے، اس سے آئے ہوئے ہیں، اور کمیونیٹی سے آئے ہوئے ہیں۔

میں اس سرکار کو مبارکباد دیتا ہوں، ان سائنسدانوں کو مبارکباد دیتا ہوں، جو ان کے ساتھ وابستہ ہیں۔ ساتھ ہی میں یہ تلقین بھی کرتا ہوں کہ ہمیں ان کو بھولنا نہیں چاہیے، جنہوں نے اس کی داغ بیل ڈالی۔ اگر ہم کسی عمارت کی پانچویں منزل تعمیر کریں تو اس کا مطلب یہ نہیں کہ ہم ان کو بھول جائیں جنہوں

نے اس عمارت کی بنیاد ڈالی اور چار منزلیں بنائیں۔ باقی ہمارا جو مقصد ہے،
آگے کا مشن ہے، کہا گیا ہے کہ

ستاروں سے آگے جہاں اور بھی ہیں

ابھی عشق کے امتحان اور بھی ہیں

ابھی ہمیں اور آگے جانا ہے۔ ہمیں اور کامیابی حاصل کرنی ہونگی۔ جب سب

کا سہوگ ہوگا، سبھی کو مانیتا دیں اور سب کو ریکوگنائز کریں تب ہمارے لئے

گورو ہوگا، شاپاشی ہوگی۔ شکریہ۔]

डॉ. सत्यपाल सिंह (बागपत): आदरणीय सभापति महोदया, मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ। यह मेरा सौभाग्य है कि कल ही हम सभी लोगों ने, इस पूरे सदन ने मिल करके, जिस नारी शक्ति वंदन अधिनियम को पारित किया है, उसके प्रतीक के रूप में आज आप इस आसन पर विराजमान हैं।

सभापति महोदया, आपके आसन के ऊपर धर्म चक्र लगा है। इस आसन का काम है कि देश में, पूरे समाज में धर्म का चक्र चलता रहे। आज हम लोग चंद्रयान और इसरो की सफलता की बात कर रहे हैं। लाखों-करोड़ों वर्षों से हम अपने कल्याण की कामना करते रहे हैं।... (व्यवधान) सूर्य और चंद्रमा की तरह, हम कल्याण के मार्ग पर बढ़ते रहें।

ओ३म् स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव

पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि॥

आदरणीय सभापति महोदया, यह पूरा विश्व बहुत ही वैज्ञानिक है। हम लोग यह मानते हैं और आज के वैज्ञानिक भी यह मानते हैं कि विश्व के अंदर प्रत्येक वस्तु चर और अचर जगत में प्रत्येक वस्तु बड़ी वैज्ञानिक है। यह बहुत ही व्यवस्थित है और बहुत ही सुंदर है और बहुत ही उद्देश्यपूर्ण है। It is very organised, very scientific, very beautiful, and very purposeful. हम इसका उदाहरण देखते हैं। हम मानव शरीर की तरफ देखते हैं। मानव शरीर इतना वैज्ञानिक है कि दुनिया के करोड़ों वैज्ञानिक मिल कर भी आज तक इस शरीर को सुधारने के लिए कि दो की जगह तीन आंखें होनी चाहिए, दो कान की बजाय चार कान होने चाहिए थे, पांच अंगुलियों की बजाय चार अंगुलियां होनी चाहिए, इस बारे में कोई सोच नहीं सका है।

सभापति महोदया, यह दुनिया बहुत वैज्ञानिक बनी है। आज मैं चंद्रयान के बारे में बोलने के लिए खड़ा हूँ। इस देश के इसरो की चंद्रयान की जो यात्रा रही है, उससे इस देश को अभूतपूर्व सफलता मिली है। इसलिए मैं सबसे पहले इसरो के वर्तमान और पुराने, जितने भी वैज्ञानिक हैं, उन सभी को बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ। इस देश के यशस्वी और दूरदर्शी प्रधान मंत्री जी, आदरणीय मोदी जी का बहुत-बहुत अभिनंदन करना चाहता हूँ। पिछले नौ वर्षों में उनके आने के बाद साइंस और टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में देश ने अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है। बहुत लोगों ने बहुत बातें की हैं, मैं सब

बातों को दोहराना नहीं चाहता हूँ। वर्ष 2018 के गगनयान प्रोग्राम की बात हो, वर्ष 2017 में एक साथ 104 सैटेलाइट्स को छोड़ने की बात हो, New Space India Limited Public Undertaking बनाने की बात हो, वर्ष 2020 में प्राइवेट प्लेयर्स को एलाऊ करने की बात हो, वर्ष 2022 में इंडियन स्पेस पॉलिसी लाने की बात हो या हम जो 23 अगस्त, 2023 के चंद्रयान की बात कर रहे हैं, जिस दिन हमारा चंद्रयान उतरा, प्रत्येक भारतवासी का सीना गर्व से फूल गया।

इस बात के लिए मैं पुनः आदरणीय प्रधान मंत्री जी का बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ। हमारे इस देश में और दुनिया में बहुत लोग ऐसे हुए जो वक्त के सांचे में ढल गए, लेकिन मोदी जी उठे तो वक्त का सांचा बदल गया। इसलिए न केवल अंतरिक्ष, विज्ञान और टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में उन्होंने इंडियन रिसर्च काउंसिल बनाई। वे इनोवेशन पॉलिसी लाए। उन्होंने हजारों स्कूलों के अंदर अटल टिकरिंग लैब्स खोले। अभी पीएम नेशनल साइंस रिसर्च फेलोशिप शुरू की। हम सब लोग जैसे इस बात को मानते हैं कि अगर हम प्रगति करना चाहते हैं तो विज्ञान और टेक्नोलॉजी के बिना यह सम्भव नहीं है। अगर इस अमृत काल के अंदर वर्ष 2047 तक देश को पुनः विश्व गुरु बनाना है, तो साइंस और टेक्नोलॉजी के बिना यह सम्भव नहीं है। इसलिए मैं एक बात अपने सभी मित्रों को याद दिलाना चाहता हूँ कि हजारों-लाखों साल पहले यह देश दुनिया का विश्व गुरु था। अगर दुनिया का विश्व गुरु था तो किसलिए विश्व गुरु था? जब मैं इस बात पर विचार करता हूँ, तो इसके मूल में केवल तीन कारण थे। इसका सबसे पहले कारण था कि ज्ञान और विज्ञान के अंदर इस देश का कोई सानी नहीं था, इस देश की कोई बराबरी नहीं थी, न विज्ञान में, न ज्ञान में। अगर वह भूखों को खाना न दे सके तो ज्ञान-विज्ञान किसी काम का नहीं। अगर वह बिना घर के लोगों को घर न दे सके, अगर वह लोगों को समृद्धि का रास्ता न दिखा सके, तो वह ज्ञान-विज्ञान किसी काम का नहीं। इसलिए हमारे प्राचीन भारत के पास ज्ञान-विज्ञान तो था और एक समृद्ध देश था। वह सोने की चिड़िया था। बाहर से हजारों-लाखों लोग इसलिए यहां आते थे कि यह देश इतना समृद्ध था। अगर देश के पास वीरता न हो, देश के पास शौर्य न हो तो केवलमात्र समृद्धि लम्बे समय तक चल नहीं सकती, ज्ञान-विज्ञान भी लम्बे समय तक नहीं चल सकता। ये तीन कारण थे। यह देश इसलिए दुनिया का विश्व गुरु था।

महोदया, हमारी ज्ञान-विज्ञान की परंपरा बहुत पुरानी है। हमारे नाम अलग-अलग हो सकते हैं। कुछ लोग सनातन संस्कृति के बारे में बोलते हैं। हमारी सनातन संस्कृति भी एक है। उत्तर से लेकर दक्षिण तक, पूर्व से लेकर पश्चिम तक एक ही संस्कृति है। कल्चर अलग-अलग हो सकते हैं, कल्ट अलग-अलग हो सकते हैं। कल्ट अलग-अलग हैं तो कल्चर अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन संस्कृति कभी भी दो नहीं हो सकती, चार नहीं हो सकती। एक संस्कृति होती है और उसके बाद एक अपसंस्कृति होती है। इसलिए मैं जब कभी बात करता हूं, हमारे देश में चाहे उत्तर भारत हो, चाहे दक्षिण भारत हो, शिव, ब्रह्मा, विष्णु, गणपति गणेश के नाम यहां उत्तर भारत में अलग हो सकते हैं लेकिन दक्षिण भारत में वही नाम हैं। हमारे यहां पर राम के नाम पर राम सिंह हो सकता है। उत्तर भारत में रामचंद्र हो सकता है, राम पाल हो सकता है, आंध्र प्रदेश में जाकर वही रमन्ना बन जाता है, कर्नाटक में जाकर वही रमैया बन जाता है और तमिलनाडु में जाकर वही रामचन्द्रन बन जाता है। राम वही है, वही शिव है। उनके नाम अलग-अलग हैं। इसलिए मैं कहता हूं कि हमारे इस देश की संस्कृति एक है। कुछ लोग आज कल यह भी बोलते हैं कि उत्तर भारत में आर्य संस्कृति है और दक्षिण भारत के अंदर द्रविड़ संस्कृति है। मुझे लगता है कि वे लोग संस्कृति से काफी अनभिज्ञ हैं। द्रविड़ उसको कहते हैं, जो वैज्ञानिक होता है, विद्वान होता है। हमारे देश के अंदर, प्राचीन भारत के अंदर जिस प्रकार से दक्षिण भारत के अंदर विद्वान पैदा हुए, इसलिए उसको द्रविड़ संस्कृति कहने लगे।

मैं आपको कुछ बातें बताना भी चाहता हूं। जब कभी हम लोग बात करते हैं, हमारे वेद केवलमात्र यज्ञ और कर्मकांड के ग्रंथ नहीं हैं। कुछ लोगों को यह भ्रांति है। हमारे जो वेद हैं, वह वेद विज्ञान के, ज्ञान और विज्ञान के ग्रंथ हैं। मैं ज्ञान-विज्ञान के कुछ रिकॉर्ड्स आपके सामने रखना चाहता हूं। अभी स्वामी जी महाराज कह रहे थे कि हमारे ऋषि कितने बड़े वैज्ञानिक थे। मैं अभी कुछ उदाहरण दे रहा था। मैंने कुछ दिन पहले ही माननीय प्रधान मंत्री जी को एक चिट्ठी लिखी है, यहां पर डॉक्टर जितेन्द्र सिंह जी भी बैठे हुए हैं। उनके डिपार्टमेंट का एक काम है। मैंने उनको कहा है कि महर्षि भारद्वाज ने 'यंत्र-सर्वस्व' लिखा, 'अंशु बोधिनी' लिखा, 'आकाश तंत्र' लिखा। अरे, आकाश में यात्रा करनी हो तो आकाश तंत्र को पढ़ना चाहिए। यह महर्षि भारद्वाज ने लिखा है। केरल में रहने वाले

महर्षि अगस्त्य ने 'शक्ति तंत्र' लिखा, जिसमें 32 प्रकार की पावर, इलैक्ट्रिसिटी, बिजली, अट्रैक्शन के बारे में बहुत विशद वर्णन है। महर्षि शाकटायन ने 'लौह तंत्र' लिखा कि जमीन के नीचे, भूगर्भ में मिनरल्स हैं, खनिज हैं। आपको विश्वास नहीं होगा कि 3007 अलग-अलग प्रकार की धातुओं, मिश्रधातुओं को हम किस प्रकार से बना सकते हैं, उसके बारे में उसमें वर्णन है। नारद मुनि ने 'वैश्वानर तंत्र' लिखा। उस ग्रंथ के अंदर 101 प्रकार के गूढ़, इंटेंस लाइट के अलग-अलग प्रकार हैं और 1007 प्रकार की अग्नि और फ्लैम्स का वर्णन है।

महर्षि भृगु की भृगु संहिता है, जिसमें 83 शिल्प शास्त्र हैं। इसमें 32 शिल्प विधा हैं और 72 शिल्प कलाएं हैं। राजा भोज तो प्राचीन समय में नहीं थे। वे लगभग एक हजार साल पहले पैदा हुए। राजा भोज ने एक किताब लिखी है, जिसका नाम है- समरांगणसूत्रधार। समरांगणसूत्रधार में एक ऐसे घोड़े का वर्णन है कि इस प्रकार का यंत्र बनाया जा सकता है, जो जमीन पर चलेगा, पानी में चलेगा और आकाश में भी दौड़ेगा। यह राजा भोज की किताब में लिखा हुआ है।

मैं आपको एक उदाहरण देना चाहता हूँ। वर्ष 1975 में, समरांगणसूत्रधार का एक पेज चाइनीज लोगों को मिला। जब यह चाइनीज लोगों को मिला। जब वह तिब्बत की राजधानी ल्हासा पहुँचा, वह संस्कृत में लिखा हुआ था। वहाँ के लोग उसको इंटरप्रेट नहीं कर पाए। जब वे उसको इंटरप्रेट नहीं कर पाए, तो उसे उन लोगों ने पंजाब यूनिवर्सिटी में भेजा, जहाँ एक अमेरिकी प्रोफेसर रूथ रेयान थीं। वे संस्कृत की विद्वान थीं। उसे उनके पास भेजा गया। प्रोफेसर रूथ रेयान ने उसमें लिखे हुए संस्कृत को इंटरप्रेट किया। उन्होंने उसे इंटरप्रेट करके उसकी एक कॉपी चाइनीज को और एक कॉपी इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस, बेंगलोर को भेजी। 10 वर्षों तक इस पेपर पर रिसर्च करने के बाद, उस जमाने में, इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस के लोगों ने कहा कि हमें तो इसमें स्टेलर सैटेलाइट की बात समझ में नहीं आई, लेकिन चाइनीज लोगों ने उस पर रिसर्च किया और चाइनीज लोगों ने रिसर्च करके यह सिद्ध किया कि इसके अन्दर इंटर-स्टेलर स्पेस क्राफ्ट की बात इसमें दी हुई है।

महोदया, इस बात का पता हमें नहीं चला। हमें कब मालूम हुआ? जब एक अमेरिकन वैज्ञानिक डेविड हैचर चाइल्ड्रेस ने एक किताब लिखी, जिसका नाम है- The Anti-Gravity Handbook. इस

पुस्तक के अन्दर, उस वैज्ञानिक ने वर्णन किया है कि इस तरह का एक चैप्टर मिला था, जो चाइनीज को मिला, उसे इंडिया में भेजा गया, इंडिया के लोगों ने उस पर कोई काम नहीं किया, लेकिन चाइना के लोगों ने उस पर काम किया और चाइना हमसे आगे निकल गया ।

इसलिए मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि हमारे शास्त्र, वेद साइंस के ग्रंथ हैं और आधुनिक काल में इस बात को याद दिलाने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने दम ठोककर कहा- “वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है ।” ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में उन्होंने लिखा कि हमारे वेदों में विमान विद्या भी है, गणित की विद्या भी है और अन्य दूसरी प्रकार की विद्याएं भी हैं । उसके बाद उन्हीं का एक शिष्य यानी महर्षि दयानन्द का एक शिष्य, मुम्बई नगरी में रहने वाला एक पंडित, जिसका नाम था- पंडित शिवकर बापूजी तलपडे । बेंगलोर का एक पंडित- सुबराय शास्त्री और पंडित तलपडे, इन दोनों ने मिलकर मुम्बई के समुद्र तट पर वर्ष 1895 में, क्या अभी प्रोफेसर सौगत राय नहीं हैं? सबसे पहले वर्ष 1903 में गुब्बारा बना । वर्ष 1903 में पहला बैलून उड़ाया गया । वर्ष 1903 से आठ साल पहले 1895 में मुम्बई के चौपाटी समुद्र तट पर एक प्लेन बनाकर उसको उड़ाने का प्रयास किया गया ।

माननीय सभापति महोदय, मैं एक किताब लेकर आया हूँ । यह उसी पंडित की लिखी हुई किताब है, जिसका नाम है- प्राचीन विमान कला का शोध । यह वर्ष 1907 में प्रकाशित की गई पुस्तक है । इस पुस्तक के अन्दर उन्होंने लिखा है कि किस प्रकार से विमान बनाया जाना चाहिए ।

अभी स्वामीजी महाराज ने पुष्पक विमान का जिक्र किया । उन्होंने यंत्र सर्वस्व का जिक्र किया। यह एक बृहत विमान शास्त्र है । यह आज भी अवेलेबल है । भारत सरकार ने, जब पंडित जवाहरलाल नेहरू जी इस देश के प्रधानमंत्री थे, तो उस समय उन्होंने इस बृहत विमान शास्त्र का इंटरप्रेटेशन करने के लिए स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक के पास भेजा । स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक ने उस पुस्तक को वर्ष 1956 में ट्रांसलेट किया । यह सरकार की तरफ से किया गया था ।

मैं कहना चाहता हूँ कि आज भी हमारे 10 हजार मैनुस्क्रिप्ट तमिलनाडु की तंजौर लाइब्रेरी, जिसे सरस्वती महल लाइब्रेरी कहते हैं, मैसूर की ओरिएंटल रिसर्च लाइब्रेरी, बड़ौदा की ओरिएंटल

रिसर्च लाइब्रेरी, पटना की लाइब्रेरी आदि स्थानों में हजारों ग्रंथ आज भी इस देश में अवेलेबल हैं, जहाँ प्राचीन शिल्प कला, विमान विद्या और आकाश तंत्र के बारे में हैं।

सभापति महोदया, मैं दो मिनट में अपनी बात समाप्त करूंगा। ... (व्यवधान)

SHRIMATI KANIMOZHI KARUNANIDHI (THOOTHUKKUDI): It is there in the library. It does not teach us anything scientific. So, please do not mislead the House.

डॉ. सत्यपाल सिंह : सभापति महोदया, मैं अपनी बहन श्रीमती कनिमोझी करुणानिधि जी से यह रिक्वेस्ट करना चाहता हूँ कि मैं उस लाइब्रेरी में गया हूँ। मैं कई साल पहले गया था। ... (व्यवधान)

माननीय सभापति : आप चेयर को एड्रेस कीजिए।

... (व्यवधान)

डॉ. सत्यपाल सिंह : उस समय करीब एक लाख के आसपास संस्कृत मैनूस्क्रिप्ट्स थीं। लोग केवल कैटलॉगिंग कर रहे हैं, लेकिन जेनरली उनके बारे में उसमें क्या लिखा है, उसमें क्या शास्त्र हैं, इसके बारे में हम लोगों को बहुत काम करने की जरूरत है। हमारे पास इतना बड़ा ट्रेजर हाउस तंजावूर की लाइब्रेरी में रखा है, हमें उसकी दिशा में काम करना चाहिए।

सभापति महोदया, मैं एक और जिक्र करना चाहता हूँ। यूएस में Erich Von Daniken नाम के एक बहुत बड़े लेखक हुए हैं। आप उनकी किताब पढ़ सकते हैं। Erich Von Daniken ने किताब लिखी है – “According to Evidence”. यह किताब आज से लगभग 40 साल पहले मैंने पढ़ी थी। आप लोग जाकर देख सकते हैं, यह मार्केट में एविलेबल है। Erich Von Daniken ने इस “According to Evidence” किताब में लिखा है कि दुनिया के अंदर लगभग 10 हजार साल पहले, भारतवर्ष के अंदर और चाइना के अंदर विमान बनाने की कला थी। यह Erich Von Daniken का लिखना है।

माननीय सभापति : अब आप अपनी बात समाप्त कीजिए। अन्य माननीय सदस्यों को भी बोलना है।

... (व्यवधान)

डॉ. सत्यपाल सिंह : जी, सभापति महोदय, अन्य सदस्य भी बोलेंगे।

मैं आपसे थर्मल अकाउस्टिक्स के बारे में कहना चाहता हूँ। ... (व्यवधान) एक स्विस् साइंटिस्ट Hans Jenny ने लिखा है, जिन्होंने टोनोस्कोप बनाया है। ... (व्यवधान) मैं अंत में एक श्लोक पढ़ना चाहूंगा –

अमंत्रं अक्षरं नास्ति
नास्ति मूलं अनौषधम् ।
अयोग्यः पुरुषो नास्ति
योजकस्तत्र दुर्लभः ॥

सभापति महोदय, दुनिया के अंदर कोई भी चीज ऐसी नहीं है, जिसका कोई अर्थ न हो। दुनिया के अंदर कोई भी ऐसी चीज नहीं है, जिसके अंदर विज्ञान न हो।

सभापति महोदय, यदि आप अलाऊ करें, तो एक बात है, जिसे मैं पढ़ना चाहता था ... (व्यवधान)

माननीय सभापति : आपका समय खत्म हो गया है।

... (व्यवधान)

डॉ. सत्यपाल सिंह : सभापति महोदय, कोई बात नहीं, आपने मुझे पुनः इतना समय दिया, इसके लिए आपका धन्यवाद।

मैं अपने देश के सभी वैज्ञानिकों का, सभी ऋषि-ऋषिकाओं का अभिनंदन करना चाहता हूँ और साथ-साथ हम सभी इस सदन में मिलकर देश के यशस्वी प्रधान मंत्री ने नारी शक्ति वंदन विधेयक को यहां पारित कराया, उनका अभिनंदन करते हुए अपनी बात को यहां विराम देता हूँ।

आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

SHRI FRANCISCO SARDINHA (SOUTH GOA): Thank you, Madam, for giving me this opportunity to take part in this discussion. I would like to first congratulate all my compatriots because India now is on the Moon. We have become the fourth nation to make a soft landing on the Moon on 23rd August, 2023 when Chandrayaan-3 successfully touched down near the lunar South Pole.

Yes, we did not get the success in Chandrayaan-2. But it is said that failure is the pillar of success. That is how, we have achieved the success in Chandrayaan-3. India has now joined the select club of countries like United States of America, former Soviet Union and People's Republic of China which have made a controlled landing on the surface of the Moon.

The entire operation right from launching to landing has been done flawlessly as per the timeline. After performing various *in situ* experiments, the Pragyan Rover was put to sleep on 2nd September, 2023 and on the very same day, ISRO achieved another successful launch, that is, Aditya-L1.

I join my fellow Members in expressing my heartfelt commendations to the Indian Space Research Organisation, all other organisations and companies, all the scientists and engineers involved in the project for bringing us this moment of joy and hope, the hope for a better tomorrow. It gives me immense satisfaction that we have become the first country to go near the South Pole of the Moon.

The mission is well-positioned to offer important new information about the make-up of the lunar surface, the existence of water ice, the history of lunar impacts, and the development of the Moon's atmosphere. I am also thankful to

the European Space Agency for providing ground station support from its facilities in French Guiana, Australia, and the United Kingdom.

Chandrayaan-3 and Aditya-L1 are testament to India's commitment to space exploration and greater understanding of the universe's mysteries. They will further strengthen India's position in the global space community. These missions will inspire the younger generation to pursue careers in science, technology, engineering, and mathematics.

It should be a moment of great pride for the freedom fighters and founding fathers of our Republic. This is indeed a success which belongs to all of the society. It will help boost the development of science and, most importantly, the scientific temper in the country with which all can aspire to transform our country, which is one-sixth of the entire humanity, into a developed nation. Therefore, I support the decision to mark the successful landing of Chandrayaan-3 on August 23rd as the National Space Day every year.

Science and human knowledge cuts across all boundaries of countries, ideologies, and parties. Space research is undoubtedly the common cause of all of the mankind. When we set our gaze to the stars, to the moon, and beyond, we realise that ours is a small planet which is home to the humanity. It reminds us of our collective existence and our common destiny. It gives us the sense and the purpose to find peace and shared happiness for all of mankind.

I congratulate all and implore my honourable colleagues and respected members of the country to tap on the rise in the scientific fervour for the all-round

success of our society. We need to strive for bringing about social modernity and harmony and surge ahead as we embrace technological modernity.

At the end, I congratulate all our past Prime Ministers, Nehru ji, Indira ji, Rajiv ji, Narsimha Rao ji, and all others for the success of this Mission. I also congratulate Modi ji that he is lucky that this achievement took place during his tenure.

Thank you, Madam.

*** SHRI S. VENKATESAN (MADURAI):** Madam Chairperson, Vanakkam. This is my maiden speech in the New Parliament Building. I am extremely happy as it is the congratulatory speech on the success of Chandrayaan-3. My heartfelt wishes and congratulations to all the scientists and other employees of ISRO who have achieved this remarkable success of Chandrayaan-3.

It is a splendid achievement that our spacecraft has landed on the surface of moon with technical accuracy and by using Artificial Intelligence to predict the speed of the spacecraft and direction in which it has to go to reach moon's surface. During last five years, there were seven journeys organised towards moon of which four missions ended in failure. Of the three successful missions to moon, one was by India and two were by China.

Vikram lander landed on moon on an area of 0.5 km length and 2 km width with absolute accuracy. We have to salute and pay respect to each one of the scientists who worked hard for this spectacular achievement. My best wishes to every scientist.

The discussion that is taking place in this august House since morning has made me worry. There is a confusion whether it is a discussion about science or about Vedas and Puranas. Hon. Minister who initiated this discussion spoke for a long time, citing stories from Puranas and epics. There is no need for all of us to come to this New Parliament Building to hear such stories from Puranas. If I sit on the veranda of a mutt or a temple, I could have very well heard these stories through some story-telling session like *Kathakalakshebam*.

* English translation of the speech originally delivered in Tamil.

Hon MP from BJP who spoke before me made a reference to Saraswathi Mahal Library of Thanjavur and the presence of manuscripts in this library which tell us about the science of launch of rockets 10,000 years ago. I want to say two things here. There are so many stories in this library which are thousands of years older than what he quoted. They are all stories and not history. That is not science even. Union Government led by Shri Modi has not even released the funds that are due for this Saraswathi Mahal Library for the last four years.

What is the life of a manuscript? Will it survive more than 10,000 years? We know that a manuscript can be preserved for not more than 1,000 years. Friends, see how much we are lagging behind as regards providing scientific environment. Only 262 scientific researchers are available in India for a population of 10 lakhs. In China, the same is 2,500 researchers per 10 lakh population. Among the BRICS nations, we are in lesser number. For carrying research, we allocate only \$43 per person. Brazil allocates \$173 per person. Russia allocates \$255 per person. Not only that, from April to September this year, the Union Government has not given a single rupee to the researchers of this country be it the university researchers or others. Like showing a brick and comparing it with the setup of AIIMS, the Union Government is showing the picture of Chandrayaan just to boast and nothing else.

In addition to this, I want to mention two things. SSLV rocket was created by Dr. Abdul Kalam. The need for this SSLV rocket has grown nowadays. We need to send more that at least one thousand satellites into space every year. But the tendering process has been started for giving this SSLV rocket manufacturing

to some private agency. They want to give profit-earning manufacture of products to private sector and show ISRO to be in loss. Similar to the naming of the landing spot of Vikram lander as Shiv Shakti Point by Hon. Prime Minister, I want to ask whether the tendering process of SSLV would also be named after Adani Shakti by the Prime Minister?

During the last 10 years, many Vedic Research Institutions have been started by the Union Government. Many Astrological Research Institutions have been started by this Union Government. I should say they are plenty in number. But the Union Government has not started at least one institution for scientific research. ISRO is being felicitated now. But on 13th January 2023, a circular was issued by the Union Government to ISRO forcing it to keep tight lipped on the issue of Jyotir Math landslide. ISRO and Geology Department were restricted by the Union Government on this issue asking them not to open their mouth to speak anything about Jyotir Math landslide. As Galileo was forced not to disclose his finding of Earth revolving around the Sun, the Union Government had put controls and restrictions on ISRO.

Friends, science and knowledge are nothing but asking questions and finding answers. We have skipped Question Hour in this House and now discussing the importance of science and scientific temperament. You ignore everything and say Puranas are history and epics as science. You will be exposed among general public very soon. Like the smoke that is given away by the rocket when it is launched, your concocted stories and lies will be shattered and India will grow scientifically.

Forty years ago, a rocket was taken on a bicycle by ISRO and now it is going on a mission to Mars. Fifty years ago, world countries said that contagious diseases cannot be wiped off by India. Now we have totally wiped off the contagious disease. We have enriched nutrition by manufacturing milk powder from buffalo milk. India has developed further leaving aside its superstitions and with the help of scientific outlook. Success of Chandrayaan-3 will make us develop stronger in space science leaving all your superstitions. Thank you.

SHRI TEJASVI SURYA (BANGALORE SOUTH): Madam Chairperson, thank you so much for giving me this opportunity to speak in the very first Special Session of this new Parliament building. We have assembled here today to discuss and pass a Resolution congratulating our scientists and the scientific community of the country for their glorious achievement in successfully completing Chandrayaan Mission 3.

On behalf of a billion Indians, and most importantly, on behalf of young Indians who look up to climbing new frontiers in science and technology, I thank all the scientists at ISRO for inspiring a generation of Indians by achieving something that was considered impossible.

It is only rare that in the history of a nation, moments like this come that inspire and unites the nation. The landing of the Chandrayaan Mission on the moon was one such rare moment where the whole nation stood in unison, saluting the scientific prowess and achievement of this great country. While I am indeed proud that our country became the first nation in the world to land successfully on the south side of the moon, I am even more proud that I represent a city that is the science capital of India, and even though this Mission Chandrayaan-3 was made in India, it was also made in Bengaluru, the city I represent.

Most speakers who spoke earlier have highlighted the achievements of ISRO in the last few decades and how the scientists of ISRO have not only shown the world how to make efficient space missions but also do it in a cost-effective manner. I would not want to repeat most of the points that have already been

covered. I would only want to say that the last nine years have truly been historic for the country, even in space and technology realms. Under the leadership of the hon. Prime Minister, not only have we increased the budget for ISRO and space exploration by a whopping 142 per cent, but we have also strengthened scientific institutions, whether it is CSIR, whether it is funding for IISCs, or leveraging technology to benefit the last-mile delivery of services to the people.

चाहे यूपीआई की बात हो या ई-नैम की बात हो, स्टार्ट-अप से लेकर सेरिकल्चर इंजीनियरिंग तक, स्पोर्ट्स इंजीनियरिंग से लेकर क्वांटम कम्प्यूटिंग तक, अटल इन्नोवेशन मिशन से लेकर नेशनल रिसर्च फाउण्डेशन तक, कई सारी चीजों को पिछले नौ सालों में मोदी सरकार ने किए हैं। अपने देश के साइंटिफिक इंस्टीट्यूशन्स के जो फाउण्डेशन्स हैं, उनका बल-वर्द्धन करने के लिए ऐतिहासिक और क्रांतिकारी प्रयास पिछले नौ सालों में हुए हैं।

Madam I wanted to keep my speech as apolitical as possible. I wanted to keep my speech as academic as possible, but the speakers from the opposition benches have indulged in a continuous Nehru *bhajan* since morning instead of doing a *bhajan* of ISRO and ISRO scientists. That is leaving me with no option but to correct and place before this hon. House, this august House, some very important facts about what was the contribution of certain figures whose hagiography is trying to be written today by the Members of the Opposition.

An impression is made to be given that every scientific thing in India is credited to Nehru. All scientific achievements in India, whether it is by the ISRO or DRDO or CSIR or IISc, are credited to Nehru. But the reality is far from that.

Madam Chairperson, I want to highlight the fact that most of the scientific institutions that are our nation's pride today were all started by people in pre-

Independence India when Nehru had no role to play. All those pioneers who had the grand vision to establish these institutions even at the time of the British India, are not mentioned even cursorily when the nation is celebrating its scientific prowess. I only want to take the example of one or two people. ... (*Interruptions*)

Kanimozhi ji, I am quoting the example of Arcot Mudaliyar from Tamil Nadu. Please hear it out. In 1942, when India was not independent, Arcot Ramasamy Mudaliar envisioned an institution by the name Council of Scientific and Industrial Research in India and established it from 1940 to 1942 with the help of Shanti Swaroop Bhatnagar. Nehru had nothing to do with it. Today, most of the patents in the country are filed because of CSIR, and it is one of the most important scientific research organisations in the country. Nehru had nothing to do with it.

Let me tell you what role Nehru played. Immediately after Independence, when CSIR was brought under the Ministry of Industry and Commerce, in one of the meetings at the very beginning of the CSIR after Independence, Pandit Nehru said:

“The members of the governing body will appreciate that it is difficult for me to devote much time to many aspects of the work of the Council. For the present every day’s work, Dr. Shyama Prasad Mukherjee will, however, look after the Council.”

It was because of Dr. Shyama Prasad Mukherjee - the founding father of my Party, the earlier avatar of the Bharatiya Janata Party, Jan Sangh - that the country’s earlier scientific establishments were strengthened and gotten strengthened at the root level. Dr. Shyama Prasad Mukherjee as the Minister of

Industry and Commerce set up the National Physical Laboratory, National Chemical Laboratory, National Metallurgical Laboratory, Fuel Research Institute, Ceramic Research Institute, Central Leather Institute, and the Central Electrochemical Institute. All of these institutions were started, strengthened and supported by Dr. Shyama Prasad Mukherjee.

But today Arcot Ramasamy's name is not mentioned. Dr. Shyama Prasad Mukherjee's name is not mentioned. Shanti Swaroop Bhatnagar's name is not mentioned. From morning till now, what I have been seeing is only Nehru *bhajan* that is going on. The cosmos of the Congress Party starts with Nehru and ends with Rahul Gandhi. It is unfortunate but it is necessary for us to inform the nation through this august House what Nehru truly did even when it came to atomic research. I want to draw the attention of the Members from the Opposition. When the acquisition of missiles and research in atomic bombs, nuclear bombs, for protecting the country's national security, energy security, was brought to Nehru, this is what Pandit Nehru said and I quote.

"The distribution of this toy – the toy that he is mentioning is the atom bomb, the nuclear bomb, ballistic missiles and the like -- to countries will not only be very dangerous but it will completely poison the already disturbed atmosphere of the world today."

Then, he goes on to say, "The making of the atom bomb is dangerous and dreadful". He was the first person to advocate the resistance policy of excluding India and other Asian nations from the nuclear club, a policy that would later be written into the Non-Proliferation Treaty that India would spend decades fighting,

when he claimed that the going of this atomic weapon into an Asian country's hands would be a dreadful thing, a very dangerous thing. It took an Atal Bihari Vajpayee to make the nation a nuclear capable nation in 1998. ... (*Interruptions*)

SHRI MANISH TEWARI (ANANDPUR SAHIB): What happened in 1974 Pokhran-I?

SHRI TEJASVI SURYA: Manish ji, you know the details. You know how different 1974 and 1998 were. ... (*Interruptions*) You know what the difference between the two was. ... (*Interruptions*) You know what the difference between Indira ji's time and Atal ji's time was. We never did it in an apologetic manner; we did it as a matter of conviction. ... (*Interruptions*)

Madam Chairperson, if you look at the history, there is one thing that will be clear. काम हमेशा दूसरों का होता है, लेकिन क्रेडिट नेहरू का होता है। Even in the case of Chandrayaan, it has been the same case. Chandrayaan-1 was approved by hon. Prime Minister Shri Atal Bihari Vajpayee in 2003. What happened? In 2008, the Impact Mission reached the Moon. Then, what did the UPA Government led by the Congress do? The point on which the Impact Rover met the Moon, they named it as Jawahar Point. When Nehru had nothing to do with Chandrayaan-1, the impact point, however, was named Jawahar Point.

Now, let us talk about Chandrayaan-2. The former ISRO Chief, Madhavan Nair, has gone on record to say that for political reasons, UPA-II delayed political clearances and denied approval for Chandrayaan-2.

Again, Chandrayaan-3 was approved by our Government, Modi Government. Despite the loss, despite the challenges that we faced during

Chandrayaan-2, the Prime Minister was there in Bengaluru, patting the back of our scientists. He strengthened them, motivated them and prepped them to make sure that Chandrayaan-3 was a success. The difference is that when Chandrayan-III met with success, the hon. Prime Minister of the country named the point as Tiranga Point and Shiv Shakti Point and did not do *bhajan* of any particular individual.

Madam, there are two or three important issues that need to be brought to the notice of this august House. The difference in the worldview between the naming of Tiranga Point, Shiv Shakti Point and the naming of Jawahar Point is what differentiates the Congress, the INDIA alliance, and the Bharatiya Janta Party and the NDA alliance. This is the difference.

Madam, I want to take another example. I was listening to one of the speakers from the Opposition giving credit to Rajiv Gandhi for telecommunication and computer revolution in India. With all humility, I want to submit that the doyen of the country's computer industry, BPO industry and IT industry, N.R. Narayana Murthy, a few years ago, went on record and said that when they started Infosys, he had to travel 50 times to Delhi and it took him three years to purchase or import one particular computer. This was the state of affairs of this country for entrepreneurs and for scientists who wanted to start something new. Again, काम किसी दूसरे ने किया, लेकिन क्रेडिट राजीव गांधी को जा रहा है। I also want to point out that the exploration of space, the quest to understand what lies in the space is not something new for the civilisation. Starting from the Rig Veda to this day, the journey has been continuous. Aryabhatta, Varahamihira, Bhaskara – all of them

postulated theories on units of time and on understanding how the heliocentrism of the solar system works. All of these indicate the natural quest of the Indian mind to understand the secrets that lie beyond the space.

Never in our civilisational history was any scientific man or woman persecuted, hunted down for their beliefs, for their theories and postulates. In other civilisations, you will find examples of Hypatia of Alexandria who was stoned to death. Galileo Galilei, Nicolaus Copernicus, Johannes Kepler, many such scientific minds were persecuted for various reasons. But this is the only civilisation in the whole world where scientists and people of science have never been persecuted all through the civilisational history. The only exception to this is the persecution of a scientist from ISRO Shri Nambi Narayanan by the Kerala Congress Government. This is the only exception where a scientist was persecuted for political reasons by the Kerala Congress Government.

I also want to remind you that it was in 2013 that Shri Narendra Modi as the BJP's candidate for Prime Minister visited Thiruvananthapuram. He visited Shri Nambi Narayanan. He promised that the country will stand by him again. And it was in 2018 after Narendra Modi Government came into power that Shri Nambi Narayanan was given the honour of Padma Bhushan. That is how Narendra Modi Government has respected, strengthened the scientific people and scientific institutions of India.

Madam, I only want to conclude by saying this. Many institutions are extremely important for strengthening our scientific prowess. One of them is HAL. I come from Bengaluru and I want to tell you that just 7-8 years ago the state of

HAL was in distress. Today, not only the organisation is manufacturing LCA Tejas but in recent meeting of the hon. Prime Minister in US along with GE, they have gotten into a Memorandum of Understanding to manufacture GE F414 engines with 80 per cent technology transfer that is going to make India a super power. The coming decade – whether it is geopolitics, whether it is energy security, whether it is any other aspect of our national politics or geopolitics – is going to be directly influenced by how India performs and how India takes the lead in important areas of emerging technology. I must credit the Narendra Modi Government for making India future proof and tomorrow ready by institutionalising and supporting important scientific missions. I would want to read out only four or five of them. The National Quantum Enabled Science and Technology Programme, the National Quantum Technologies Application Programme, the National Research Foundation, the National Supercomputing Mission, the National Green Hydrogen Mission – all of these are important programmes that the Government of India has undertaken to make India a pioneer in emerging technologies.

A point was mentioned by Karti Chidambaram ji. A very relevant point that he made was how to popularise science among young people and students. I want to tell him that the Modi Government in the last few years has been working with a mission focus to popularise science among children. The Atal Innovation Mission and building of 10,000 Atal Tinkering Labs in our high schools with the objective of nurturing ten lakh young minds who will explore the frontiers of

science is an example of how the Narendra Modi Government is trying to make science and technology a popular culture in the whole country.

Madam, I only want to conclude by saying this. All of these aspects have taken place in the last nine years. I mentioned UPI, digital India, startup India, and the startups that are now emerging in space technology.

One of the most promising start ups in space called 'Pixxel' is run by an Indian engineer who comes from Chikkamagaluru, has got a few million dollars from Google. The boy Awais Ahmed is the CEO of Pixxel. It has been possible only because the Modi Government opened the space technology for private players. The next few decades are going to be extremely important for our country in strengthening our industrial and scientific institutions, and making India future ready and India tomorrow ready. We are extremely fortunate that at such an important point of history we have the leadership of Shri Narendra Modi who has been leading this country with such a foresight and vision.

I want to once again congratulate the hon. Prime Minister for his deft leadership of this country at such an important time.

With these words, I conclude. Thank you so much.

SHRIMATI APARUPA PODDAR (ARAMBAGH): Madam Chairperson, I am thankful to you for allowing me to speak on the success of Chandrayaan-3 in this Special Session and in this New Parliament Building.

I stand here today to speak on behalf of my party, All India Trinamool Congress.

It makes me immensely proud as an Indian that we achieved this paramount feat. This feat that we have achieved shall inspire millions and millions of kids across the country to be scientists and astronauts.

As our hon. Chief Minister Ms. Mamata Banerjee said, 'We are indeed in the super league of space. We must remember it as an achievement of our scientists, and every bit of credit for Chandrayaan-3 should go to them. It was a result of collective team work and efforts of our ISRO scientists.'

However, it breaks my heart to see that the Union Government has given all the credit to once political leader. It is the hypocrisy of the Union Government as they appreciate Chandrayaan-3, but they have reduced the budget of the Department of Space in 2023-24 by eight per cent in comparison to the last year's expenditure for Space Science receiving a cut of 32 per cent even after delivering missions like Chandrayaan-3 and Aditya-L1. While our very own ISRO is achieving these marvellous achievements, it has 303 vacancies for various scientists and engineers in electronic, mechanical and computer science. It also reflects the grave problem of unemployment in our society.

The Reserve Bank of India's monthly bulletin for September shows that our unemployment rate has increased to 8.1 per cent, which is extremely concerning.

While we are trying to empower women by bringing in legislations like the Women's Reservation Bill, only one out of four employees of ISRO are women out of 16,000 employees. There was not even a single woman in the panel that headed the Chandrayaan-3.

The Union Government claims that India only achieved success after 2014. We must remember that we have been a democracy over 75 years, and India began its space journey in 1960s. It is not today's effort that has put us on this feat. Consistent efforts for 60 years from the scientists and the people of India have put us on this feat.

While the Indian Government's politics and actions break my heart, I feel proud when I read about the contribution of Anuj Nandi from West Bengal, who designed the camera of the Chandrayaan-3 spacecraft. I feel proud when I hear that a son of a farmer from West Bengal has been empowered to dream and empowered to catch the stars. This was the case of Chandrakant Kumar, the Deputy Project Director of Chandrayaan-2. He joined ISRO in 2001, and like every hardworking Bengali, proved his worth. This depicts our country's aspirations, and we must work hard to make these aspirations possible.

Most of the ISRO employees are not from IITs and IIMs but are from different colleges across the country. It also raises a few concerns in my mind as to why the students from IITs and IIMs prefer to work outside India; why thousands of students dream to study, work and settle abroad than in India?

Is the Government giving enough facility to retain the top talent within the country to make the aspiration of youngsters like Anuj and Chandrakant a reality?

It is extremely important that we invest more in our space research and give ISRO flexibility in their research and development that they deserve. We must promote academic research across different subjects throughout the country, and not put ED behind those who differ from us.

I would like to end with Dr. APJ Abdul Kalam's quote: "Winners are not those who never fail, but those who never quit". आप उर्दू की दो लाइनों पर तवज्जुह फरमाइए।

“चांद से पर्दा कीजिए, कहीं चुरा न ले चेहरे का नूर।”

श्री मलूक नागर (बिजनौर): माननीय सभापति जी, इस ऐतिहासिक समय पर नए संसद भवन में महिला आरक्षण बिल और चन्द्रयान पर चर्चा हो रही है। चन्द्रयान-3 देश की जीत है, देश के वैज्ञानिकों की जीत है, देश के 140 करोड़ लोगों की जीत है। मैं आपके माध्यम से अपने सभी साथियों और देशवासियों को बहुत मुबारकबाद देता हूँ।

महोदया, इस क्षेत्र में हमारा देश तीसरे नंबर पर रहा और चन्द्रमा के एक कोने में जगह बनाने में पहले नंबर पर रहा। जाहिर बात है कि देश का नाम रोशन हुआ है और देश का नाम संसार में ऊपर आया है। यह अच्छी बात है लेकिन कहीं न कहीं संसार में छोटी-मोटी जलन भी है। कनाडा में जिस तरह की पिछले दिनों घटना घटी तो हमारी सरकार ने संज्ञान लिया और संज्ञान लेने के बाद देश का कद बढ़ा। जैसे हमने कनाडा वालों को बैन किया और इसी तरह कश्मीर के लिए भी बैन किया गया कि वहां खतरा है। मैं आपके माध्यम से बताना चाहता हूँ कि मैं 17 तारीख को लाल चौक के पास पार्क में बहुत बड़ी रैली करके आया हूँ। मसूदी साहब यहां बैठे थे, ज्यादातर लोग इनके क्षेत्र के थे, मुसलमान गुर्जर थे, लेकिन वहां ऐसी कोई बात नहीं है जिस तरह से कनाडा में बात फैलाई जा रही है। सरकार से 68-70 सालों से गुर्जर बक्करवालों को न्याय नहीं मिला और उनको पिछले दिनों में न्याय मिला, उनका कोटा फिक्स किया गया, इससे वहां खुशी की लहर दौड़ी है। वहां कुछ पार्टियां गुमराह कर रही हैं कि तुम्हारे कोटे में से कोटा लिया जाएगा लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि आने वाले समय में यह क्लियर हो जाएगा और सरकार सहानुभूतिपूर्वक सोचेगी और उनके कोटे को कम नहीं करेगी। अगर पहाड़ी या दूसरे अपर कास्ट के लोगों को कोटा देना भी है तो एसटी से अलग कोटा फिक्स करें और अलग सुविधाएं दें। इन लोगों को 68-70 सालों के बाद न्याय मिला है, मुझे उम्मीद है कि अब उनके साथ अन्याय नहीं होगा।

आज सुबह मैं राजनाथ जी की बात सुन रहा था। उन्होंने विज्ञान और संस्कृति, दोनों को साथ जोड़कर बताया। यह बहुत अच्छी बात है लेकिन हमारे कुछ साथी ट्रैप में आकर संस्कृति या दूसरी चीजों के खिलाफ बोल रहे हैं। अब जो महा गठबंधन बनने जा रहा है, मेरे हिसाब से अगर इनको आने

वाले समय में कमजोर करना है तो ट्रैप में जो लोग आ रहे हैं, यह देश और देश की जनता के लिए किसी भी तरह ठीक नहीं है।

सभापति जी, मैं आपके माध्यम से एक बात और कहना चाहता हूँ। बीजेपी के वरिष्ठ साथी बोल रहे थे कि बजट हॉलीवुड और बॉलीवुड की फिल्म से कम था लेकिन फिर भी यह सफलता प्राप्त हुई। मैं कहना चाहता हूँ कि देश के सारे वैज्ञानिक, जो पूरे संसार में फैले हुए हैं, जिनको यहां सुविधाएं नहीं मिल रही हैं, सरकार उनके बारे में सोचे।

16.00 hrs

ऐसा पैकेज और डील डिक्लेयर करे, ताकि वे वैज्ञानिक देश में ही रुकें और देश के लिए काम करें और इससे भी ज्यादा हमारी तरक्की होती रहे।

मैं एक और बात कहना चाहता हूँ। दशकों पहले कभी यूएस और यूएसएसआर का आपस में कंपटीशन होता था। जब हमारे चंद्रयान-3 को छोड़ा गया तो रूस जो यूएसएसआर का मुख्य पार्ट था, उसने जल्दी में आकर, हबड़-तबड़ में आकर अपना भी छोड़ा, ताकि उसका अपना कीर्तिमान स्थापित हो जाए, लेकिन वह रास्ते में ही कहीं न कहीं, ऊपर वालों को भी शायद यही मंजूर था, उनका मिशन फेल हो गया और हमारे देश का एक कीर्तिमान स्थापित हुआ।

मैं कहना चाह रहा हूँ कि ये जो टेक्नोलॉजीज हैं, सरकार इनका कमर्शियली यूज करे। जैसे आंकड़े सुबह में आ रहे थे, इस सैटेलाइट और टेक्नोलॉजी के द्वारा ज्यादा से ज्यादा फायदा उठाया जाए और हमारे देश में विदेशी रेवेन्यू ज्यादा से ज्यादा आए, तभी हमारे देश की और हमारे देश के लोगों की असली जीत होगी। यही हमारे लिए सबसे बड़ी उपलब्धि होगी। बहुत-बहुत धन्यवाद।

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्रीमती अनुप्रिया पटेल): धन्यवाद सभापति महोदया, आपने मुझे इस महत्वपूर्ण विषय पर अपनी बात रखने का अवसर दिया। आज हम इस नए संसद भवन के अंदर चन्द्रयान-3 की सफलता और भारत की अंतरिक्ष के क्षेत्र में जो भी उपलब्धियां रही हैं, उनके संबंध में हम विचारों का आदान-प्रदान कर रहे हैं।

सभापति महोदया, गत 23 अगस्त, 2023 को भारत ने चन्द्रमा की सतह पर अपने तिरंगे को लहराने की उपलब्धि प्राप्त की है। इसके साथ ही भारत चन्द्रमा की सतह पर उतरने वाला दुनिया का चौथा देश बन गया है और दक्षिणी ध्रुव पर उतरने वाला दुनिया का पहला देश बन कर उभरा है। चन्द्रयान-3 की सफलता के बाद हमने आदित्य एल-1 की सफलता को भी देखा और आज देश में गगनयान की भी बात हो रही है।

मैं इस अवसर पर, चूंकि मैं बहुत देर से अपने साथी सांसदों के विचारों को भी सुन रही हूं, मैं जरूर कहना चाहूंगी कि जब बात भारत की उपलब्धियों का जश्न मनाने की हो तो किसी भी प्रकार का आपसी विवाद नहीं होना चाहिए। भारत की अंतरिक्ष क्षेत्र की जो यात्रा है, वह छह दशक से भी लंबी रही है और इसमें किसी प्रकार का कोई मतभेद नहीं होना चाहिए। इतने वर्षों की यात्रा में भारत के अंदर अलग-अलग जो सरकारें रहीं, जो हमारे तमाम प्रधानमंत्री रहें, जिन्होंने देश का नेतृत्व किया और जो हमारे महान वैज्ञानिकों की तमाम पीढ़ियां रहीं, उन सबके सामूहिक और सतत् प्रयासों का यह परिणाम है कि आज हमने इतनी बड़ी उपलब्धि प्राप्त की है। इसलिए, आज के इस अवसर पर उन सभी लोगों का अभिनंदन इस पूरे सदन को और हम सभी को करना चाहिए।

सभापति महोदया, बजट की बातें भी मैं कुछ साथी सांसदों के मुख से सुन रही थी, इसलिए मैं जरूर कहना चाहती हूं कि कुछ विषय ऐसे होते हैं कि जब हमारी इच्छा शक्ति अत्यंत प्रबल होती है, तो संसाधनों का अभाव कोई भी बाधा पैदा करने लायक ही नहीं बचता है। लेकिन, हमारी सरकार ने इस सेक्टर को हमेशा बहुत प्राथमिकता दी है।

16.04 hrs(Shri N.K. Premachandran *in the Chair*)

वर्ष 2014 में जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की नेतृत्व वाली सरकार आई, उस वक्त जो बजट स्पेस डिपार्टमेंट को दिया जाता था, वह 5168 करोड़ रुपये हुआ करता था। इसे हमारी सरकार ने इतने वर्षों में बढ़ाकर 13,000 करोड़ रुपये कर दिया है। हमें यह भी समझने की आवश्यकता है कि जहां एक ओर देश इस उपलब्धि से गौरवान्वित हुआ है, इसके अलावा इस उपलब्धि से हमने स्पेस सेक्टर में जो प्राप्त किया है, उससे देश का आर्थिक मार्ग भी प्रशस्त हुआ है और बहुत सारे ऐसे स्टार्टअप्स आए हैं। आज स्पेस सेक्टर में लगभग 140 स्टार्टअप्स हैं। इस अवसर पर मैं कहना चाहती हूं कि वर्ष 2016 से पहले भारत में कुछ 100 स्टार्टअप्स हुआ करते हैं, लेकिन वर्ष 2016 में जब हमने स्टार्टअप के इको सिस्टम को बढ़ाना शुरू किया तो उसका नतीजा यह हुआ कि आज भारत दुनिया में तीसरा सबसे बड़े स्टार्टअप इको सिस्टम बनकर उभरा है।

आज हमारे देश के युवा यूनिकॉर्न्स बना रहे हैं। हम 100 से ज्यादा यूनिकॉर्न्स बना चुके हैं। हमारे पास 1,00,000 से ज्यादा डीपीआईआईटी रेकगनाइज स्टार्टअप्स हैं। स्पेस सेक्टर में हमारे देश के युवाओं ने लगभग 140 स्टार्टअप्स बनाकर खड़े किए हैं। स्टार्टअप्स और बहुत सारी कंपनियां हैं, जो आज स्पेस टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में, एयरो स्पेस के क्षेत्र में, डिफेंस और आरएंडडी के क्षेत्र में काम करती हैं, जिनके लिए इस उपलब्धि के बाद काम करने के अनेक अवसर पैदा हुए हैं। इसके साथ ही स्पेस सेक्टर में काम करने वाली ऐसी बहुत सारी भारतीय कंपनियां हैं, जिनके अंदर अब और काम करने की दिलचस्पी बढ़ेगी, क्योंकि चन्द्रयान-तीन की सफलता के माध्यम से हमारी जो अपनी इंडिजेनस टेक्नोलॉजिकल प्रोविस है, हमने उसको भी पूरी दुनिया के सामने प्रदर्शित किया है।

सभापति महोदय, अगर मैं आज सबसे बड़ी उपलब्धि के बारे में कहूं, तो वह ये है कि भारत अंतरिक्ष अभियानों के मामले में एक लीडिंग प्लेयर के रूप में रेकगनाइज हुआ है। यानी स्पेस एक्सप्लोरेशन और साइंटिफिक रिसर्च में आज भारत की जो ग्लोबल रेप्यूटेशन है, वह बढ़ी है। तमाम जो अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिटीज़ हैं, वे भारत को ज्यादा मान्यता, ज्यादा रेकगनेशन दे रही हैं। कहा जाता था कि यूएस, रशिया और चाइना का एक बड़ा एक्सक्लूसिव क्लब होता है, जिसमें भारत को प्रवेश

मिलने में कठिनाई होती थी, लेकिन आज अपनी इन उपलब्धियों के साथ भारत उस एक्सक्लूसिव क्लब का हिस्सा बन चुका है। आने वाले वक्त में हमें भरोसा है कि ग्लोबल स्पेस इकोनॉमी में आज भारत का योगदान 2 से 3 प्रतिशत है, हम अगले एक दशक में यह उम्मीद कर रहे हैं कि यह योगदान बढ़कर 8 से 10 प्रतिशत तक पहुंच जाएगा। आज इस उपलब्धि के माध्यम से आर्थिक उपलब्धि के रास्ते खुले हैं। भारत आज दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर उभरा है। हमने आने वाले समय की कल्पना की है कि भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहा है। यह हमारे लिए उस दिशा और उस लक्ष्य के प्रति योगदान का एक और माध्यम बनकर तैयार हुआ है।

सभापति महोदय, आज भारत की जो ग्लोबल रेप्यूटेशन बढ़ी है, उसके आधार पर हम यह भी कल्पना और उम्मीद कर सकते हैं कि आने वाले समय में स्पेस सेक्टर में बहुत सारे जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कोलैबरेशंस होते हैं, जो अलग-अलग स्पेसफेरिंग नेशन्स के साथ पार्टनरशिप्स होती हैं, उसमें भी भारत के लिए तमाम संभावनाएं बढ़ती हुई प्रतीत हो रही हैं।

मैं माननीय प्रधानमंत्री जी के लिए जरूर यह कहना चाहती हूं कि हमारे प्रधानमंत्री जी ने स्पेस टेक्नोलॉजी के महत्व को समझा है, उसकी उपयोगिता को समझा है। इसलिए इसकी उपयोगिता पर बल देते हुए उन्होंने तमाम मंत्रालयों के कामकाज में इसका विस्तार करने के लिए भी अपने मंत्रिमंडल और अपनी पूरी टीम को प्रेरित किया है। एक समय था, जब हम 20 मंत्रालयों में इसका उपयोग करते थे, लेकिन आज वह संख्या बढ़कर 60 हो चुकी है, यानी कि 60 मंत्रालय ऐसे हैं, जिनके विभिन्न कामकाजों में हम आज इस तकनीक का उपयोग कर रहे हैं। हमारे बहुत सारे ऐसे प्रोग्राम्स हैं, जैसे मनरेगा है, पीएमजीएसवाई है, पीएमकेएसवाई है, अमृत है, पीएम फसल बीमा योजना है, यूआईडीएआई है, स्वामित्व है, ऐसे हमारे बहुत सारे जनहित के प्रोग्राम्स हैं, जिसमें एक बेहतर गवर्नेंस के लिए हम स्पेस टेक्नोलॉजी का भी उपयोग कर रहे हैं।

सभापति महोदय, भारत के वैज्ञानिकों के भीतर बहुत प्रतिभा है, बहुत क्षमताएं हैं। एक के बाद एक, इन छः दशकों में हमने अपने वैज्ञानिकों की उपलब्धियों को देखा है, लेकिन क्षमताओं, प्रतिभा और कौशल को फलने-फूलने के लिए एक अनुकूल वातावरण की आवश्यकता होती है। हमारी

सरकार ने माननीय प्रधानमंत्री जी के दूरदर्शी नेतृत्व के माध्यम से एक ऐसा अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराया है, जिसमें हमारे वैज्ञानिकों की प्रतिभा फली-फूली है और हमें समय-समय पर इतनी बड़ी-बड़ी उपलब्धियां हासिल हो रही हैं।

हमारी सरकार के मुखिया माननीय प्रधानमंत्री जी ने स्पेस सेक्टर को प्राथमिकता दी है। जब हमारी सरकार आई, तो उन्होंने बहुत सारे रिफॉर्म्स लाने का काम किया। यहां तक कि जो हमारा भारतीय स्पेस प्रोग्राम है, उसके अंतर्गत जो प्राइवेट प्लेयर्स हैं, उनकी भागीदारी को भी काफी हद तक बढ़ाया है। यहां तक कि वर्ष 2022 में हम अपनी एक इंडियन स्पेस पॉलिसी लाए और हमने उसकी भी घोषणा की। ये सारे कदम हमने इस नज़रिए से उठाए हैं कि जो हमारा अंतरिक्ष विभाग का कार्यक्रम है, हमारा जो स्पेस मिशन है, वह आगे बढ़े।

आज हम यह मानते हैं कि जिस पैशन के साथ हमारे देश के वैज्ञानिक काम कर रहे हैं और जो माहौल हमारी सरकार उपलब्ध करा रही है, जो वातावरण हमने क्रिएट किया है, उसमें आने वाले समय में भी जैसा मैंने अभी जिक्र किया कि आदित्य एल-1 के बाद अब हम गगनयान की भी बात कर रहे हैं। ऐसी और बड़ी-बड़ी उपलब्धियां हैं, जिनको आने वाले समय में हमारे देश के साइंटिस्ट प्राप्त करके दिखाएंगे तथा भारत नई ऊंचाइयों पर जाएगा। वर्ष 2047 में हमने भारत को विकसित भारत बनाने का एक सपना देखा है, उस विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने में हमारे सभी देशवासियों का जो योगदान हो रहा है, उसमें हमारी जो साइंटिफिक कम्युनिटी है और हमारा स्पेस डिपार्टमेंट है, उनका भी एक बहुत बड़ा योगदान होगा। हम सबके सामूहिक प्रयासों से मिलकर वर्ष 2047 में भारत को एक विकसित देश बनाने का काम करेंगे।

मैं आपके माध्यम से पुनः हमारे देश के सभी वैज्ञानिकों को बधाई देना चाहती हूं, उनका अभिनंदन करना चाहती हूं। भविष्य में भी वे भारत को इसी प्रकार अपने प्रयासों से गौरवान्वित करते रहें, इसके लिए इन्हें पुनः बहुत सारी शुभकामनाएं भी देना चाहती हूं। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

DR. M. P. ABDUSSAMAD SAMADANI (MALAPPURAM): Thank you, Sir, for allowing me to take part in this very important discussion on Chandrayaan-3.

Moon has always captured the imagination of humanity. The Moon landing is quite natural. It has captured the imagination of all the people of the country. Not only that, the whole country is rejoicing upon this great achievement of India becoming only the fourth nation in Moon landing after the US, Russia and China. The poets of all the languages have celebrated Moon. I am reminded of a couplet:

कल चौदहवीं की रात थी, शब-भर रहा चर्चा तेरा,
कुछ ने कहा ये चाँद है, कुछ ने कहा चेहरा तेरा ।
सर, ये चेहरा देश का चेहरा है ।
इस पर हर भारतवासी को फख्र है और गर्व है ।

Also, it is the achievement of ISRO and the great scientists of our country. When we say that this is the achievement of the Government of the country, I have to re-state the point that Government is a continuous entity which the present Government also has to acknowledge.

When we think of the space missions of the country, we have to think of two great luminaries, stalwarts whose names start with 'N', Newton and Nehru. Newton was the luminary of science and Nehru was the great luminary of wisdom, science, learning, politics, everything. There is a famous statement of Sir Isaac Newton which has become almost like a metaphor, that is, "standing on the shoulders of giants." Everybody knows the importance and the message of this statement. Everybody is making some achievement in the field of science,

technology, and many branches of learning and wisdom. They have to acknowledge the past, the heritage of the past, and the stalwarts who have made the present generation deserving for this great achievement.

Also, we have to salute two other great luminaries. One is Maulana Abul Kalam Azad, the philosopher, Minister of Education, and the comrade of Nehru ji. He was the first Minister of Education. When India attained Independence, he gave great impetus to inculcating scientific temperament in the minds of the younger generation of the country. We know that he was responsible for establishing all the academies which are the pride of the country now. Sahitya Akademi, Lalit Kala Akademi, Sangeet Natak Akademi, all these great institutions were established by none other than Maulana Abul Kalam Azad. Also, Vikram Sarabhai was a friend of Nehru. Nehru-Vikram Sarabhai mutuality was not a mutuality of politics and science alone; it was a mutuality of culture, learning and philosophy.

Hon. Chairperson, Sir, much has been discussed here about the role of religion, faith and science. We have no difference of opinion with regard to the role of all these things in shaping the destiny of humanity. But one thing has to be admitted and acknowledged. These are different roads to truth and reality. There cannot be mixing of religion with science. And this kind of an opportunity cannot be used to spread superstition. Scientific achievement cannot be used and utilised for spreading superstitious beliefs. There should be a mentality of rationality. Mentality of rationality is the necessity of humanity. ... (*Interruptions*) Everybody has to be rational. But that is what is missing nowadays. The hon.

Minister was referring so many times about the relationship of science with religion and with culture. There is no doubt about it. But everything has an orbit of its own. Let us look at the sky. Moon is moving in its orbit. Let the faith and religion move in their own orbits, and science in its own orbit. They are different roads to reality, which do not collide. There should not be a collision. There must be coalition and coordination. One another very important lesson that we have to learn from the sky and universe is the lesson of plurality. In the sky, there are stars, planets, and other particles. What is the essence of Newton's theory of gravitation? Every particle is attracting other particles of the universe. Newton's theory is the theory of inclusion. Newton's Theory is not the theory of exclusion, which these present-day people are spreading hatred throughout the country.

HON. CHAIRPERSON: Samadani ji, please conclude.

DR. M. P. ABDUSSAMAD SAMADANI: Yes, Sir, I am concluding.

Sir, this also has to be hailed as an achievement of man.

“सुना है खाक से तेरी नमूद है लेकिन तेरी सरिश्त में है कोकबी-व-महताबी”

A man is made of clay. He is made of that essence of moon and star. These particles are there inside man. In this kind of a very important juncture, we have to inculcate and spread the culture of pluralism. Every part and every region of the country have played its own role in making this achievement a reality. People belonging to different sections of the community and society have also made their contributions.

I conclude by quoting another couplet:

“बेचैन इस कदर था कि सोया न रातभर

पलकों से लिख रहा था तेरा नाम चांद पर।”

हमारे देश का नाम चांद पर लिखने का प्रोसैस नेहरू जी ने शुरू किया, हमें फख्र है कि वह जारी है। Thank you so much, Sir.

HON. CHAIRPERSON: Now, Supplementary List of Business.

Hon. Minister, Shri Pankaj Chaudhary ji, please move the Resolution.

16.18 hrs

**RESOLUTION RE: APPROVAL OF AMENDMENT OF
SECOND SCHEDULE TO CUSTOMS TARIFF ACT, 1975**

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री पंकज चौधरी): महोदय, श्रीमती निर्मला सीतारमण की ओर से मैं प्रस्ताव करता हूँ :

“कि (एक) सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 8 के अनुसरण में, यह सभा अधिसूचना संख्या 47/2023-सीमा शुल्क, दिनांक 19 अगस्त, 2023 [सा.का.नि. 616 (अ), दिनांक 19 अगस्त, 2023] का अनुमोदन करती है, जिसका आशय एचएस कोड 0703 10 के अंतर्गत आने वाले प्याज के निर्यात पर निर्यात शुल्क लगाने के लिए सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम की दूसरी अनुसूची का संशोधन करना है।

(दो) सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 8 के अनुसरण में, यह सभा अधिसूचना संख्या 49/2023-सीमा शुल्क, दिनांक 25 अगस्त, 2023 [सा.का.नि. 628 (अ), दिनांक 25 अगस्त, 2023] का अनुमोदन करती है, जिसका आशय एच एस कोड 1006 30 10 के अंतर्गत आने वाले उबले चावल के निर्यात पर निर्यात शुल्क लगाने के लिए सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम की दूसरी अनुसूची का संशोधन करना है।”

माननीय सभापति: प्रश्न यह है:

“कि (एक) सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 8 के अनुसरण में, यह सभा अधिसूचना संख्या 47/2023-सीमा शुल्क, दिनांक 19 अगस्त, 2023 [सा.का.नि. 616 (अ), दिनांक 19 अगस्त, 2023] का अनुमोदन करती है, जिसका आशय एचएस कोड 0703 10 के अंतर्गत आने वाले प्याज के निर्यात पर निर्यात शुल्क लगाने के लिए सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम की दूसरी अनुसूची का संशोधन करना है।

(दो) सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 8 के अनुसरण में, यह सभा अधिसूचना संख्या 49/2023-सीमा शुल्क, दिनांक 25 अगस्त, 2023 [सा.का.नि. 628 (अ), दिनांक 25 अगस्त, 2023] का अनुमोदन करती है, जिसका आशय एच एस कोड 1006 30 10 के अंतर्गत आने वाले उबले चावल के निर्यात पर निर्यात शुल्क लगाने के लिए सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम की दूसरी अनुसूची का संशोधन करना है।”

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

16.21 hrs

**DISCUSSION REGARDING SUCCESS OF CHANDRAYAAN-III
MISSION AND OTHER ACHIEVEMENTS OF OUR NATION IN
SPACE SECTOR... Contd.**

श्री सय्यद ईमत्याज़ जलील (औरंगाबाद): सभापति जी, जब चन्द्रयान-3 चांद पर लैंड हुआ तो सारी दुनिया में हमारी दखल ली गई और देश में बड़े गर्व का माहौल था, खुशी का माहौल था। पूरी दुनिया हमें इस नजरिए से देखा करती थी कि यह वह देश है, जिसकी पहचान इललिटेरेसी के लिए की जाती थी। यह वह देश है, जहां पर सड़कों के ऊपर गाड़ियां कम और जानवर ज्यादा घूमा करते थे। यह वह देश था, जहां पर फीमेल इंफेंटिसाइड के नाम पर हम बच्चियों को पेट के अंदर ही खत्म कर देते थे। यह वह देश था, जहां बेरोजगारी हमारा मुकद्दर थी, लेकिन आज यह देश बदल गया है। आज पूरी दुनिया इस देश को झुककर सलाम कर रही है। अगर कोई यह समझ रहा है कि यह देश इसलिए बदला, क्योंकि हम राजनीतिक पार्टियों के नेताओं ने या कुछ राजनीतिक पार्टियों के मंत्रियों और प्रधान मंत्रियों ने इसको बदला है तो हम बहुत बड़ी गलतफहमी का शिकार हैं। यह देश अगर बदला है तो युवा शक्ति की वजह से बदला है। यह देश अगर बदला है तो हमारे किसानों की वजह से बदला है। यह देश अगर बदला है तो हमारी महिलाओं की वजह से बदला है तथा हमारे वैज्ञानिकों की वजह से बदला है।

16.22 hrs

(Hon. Speaker in the Chair)

अध्यक्ष महोदय, आज हम बहुत सारे सदस्य ऐसे हैं, जिनको याद होगा कि एस्ट्रोनॉट राकेश शर्मा जब स्पेस के अंदर गए और उनसे पूछा गया था कि वहां से भारत देश कैसा दिखता है तो उन्होंने कहा था कि सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा।

अध्यक्ष महोदय, अगर इस स्पेस प्रोग्राम को हमें आगे बढ़ाना है तो हमें कहीं न कहीं इसे और फंडिंग देने की जरूरत होगी। आज अगर हम इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गेनाइजेशन की फंडिंग को देखते हैं तो क्या वजह है कि वर्ष 2022 के फाइनेंशियल ईयर के अंदर 13,700 करोड़ रुपये का बजट

हटाकर 12,553 करोड़ रुपये कर दिया गया था। अगर जीडीपी के परसेंटेज के हिसाब से देखें तो भारत रिसर्च एंड डेवलपमेंट स्पेस प्रोग्राम के अंदर बहुत कम पैसा खर्च करता है, सिर्फ 0.65 परसेंट ऑफ जीडीपी, जबकि यूएस 2.9 परसेंट करता है, चाइना 2.2 परसेंट करता है और इजराइल 4.9 परसेंट करता है।

अध्यक्ष महोदय, मैं आज सुबह जब आदरणीय मंत्री राजनाथ सिंह साहब को सुन रहा था तो उन्होंने बहुत सारे मुद्दों को टच किया। मैंने दोबारा सब्जेक्ट पढ़ा कि यह क्या सब्जेक्ट है तो मुझे पता चला कि सब्जेक्ट चन्द्रयान-3 और स्पेस के अंदर हमारी उपलब्धिया हैं, लेकिन राजनाथ सिंह साहब ने यह भी बताया कि राम मंदिर बनाया जा रहा है, कौन बना रहा है, कैसे बना रहा है। अगर आप सब्जेक्ट से हट गए तो थोड़ा मैं भी सब्जेक्ट से हटकर यह बताना चाहता हूँ कि जब चन्द्रयान-3 चंद्रा मामा के पास गया तो वहां से क्या आपको चाइना नजर आया? आपको यह नजर आया कि किस तरीके से हमारी धरती के ऊपर 2 हजार स्क्वायर किलोमीटर तक चाइना ने कब्जा करके रखा है।

अध्यक्ष महोदय, राजनीति अपनी जगह है।

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य, एक मिनट रुकिए।

माननीय सदस्यगण, मैं कई बार यह बात सुनता हूँ। हम हमारे देश की महिमा, उसकी प्रसिद्धि के बारे में बताएं। हम सदन में क्या मैसेज देना चाहते हैं? सदन में कुछ विषयों को सकारात्मक तरीके से लिया जाना चाहिए। पूरा देश, पूरा विश्व संसद की कार्यवाही को देखता है। हमें ऐसे विषय पर नहीं बोलना चाहिए, जिससे हम कमजोर नजर आएँ। भारत आज मजबूत है। दुनिया भारत की ओर देख रही है इसलिए आप सदन में थोड़ी सकारात्मक बात करें।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : वह अलग विषय है। मनीष जी, आपका विषय महत्वपूर्ण है। आप पढ़ते भी रहते हैं। वह ठीक है।

... (व्यवधान)

श्री सय्यद ईमत्याज़ जलील: अध्यक्ष महोदय, मैं ट्रैक से नहीं हटा। अगर मंत्री जी ट्रैक से हटकर दूसरी बातों पर चले गए तो मजबूरन हमें भी थोड़ा सा ट्रैक से हटना पड़ा।

अध्यक्ष महोदय, राजनीति अपनी जगह है। आज मुझे खुशी है कि चंद्रयान-3 में जितने लोगों का योगदान रहा है, मैं उनमें से चार लोगों का खास तौर से नाम लेना चाहूंगा। यकीनन, जो हमारे वैज्ञानिक हैं, इस प्रोजेक्ट के डायरेक्टर, एस. सोमनाथ, इसरो के चेयरपर्सन, मिशन डायरेक्टर, एस मोहन कुमार, प्रोजेक्ट डायरेक्टर वीरामुथुवेल। इसी दिल्ली के जामिया मिलिया इस्लामिया के दो लड़के भी उस टीम में थे, जिन्होंने चंद्रयान-3 को वहां तक पहुंचाने का काम किया है – मो. कासिफ और अरिब अहमद। उसमें असम से एक लड़का और लड़की थी। आपने महिला रिजर्वेशन में मुसलमानों को रिजर्वेशन नहीं दिया, लेकिन एक बच्ची इसरो में है, जो असम से आती है, यास्मीन नाजनीन और बहरुल इस्लाम। हमें खुशी इस बात की है।

अध्यक्ष महोदय, हमें आज भी वह तस्वीर याद आती है कि वर्ष 2019 में जब चंद्रायन का मिशन फेल हुआ, तो हम देख रहे थे कि कैसे उन वैज्ञानिकों के आखों में आंसू थे, लेकिन आप वर्ष 2023 का मंजर देखिए कि वे किस तरह से खुश हो रहे थे। जब वे वर्ष 2019 में नाकामयाब हुए, तो उन्हें इस बात का दर्द नहीं सताया कि हम फेल हो गए। उन्होंने शायद सोहन लाल त्रिवेदी की उस कविता से कुछ सीख ली और आगे बढ़ते रहे। मैं उस कविता की कुछ पंक्तियां सुनाना चाहता हूं।

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान मत छोड़ भागो तुम
कुछ किए बिना ही जय जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

श्री उदय प्रताप सिंह (होशंगाबाद): अध्यक्ष जी, सबसे पहले मैं नए सदन में आपका हृदय से अभिनंदन करता हूं। नया सदन वर्षों-वर्ष इस देश के विकास, इस देश के भाग्य को गढ़ने का काम करेगा, उसमें आपने मुझे पहली बार बोलने का मौका दिया है।

माननीय अध्यक्ष जी, आज हम चंद्रयान-3 की सफलता और इसरो के वैज्ञानिक का गुणगान सुबह से कर रहे हैं। मैं सबसे पहले इसरो के चेयरमैन एस. सोमनाथ जी एवं उनकी पूरी टीम को बहुत-बहुत बधाई देता हूं, उनका हृदय से अभिनंदन करता हूं। उन्होंने देशवासियों को गौरव की अनुभूति करने का एक बड़ा अवसर दिया है। साथ ही, मैं देश के प्रधान मंत्री, हम सभी के गौरव, श्रद्धेय नरेन्द्र मोदी जी का भी हृदय से अभिनंदन करता हूं कि विपरीत परिस्थितियों के बाद, वर्ष 2019 में कोविड के समय चंद्रयान-II की असफलता के बाद भी उन्होंने लगातार हमारे वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित किया और उनको लगातार प्रोत्साहित करते रहे। आज हम इस स्थिति में पहुंचे हैं कि हम चंद्रयान की सफलता को प्राप्त कर सके और पूरा देश गौरव की अनुभूति कर रहा है। मैं प्रधान मंत्री जी को इसीलिए और धन्यवाद देना चाहता हूं कि 23 अगस्त स्पेस-डे के रूप में पूरा देश आगे आने वाले वर्षों में मनाएगा। जब 23 अगस्त आएगा, तो उस दिन यह देश उन वैज्ञानिकों को विजेता के रूप में अनुभव करेगा, उन विजेताओं को स्मरण करेगा, उनका गौरवगान करेगा।

माननीय अध्यक्ष जी, अभी हमारे दूसरे वक्ता इसके बजट के ऊपर बात कर रहे थे कि इसके बजट में बढ़ोतरी की, कटौती की। मुझे अपने वैज्ञानिकों के ऊपर आश्चर्य होता है कि उन्होंने कितने कम बजट में बहुत बड़ी सफलता हासिल की। मैं अखबार में पढ़ रहा था कि जो आदिपुरुष फिल्म बनी है, उसमें ज्यादा बजट खर्च हुआ है, लेकिन चंद्रयान को सफलता प्राप्त करने के लिए उससे कम बजट का उपयोग हुआ है। कम बजट में हमारी इतनी बड़ी सफलता हमारे वैज्ञानिकों ने हासिल की है, हम उनका अभिनंदन करते हैं।

अध्यक्ष जी, हम सनातन संस्कृति को मानने वाले लोग हैं। हमारी संस्कृति हमें सत्य मार्ग पर चल कर प्रगति करने की प्रेरणा देती है। हम अभिभूत हैं कि हमारे इसरो के चेयरमैन इस सफलता के बाद मंदिर में जाते हैं, माथा टेकते हैं और प्रभु का धन्यवाद करते हैं कि हे प्रभु! आपने हमारी सफलता

को अंजाम तक पहुंचाने के लिए आशीर्वाद प्रदान किया। मुझे आज भी स्मरण है कि हमारे पूर्व ब्रह्मलीन शंकराचार्य ज्योतिष-शारदा पीठाधीश्वर श्रद्धेय स्वरूपानंद जी महाराज के पास एस. सोमनाथ जी एक बार आशीर्वाद लेने गए थे। उस समय हम लोगों ने कल्पना नहीं की थी कि आगे जा कर कभी इतनी सफलता के वे कारक बनेंगे।

हमारी संस्कृति कामों में सफलता पाने के लिए हमको प्रेरणा देती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम जहां दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचे हैं, वहां दुनिया का कोई व्यक्ति नहीं पहुंच सका है। यह हमारे लिए एक अद्भुत संयोग है। मुझे लगता है कि प्रधान मंत्री जी ने अपने वक्तव्य में सबसे पहले कहा था कि मैं विदेश में हूँ। मैं शीघ्र ही हिन्दुस्तान पहुंच कर आपके साथ शरीक होना चाहता हूँ, आपकी खुशी में शामिल होना चाहता हूँ। मैं इस देश के वैज्ञानिकों को सैल्यूट करता हूँ, जिन्होंने इतनी बड़ी सफलता आज भारत के लिए दिलाई है। हमारे लिए यह गौरव का विषय है कि हर चुनौती में प्रधान मंत्री जी इस देश के हर व्यक्ति के साथ खड़े होते हैं। हर खुशी में उसके सहभागी बनते हैं। हर दुःख में उसके पीछे ढाँढस बंधाने के लिए खड़े रहते हैं। यह हमारे लिए एक गौरव का विषय है।

माननीय अध्यक्ष जी, हम भाग्यशाली हैं। हम इस संसद में काम करने वालों की वह पीढ़ी है, जिन्होंने पुरानी संसद में भी काम किया, जो अब संविधान सदन बन गई और आपके नेतृत्व में हम इस नए सदन के अंदर भी अपना उद्बोधन देश के सामने रख पा रहे हैं, इस अगस्त हाउस में अपनी बात कर पा रहे हैं। हम वह गौरवशाली, भाग्यशाली पीढ़ी हैं।

माननीय अध्यक्ष जी, आपके नेतृत्व में हमें वह गौरव की अनुभूति दोनों सदनों के अंदर मिली है, शायद पहले की पीढ़ियां भी वह अनुभव नहीं कर सकी और आगे आने वाली पीढ़ियां दूसरे तरह के अनुभव करेंगी, लेकिन जिन चीजों को हमने जिया है, शायद वह अवसर दूसरों को नहीं मिलेगा। हमने प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में इस देश के अंदर जीएसटी लेकर आए। हम लोगों ने प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में धारा 370 हटाने का काम किया। यह वही सदन है कि हमें अवसर मिला है कि राम मंदिर निर्माण का काम 350-400 बरस के बाद अगर इस देश में, भारतवर्ष में दोबारा चालू हुआ है तो हमारी इसी संसद के कार्यकाल में चालू हुआ है। तीन तलाक जैसा बड़ा कानून जो है, हम उन भाग्यशाली

लोगों में हैं कि हमारे सांसद रहते हुए यह अवसर हमारे प्रधान मंत्री जी ने हमको दिया है। कल का जो दिन था... (व्यवधान) मैं संसद के गौरवगान की बात कर रहा हूँ। कल का जो दिवस था, हमारे जीवन में जो गौरवशाली अवसर आते हैं, हमारे जीवन में जो गौरवशाली क्षण आते हैं, उनको स्मरण करने का यह दिवस है। नई संसद के अंदर गणेश चतुर्थी के दिन भगवान गणेश की पूजा-अर्चन करने के बाद इस देश में महिलाओं के लिए आरक्षण हमारे प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में इस सदन ने सर्वानुमति से पास किया है, यह गौरव भी हमको मिलना था। माननीय अध्यक्ष जी, हम धन्यवाद देते हैं कि आपके नेतृत्व में हमारी सरकार ने, इस सदन ने वह महत्वपूर्ण काम किया है।

मैं पुनः आपका अभिनंदन करते हुए चन्द्रयान-3 की सफलता में सहभागी चेयरमैन से लेकर छोटे-छोटे वैज्ञानिक तक इस बड़े यज्ञ में जिस व्यक्ति ने भी आहूति दी है, उन सब का अभिनंदन करते हुए, उनका वंदन करते हुए अपनी वाणी को विराम देता हूँ।

SHRIMATI HEMAMALINI (MATHURA): Sir, I am extremely happy and delighted to be speaking in this beautiful new Sansad Bhawan for the first time. Thank you so much for giving this opportunity.

अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले मैं नए संसद भवन में पहले कानून के रूप में नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023 को विशाल बहुमत से पारित करने के लिए सभी माननीय सांसदों को धन्यवाद देती हूँ। गृह मंत्री श्री अमित शाह जी, कानून मंत्री श्री अर्जुन मेघवाल जी का ऐतिहासिक भाषण के लिए आभार व्यक्त करती हूँ, आपका भी और हमारे प्रधान मंत्री जी का भी अभिनंदन करती हूँ।

अध्यक्ष महोदय, भारत आज चन्द्रमा पर है। हमारा राष्ट्रीय गौरव तिरंगा और अशोक चक्र आज चन्द्रमा पर है। यह आज का भारत है, 21वीं सदी का भारत है, जो नरेन्द्र मोदी जी के सशक्त और दूरदर्शी नेतृत्व में निर्भीक और जुझारू है। हर भारतीय आज शान से कह सकता है कि मेरा देश अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस की तरह पहली पंक्ति में खड़ा है।

लेकिन यह कैसे संभव है? यह संभव हुआ हमारे कर्मयोगी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के दूरदर्शी नेतृत्व और उनके दृढ़ संकल्प से, हमारे वैज्ञानिकों को दिए गए प्रोत्साहन से, उनके समर्पण एवं परिश्रम से और 140 करोड़ देशवासियों की एकजुटता से। यह इसलिए संभव है क्योंकि

कुछ पाने के लिए दिल में जुनून चाहिए,

रगों में दौड़ता हुआ खून चाहिए,

आएगा आसमान भी जमीन पर,

इरादों में बस फतेह की गूंज चाहिए।

यह हमारे प्रधानमंत्री जी में है, इसलिए वे ये सारे काम कर सकते हैं। पिछले 9 वर्षों में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश में निरंतर ऐसे निर्णय लिये गये हैं, नीतियाँ बनाई गई हैं, जिसने भारत में इनोवेशन और रिसर्च को आसान बनाया है। भारत के अंतरिक्ष प्रोग्राम में समस्त साइंटिस्टों के साथ महिला वैज्ञानिकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है।

भारत को गर्व है कि चन्द्रयान -3 की सफलता में भी हमारी महिला वैज्ञानिकों का एक बहुत बड़ा योगदान रहा है। यह सफलता आने वाले वर्षों में भी हमारी महिला वैज्ञानिकों को प्रेरित करती रहेगी। चन्द्रयान मिशन से जुड़े दो महत्वपूर्ण पॉइंट्स – ‘तिरंगा’ और ‘शिवशक्ति’ केवल नाम नहीं हैं, बल्कि ये हमारी हजारों वर्ष पुरानी विरासत और आज की वैज्ञानिक आकांक्षाओं वाले भारत को एक सूत्र में पिरोती हैं।

जैसाकि प्रधानमंत्री जी ने चन्द्रयान की सफलता पर इसरो के वैज्ञानिकों को सम्बोधित करते हुए कहा था- “भारत के पास विज्ञान के ज्ञान का जो खज़ाना है, वह गुलामी के लम्बे कालखण्ड में दब गया है, छिप गया है। आज़ादी के इस अमृतकाल में हमें इस खज़ाने को भी ढूँढ़ना है, उस पर रिसर्च भी करना है और दुनिया को इसके बारे में बताना भी है।” भारत दुनिया में सबसे युवा प्रतिभाओं का देश है। नई पीढ़ी के लिए यह संदेश है कि भारत के प्राचीन ग्रंथों में खगोलीय सूत्रों को वैज्ञानिक रूप से साबित करने के लिए और उनका नये सिरे से अध्ययन करने के लिए आगे आएँ। यही भावना वर्ष 2047 में विकसित भारत के सपने को साकार करेगी।

माननीय अध्यक्ष जी, मैं अटल जी की एक कविता की कुछ पंक्तियों को पढ़कर अपनी बात समाप्त करूँगी।

“मैं तेज पुंज, तमलीन जगत में फैलाया मैंने प्रकाश।

जगती का रच करके विनाश, कब चाहा है निज का विकास?

शरणागत की रक्षा की है, मैंने अपना जीवन दे कर।

विश्वास नहीं यदि आता तो साक्षी है यह इतिहास अमर।

यदि आज देहली के खण्डहर, सदियों की निद्रा से जगकर।

गुंजार उठे ऊँचे स्वर से 'हिन्दू की जय' तो क्या विस्मय?

हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय।”

धन्यवाद।

SHRI RAM MOHAN NAIDU KINJARAPU (SRIKAKULAM): Thank you, hon. Speaker, Sir, for giving me an opportunity to participate in this important debate.

16.40 hrs

(Shri N. K. Premachandran *in the Chair*)

Sir, I stand before you with immense pride and joy as I reflect upon the recent successes of ISRO - Chandrayaan-3 which is the world's first mission to successfully land on the Lunar South Pole, and Aditya - L1 which was the first satellite mission to study the Sun. These achievements are not just a milestone; they are a testament to the unwavering dedication, hard work, and remarkable journey of our nation's space program fuelled by the tireless work of our scientists, engineers and support team at ISRO. I was thrilled to watch on television, the awe-inspiring launch of Chandrayaan-3 which happened in Sriharikota, which is in my home State of Andhra Pradesh.

It is an experience that filled my heart with pride excitement and joy. The sight of our spacecraft ascending into the cosmos was nothing short of breathtaking. It was a moment that resonated deeply with every Indian and also a moment that affirmed our status as 'Vishwa Guru'. I also would like to take a second and appreciate all the scientists, including our Telugu scientist, who have contributed to the Chandrayaan Mission.

What makes Chandrayaan-3's triumph even more inspiring is the journey that led us here. It reminds us that failure should never deter us. Instead, it should propel us to return stronger. Chandrayaan-2 faced its own challenges but our scientists and engineers demonstrated an unwavering spirit of resilience and

determination. They refused to let adversity define their journey, and their efforts bore fruit with the resounding success of Chandrayaan-3.

In the words of our visionary leader Shri Chandrababu Naidu garu, 'Every crisis creates an opportunity, and those who fight in those situations will emerge as leaders.' This is precisely what our ISRO scientists have demonstrated to the world. They have seized the opportunity, overcome the challenges, and emerged as leaders in the space exploration programme.

Respected Speaker, as we speak about the successes of ISRO, the first name that comes to the young minds of this country is our beloved former President, late Dr. Abdul Kalam ji. He is commonly known as the People's President also. We all have heard inspiring stories of his association with ISRO. It is an honour for TDP that Shri Nara Chandra Babu Naidu, the then convenor of the NDA, was the one who proposed and supported the nomination of Dr. Kalam as the President of our nation. I am certain that had Dr. Kalam been among us today, he would have been filled with immense joy and satisfaction seeing the success today. He also preached to this great nation to dream big and achieve big. But ISRO not only dreamt big but also dreamt of the impossible, and achieved what no other country could achieve today. It is now upon the Central Government to take these great technological advances and breakthroughs, and use them for the benefit of 140 core people of this country.

I take immense pride in serving under the leadership of Chandra Babu Naidu garu who encapsulates the above thought brilliantly. I would like to highlight certain programmes where our Leader engaged with ISRO to help resolve issues

faced by the people of Andhra Pradesh when he was the Chief Minister. The Lightning Alert System was an initiative launched to help warn people about possible lightning and staying safe. It was a very beneficial programme for the people of my constituency Srikakulam as it is a cyclone-prone area. The other one is, envisioning the use of satellite imagery for crop health monitoring, yield predictions and crop insurance payouts. The Government is today using it for Pradhan Mantri Fasal Bima Yojana also. We see the present government doing something similar under the Pradhan Mantri Fasal Bima Yojana. The other initiatives include, building spatial dashboards to monitor the developments of big infra projects like Polavaram and others, and monitoring groundwater levels and actively working with young entrepreneurs to develop technology that can benefit the common man.

We should also acknowledge the rapid growth in our private sector's involvement in the development of space technologies over the last few years. Young startups like Dhruva Space, SatSure, Digantara, Skyroot Aerospace, Bellatrix and many other such startups across India have achieved remarkable success over the last few years. I urge the Central Government to actively engage, assist and tap into the potential of such organisations to accelerate our country's overall progress in space research and satellite technology. I applaud the Government for launching programmes such as Atal Tinkering Labs and legislations such as the Anusandhan National Research Foundation Act, 2023 that aim towards fostering the spirit of learning and scientific temperament in our country.

Sir, before I conclude, I would like to bring the attention of the House to the case of Shri Sankaralingam Nambi Narayanan, a stark reminder of how motivated petty vindictiveness can uproot and put back years of scientific development and innovation. It puts fear in the hearts of people and discourages them from carrying forward the works of their leaders, lest they be termed traitors to the nation themselves. Even though he has been cleared of all charges, the years lost fighting the allegations took an obvious toll on his health and reputation. The country lost out as well on the possible immense contributions this brilliant mind could have made to our space programme.

Sir, we live in strange times where the corrupt are putting the honest and sincere in jail. We see a similar chain of events unfold in my State of Andhra Pradesh where our beloved leader, Chandrababu Naidu, who worked relentlessly for 45 years with an unblemished career, has been jailed. ... (*Interruptions*) Sir, if I am saying anything unparliamentary, you have the right to expunge it. But I am not saying anything unparliamentary. Within my limits of being a Parliamentarian, I am speaking in this House. ... (*Interruptions*)

Shri Chandrababu Naidu, who has worked relentlessly for 45 years with an unblemished career, has been jailed on trumped-up charges, which is an obvious case of Regime-Revenge-Litigation. What incentives do young leaders like me have when honesty is being impeached? On the other hand, another leader from my State, surrounded by sycophants, will be celebrating his 10th anniversary of being out on bail this September 23rd for looting our country of Rs. 43,000 crore. Sir, we need to fix our system before it is taken for granted.

HON. CHAIRPERSON: Please conclude now.

... (*Interruptions*)

SHRI RAM MOHAN NAIDU KINJARAPU: Yes, Sir. Many of them who have benefited from CBN's policies and leadership over the years have come out on the streets to show their concern over his arrest, not only in Andhra Pradesh but also in Hyderabad, Bengaluru, and Delhi. Not only in India but also from cities across the USA, the UK, Australia, and many other countries, support is pouring in.

HON. CHAIRPERSON: Please conclude now.

SHRI RAM MOHAN NAIDU KINJARAPU: Through you, I appeal to the Members of this august House to raise their voices collectively against the grave injustice and blatant assassination of democracy unfolding in our Andhra Pradesh. ...
(*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: He is not speaking anything unparliamentary. Shri Margani Bharat, you can dispute it. Anything unparliamentary or objectionable will be looked into. Unnecessarily, you do not create noise. You can very well dispute it when your turn to speak comes.

... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: He is comparing Nambi Narayanan's case.

... (*Interruptions*)

SHRI RAM MOHAN NAIDU KINJARAPU: Let me conclude, Sir. ...
(*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Let him complete. Please conclude now.

... (*Interruptions*)

SHRI RAM MOHAN NAIDU KINJARAPU: In the last four and a half years, I have seen the Members of Parliament from YSRCP. They are only..... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: After he completes his speech, you can very well dispute it.

... (*Interruptions*)

SHRI RAM MOHAN NAIDU KINJARAPU: Sir, as I conclude, I am reminded of a quote of Martin Luther King. He said, "Injustice anywhere is a threat to justice everywhere."

Thank you, Jai Hind.

HON. CHAIRPERSON: No. You give your name. When your turn comes, you can speak.

SHRI PRATAP CHANDRA SARANGI (BALASORE): Hon. Chairperson, Sir, I thank you from the core of my heart for your kind permission to speak on this inspiring and very encouraging topic. It has been my proud privilege to speak for the first time in this new Parliament building. Bharat Mata is destined to create history under the able leadership of our great champion Narendra Modi ji, our hon. Prime Minister.

Entire world gazed towards the sky on the momentous occasion of August 23, 2023 when the Indian Space Research Organisation (ISRO) stood on the brink of a historic achievement leveraging India's ageless traditional knowledge, rich ancient wisdom entwined with modern technological excellence and

economic prudence. With the Chandrayaan-3 August mission touching down on the enigmatic and uncharted south pole of the Moon, it is a day of anticipation, wonder, hope, and aspiration. While the mission represents the zenith of modern space exploration, it is imperative to revisit the ancient Indian knowledge that has woven a celestial tapestry around the moon for centuries.

In India's rich tapestry of ancient wisdom, the moon, known as Chandra or Chandrama in Sanskrit, holds profound significance. It has long been a source of inspiration, mystique, and spiritual connection. Ancient Indian astronomers, or Jyotishis, meticulously observed the moon's phases, cycles, and their influence on Earth. The lunar calendar, based on the moon's waxing and waning, played a pivotal role in various aspects of life, including agriculture, rituals, and festivals. The moon's ethereal glow and its ever-changing phases evoked metaphors of transformation, cyclicity, and the transient nature of life. It found its place not only in scientific treatises but also in the realms of art, poetry, and philosophy. The silvery orb adorned countless tales, where gods and goddesses, lovers and seekers, were often associated with its luminescence.

As Chandrayaan-3 ventures to touch the lunar surface, it is intriguing to contemplate the echoes of ancient Indian insights in this modern endeavour.

The moon's south pole, a realm cloaked in mystery and shadow, is a fitting canvas for both ancient wonder and modern curiosity to converge. The lunar surface, as observed through the lens of Chandrayaan Mission unveils tales of geological evolution and cosmic history. And yet, the legacy of ancient India thought of largest universal wellbeing offers a perspective that extends beyond

the scientific gaze. The moon's surface, with its craters and crevices, becomes a tapestry that speaks of cosmic cycles, change, and the dance of celestial bodies.

Just as Chandrayaan-3 seeks to unravel geological secrets, ancient Indian wisdom invites us to explore the metaphorical depths of the moon's symbolism. The moon's waxing and waning nature mirrors the eternal ebb and flow of life. Its luminous radiance amid the darkest nights reflects hope, strength, aspiration and guidance in the face of challenges. As Chandrayaan-3's journey nears its pinnacle, it is a celebration not only of technological prowess but also of the continuum of human curiosity and exploration. The threads of ancient Indian knowledge are interwoven with the fabric of modern space science, illuminating the moon's significance through time encouraging insightful futuristic explorations of the milky way for the enduring global good, universal prosperity of humankind and all species for sustainable economy, ecology and environment, which is symbolised by the great personality of hon. Narendra Modi ji. Ahead of the developed world, it is India's maiden global achievement to soft land Chandrayaan-3 Space Mission at the unexplored south pole. This demonstrates undivided attention, inspiring support and visionary leadership of our hon. Prime Minister Shri Narendra Modi ji complemented by collective technical excellence of the Indian scientific community led by ISRO.

सर, इसरो के वैज्ञानिकों की श्रद्धा, पूर्ण श्रद्धा, असामान्य एकाग्रता, प्रचंड साहस, दृढ़ निश्चय, दुर्वार संकल्प और राष्ट्र के प्रति समर्पित चरित्र और अखंड साधना के कारण तथा हमारे विजनरी लीडर, राष्ट्रगत प्राण, अद्भुत सामर्थ्य के अधिकारी, महानायक, यशस्वी प्रधान मंत्री श्रीमान् नरेन्द्र

मोदी जी के कुशल और प्रेरणादायी नेतृत्व के कारण यह संभव हुआ है। When a great country like Russia failed, India succeeded.

महोदय, भारत विश्व का प्रथम राष्ट्र है जिसने साउथ पोल में चन्द्रयान की सफल सॉफ्ट लैंडिंग की है। आज कुछ लोग इसे कुसंस्कार कह रहे थे। हमारे पूर्वजों के जो कीर्तिमान, अविष्कार थे, क्या ये उन्हें भी कुसंस्कार मानते हैं? विश्व में जब किसी सभ्यता का उन्मेष नहीं हुआ था, आधुनिक यूरोप और अमरीका के पूर्वज जब अरण्य में अपने को नीले रंग में रंजित करके विचरण करते थे, भाषाभाव में संकेत के द्वारा भाव विनिमय करते थे। कभी-कभी खाद्य अभाव कारण नरमांस भी खा जाते थे। सभ्यता के उस ऊषा काल में जिसका भेद करने में दंतकथाएं भी असमर्थ हैं, उसका इतिहास तो नहीं है। उस समय में हमारे देश में एक चमत्कार - सभ्यता सम्पन्न, संस्कृति सम्पन्न राष्ट्र का आविर्भाव हुआ, जिन्होंने सारे विश्व में ज्ञान आलोक वितरण करने की स्पद्धा पोषण करते हुए, क्रियन्तो विश्वमानव के उद्घोष से विश्व में गगन को गुंजायमान किया था। हम उनके स्पद्धी उत्तरदायक हैं। कला, साहित्य, विज्ञान, दर्शन, गणित, खगोल विद्या, ज्योतिर्विद्या, चिकित्सा विद्या, युद्ध शास्त्र, अर्थ शास्त्र, कूट नीति समस्त विषयों में जो विश्व के गुरु पद पर आसीन था, उस राष्ट्र के हम स्पद्धी उत्तरदायक हैं। हमारे देश में कभी नए विचारों का विरोध नहीं किया गया। हमने बराबर नित्य सत्य के अनुसंधान को प्रेरित किया है।

माननीय सभापति: षडङ्गी जी, आप समाप्त कीजिए।

श्री प्रताप चंद्र षडङ्गी: महोदय, मैंने तो अभी शुरू ही किया है। मेरी बारी पहले थी, लेकिन दो-तीन टर्न हुई और अब मेरा नाम आया है।

Sir, what is science? Science is the present day's relation in which we live in. It is a product of a particular discipline of human mind known as 'modern science'. What is science? Science can be broadly divided into two different parts. First is pure science and then second is applied science. Pure science is nothing but a pursuit, a search after truth, a search after unbiased, unprejudiced, free

from all dogmas, after truth of nature. Applied science is an invention developed after the findings of the search after truth.

So, Chandrayaan-3 is also an invention developed after the findings of the truth of pure science.

Sir, now I can say that India had developed such truths ages ago, which modern science may take ages to rediscover. हमारे पूर्वजों ने जिस ज्ञान-विज्ञान का आविष्कार किया, उसमें यह विराट पुरुष का आविष्कार हुआ ।

चन्द्रमा मनसो जाताश्चक्षो सूर्यो अजायत ॥

The vastness and oneness of the universe is the unique discovery of our sages.

Sir, I would remember one incident. A great scientist, a Nobel laureate, an American physicist, Dr. John Hopkins, wrote in a book that Swami Vivekananda posed a challenge to modern science when he asked whether they can activate matter in the energy. The challenge was answered by Albert Einstein after three years of his passing away. While explaining the philosophy of our Samkhya Vedanta, Vivekananda told the American scientist that their science was incomplete since their investigation stopped on two points and they could not discover the unity of human experience, and that their knowledge and experience could not proceed further because they could not unify energy and mass. But he explained how our sages ages ago discovered this unity in cosmic intelligence from the lowest atom to the highest *brahmand*. Vivekananda explained how this entire process ran very scientifically. Referring to this incident, Dr. John Hopkins said that. This truth was discovered that energy and mass are two different

aspects of the single matter by Albert Einstein after three years of passing away of Swami Vivekananda.

सर, भारत में अगर शून्य का आविष्कार नहीं होता तो गणित की अवस्था कितनी असहाय होती! रसायन विद्या का क्या होता? चाहे भरत मुनि का नाट्यशास्त्र हो, संगीतशास्त्र हो, कणाद मुनि का अणुशास्त्र हो, चरक और सुश्रुत का चिकित्सा-शास्त्र हो, कौटिल्य का अर्थशास्त्र हो, ये सारे ज्ञान-विज्ञान का भंडार भारत में ही है। सम्पूर्ण भूमंडल में नरेन्द्र मोदी के कारण भारत का सम्मान बढ़ा है। कुछ लोग कहते हैं कि हम तो वैज्ञानिकों का सम्मान करते हैं, लेकिन मोदी जी को क्यों करें?

HON. CHAIRPERSON: Sarangi ji, it is very informative and knowledge, but time does not permit. That is a problem and concern. So, kindly conclude. We fully appreciate it, but at the same time, time does not permit it. There are 24 more speakers and the Minister also has to respond. Kindly cooperate with the Chair.

श्री प्रताप चंद्र षडङ्गी : सर, हमारे देश में विज्ञान का सम्मान ऐसा बढ़ा है कि हमारे वैज्ञानिकों ने मान्यवर मोदी जी की प्रेरणा से कोविड वैक्सीन का आविष्कार किया और कोविड वैक्सीन को मोदी जी ने सारे विश्व में वितरित किया। कुछ लोग कहते हैं कि इसे सारे विश्व में क्यों देते हो, हमारे देश में ही क्यों नहीं देते? यह युग दुनिया के एक्सपैन्शन का युग है।

Swami Vivekananda says unselfishness is life and selfishness is death; and helping others is life and not helping others is death; and strength is life and weakness is death. When India was weak, nobody respected her. When India became strong, America respected her and Australia respected her. The world is respecting India.

सर, चन्द्रयान-3 मिशन में हमारी सफलता हमारे विस्तार का, हमारी शक्ति का नमूना है। मान्यवर मोदी जी ने यह घोषणा की कि हमारी यह सफलता सारे विश्व के ज्ञान भंडार को समृद्ध करेगा, न कि यह हमारे देश की मोनोपॉली होगी।

Sir, trust the eternal *sanatana dharma*, जिसका आज कुछ लोग विरोध करते हैं। ये अपने को धर्म निरपेक्ष मानते हैं। ये बोलते हैं कि सनातन धर्म को उखाड़ कर फेंक दो, यह डेंगू, यह मलेरिया, यह एच.आई.वी. है। हम इसको सहन करते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा धर्म हमें सहनशीलता का वैशिष्ट्य देता है। अगर ये बाकी कुछ धर्मों के बारे में बोलेंगे तो फतवा जारी हो जाएगा। पर, हम ऐसा नहीं करते हैं।... (व्यवधान)

Swami Vivekananda had announced "I am proud to belong to a nation which has sheltered the persecuted and the refugees of all religions and all nations of the Earth." We take pity on them, we take pity on their knowledge who say that they are separate and they belong to Ravana's race. Ravana was an Aryan *santaan*, son of *Rishi* Vishrava. He was accepted as *purohit* by Ramachandra in *Setu Bandh Pratishtha*. They do not know the history of the nation. The whole nation is one.

भगवान व्यास देव ने वेदों का संकलन किया, अष्टादश महापुराण की रचना की और व्यास सूत्र, वेदांत सूत्र की रचना की, श्रीमद्भगवत् की रचना की, महाभारत जैसे विश्व के सबसे बड़े महाकाव्य की रचना की, जिनमें श्रीमद्भगवद्गीता को संयोजित किया। भगवान व्यास देव की माता धीवर कन्या, ट्राइबल लेडी थी और उनके पिता ब्राह्मण पराशर मुनि थे, इसलिए वेदों के ऊपर जितना ब्राह्मणों का अधिकार है, वनवासियों का भी उतना ही अधिकार है। अति प्राचीन काल से यह वंशागत सम्मिश्रण हुआ है।... (व्यवधान)

17.00 hrs

(Shrimati Rama Devi in the Chair)

महोदया, मैं यह कहना चाहता हूँ कि ये जातिगत विद्वेष फैला कर भारत को खण्डित करने की जो कोशिश कर रहे हैं, यह हमारे राष्ट्र के लिए घातक है। सर, ये अपने ज्ञान की दरिद्रता के कारण, अपने अत्याचार को दूसरों के ऊपर स्थापित करने की जो कोशिश कर रहे हैं, इसको हिंदुस्तान बर्दाश्त नहीं करेगा। सनातन धर्म अनादिकाल से चल रहा है, अनंतकाल तक चलेगा। इसको विध्वंस

कोई कर नहीं सकता है। हमारा धर्म ही सारे विश्व को स्वीकार करता है। सारे विश्व के अत्याचारी समुदाय का आश्रय स्थल सनातन धर्म है, यह भारत भूमि है। हमारा मार्ग भिन्न हो सकता है, लक्ष्य एक है। साधन भिन्न हो सकता है, साध्य एक है। भाषा भिन्न हो सकती है, भाव एक है। रचना भिन्न हो सकती है, साहित्य एक है। रीति भिन्न हो सकती है, संस्कृति एक है। यह हिंदू संस्कृति है, भारतीय संस्कृति है। पूरे विश्व का हमने एक समान आदर किया है। Trust the eternal Sanatana Dharma propounded by our sages and gurus guide us to realise, appreciate and acknowledge the harmonious blend of ancient wisdom and modern innovation. Chandrayaan-3's success stands as a testament to humanity's unceasing quest to reach the unreachable; uncover the unknown; bridging the realms of old and new, ancient and modern; and embracing the Moon's wisdom that has inspired generations, both past and present. सारा देश, सारा विश्व इसके लिए गर्वित होता है, लेकिन कुछ लोग इधर गर्व नहीं कर सकते हैं। सर, इनको कुछ बीमारी हुई है, जो भारत के गौरव में गर्व अनुभव नहीं करते हैं। They had conceived the idea of this new building of Parliament but they could not do it. They had conceived the idea of Women's Reservation Bill but they could not do it. They could not make delivery. They only conceived the idea. It passed away. We conceived, we furnished, and we delivered. So, that is the credit of *Maanyavar* Narendra Modi ji. With these words, I conclude.

ADV. DEAN KURIAKOSE (IDUKKI): Madam, thank you very much for giving me this opportunity.

I would like to start with this. We heard so many speeches here. I would like to point out how BJP's people are politicising this matter of Chandrayaan. We heard hon. Member, Shri Tejasvi Surya's speech just a while ago. He unnecessarily criticised Pandit Jawaharlal Nehru and the Congress Party. We do not want a certificate from them but history is there. Whatever Pandit Jawaharlal Nehru did, whatever Indira Gandhi ji did, whatever Rajiv Gandhi ji did, whatever Narasimha Rao ji did, whatever Manmohan Singh ji did, that is in the history. They are unnecessarily claiming that India became independent after 2014. That is the difference of opinion in this matter also.

I would like to point out this is a proud matter for the nation but they are mentioning other political issues also. Hon. Member, Shri Tejasvi Surya pointed out the issue of the great scientist, Shri Nambi Narayanan. He connected that matter with the Kerala Congress Party also. What was the issue? We condemn what had happened to that great scientist. That issue happened during that period. It was connected to a court case. That was the most unfortunate incident. What is the role of Congress Party in that issue? This is the problem of BJP. They are unnecessarily claiming all these things.

Madam, now, I am coming to the subject. First of all, I would like to congratulate the people of India, especially the hard-working scientists of ISRO, the great Indian universities that produced them, and also the people who came before them who laid strong foundations for this success. When Chandrayaan-2

suffered a setback, India was hurt only for a day. Deep inside we all knew that ISRO will bounce back. That is the great Indian spirit of coming back strong enough after a failure. The traditions of Indian science exploration were established along with the Constitution. The term 'scientific temper' was coined by Pandit Jawaharlal Nehru and it is part of the English vocabulary now.

It finds a mention in our esteemed Constitution too. This is an opportune moment to discuss what we are doing to promote 'scientific temper' across the country.

Madam, this success of Chandrayaan-3 is a moment of great pride for the people of Kerala as well. From the beginning, Kerala has played an important role in the story of India's success in space sector. The very first rocket launch in India happened at Thumba, Thiruvananthapuram. The hard work of scores of Malayali scientists as well as local residents was what made the launch so successful. From there, we never had to look back. Dr. APJ Abdul Kalam, the former President of India and the Rocket Man of India was almost like a Malayali. He spoke fluent Malayalam, and also built his career at Kerala where he created a large body of work in the service of the nation. Most of the great achievements of ISRO were made when it was headed by Malayalis. I would like to gratefully remember the stellar tenures of Dr. K. Kasturirangan, Shri G. Madhavan Nair and Dr. K. Radhakrishnan. The present ISRO Chairman, Dr. T. Somanath is a proud child of Kerala having completed his education from the State itself.

Madam, 26 companies from Kerala have contributed to the manufacturing of components used in Chandrayaan-3. Out of these, six are public sector

companies and 20 are in the private sector. A lot of manufacturing facilities are situated in Valiyamala amongst others. It is a matter of pride for us to be able to contribute in this sector.

The grand success of Chandrayaan-3 helps boost the positive image of science in the minds of the people. But as the news fades away, that achievement is pushed to the background. We need to have consistent engagement with the people to ensure that the message is always communicated to them. We need to build on the successes like this and make sure that the children are attracted towards science. Becoming a scientist is a dream for millions of Indians but hardly a handful of people know it from the childhood how to work towards that aim from childhood. This has to be addressed at the earliest.

Madam, science is everywhere but science education is not. If we are to look around, the marvels of this world are a gift of science. However, to truly appreciate it, the people of India should have a dedicated science museum close to them.

HON. CHAIRPERSON: Please, conclude.

ADV. DEAN KURIAKOSE: Madam, just give me two more minutes.

A science museum in the State Capital can serve so many people. My humble submission is that there should be a mini science museum and science centre in every Lok Sabha Constituency. Every school in the constituency should be tied with these science centres. They should host not only material that cultivates interest in science but also the little creations of students from that area.

This will arouse curiosity and pride in the scientific traditions of that area, and our nation.

The great investments made during UPA-1 and UPA-2 have created our scientific progress. Many of the scientists working on Chandrayaan-3 came from among those students who received good scholarships during that era ...

(Interruptions)

Madam, my humble submission is that we should use this opportunity to ramp up investments in science and learning science. This will ensure many more successes to India and we will be at the top of the world once again when it comes to learning. Thank you.

माननीय सभापति: मासगनी भरत जी, आप बोलिए ।

SHRI ARVIND SAWANT (MUMBAI SOUTH): Madam, would you call Members from this side and that side only? When will we get a chance? जब मैंने पूछा था तो आपने चार मिनट का समय दिया था । अब कितने बजे हैं? ... (व्यवधान)

माननीय सभापति : माननीय सदस्य, इसके बाद आपका नंबर है । अभी आप बैठिए ।

... (व्यवधान)

SHRI MARGANI BHARAT (RAJAHMUNDRY): Madam, ours is the fourth largest party. We have ample time. You may kindly give me 10 minutes to speak.

Madam, at the outset, I would like to thank you for permitting me to speak on this important discussion on the success of Chandrayaan-3.

Today, I stand here to acknowledge the remarkable achievements of Indian Space Research Organisation. As we look at the stars, everyone must be thrilled with immense pleasure and pride at the accomplishments of ISRO. These are testaments for our scientists' years of hard work, persistence and dedication.

Dr. Abdul Kalam said and dreamt that India should be a prominent player in space exploration. My friend said about Abdul Kalam ji that he was recommended by Mr. Chandrababu Naidu. But Abdul Kalam ji never mentioned about this. These people are proclaiming that they had appointed Mr. Abdul Kalam. It is so sad.

One more thing that I would like to mention is about ISRO's remarkable achievements in space exploration with the success of Chandrayaan-3 as well as the first solar exploration Aditya-L1. The ISRO journey that began in 1969 has been nothing short of extraordinary. ISRO provides services like weather forecasting, broadcasting, networking, navigation, and geographic information and so on.

Chandrayaan-3's soft-landing on the lunar surface solidifies the India's dominance in the space sector. In 2019, with the failure of Chandrayaan-2 and the Russian module also failing, a lot of pressure was there on our scientists. Finally, the Vikram Lander headed towards the surface of the moon with 6,000

kilometres speed, which is 10 times faster than a plane. It is unimaginable to land at that speed on the earth. But our scientists had really worked hard on the complicated manoeuvre to land on the surface of the moon.

When the countdown was going on, it was really nerve-racking. With each passing minute when it was coming down to the surface of the moon and finally when it landed on the moon, the Chairman of ISRO, Mr. Somanath announced: "India is on the moon". Every person in the country or rather all the people in the world waited for this particular spectacular moment, namely landing on the moon.

As we speak, India's Rover rolled down on the south pole of the moon, and perhaps no other country in the world has landed on the south pole. Today, our scientists have really achieved big as the whole world never expected that this kind of a situation will happen with the help of the Indian scientists. The Indian scientists have really made it happen.

I want to express here that my daughter, Jayani who is six years old told me that: "Nana, we are on the moon". My mother also asked: "When are we going to the moon?". All these things resonate that everybody has owned this achievement. All our countrymen have owned this. I wholeheartedly appreciate team ISRO and also the hon. Prime Minister for this great thing that has happened.

The total spending on Chandrayaan-3 is about \$75 million, which is lesser than that of a Boeing 777 and also even the bigger Hollywood films. I would also like to mention here that the Vikram Lander and also Pragyan, the Rover would be heading soon under the dynamic and able leadership of the hon. Prime

Minister. ... *(Interruptions)* Madam, I have asked for 10 minutes. We are having enough time.

I would like to quote from the words of Dr. Vikram Sarabhai, the visionary founder of ISRO who said: "Space is not just a destination, but a frontier of endless possibilities". Let us not forget the historic moment when the Prime Minister announced that the landing site of Chandrayaan-3 would be named as 'Shiv Shakti'. The name 'Shiv Shakti' signifies our deep-rooted cultural reverence. The recent launch of Aditya-L1 also is truly remarkable.

I am coming to one of my good friends from TDP. The Chair had asked to speak about Chandrayaan, but he is thinking about his leader Chandrababu Naidu, and I wanted to mention here that Chandrababu Naidu was arrested due to a scam of Rs. 3,300 crore. ... *(Interruptions)*

SHRI RAM MOHAN NAIDU KINJARAPU: Madam, Point of Order. ... *(Interruptions)*

SHRI MARGANI BHARAT: Madam, Siemens has confessed. ... *(Interruptions)*

When the CID intervened, Siemens said that they have nothing to do with the MoU with the Skill Development Department. Now, Mr. Naidu has been arrested under section 164 of CrPC and relevant sections of criminal conspiracy, cheating, dishonesty, and forgery. In addition to that, CID has invoked the Prevention of Corruption Act. All these things have happened. More skeletons will

tumble out from Chandrababu Naidu's closet. TDP is the Party of ...* and TDP is committing the ...* ... (*Interruptions*)

माननीय सभापति : आप रूल बताइए। कौन सा रूल है?

... (व्यवधान)

SHRI RAM MOHAN NAIDU KINJARAPU: Madam, Rule 352 says: A Member while speaking shall not refer to any matter of fact on which a judicial decision is pending. He is talking about a case which is pending in the court. According to this Rule, you have to expunge everything that he has spoken. This is a case pending in the court. ... (*Interruptions*)

* Expunged as ordered by the Chair.

श्री अरविंद सावंत (मुम्बई दक्षिण): सभापति महोदय, मैं सबसे पहले अपनी वेदना प्रकट करता हूँ। जिस ढंग से पार्लियामेंट चल रहा है, उसे बायस नहीं होना चाहिए। That should be taken into consideration first. एक सेन्टनेंस में समझ जाना चाहिए।

First of all, we heartily congratulate Shri S. Somanath, his entire team of ISRO, the scientists and all those who supported the functioning or launching of the satellite. There was BSNL also. I heartily congratulate them on behalf of my Party, my leader, Uddhav ji Thackeray, and millions and millions of his followers.

Everyone knows Dr. Vikram Sarabhai who thought of space research and Indian Committee on Space Research was formed during the regime of Pandit Nehru. मुझे इतना ही बताना है कि इतना सब होने के बाद भी आज कहा जाता है कि 75 साल में क्या हुआ? यह रोज का डायलाग हो गया है। अब आज पता चला होगा कि 75 साल में क्या हुआ, 60 साल पूर्व इसरो को बनाया गया। इसरो बनने के बाद आज हमने जो मंजिल पायी है, उसकी सराहना 140 करोड़ जनता तो कर ही रही है, पूरी दुनिया भी कर रही है। उसका हमें प्राइड है। It is really a proud moment for everyone of us in the country. इतनी छोटी बात कैसी होती है, जब से संशोधन चल रहा है, चेन्नई के एक साइंटिस्ट हैं, Shri Shanmuga Subramanian, who is a Chennai based techie, skilled in image analysis, identified the location for Lander debris and later, NASA confirmed it. चन्द्रमा पर जो डेबरीज गिरा था, उसका पता लगाया था जबकि यह व्यक्ति इसरो में काम नहीं करता है। यह लोगों की रगों में इतना गया कि अब लोग भी पार्टिसिपेट करने लगे हैं। उसकी जितनी सराहना की जाए, उतनी कम होगी।

आजकल कुछ लोगों को आदित्य नाम से डर लगता है। आदित्य एल-1 जो इमेजेज बनाता है, Visible Emission Line Coronagraph (VELC) and Solar Ultraviolet Imaging Telescope (SUIT), developed by Inter-University Centre for Astronomy and Astrophysics which is in Pune. Everybody has contributed to this.

मैं जब विक्रम सारा भाई जी की बात कर रहा हूँ, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस और कोलाबा ऑब्जर्वेटरी की बात कर रहा हूँ, जो मेरी कस्टीट्यूंसी में है। आज मुझे अब्दुल कलाम जी की याद आती है। जब राकेश शर्मा जी स्पेस में गए और उनकी फोन पर बात हुई तो राकेश शर्मा जी से स्वर्गीय इंदिरा गांधी जी ने पूछा कि हमारा हिन्दुस्तान कैसा दिखता है। उन्होंने कहा, सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा, सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा। आज दुनिया में सबको पता चला, हिन्दुस्तान छोटा नहीं है बहुत बड़ा हो गया है।

हमारा देश चांद पर गया है और अब सूरज का अनुसंधान करने के लिए आदित्य ऑर्बिट में खड़ा है। आज सुबह जो बातें हुईं, मैं उसे थोड़ा सा स्पर्श करूंगा, ज्यादा नहीं बोलूंगा। धर्म और विज्ञान, दोनों के एक-दूसरे से हाथ जुड़े हुए हैं। धर्म किसे कहें, मन में यह बात आती है। हम सावरकर जी की बात करते हैं, उन्होंने खास कर धर्म के बारे में व्याख्या की है कि धर्म क्या है? हिंदू नाम कैसे हुआ? सिंधू से हिंदू कैसे हुआ? सारंगी जी ने जो बताया, वह सही है, यह हजारों वर्षों से है। संत तुकाराम जी का एक वाक्य है - अणुरेणियां थोकडा तुका आकाशाएवढा। *Anu means an atom.* So, all those things have been there in our epics, in our granths, in Abhangas.

आपने एक बड़ी बात कही, इसके लिए मैं खास तौर से आपको धन्यवाद देता हूँ। हम बड़े दिल वाले लोग हैं, कोई छोटा कहे तो उस पर क्या ध्यान देना। हमें ज़हर नहीं फैलाना चाहिए। हम ज़हर फैलाएं, यह बात मुझे अच्छी नहीं लगती। संस्कृति, परंपरा और श्रद्धा, श्रद्धा क्या है? हर एक की श्रद्धा अलग-अलग होती है। हिंदू मंदिर में जाते हैं तो भी हिंदू हैं, नहीं जाते तो भी हिंदू हैं, पूजा करते हैं तो भी हिंदू हैं, भगवान को नहीं मानते तो भी हिंदू ही हैं। यही तो बड़प्पन है कि हम परिवर्तनीय हैं। हमारे प्रबोधनकार ठाकरे जी, बाला साहेब ठाकरे जी के पिता थे। शाहू, फूले, अम्बेडकर जी, सारे परिवर्तनीय थे इसलिए धर्म में जो परिवर्तन आया वह स्वागतपूर्ण है। मैंने सावरकर जी का ज़रा सा जिक्र किया, मैं इस पर ज्यादा बात नहीं करना चाहता। इसे लेकर हम राजनीति से खेल रहे हैं, यह मुझे अच्छा नहीं लग रहा है।

आज हम चन्द्रमा की बात कर रहे हैं। मैं एक बात और कहना चाहता हूँ, उन्होंने सुबह एक बात कही कि वहाँ भूस्खलन हुआ और उसमें जो लोग बचे, उन लोगों ने बंदी विशाल की जय कहा। अच्छी बात है, उनकी भगवान पर श्रद्धा है, लेकिन जो मर गए, उनका क्या करें? वे किस पर श्रद्धा जताएं? किसे बुरा कहें? उन्हें हमारा धर्म समझने की कोशिश करने की आवश्यकता है।

टेम्परामेंट एंड साइंटिस्ट वाली बात ज्यादा स्वागत योग्य है, हमने मान लिया। मैं चाहता हूँ कि जिस ढंग से हम चन्द्रमा पर गए हैं उसी तरह से सूरज का अनुसंधान कर रहे हैं। मुझे नहीं लगता कि इसरो इस काम में ज्यादा देर करेगा। एक दिन आएगा जब चन्द्रमा पर हिंदुस्तानी उतरेगा और तिरंगा रोवर नहीं फैलाएगा, हिंदुस्तानी फैलाएगा। सावरकर जी को हिंदुस्तानीवाद बड़ा अच्छा लगता था।

आपने मुझे बोलने का समय दिया, इसके लिए आपका बहुत धन्यवाद।

SHRIMATI SANGEETA KUMARI SINGH DEO (BOLANGIR): Madam, at the very outset, I would like to thank you for giving me this opportunity in this magnificent new Parliament building.

Today, I stand before you to celebrate our country's historic achievement in the field of space exploration and the success of Chandrayaan-3's soft-landing in the yet unexplored South Pole terrain of the moon, thereby making us the first country in the world to do so, and the fourth country in the world to reach the moon. Close on the heels of Chandrayaan-3's success was the historic launch of Aditya-L1. Both these Missions have showcased our indigenous technological prowess, and made every citizen of the country proud indeed. However, in the spirit of '*Vasudhaiva Kutumbakam*', we cannot take this glory alone, and we have to share it with the rest of the world. This achievement is a testament to our hon. Prime Minister's dedication, perseverance, ingenuity, commitment to advancing scientific knowledge and space technology, his exemplary proclivity for taking bold decisions, and last but not the least, to the diligence and unwavering spirit of the scientists and engineers of ISRO.

Indian space research and its eco-system have been in an upbeat mood since the hon. Prime Minister announced space sector reforms with enhanced participation of private players in the Indian space programme and also approved the Indian Space Policy in 2022.

The success of Chandrayaan-3 has been the logical extension of a series of key missions undertaken by ISRO in the last decade. They will be followed by many more ambitious projects like Gaganyaan in future under the visionary

leadership of the hon. Prime Minister. In 2017, PSLV-C37 created a world record by successfully placing 104 satellites in orbit in a single launch.

The New Space India Ltd (NSIL), launched in 2019, has presently signed 19 Technology Transfer Agreements and successfully transferred eight ISRO developed technologies to Indian Industry. In 2022, Vikram-S: Prarambh Mission, a suborbital launch vehicle, was launched successfully and became the first privately built rocket launched in India.

ISRO in the last nine years has launched 52 launch vehicles and 57 spacecraft missions. Chandrayaan-3's success has established our country as part of an exclusive club alongside the US, Russia and China, and has enhanced our global reputation as a serious player in the field of space exploration and R&D. It will also have a domino effect leading to international collaborations, joint global space initiatives, knowledge exchange and fostering closer ties with other nations leading to further advancements in space technology.

Currently, India contributes around 2 to 3 per cent to the global space economy which is expected to increase to 8 to 10 per cent in the next decade. Our astute hon. Prime Minister recognized the benefits of space technology and has expanded its usage to 60 line Ministries for improved governance. Even during the COVID-19 outbreak, navigation and geospatial technologies were used efficiently to coordinate relief deployment.

India has joined five nations capable of adopting navigation satellite system. The Indian Regional Navigation Satellite System launched by hon. Prime Minister in 2015 has helped save the lives of fishermen amid extreme weather

conditions. India already has more than 140 start-ups, and the successful Lunar Mission will provide a huge boost to them. It will establish India's position as a cost-effective satellite launcher benefitting the aerospace and defence sectors. The Chandrayaan mission will inspire and captivate the imagination of the youth and encourage them to pursue careers in science, technology, engineering and mathematics. Also, several rural space labs are being set up in schools across the country to foster interest in young minds *vis-à-vis* space studies.

It will open up a wave of opportunities for several sectors which will boost our economic growth, help us achieve our objective of Atmanirbhar Bharat and bring us closer to achieving hon. Prime Minister's vision of becoming the third largest economy in the world.

We as a civilization have always been curious about stars and planets. The puranic literature tells us that in ancient India we had the knowledge of astrophysics, a sophisticated understanding of astronomy which was also called *Nakshatra Vidya*, the science of the stars. We were able to accurately predict eclipses and the motion of the planets, and used this knowledge in Vedic Astrology. From Aryabhata to Vikram Sarabhai, Dr. Homi Bhabha or Nambi Narayanan, we have a galaxy of legends in the field of space studies to be proud of.

Now, that our hon. Prime Minister has firmly established himself on the world stage as the leader of leaders, it is no wonder that he has shifted his sight to the stars. And let me assure you that he will conquer the field there too.

My very best wishes to the extraordinarily gifted, diligent, and motivated scientists and engineers. The hon. Prime Minister has created a conducive and encouraging environment for our space research programme to reach new heights. He said that the sky is definitely not the limit for the Indian Space sector. I wish them the very best.

Thank you, Madam Chairperson.

SHRI N. K. PREMACHANDRAN (KOLLAM): Madam Chairperson, thank you very much for affording me this opportunity to take part in the discussion.

Madam Chairperson, it is really a proud and prestigious moment to all Indians. On 23rd of August, 2023, India's moon mission Chandrayaan-3 created history by making soft landing on the moon's South Pole. We salute the Indian scientific community, in particular ISRO, for having achieved this historic success in space technology.

Madam Chairperson, thirteen scientists including the Chairman of ISRO are the former students of TKM College of Engineering, which is in my constituency. Thirteen scientists, including the Chairman, Mr. S. Somanath -- who were part of the Mission -- were from TKM College of Engineering, a well-reputed and prestigious college in the State of Kerala, which lies in my constituency. That was established by a learned person, Shri Thangal Kunju Musaliar in the year 1955.

Madam Chairperson, when Chandrayaan-3 successfully landed on the moon, 1.4 billion people of India was in full joy for making history. Through this landmark achievement, India's space agency, ISRO, became the first space mission in the world to land near the South Pole of the moon. The remarkable achievement of ISRO not only underscores the powers of Indian scientists but also highlights the extraordinary journey of scientific development that India embarked upon since the establishment of ISRO in the year 1962. Further, it showcased India's technological capabilities and its visionary approach towards leveraging science and technology to address various other areas of development. Our moon mission is always having a human-centric approach.

That is why, immediately after the soft landing, hon. Prime Minister said that this success belongs to all humanity; not to any individual, or any particular community, or any country.

Madam Chairperson, the roots of modern India's scientific journey are from the days of the great visionary leader Pandit Jawaharlal Nehru. It can be traced back to the establishment of Indian National Committee for Space Research (INCOSPAR) in 1962. INCOSPAR was subsequently renamed as ISRO in the year 1969. ISRO steadily evolved from its modest beginning achieving a series of milestones that illuminated the nature's scientific landscape. On October 22, 2008, India's first lunar probe was launched by ISRO. It carried eleven scientific instruments to study the moon's surface, mineral composition, and the presence of water molecules. The result was the discovery of water molecules on the lunar surface indicating the possibility of water ice in polar regions. Further, it identified the presence of magnesium, aluminium, silicon, iron and titanium on moon. I am not going into the details with regard to Chandrayaan-2.

Madam Chairperson, now I come to Chandrayaan-3 which is a testament to ISRO's dedication to exploring new frontiers. The lunar lander Vikram consists of three parts -- lander, rover and propulsion module -- which provided the spacecraft to traverse 3,84,400 kilometres wide gap between the moon and earth, and thereby India has become the fourth nation to achieve this after the US, Russia and China.

Chandrayaan-3 Mission cemented India's global status as a superpower in the space. ISRO's accomplishment demonstrates how investment in scientific

research can yield both knowledge and technological advancements with far-reaching impacts. What are the impacts of the mission? There are four main impacts: first is the healthcare; second is the climate change mitigation; third is the security; and fourth is the national wellbeing.

Madam, the fusion of science and technology has catalysed the transformative revolution of the healthcare like telemedicine and bringing the service of the expert healthcare professionals even to the remotest parts of our country.

In the area of climate change, India's strategic alignment of science and technology assumes paramount importance and that too, in the case of Sustainable Development adopted by the UN Resolution in the year 2015, and we have to honour the commitments made in the UN as far as the Sustainable Developments are concerned.

Madam, national security demands a multifaceted approach rooted in innovation. So, the science and technology is intricately linked to its educational ecosystem and its ability to nurture a culture of curiosity, learning and innovation. India's educational institutions and research centres play a pivotal role in cultivating a skilled workforce and fostering a spirit of inquiry. Initiatives that promote STEM, that is science, technology, engineering and mathematics, have the potential to propel India further on its scientific journey for which I urge maximum budget allocation has to be provided in the field of research and innovation. The present Budget allocation is not sufficient to meet the purpose.

I would like to give one more suggestion. As far as the private sector is concerned, what is the amount that is being spent for research and innovation and development? It is a negligible amount that is being spent by the private sector. Everything is being done in the public sector.

Definitely, once again I would like to take this opportunity to congratulate the scientific community, in particular, the ISRO and also the college from where most of the engineering faculty have come. Most of the members have already congratulated. Most of them have come from aided colleges or from the Government colleges.

Once again, I would like to congratulate and salute all the scientific community and in particular, the ISRO.

Thank you very much, Madam.

SHRI THOMAS CHAZHIKADAN (KOTTAYAM): Thank you Madam for giving me an opportunity to speak in the discussion on the success of Chandrayaan-3 and other achievements of our nation in the space sector.

As a representative of Kottayam Parliamentary Constituency and a Member of Kerala Congress, I congratulate the scientists of Indian Space Research Organisation and other crew members who contributed for the success of the Chandrayaan-3 Mission. The whole country is proud of them. On a lighter vein, I must mention that most of the scientists including the ISRO Chairman Dr. S. Somanath are from my State Kerala.

The VSSC, Thiruvananthapuram director Dr. Unnikrishnan Nair who was also a part of this Mission belongs to my Constituency. He hails from a small village called Kothanalloor in my Constituency. He also had his studies in Malayalam medium schools and also had the local college where he has studied in the primary level. Most of the alumni are from the College of Engineering, Trivandrum, TKM College of Engineering, Kollam; and MA College of Engineering, Kothamangalam. Fifty-five alumni from MA college of Kothamangalam were part of this Mission. Madam, in that way, Kerala has a glorious and prestigious position in the success of this historic mission.

Having said that, I want to raise a few other issues which are affecting the scientist community in Indian at large. First, apart from ISRO, there are so many other institutions which are contributing to scientific research in India. If you want to grow in science and development and in cutting edge technology. We have to

make sure that the institutes other than the premier agencies like ISRO also get enough funding and other support.

However, the data tells us a completely different story. The expenditure on research and development as a percentage of GDP was 0.71 in 2013-14 which has now got reduced to 0.64 in 2020-21.

Importantly, in most of the countries who are leaders in the fielding of technology and scientific advancement, the expenditure on Research and Development as a percentage of GDP is more than three per cent.

Secondly, in 2022, GST rates on scientific and technical instruments to research institutes was raised from five per cent to 18 per cent. The overall impact of this decision is a reduction in the research funding by the Government as the scientists now have to pay more taxes for their laboratory instruments. I urge upon the Government that the scientific and technical instruments supplied to research institutes should be exempted from GST.

Thirdly, recently the Ministry of Education and Department of Science and Technology have issued a GO to increase the fellowship amounts of Junior and Senior Research Fellowships. After four years of struggle of the researcher community, the increase in amount is merely around 20 per cent which is nothing in comparison to the inflation during the same period. Even a parliamentary panel has recommended 60 per cent revision in the fellowships and a minimum of Rs. 50,000 but now the Government has come up with only Rs. 37,000. So, the Government has to understand that the scientists involved in research are not to

be treated as students. Most of them are in the age bracket of 25 to 35 years and they have the responsibility of their families.

So, I would request the Government to revise the fellowship from Rs. 37,000 to Rs. 50,000 as recommended by the Parliamentary Committee Panel.

While we celebrate the success of Chandrayaan 3 and other successful missions of ISRO, we must not forget that in order to become at par with developed economies in terms of scientific and technological advancements, the Government has to provide enough funding and support to the community of scientists.

Madam, I thank you.

SHRI RAVI SHANKAR PRASAD (PATNA SAHIB): Madam, this morning, my good friend, hon. Shashi Tharoor, hon. Premachandran and other friends from Kerala said that the scientists belong to their constituency and so on. It is good. But they are proud Indians and all of us are proud of them.

The second thing which they need to acknowledge is, after doing the successful mission of Chandrayaan, they went to Tirupati Temple and other temples also to offer their prayers and greetings. In fairness, they ought to have said this also.

SHRI BHARTRUHARI MAHTAB (CUTTACK): Madam, exploration of space has been one of the most challenging and fascinating ventures of human kind and continues to capture the imagination of generations. Over the ages, several space-faring nations have undertaken numerous missions to explore the solar system, their natural moons, various minor planets, asteroids, comets and even inter-planetary voyages.

About 150 years ago, in the 19th century, a knowledgeable astronomer called Shri Samanta Chandrasekhar could map and tell us accurately the distance between the earth and that specific planet.

This was confirmed by the Astrophysicist of Calcutta University. He wrote Siddhanta Darpana in Sanskrit and he belongs to my constituency, Khandapada in Odisha. The present planetarium is named after him. So, this is an indigenous thing. हमारे भारत की विद्या के कारण ये सारी चीजें उनके पास थीं और वे भी उसको प्रमाणित करते थे। आज जिस विषय पर हम दिनभर चर्चा कर रहे हैं।

This House in one voice is congratulating Indian scientists for their endeavour. What we have achieved on 23rd August, 2023 is a very rare feat which was done by moon warriors. I will give just two instances.

Shri Palanivel Veeramuthuvel, 48 years old, studied in Villupuram railway school before completing engineering degree in Chennai college and M.Tech from an institute in Tiruchirappalli. He shifted to ISRO in 2014. He has been working there as Project Director of Chandrayaan-3 for the past four years, carrying enormous weight of meeting the nation's space expectation on his slender shoulders. This House salutes him and hundreds of other Indian

scientists and engineers, who have worked tirelessly to make the Moon Mission a success.

Just four years ago, on 6th September, 2019, he and hundreds of other scientists had to watch the Chandrayaan-2 lander spinning out of control 800 metres above the lunar surface and losing all its telemetry contact with the Mission control and crash on the moon's surface. It would fall on the then ISRO Chairman, Dr. K. Sivan to break the gloomy news to the Prime Minister, Shri Narendra Modi, who was in the visitors' gallery to watch the landing, and he consoled Dr. Sivan on his shoulders.

Dr. S. Somanath, the then Director of Vikram Sarabhai Space Centre, Thiruvananthapuram was also there. I had the good fortune of interacting with both Dr. Sivan, who was the then Chairman of ISRO and Dr. S. Somanath, who was the then Director of Vikram Sarabhai Space Centre, Thiruvananthapuram. I was the Member of a parliamentary Committee. We visited the Institute and we could understand the difficulties in which they have been doing their work. Four years later, this tall, fit and unflappable Dr. Somanath would once again be found sitting in front of MOX-2 as Chairman of ISRO as the countdown began.

Failure is the pillar of success. Our scientists learnt from failure. The Prime Minister, Shri Narendra Modi encouraged them. That is why, success has been achieved after four years. The leadership quality of our Prime Minister definitely enthused our scientists to a very great extent. Otherwise, it would not have been successful.

They took no chances. ISRO Chairman, Dr. Somanath says: "Failure gives you much more understanding than success." Having reached the Moon, ISRO is now trying to find its place under the Sun. Now, Aditya-L1 spacecraft is in its long journey. In all these missions, ISRO is focussing on doing what it does best, that is, technological innovation in a cost-effective manner.

When we compare the expenditure that is being made by European Union or by NASA of USA or even by China, our investment, our expenditure is comparatively much, much less. The process of synergy is happening. In just three years, we have more than 150 private startups in the space sector.

It is not only the Government which is investing but the private investment is also very important. If Indian space sector has to expand rapidly, it cannot depend on Government funding only. India is emerging in the global order and in that respect, I believe that today, when the Parliament is deliberating on this great mission of our Indian scientists, we should not forget that we are also having adequate support and interaction with the NASA scientists and also of the scientists of other scientific societies. The world looks up to Chandrayaan-3 with great anticipation, expectations and hope, and at the same time, waits for it to uncover many more new features and mysteries of the moon and the universe.

Thank you, Madam.

SHRI SAUMITRA KHAN (BISHNUPUR): Thank you, Madam, for giving me this opportunity to speak on this important subject relating to our Chandrayaan Mission and ISRO.

मैं पहले प्रधान मंत्री जी को धन्यवाद दूंगा। यह सही समय है। मैं इसके साथ इसरो के सभी वैज्ञानिकों को धन्यवाद देता हूँ। हमारे बंगाल में जन्म के बाद की एक कहावत है - आए चांद मामा, आए चांद मामा, टीप दिए जा। मैंने बचपन में जो सुना था, आज हमारे भारत में चंद्रयान -3 सफल हो गया है। हमारी जो इच्छा थी, सपना था, आज वह पूरा हो गया है। मैं बहुत सारी बातें कहना चाहता हूँ, लेकिन हमारे पास समय नहीं है। हमारे प्रधान मंत्री जी की सबसे बड़ी बात है कि आगे बढ़ो, कुछ करो और इसी कारण आज चंद्रयान-3 सफल हुआ है। वर्ष 2013-14 में जितने एक्सपेंसेज होते थे, उससे 142 प्रतिशत ज्यादा आज इसरो का बजट है। आज इसका बजट लगभग 12 हजार करोड़ रुपए का है। हमारी यही सफलता है। पहले इस पर 5,612 करोड़ रुपए खर्च होता था, वह 10 सालों में बढ़ कर 12,543 करोड़ रुपए हो गया है। हमारी एक बहन, अपरूपा जी कह रही थी कि यह कम कर दिया, लेकिन वह बात नहीं है। मोदी जी के समय में सबका विरोध है। इतने अच्छे संसद भवन में हम लोग बैठे हैं। जब सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट चल रहा था तो वे कह रहे थे कि यह नहीं चलेगा, यह नहीं करना चाहिए। जब वे आज यहां बैठे हैं, तो कह रहे हैं कि यह अच्छा है। जब हमारा चंद्रयान-2 असफल हो गया, तो उस समय विरोधी पक्ष कह रहे थे कि कुछ नहीं होने वाला है। पश्चिम बंगाल का एक चीफ मिनिस्टर भी खड़े होने के लिए तैयार थे कि जब उधर वह फेल्योर हो जाएगा, तो वे बोलेंगे कि प्रधान मंत्री जी से कुछ नहीं होगा, लेकिन पूरा भारत जो सफलता चाहता था, आज वह सफलता हम लोगों को मिली है।

डिजिटल इंडिया के बारे में लोगों ने कहा कि पेटीएम एवं डिजिटल पेमेंट कैसे होगा? मैंने बहुत सीनियर लीडर्स से सुना है कि यह कैसे होगा? एक सब्जी वाला डिजिटल पेमेंट कैसे लेगा? आज सब्जी वाले डिजिटल पेमेंट ले रहे हैं। यह आधुनिक भारत है। जो हमारे स्वामी जी कहते थे कि आधुनिक भारत, श्रेष्ठ भारत। यह श्रेष्ठ समय है। आज प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में 23 अगस्त को चांद

के साउथ पोल में इतिहास रचा गया है। आज भारत, विश्व गुरु मोदी जी के नेतृत्व में G-20 में सफल हुआ है। पहले वे कह रहे थे कि यह कैसे करेंगे, 125 देशों के प्रतिनिधि कहां पर बैठेंगे? आज पूरे देश के नरेन्द्र मोदी जी आगे जा रहे हैं और सभी राष्ट्राध्यक्ष पीछे जा रहे हैं। सभी कह रहे हैं कि मोदी जी आप आगे बढ़ें, हम आपके साथ हैं। पहले अमेरिका के नासा को देख कर लोग कहते थे कि अरे! नासा सब कुछ कर लेगा, हम लोग कुछ कर पाएंगे।

आज माननीय मंत्री जितेन्द्र सिंह जी यहां बैठे हुए हैं। वहां जाकर इतना अच्छा उद्घाटन किया है और सबसे बड़ी बात है कि हमें सक्सेस को देखना चाहिए। सक्सेस देखने की इच्छा होनी चाहिए और जो प्रधान मंत्री जी की है। उस स्टेडियम में इसरो के साथ 140 करोड़ लोगों की नजरें थीं। उसके साथ इसरो को फायदा भी होगा और इसरो के साइंटिस्ट्स भी आगे बढ़ेंगे। पश्चिम बंगाल में बसु विज्ञान मंदिर है और जितेन्द्र सिंह जी यहां बैठे हुए हैं, हम उसके लिए मांग करेंगे। हमारे पश्चिम बंगाल से बहुत सारे साइंटिस्ट्स आज इसरो में काम कर रहे हैं, जिससे हमारे बंगालियों की इज्जत बढ़ रही है। हम लोग बंगाल से आते हैं। बंगाल के जितने सारे इंस्टीट्यूशंस हैं, जैसे जादवपुर में है, आईआईटी, खड़कपुर है, एनआईटी, दुर्गापुर है और पटाशपुर से भी एक साइंटिस्ट वहां अच्छा काम कर रहा है। मैं यही बोलूंगा कि आज एक सिनेमा हॉल बनता है, तो 500-600 करोड़ रुपये या एक हजार करोड़ रुपये खर्च होते हैं। आज मैं इसरो के सारे साइंटिस्ट्स को सलाम करता हूं। मैं उनको धन्यवाद देना चाहता हूं कि उसमें सिर्फ 600 करोड़ रुपये खर्च हुए। मैं उनको प्रणाम करता हूं। वे इतने आगे बढ़े हैं और भी आगे बढ़ेंगे। सबसे बड़ी बात है कि गीता और महाभारत में सब कुछ है। *Ja achey Bharatey, ta achey Mohabharotey*. आज हमारी गीता पूरे विश्व को दिखा रही है कि कैसे हम लोग उसको देखकर आगे बढ़े हैं। हम लोग भारत को भारतमाता बोलते हैं। हम लोग आगे बढ़ेंगे, प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में इसरो आगे बढ़ेगा और पूरा देश आगे बढ़ेगा। हम लोगों ने मेक इन इंडिया किया, भारत आत्मनिर्भर हुआ। हम लोग आगे बढ़ेंगे, आगे रहेंगे तथा मोदी जी के नेतृत्व में और भी आगे बढ़ेंगे। धन्यवाद।

18.00 hrs

SHRI P. RAVINDHRANATH (THENI): Thank you, hon. Chairperson, Madam, at this historical era when our nation has completed the 75th year of its Independence, our nation has made several successful landings under our visionary leader, Narendra Modi ji. Madam, we have successfully landed in the magnificent new Parliament building, which will be privy to several landmark decisions in its journey. The successful Presidency of the G20 under our hon. Prime Minister ensured the successful landing of leaders of several most powerful world nations in our country. The G20 New Delhi summit showcased our nation's collective power and showcased our diversity and prosperity to the rest of the world.

History was set when the Lander module of Chandrayaan-3 set foot on the moon. India became the first nation in the world to reach the unexplored south pole of the moon. It does not matter who lands second. The whole world congratulated our hon. Prime Minister when Bharat earned a place in the record books. Our hon. Prime Minister Narendra Modi ji leaves a legacy not only to our nation but to the many world nations that aspire to become space powers.

I wish to take the opportunity to congratulate the ISRO Chairperson S Somanath, Project Director P Veeramuthuvel, Deputy Director Kalpana Kalahasti, VSSC Director S Unnikrishnan Nair, M Sankaran, M Srikanth former Chairman of ISRO K Sivan, and the entire team of heroes behind this historic mission.

Apart from contributing to the expert project management team for the Chandrayaan 3 mission, I am delighted to say that the district of Namakkal, Tamil

Nadu, has contributed to the mission with the supply of soil for testing the Chandrayaan Mission capability.

I am equally proud that Tami Nadu is home to many top scientists of the world, notably Nobel laureate CV Raman, astrophysicist V Radhakrishnan, S Chandrasekhar who was later called a mathematician, the greatest mathematician Srinivasa Ramanujam, and notably our former President, Bharat Ratna, APJ Abdul Kalam who was also the Project Director of India's first indigenous Satellite Launch Vehicle (SLV-III) rocket.

Finally, I conclude by saying that the vision of our hon. Prime Minister shall help in expanding our space sector further by contributing to the overall progress of the country. I hope that our country will leave an even more prominent mark in the history of space travel and India's human space missions in the coming years.

After achieving its target, at present, the Chandrayaan's lander is in sleeping mode. I wish this week any time it would come back to the wake-up mode.

With this, I conclude. Thank you.

माननीय सभापति : माननीय सदस्यगण, अभी मेरे पास वक्ताओं की लम्बी सूची है। यदि सभा की सहमति हो, तो सभा की कार्यवाही 8 बजे तक बढ़ा दी जाए?

अनेक माननीय सदस्य : जी हाँ।

माननीय सभापति : श्री बदरुद्दीन अजमल जी।

श्री एम. बदरुद्दीन अजमल (धुबरी) : मैडम, मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूँ कि आपने मुझे इस बिल पर बोलने का मौका दिया।

मैं सबसे पहले इस मुल्क के वज़ीरे आजम श्री नरेन्द्रभाई मोदी जी को मुबारकबाद देना चाहता हूँ। इसरो के तमाम साइंटिस्ट्स को और छोटे-छोटे वर्क्स को, जिन्होंने इस मामले में इतने वर्षों से मेहनत की और रिसर्च करके हमें इस मौके तक पहुँचाया कि हम लोग चन्द्रयान-3 तक पहुँच पाए। यह हमारे मुल्क के लिए बहुत सौभाग्य की बात है। इसे नेहरू जी ने शुरू किया, श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने इसे आगे बढ़ाया, श्री राजीव गांधी जी ने आगे बढ़ाया और हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इसे पूरा किया। मैं दिल की गहराई से उनको मुबारकबाद देना चाहता हूँ। अगर उन जैसे प्रधानमंत्री नहीं होते, तो आज यहाँ तक पहुँचने का मौका हमारे साइंटिस्ट्स को नहीं मिलता।

मैडम, मैं असम से आता हूँ और वहाँ के हमारे दो बच्चे इसरो में हैं। एक, नाज़नीन यास्मीन है और दूसरा डॉ. बहारूल इस्लाम है। ये दोनों चन्द्रयान-3 के मिशन में काम करते हैं। इसलिए मैं इन दोनों को भी मुबारकबाद देता हूँ। साउथ इंडिया के तमाम साइंटिस्ट्स को जो इसरो से जुड़े हुए हैं, मैं उन सभी साइंटिस्ट्स को मुबारकबाद देता हूँ। मैं उनसे कहना चाहता हूँ आप और आगे बढ़ो, और आगे बढ़ो, मुल्क को ऊँचाई पर ले जाओ। हम आपको सलाम करते हैं।

मैडम, इसी के साथ मैं कहना चाहूँगा कि जब हम चाँद पर जा रहे हैं, तो हमें नीचे भी देखने की जरूरत है। हम जिस जमीन से जाते हैं, आज हमारा मुल्क पूरी दुनिया में एक बहुत बड़े नम्बर पर पहुँच चुका है, लेकिन आज भी हमारे मुल्क में लाखों लोग गरीब हैं, वे भूखे सोते हैं। बच्चों के पढ़ने के लिए स्कूल्स नहीं हैं, लाखों बच्चे ड्रॉप-आउट हो जाते हैं, उनके पास स्कूल्स नहीं हैं। यदि स्कूल हैं, तो उनके पास पढ़ने के लिए पैसे नहीं हैं। इसलिए इस तरफ भी ध्यान देने की जरूरत है। उन बच्चों, उन माताओं के लिए हम कैसे रोटी पहुँचाएं, कैसे उन भूखों को खाना खिलाएं, इस ओर सोचना चाहिए। हम चाँद पर जरूर जाएं।

मैडम, मैं असम से आता हूँ। मैंने कल भी कहा कि मेरा असम फ्लड और इरोज़न से जूझ रहा है। मेरे संसदीय क्षेत्र धुबरी के अंतर्गत फकीरगंज और बारपेटा हैं, जहाँ इलाके के इलाके टूट रहे हैं।

लाखों बीघे जमीनें चली जा रही हैं, हजारों लोगों के घर बह जा रहे हैं, बच्चे बेघर हो रहे हैं, उनके रहने के लिए कोई जगह नहीं है।

मैं आपके माध्यम से, प्रधानमंत्री जी से गुजारिश करूँगा कि आप चाँद पर जाएं और लोगों को भी भेजें, इसके लिए आपको मुबारकबाद है, लेकिन आप इन गरीबों की तरफ और पूरे मुल्क में जो गरीब लोग हैं, आप उनकी तरफ भी ध्यान दें।

बहुत-बहुत शुक्रिया।

[جناب بدرالدین اجمل (دھیری): میڈم، میں آپ کا بہت مشکور ہوں کہ آپ نے مجھے اس اہم موضوع پر بولنے کا موقع دیا۔ میں سب سے پہلے اس ملک کے وزیر اعظم جناب نریندر مودی جی کو مبارکباد دینا چاہتا ہوں۔ اسرو کے تمام سائنٹسٹ کو اور چھوٹے چھوٹے ورکرس کو، جنہوں نے اس معاملے میں اتنے سالوں سے محنت کی اور ریسرچ کر کے ہمیں اس موقع تک پہنچایا کہ ہم لوگ چندریان 3 تک پہنچ پائے۔ یہ ہمارے ملک کے لئے بہت فخر کی بات ہے۔ اسے نہرو جی نے شروع کیا، محترمہ اندرا گاندھی جی نے اسے آگے بڑھایا، محترم راجیو گاندھی جی نے آگے بڑھایا اور ہمارے وزیر اعظم جناب نریندر مودی جی نے اسے پورا کیا۔ میں دل کی گہرائی سے ان کو مبارکباد دینا چاہتا ہوں۔ اگر ان جیسے وزیر اعظم نہیں ہوتے تو آج یہاں تک پہنچنے کا موقع ہمارے سائنسدانوں کے نہیں ملتا۔

میڈم، میں آسام سے آتا ہوں اور وہاں کے ہمارے دو بچے اسرو میں ہیں۔ ایک نازنین یاسمین ہیں اور دوسرے ڈاکٹر بہارالاسلام ہیں۔ یہ دونوں چندریان 3 کے مشن میں کام کرتے ہیں، اس لئے میں ان دونوں کو مبارکباد دیتا ہوں۔ ساؤتھ انڈیا کے تمام سائنسدانوں کو جو اسرو سے جڑے ہیں، میں اُن سبھی سائنسدانوں کو مبارکباد دیتا ہوں۔ میں ان سے کہنا چاہتا ہوں آپ اور آگے بڑھو، اور آگے بڑھو، ملک کو اونچائی پر لے آؤ۔ ہم آپ کو سلام کرتے ہیں۔

میڈم، اسی کے ساتھ میں کہنا چاہوں گا کہ جب ہم چاند پر جا رہے ہیں، تو ہمیں نیچے بھی دیکھنے کی ضرورت ہے۔ ہم جس زمین سے جاتے ہیں، آج ہمارا ملک پوری دنیا میں ایک بہت بڑے نمبر پر پہنچ چکا ہے، لیکن آج بھی ہمارے ملک میں لاکھوں لوگ غریب ہیں، وہ بھوکے سوتے ہیں۔ بچوں کے پڑھنے کے لئے اسکول نہیں ہیں، لاکھوں بچے ٹروپ آؤٹ ہو جاتے ہیں، ان کے پاس اسکول

نہیں ہیں۔ اگر اسکول ہیں تو ان کے پاس پڑھنے کے لئے پیسے نہیں ہیں۔ اس لئے اس طرف بھی دھیان دینے کی ضرورت ہے۔ ان بچوں، ان ماتاؤں کو ہم کیسے روٹی پہنچائیں، کیسے ان بھوکوں کو کھانا کھلائیں، اس طرف سوچنا چاہیئے، ہم چاند پر ضرور جائیں۔

میڈم، میں آسام سے آتا ہوں۔ میں نے کل بھی کہا کہ میرا آسام فلڈ اور ایروزن سے جھوچھ رہا ہے۔ میرے پارلیمانی حلقے دھبڑی کے تحت فقیر گنج اور بارپیٹا ہیں، جہاں علاقے کے علاقے ٹوٹ رہے ہیں۔ لاکھوں بیگھا زمینیں چلی جارہی ہیں، ہزاروں لوگوں کے گھر بہہ جا رہے ہیں، بچے بے گھر ہو رہے ہیں، ان کے رہنے کے لئے کوئی جگہ نہیں ہے۔

میں آپ ذریعہ سے وزیر اعظم صاحب سے گزارش کروں گا کہ آپ چاند پر جائیں اور لوگوں کو بھی بھیجیں، اس کے لئے آپ کو مبارکباد ہے، لیکن آپ ان غریبوں کی طرف اور پورے ملک میں جو غریب لوگ ہیں، آپ ان کی طرف بھی دھیان دیں۔ شکریہ]

श्री हनुमान बेनीवाल (नागौर) : माननीय सभापति महोदया, सदन में आज चन्द्रयान मिशन की सफलता और अंतरिक्ष क्षेत्र में हमारे राष्ट्र की अन्य उपलब्धियों के बारे में चर्चा हो रही है। सबसे पहले मैं आपको धन्यवाद दूँगा कि आपने मुझे बोलने का अवसर दिया।

चन्द्रयान-3 ने चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर कदम रखकर न सिर्फ एक नया इतिहास रचा, बल्कि ऐसी जगह उतरने में भी सफल रहा, जहाँ आज तक दुनिया का कोई भी देश नहीं पहुँच सका। हम बचपन में जब इतिहास पढ़ते थे, तो सुनते थे कि अमेरिका चाँद पर जा रहा है, रूस चाँद पर जा रहा है, अन्य देश भी जाने की तैयारी कर रहे हैं, लेकिन हमने चाँद की उस जगह पर कदम रखा, जहाँ अब तक कोई नहीं पहुँचा। जब चन्द्रयान चाँद की सतह पर उतर रहा था, तो जो अंतिम एक घंटे का समय था, तब से हम लोग बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। फिर 30 मिनट, 20 मिनट, एक मिनट और उसके बाद 30 सेकेंड का समय बचा। देश के हर बच्चे में उत्साह था। बच्चे, बूढ़े, महिलाएं, किसान, जवान आदि सभी टेलीविज़न के सामने बैठे हुए थे। कोई फोन लेकर बैठा था। सभी लोग बहुत ही उत्सुकता से देख रहे थे कि भारत आज विश्व का पहला देश बना है।

यह हम सबके लिए गौरव की बात है। हमारे भारतीय वैज्ञानिकों की सफलता को न केवल हमारे देश ने, बल्कि दुनिया ने सराहा है। यह गर्व की बात है। मैं प्रधान मंत्री सहित हमारे मंत्री जी और माननीय लोक सभा अध्यक्ष जी को भी इस बात के लिए धन्यवाद देता हूँ कि आज उन्होंने इस विषय पर चर्चा कराई। वैसे नियम – 193 के तहत चर्चा होनी चाहिए थी, लेकिन आज इस विषय पर विशेष रूप से चर्चा कराई। इसी के साथ आपका भी धन्यवाद कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया।

सभापति महोदया, 20 जुलाई, 1969 को चाँद पर कदम रखने वाले अंतरिक्ष यात्री नील आर्मस्ट्रॉंग ने वहाँ उतरते ही कहा था कि यह इंसान के लिए छोटा कदम हो सकता है, लेकिन मानव जाति के लिए एक लंबी छलांग है और अंतरिक्ष में यह वाक्य लगभग कहावत में बदल गया।

सभापति महोदया, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन की स्थापना से लेकर अब तक ISRO के वैज्ञानिकों और वहाँ काम कर रहे और काम कर चुके कर्मयोगी कार्मिकों की मेहनत से जो सफलता प्राप्त की, उससे पूरा देश गौरवान्वित है। आज जब इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के विषय पर चर्चा हो रही

है, तो मैं एक बात कहना चाहता हूँ कि सरकार ने इस सफलता की कहानी को स्कूली पाठ्यक्रम में जोड़ने की बात कही है। यह अच्छी बात है। लेकिन मैं आपके माध्यम से प्रधान मंत्री जी से कहना चाहूंगा कि गांव-ढाणी के अंतिम छोर पर ग्रामीण परिवेश के बच्चों को इस सैक्टर में आगे बढ़ने के लिए कैसे प्रेरणा मिले? उच्च शिक्षा में जब वे इस सैक्टर के लिए आगे बढ़ें, तो सरकार की तरफ से उनके शैक्षणिक खर्च पूर्ण रूप से कैसे वहन किए जाएं, इस दिशा में भी सरकार को सोचने की आवश्यकता है।

सभापति महोदया, चंद्रयान-3 की जो सफलता हासिल हुई, वह किसी व्यक्ति विशेष या सरकार की सफलता तक ही सीमित नहीं है। यह हमारे वैज्ञानिकों की वर्षों की मेहनत का परिणाम है। ISRO की स्थापना से लेकर अब तक ISRO की यात्रा में वहां के वैज्ञानिकों के अथक प्ररिश्रम का यह परिणाम है। लेकिन भाजपा इस सफलता को ऐसे दिखा रही है, जैसे यह उनकी व्यक्तिगत सफलता है। ऐसे मामलों का राजनीतिकरण न करें, तो अच्छा है। हम सब इसके लिए आपको बधाई देते हैं और यह पूरे देश के लिए गौरव की बात है। सबका आशीर्वाद, सबकी दुआएं, यह देश आगे बढ़े, इसी का परिणाम है कि हमें विश्व में सबसे पहले सफलता मिली। देश की अंतरिक्ष यात्रा की शुरुआत 1960 के दशक में हो गई थी। फरवरी, 1962 में ही अंतरिक्ष अनुसंधान के लिए राष्ट्रीय समिति का गठन किया गया था। इसके सदस्यों में होमी जहांगीर भाभा और विक्रम साराभाई जैसे महान वैज्ञानिक शामिल थे। चंद्रयान-3 और आदित्य एल -1 की सफलता वर्षों की मेहनत का नतीजा है।

सभापति महोदया, भारत ने अपने अंतरिक्ष कार्यक्रम की शुरुआत एक छोटी सी शुरुआत से की और आज विश्व के सम्मुख एक विशाल उदाहरण स्थापित किया। अगर आप बीते दशक को देखें, जब भारत ने इस यात्रा को शुरू किया, उस बारे में याद करें, उस समय अमेरिका और तत्कालीन सोवियत यूनियन लगभग चंद्रमा की धरती पर उतरने की तैयारी कर रहे थे। तब हम सिर्फ इन बातों को सोचते थे। इसके बाद के समय से अब तक भारत ने अंतरिक्ष क्षेत्र में जितनी तीव्रता के साथ अपने स्पेस प्रोग्राम को आगे बढ़ाया, इससे जाहिर होता है कि हमारे वैज्ञानिकों में कितनी प्रतिभा और योग्यता रही होगी। मुझे गर्व है कि मेरे संसदीय क्षेत्र के एक किसान की बेटी, मेरे समाज की एक बेटी, जिसका नाम सुनीता खोखर है, चंद्रयान-3 की सफलता में ISRO की टीम का हिस्सा थी।

सभापति महोदया, चंद्रमा पर भारत के मानव अभियान को लेकर उम्मीद बढ़ी, चूंकि यह सफलता आपके कार्यकाल में मिली यह सही है, लेकिन जब बात नीतिगत सवालों की आती है, तो सरकार को अपनी विफलताओं को भी स्वीकार करना चाहिए। मैं इश्यू से भटक नहीं रहा हूं, लेकिन लोकतांत्रिक मूल्यों का अस्तित्व बचा रहे। आज विषय अलग है, लेकिन फिर भी मैं कहना चाहूंगा कि बढ़ती महंगाई को रोकने में, स्थाई रोजगार देने में सरकार नाकाम रही है। उसको भी आपको स्वीकार करना चाहिए।

सभापति महोदया, मैं अंत में अपनी बात समाप्त करूंगा। मैं आपके माध्यम से माननीय प्रधान मंत्री जी से कहना चाहूंगा कि वैज्ञानिकों के उत्साह और उनकी मेहनत से जो सफलता हमारे देश को मिली, उस सफलता में वैज्ञानिकों का उत्साह शामिल था। परंतु, राष्ट्र की सुरक्षा से जुड़े मामले में आपकी सरकार ने देश की सेना और युवाओं को सेना में अग्निवीर नामक संविदा भर्ती की योजना को लाकर जो किया है, मेरा सदन के माध्यम से सरकार से अनुरोध है कि इस योजना को वापस लिया जाए, ताकि सेना का उत्साह बरकरार रहे।

सभापति महोदया, मैं अंत में कहना चाहता हूं कि बेरोजगारी पर सदन के अंदर चर्चा हो, पूरे देश के नौजवान, जिन्होंने आपको सत्ता के शिखर पर बैठाया, उनके लिए यह चर्चा हो। आप महिला आरक्षण विधेयक लेकर आए, उसके लिए हम सबने आपको धन्यवाद दिया था। आप जैसा भी लाए, यह अच्छी बात है कि आपने कम से कम शुरुआत तो की, ये भी कई साल बैठे थे, ये भी नहीं ला पाए, लेकिन आप लेकर आए। लेकिन देश के अंदर महिलाओं पर जो अत्याचार बढ़ रहे हैं, इस विषय पर भी इस सदन के अंदर पूरे दिन चर्चा होनी चाहिए। यह हमारी मांग है।

सभापति महोदया, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए आपका धन्यवाद। हमारी पुनः यह कामना है कि हमारा भारत देश आगे बढ़े। इसके लिए सभी को बहुत-बहुत बधाई। हम सब मिल जुलकर यह चाहते हैं कि हमारा देश पूरी दुनिया में अपना वर्चस्व रखे और राजनीति से ऊपर उठकर हम देश के विकास के लिए सोचे।

धन्यवाद।

डॉ. सुजय विखे पाटील (अहमदनगर) : सभापति महोदया, आपका धन्यवाद कि आपने मुझे चंद्रयान-3 पर हो रही इस यशगाथा में, चर्चा में सहभागिता के लिए परमीशन दी।

सभापति महोदया, मैं खुद को भाग्यशाली समझता हूँ कि फर्स्ट टाइम मेंबर ऑफ पार्लियामेंट होने के नाते इस नवनिर्मित भव्य संसद भवन में मुझे आपने बोलने का अवसर दिया।

महोदया, आपने मुझे एक ऐसे विषय पर बोलने का अवसर दिया है, जिस विषय से इस देश का नाम पूरे विश्व में रोशन हुआ है। आज की इस चन्द्रयान-3 की चर्चा में हम हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को याद करते हैं। उन्होंने वर्ष 2003 में चन्द्रयान की घोषणा की थी। उनके विश्वास और संकल्प को नमन करते हुए मैं कुछ पंक्तियों के माध्यम से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहूँगा।

वाकिफ़ कहाँ जमाना हमारी उड़ान से,
वो और थे जो हार गए आसमान से
रखकर चाँद पर कदम, आज हमने इतिहास बना दिया।
जिनको शक था हमारी काबिलियत पर,
आज उन सबको गवाह बना दिया।

महोदया, आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में चन्द्रयान-3 का यह यश हमारे जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान, जय अनुसन्धान का जीता जागता उदाहरण है। चन्द्रयान-3 का यह यश सिर्फ विज्ञान का ही प्रतीक नहीं है, यह नारी शक्ति का भी प्रतीक है। इसमें 100 महिलाओं ने साइंटिस्ट और इंजीनियर होकर इस चन्द्रयान-3 की यशगाथा में अपना सहभाग लिया। आदरणीय मोदी जी के नेतृत्व में कल पारित किया गया नारी शक्ति वंदन अधिनियम इन्हीं महिलाओं को, भारत के विज्ञान की आवाज इस संसद में उठाने के लिए प्रेरित करेगी और अब वह दिन दूर नहीं कि कुछ सालों में इस देश का स्पेस मिनिस्टर एक इसरो की महिला अपने विज्ञान के माध्यम से इस देश को अवगत करेगी।

महोदया, बचपन में, स्कूल में हमसे चाँद से जुड़े दो ही सवाल पूछे जाते थे, first man on moon and first country on moon. इनके जवाब हमें याद हो गए थे, नील आर्मस्ट्रांग और रशिया, लेकिन आज आदरणीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में जब देश के बच्चे से पूछा जाएगा कि which country landed on the South Pole of the Moon first. वह देश का बच्चा गर्व से भारत बोलेगा। यह आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हम कर पाए हैं।

महोदया, मैं महाराष्ट्र से सांसद हूँ और महाराष्ट्र का योगदान इस चन्द्रयान-3 अभियान में बहुत बड़ा है। In Chandrayaan-3, liquid propulsion engines and satellite thrusters गोदरेज के माध्यम से बनाए गए, जो मुम्बई में स्थित है। आदरणीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आत्मनिर्भर भारत की गाथा बताते हुए जीएसएलवी-मार्क 3 की कोटिंग सांगली जिले में डैजल डायना कोट्स से की गई। इसकी सबसे बड़ी उपलब्धता हमारे नेता स्वर्गीय गोपीनाथ मुंडे जी का स्वप्न पूरा करते हुए बीड जैसे दुर्गम जिले के एक व्यक्ति ने, जिसका नाम दत्ता बिडकर है, वह वहाँ पर जूनियर साइंटिस्ट है, वह काम करके चन्द्रयान-3 की इस यशगाथा में शामिल हुआ। यह मुंडे जी का सपना हमें चन्द्रयान-3 के माध्यम से पूरा होते हुए देखने को मिला है। आज की इस चर्चा में हम अपेक्षा कर रहे थे कि सब इसमें सकारात्मक भूमिका निभायें। सब हमारे वैज्ञानिकों की तारीफ करें, लेकिन कुछ लोगों की राजनीति करने की आदत नहीं जाती है। इसीलिए पिछले 50 सालों से, जो आज विपक्ष में बैठे हैं, एक चाँद के माध्यम से बहुत खूबसूरत कविता उन्होंने बतायी थी। मेरे पास वक्त कम है तो मैं कविताओं के माध्यम से ही अपनी बात रखूँगा। कविता यह थी:

चंदा मामा दूर के
पुए पकाए बूर के
आप खाए थाली में
मुन्ने को दे प्याली में

50 साल से इन्होंने देश को यह बताया कि चाँद बहुत दूर है और ये वही लोग हैं, जिन्होंने चाँदी की थाली में खाना खाया, लेकिन गरीबों की प्याली में पानी देने की हिम्मत इनकी नहीं हुई। यह नरेन्द्र

मोदी जी की सरकार है, जिन्होंने गरीबों का उद्धार किया और जल-जीवन मिशन के माध्यम से आज पानी देने का काम हम कर रहे हैं।

महोदया, चन्द्रयान-2 के वर्ष 2019 के जो टीवी पर विजुअल्स थे, उन्हें हम कैसे भूलें। जब हम टीवी पर देख पा रहे थे कि चन्द्रयान-2 के नॉन लैंडिंग की वजह से हमारे इसरो के चेयरमैन हताश थे, साइंटिस्ट हताश थे तो देश के एकमेव प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी थे, जिन्होंने स्पेस सेंटर में जाकर उनका हौंसला बढ़ाया। उनको उम्मीद थी और वह वहीं हौंसला था, जिसने चन्द्रयान-3 की नींव रखी। जो वह हौंसला, जो जब्बा उन साइंटिस्ट में निर्माण हुआ, मैं उसे कुछ पंक्तियों के माध्यम से रखना चाहूँगा।

“चांद तेरी जिद के आगे क्या मैं नतमस्तक हो जाऊँगा

तू ख्वाब परे रख दे अपने मैं फिर से वापस आऊँगा

तू दूर भले ही हो मुझसे पर पास कभी तो आऊँगा

है प्रेम अमर मेरा तुझसे मैं उसको छोड़ न पाऊँगा

उस बार चलेगी जिद मेरी तुझको भी याद दिलाऊँगा

तू ख्वाब परे रख दे अपने मैं फिर से वापस आऊँगा।”

सभापति महोदया, इसी हौसले से चंद्रयान-3 की तरफ हम बढ़े और हम यशस्वी भी हुए। साइंस हमें बहुत कुछ सीखाती है और एक कहावत है ‘Science teaches us to learn from our mistakes’ लेकिन यह स्टेटमेंट विपक्ष पर लागू नहीं होती, जो अपनी गलतियां सुधारने के लिए नहीं, बल्कि बार-बार गलतियां करने के लिए जाने जाते हैं और आज यहां इस सदन में वे साइंस की दुहाई दे रहे हैं। चन्द्रयान-2 की यशस्वी लॉचिंग के बाद आज संगठित भारत, सामूहिक भारत Sun Mission की तरफ बढ़ रहा है। हमारे भारत का Sun Mission ‘Sun Mission’ है और दूसरी तरफ देश में I.N.D.I.A ‘Son Mission’ को लॉच करने में लगे हुए हैं और यह Son Mission बार-बार लॉच हो कर फेल हुआ, लेकिन आदरणीय प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में हमारा Sun Mission, जो भारत द्वारा लॉच किया गया, यह यशस्वी होगा, इसका हमें पूरी तरह से विश्वास है।

महोदया, मैं आपके माध्यम से इंडिया नासा के आर्टेमिस एक्ॉर्ड में सहभागी हुआ है। इस आर्टेमिस एक्ॉर्ड के माध्यम से हम देश के द्वारा वर्ष 2025 में इंसानों को चांद पर भेजने का प्रावधान करने वाले हैं। मुझे खुशी है कि वर्ष 2024 के इलेक्शन के बाद काफी ऐसे लोग रहेंगे जो पूरी तरह से खाली हो जाएंगे। मेरी सरकार से विनती है कि आपके माध्यम से उन खाली लोगों को वर्ष 2025 में चांद पर भेजने का प्रावधान, सभापति महोदया आपके माध्यम से वर्ष 2024 के बाद किया जाए। तारीखों का अपना अलग महत्व है। 14 जुलाई, 2023 हमारे देश में चंद्रयान के लांचिंग की तारीख बताई जाएगी। यह वर्तमान की 14 जुलाई चन्द्रयान-3 की यश गाथा दोहराएगी लेकिन इतिहास में एक तारीख 14 जुलाई, 1942 जिसमें क्विट इंडिया का रेजोलूशन पास हुआ था और आने वाली 14 जुलाई, 2024 देश का नागरिक क्विट इंडिया एलायंस मूमेंट चलाएगा और फिर एक बार देश में आदरणीय प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार देश की जनता की सेवा करने के लिए आएगी।

महोदया, अंत में मैं कविता के माध्यम से कहना चाहता हूं, जिसमें चन्द्रयान-3 की यश गाथा बयां की गई है -

“अंतरिक्ष में गुंज उठे हम चंद्रयान का गान लिए
चांद तिरंगे के रंग में रंगने लगा नई एक पहचान लिए
मेरे भारत के वैज्ञानिक तुम गौरव हो भारत का
ऊँचा माथा लिए खड़े हम सच्चा एक अभिमान लिए।”

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी वाणी को विराम देता हूं।

* **SHRI BENNY BEHANAN (CHALAKUDY):** I am proud of the success of the Chandrayan Mission, which is not just a matter of pride for us alone; but it is an occasion for celebration for the entire human race. I congratulate all the scientists and persons who worked in this project.

Sir, the growth of science, is not due to the efforts of one individual or one institution. It is a team effort. It is the culmination of the human expertise achieved by the synergy created by the collective effort and intelligence of the entire human race.

Sir, the achievements in the field of Space and Science, is also due to such a collective effort. In 1959, the first space craft, Lunar III touched the Moon surface and so began our dreams to reach the Moon. In 1969, USA, put the first man on the Moon.

Sir, India, too began its journey of scientific and technological growth well before our Independence. In 1939, Indian National Congress, constituted Planning Committee. Our national leaders, "invited, leading scientists in the formulation of planning in the scientific, technological and economic development of the country.

Sir, in 1947, a national laboratory for the growth of scientific and technological growth was constituted. Sir in 1958, Nehru presented a scientific policy resolution on the Floor of the Parliament. That Policy Resolution kick started our journey in achieving growth in the fields of science and technology. Sir, when the global nations began their space voyages, India too began its

* English translation of the speech originally delivered in Malayalam.

journey in 1963. In 1963, we fired our first rocket from Thumba Space Station. It was to study climatic conditions.

Sir, India's scientific endeavours had a human face. We believed that science could be used for the betterment of humanity at large.

We could use science for progress in the fields of Agriculture, weather forecast, health, and disaster management. Jawaharlal Nehru, emphasized that science was the key, to address hunger, poverty, illiteracy and wastage of resources.

Sir in 1959 when Khrushchev's Government sent a spacecraft which completed its mission successfully, Pandit Jawaharlal Nehru observed, "This achievement is the establishment of peace and goodwill on earth".

Our country too, took the first steps towards Chandrayan Mission in 1968.

The Chandrayan Mission was envisaged, when Shri Vajpayee was the Prime Minister.

We all know that it was Vajpayee who gave us the name Chandrayan. Earlier, the Mission was called Somayan a term used in the Rig Veda.

Sir, in 2008, Chandrayan touched the Moon surface. Not only could we successfully do what even the satellites of NASA could not do - that is find the presence of water on the surface of Moon. This was a remarkable success.

Sir, on that day 2002, 14th of November, due to the Chandrayan Mission, and the Moon Impact Probe Camp, we could plant our Tricolour Flag on the surface of Moon. That spot was named as Nehru point not by any politician but

by Dr. A.P.J. Abdul Kalam, who was India's President, and also a leader of the Chandrayan Mission.

Sir, the leaders who followed like Vajpayee ji, and P.V. Narasimha Rao ji and Shri Man Mohan Singh ji, gave their full fledged backing for our space projects.

This is a continuum. I am concluding Sir. Sir, in 1970, we Congress workers had a slogan, which was dear to us.

“When the atom split

And the Sands of Pokhran trembled;

When Arya Bhatta, rose up and encircled our orbit;

when the tricolor reached the galaxy and milky way;

when the frontiers of Space was traversed by the footsteps of Indians;

whom should we remember with gratitude

Jawaharlal, and Indira; And the Congress Party; we hail!”.

Sir, later on we could add several other names to this list. We can remember Atal ji, we must remember Modi ji; we must remember Man Mohan ji, we remember and acknowledge all of them.

We know that as we are discussing Chandrayan; the scientific world is trying to wake up the modules of Chandrayan, that has gone to sleep.

Our scientists have the expertise to wake up the sleeping modules of Chandrayan.

But what about those who are sleeping, oblivious of the truths of our history? Let our scientists do something to wake up those who are pretending to sleep; and are not admitting the historical truths.

I once again congratulate all those who worked for the success of the Chandrayan Mission.

कुंवर दानिश अली (अमरोहा): सभापति महोदया, आपका धन्यवाद कि आपने मुझे इस ऐतिहासिक पल पर बोलने का मौका दिया। इस नए परिसर में हम आए हैं। मैं देश की समस्त साइंटिफिक कम्युनिटी को बधाई देने के लिए यहां आपके सामने खड़ा हुआ हूँ।

महोदया, मुझे इस बात का फ़ख्र है कि मैं आज नए परिसर में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ तो इस देश की साइंटिफिक कम्युनिटी को बधाई देने के लिए खड़ा हुआ हूँ। गवर्नेंस एक कंटीन्युअस प्रोसेस है। मैं सुबह से बैठ कर, अपनी आदत के मुताबिक, भले ही मुझे सदन में बोलना हो या नहीं, लेकिन मैं सदन में लगातार बैठने की कोशिश करता हूँ। लेकिन, मुझे आज अफसोस हुआ कि इस बधाई संदेश में भी यहां शुरुआत राजनीति से हो गयी।

इस सदन के उप-नेता ने इसकी शुरुआत की। दूसरी तरफ से भी उसी तरीके की राजनीतिक टिप्पणियां हुईं। लेकिन आज यह पल इस देश के सभी साइंटिस्ट्स को, इसरो में जो काम कर रहे हैं, जिन्होंने आज हमारा सीना चौड़ा किया कि दुनिया के अंदर हम पहला देश बने कि हमने मून के साउथ पोल पर चन्द्रयान-3 की सॉफ्ट लैंडिंग की। उसके साथ-साथ कहीं न कहीं देश भर के साइंटिस्ट्स, जो अलग-अलग इंस्टिट्यूशंस से पढ़ कर आए हैं, मैं उनको भी बधाई देने में पीछे नहीं रहना चाहता हूँ। मेरे संसदीय क्षेत्र के भी कई बच्चों का चन्द्रयान-3 के लॉन्चिंग पैड में योगदान रहा है।

सभापति महोदया, इस सदन ने कल महिला आरक्षण बिल भी पास किया और चन्द्रयान-3 की सफल लैंडिंग में महिलाओं का बहुत बड़ा योगदान रहा है। मैं पढ़ रहा था कि किस तरीके से तमिलनाडु की एक बहन- फ़ातिमा शाह जी, जिसका इस प्रोजेक्ट में बहुत बड़ा योगदान है, कितने गरीब परिवार से आती थी। यह इसलिए संभव हुआ कि हमारे देश के पहले प्रधान मंत्री से ले कर मौजूदा प्रधान मंत्री तक लगातार इस क्षेत्र में इसरो को बढ़ावा देने में कहीं पीछे नहीं रहे। इस देश के पहले प्रधान मंत्री - पण्डित जवाहर लाल नेहरू के साथ देश के जो पहले शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आज़ाद थे, उन्होंने आईआईटी वगैरह जैसे बड़े इंस्टिट्यूशंस खोले थे, उनका नतीजा आज हम यह देख रहे हैं। लेकिन यहां पर जो बात हो रही थी कि यह सिर्फ इसी सरकार में संभव हुआ है, मैं प्रधान मंत्री, आदरणीय नरेंद्र मोदी जी को बधाई देना चाहता हूँ कि वे इतने लकी प्रधान मंत्री हैं कि

پिछلے प्रधान منتریوں کے ڈالے हुए دانے, बोए हुए बीज की फ़सल काटने का मौका आज उनको मिल रहा है। यह अच्छी बात है। लेकिन यह भी सच्चाई है कि पिछले बजट में इसरो का 8 प्रतिशत एलोकेशन कम हुआ है। यह किसी से छुपा नहीं है।

सभापति महोदया, हमने पिछले दिनों देखा कि इस सरकार में जिस तरीके से अपॉइंटमेंट्स हो रहे हैं। हमने देखा कि पिछले दिनों मंडी, हिमाचल प्रदेश के आईआईटी के एक डायरेक्टर का वीडियो वायरल हुआ कि हिमाचल प्रदेश में यह जो फलड आया है, जो भूस्खलन हुआ है, यह इसलिए हुआ है क्योंकि लोगों ने इस देश में नॉन-वेजिटेरियन खाना शुरू कर दिया है, इसलिए ये सब आपदाएं आ रही हैं। ये कैसी अनसाइंटिफिक बातें लोग कर रहे हैं और ऐसे लोगों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हो रही है?

सभापति महोदया, मैं इतना ही कहूंगा कि जो साइंटिफिक कम्युनिटी हमारे देश की है, उसको हमें बढ़ावा देना चाहिए। हम डिफेंस की स्टैंडिंग कमिटी के सदस्य के रूप में डीआरडीओ के दौरे पर गए थे और वहां साइंटिस्ट्स से मिले थे। वहां हमें पता चला कि 4 सालों तक उनका प्रमोशन रोका गया था। हमने उस पर सवाल किया। खैर, अब वह प्रमोशन हो रहा है।

मैं इतना ही कहूंगा कि यहां पर पोखरण के टेस्ट की बात हुई। सन् 1974 में न्युक्लियर का टेस्ट हुआ। बाद में वाजपेयी जी के नेतृत्व में भी पोखरण-2 हुआ। लेकिन पोखरण-2 की तैयारी नरसिम्हा राव जी के ज़माने में हो गई थी। ... (व्यवधान) मैं रिकॉर्ड पर कह सकता हूँ कि जब देवेगौड़ा जी प्रधान मंत्री थे तब उनके पास इसकी फाइल आई थी, लेकिन उनको एडवाइज़ किया गया ...

(व्यवधान)

[کنور دانش علی (امروہ): محترمہ چیرمین صاحبہ، آپ کا بہت شکریہ کہ آپ نے

مجھے اس تاریخی پل پر بولنے کا موقع دیا۔ اس نئے پریسر میں ہم آئے ہیں۔ میں

ملک کی پوری سائنٹفک کمیونٹی کو مبارکباد دینے کے لئے یہاں کھڑا ہوا ہوں۔

محترمہ، مجھے اس بات کا فخر ہے کہ میں آج نئے پریسر میں بولنے کے

لئے کھڑا ہوا ہوں۔ گورننس ایک کنٹینوس پروسیس ہے۔ میں صبح سے بیٹھ کر،

اپنی عادت کے مطابق بھلے ہی مجھے ایوان میں بولنا ہو یا نہیں، لیکن نہ میں ایوان میں لگاتار بیٹھنے کی کوشش کرتا ہوں۔ لیکن مجھے آج افسوس ہوا کہ اس بدھائی پیغام میں بھی یہاں شروعات سیاست سے ہو گئی۔

اس ایوان کے ڈپٹی لیڈر نے اس کی شروعات کی۔ دوسری طرف سے بھی اسی طرح کی سیاسی تبصرے کئے۔ لیکن آج یہ پل اس ملک کے سبھی سائنسدانوں کو، اسرو میں جو کام کر رہے ہیں، جنہوں نے ہمارا سینہ چوڑا کیا کہ دنیا کے اندر ہم پہلے ملک بنے کہ ہم نے چاند کے ساؤتھ پول پر چندریان 3 کی لینڈنگ کی۔ اس کے ساتھ۔ ساتھ کہیں نہ کہیں ملک کے سائنسدان جو الگ الگ اداروں سے پڑھ کر آئے ہیں، میں ان سبھی کو بھی مبارکباد دینے میں پیچھے نہیں رہنا چاہتا ہوں۔ میرے پارلیمانی حلقہ کے بھی کئی بچوں کا چندریان 3 کی لانچنگ پیڈ میں اہم رول رہا ہے۔

چیرمین صاحبہ، اس ایوان نے کل خواتین کے ریزرویشن کا بل بھی پاس کیا اور چندریان 3 کی کامیاب لینڈنگ میں خواتین کا بہت بڑا رول رہا ہے۔ میں پڑھ رہا تھا کہ کس طریقے سے تمل ناڈو کی ایک بہن فاطمہ شاہ جی جس کا اس پروجیکٹ میں بہت بڑا یوگدان ہے، کتنے غریب پریوار سے آتی تھی۔ یہ اس لئے ممکن ہوا کہ ہمارے ملک کے پہلے وزیر اعظم سے لیکر موجودہ وزیر اعظم تک لگاتار اس شیتل میں اسرو کو بڑھاوا دینے میں پیچھے نہیں رہے۔ اس ملک کے پہلے وزیر اعظم پنڈت جواہر لال نہرو کے ساتھ ملک کے جو پہلے وزیر تعلیم مولانا ابوالکلام آزاد بھی تھے، انہوں نے آئی۔ آئی۔ ٹی۔ وغیرہ جیسے بڑے ادارے کھولے تھے۔ اس کا نتیجہ آج ہم یہ دیکھ رہے ہیں۔ لیکن یہاں پر جو بات ہو رہی تھی کہ یہ صرف اسی سرکار میں ممکن ہوا ہے، میں وزیر اعظم، جناب نریندر مودی جی کو مبارکباد دینا چاہتا ہوں کہ وہ اتنے لکی وزیر اعظم ہیں کہ پچھلے تمام وزیر

اعظموں کے ڈالے ہوئے دانے ، ہوئے ہوئے بیج کی فصل کاٹنے کا موقع آج ان کو مل رہا ہے۔ یہ اچھی بات ہے۔ لیکن یہ بھی سچائی ہے کہ پچھلے بجٹ میں 8 فیصد ایلوکیشن کم ہوا ہے۔ یہ کسی سے چھپا نہیں ہے۔

چیرمین صاحب، ہم نے پچھلے دنوں دیکھا کہ اس سرکار میں جس طریقے سے اپوئنمنٹس ہو رہے ہیں۔ ہم نے دیکھا کہ پچھلے دنوں منڈی، ہماچل پردیش کے آئی۔آئی۔ٹی۔ کے ایک ڈائریکٹر کا ویڈیو وائرل ہوا کہ ہماچل پردیش میں یہ جو فلڈ آیا ہے، جو بھوسکھلن ہوا ہے، اس لئے ہوا ہے کہ کیونکہ لوگوں نے اس ملک میں نان ویجیٹیرین کھانا شروع کر دیا ہے، اس لئے یہ سب آبدائیں آ رہی ہیں۔ یہ کیسی انسائنٹفک باتیں لوگ کر رہے ہیں اور ایسے لوگوں کے خلاف کوئی کاروائی نہیں ہو رہی ہے؟

چیرمین صاحب، میں اتنا ہی کہوں گا کہ جو سائنٹفک کمیونیٹی ہمارے ملک کی ہے اس کو ہمیں بڑھاوا دینا چاہیئے۔ ہم ڈیفینس کی اسٹینڈنگ کمیٹی کے ممبر کے روپ میں ڈی۔آر۔ڈی۔او۔ کے دورے پر گئے تھے اور وہاں سائنٹسٹ سے ملے تھے۔ وہاں ہمیں پتہ چلا کہ 4 سالوں تک ان کا پروموشن روکا گیا تھا۔ ہم نے اس پر سوال کیا، خیر اب وہ پروموشن ہو رہا ہے۔

میں اتنا ہی کہوں گا کہ یہاں پر پوکھرن کے ٹیسٹ کی بات ہوئی۔ سال 1974 میں نیوکلیئر کا ٹیسٹ ہوا۔ بعد میں واجپئی جی کی حکومت میں پوکھرن 2 ہوا۔ لیکن پوکھرن 2 کی تیاری نرسمہا راؤ جی کے زمانے میں ہو گئی تھی۔ (مداخلت)۔ میں ریکارڈ پر کہہ سکتا ہوں کہ جب دیوے گوڑا جی وزیر اعظم تھے تب ان کے پاس اس کی فائل آئی تھی، لیکن ان کو ایڈوائز کیا گیا۔]

माननीय सभापति : श्री विनोद सोनकर जी ।

श्री विनोद कुमार सोनकर (कौशाम्बी): सभापति महोदया, मैं अपने को सौभाग्यशाली मानता हूँ कि आपने इस नए संसद भवन में, जो आने वाले युगों-युगों तक देश के निर्माण में अपना योगदान देगा, मुझको बोलने का अवसर दिया है। मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ। आज माननीय प्रधानमंत्री जी को धन्यवाद देने का दिन है, उनके नेतृत्व में देश ने इतिहास रचा है। आज देश के वैज्ञानिकों का अभिनंदन करने का दिन है। उनके नेतृत्व में अथक मेहनत और प्रयास के कारण आज हमारा सिर पूरी दुनिया में ऊंचा हुआ है। आज इसरो के सभी वैज्ञानिकों को अभिनंदन करने का अवसर है, जिनके अथक प्रयास और मेहनत के बदौलत आज देश को पूरे दुनिया में सम्मान के साथ देखा जा रहा है। आज डॉ. विक्रम साराभाई को याद करने का अवसर है। उन्होंने जो सपना देखा था, आज मोदी जी के नेतृत्व में इस सरकार ने उसको पूरा किया है।

सभापति महोदया, मैं कहना चाहता हूँ कि इस देश में साधन, संसाधन और मेधा की कभी कमी नहीं रही, कमी रही तो नीयत की, कमी रही तो नीति की और कमी रही तो नेतृत्व की। आज हम गौरव के साथ कह सकते हैं कि देश के यशस्वी प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में देश के पास नीयत, नीति और नेतृत्व भी है। इसके बदौलत आज हम चन्द्रमा पर पहुंचे हैं। आज पूरी दुनिया में हमारा मान बढ़ा है।

महोदया, जब मैं इस देश की मेधा की बात करता हूँ तो यह कोई नई बात नहीं है, जब पूरी दुनिया अभी कल्चर सीख रही थी, उस समय भारत ने मगध और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय की स्थापना करके पूरे दुनिया में ज्ञान और विज्ञान देने का काम अगर किसी ने किया तो यह भारत की पवित्र भूमि ने किया था। मैं फिर कहना चाहता हूँ कि इस देश में कभी मेधा की कमी नहीं रही, साधन-संसाधन की कमी नहीं रही। देश के पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री जी ने जब 'जय जवान - जय किसान' का नारा दिया तो इस देश के जवानों ने बांग्लादेश का निर्माण किया और देश के विरोधियों को जवाब दिया। माँ भारती के आन, बान और शान में जिन्होंने गुस्ताखी की, उनको भी उन्होंने जवाब देने का काम किया। इसे देश और दुनिया ने देखा है।

18.33 hrs(Shri Bhartruhari Mahtab *in the Chair*)

महोदय, जब किसान की बात आई तो हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि किसानों के पसीने ने इस देश को खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने का काम किया। अटल बिहारी वाजपेयी जी ने 'जय विज्ञान' का नारा दिया था। आज हम गौरव के साथ कह सकते हैं कि हम अन्न संपन्न देश हैं। आज पूरी दुनिया इस ताकत को मानती है। इसके कारण देश को एक नहीं, बल्कि अनेक फायदे हुए हैं। चाहे देश की सुरक्षा की बात की जाए, चाहे देश के बिजली उत्पादन की बात की जाए, इसके कारण आज देश आत्मनिर्भरता की तरफ बढ़ा है। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री आदरणीय नरेन्द्र भाई मोदी जी ने 'जय अनुसंधान' का नारा दिया। आज हम गौरव के साथ कह सकते हैं कि देश में एक परंपरा चल पड़ी है। आज देश में एक नहीं, बल्कि अनेक अनुसंधान लगातार हो रहे हैं। उस अनुसंधान का ही परिणाम है कि हमने चन्द्रयान-3 की लैंडिंग करके पूरे दुनिया को दिखा दिया कि भारत किसी से कमजोर नहीं है।

महोदय, जब हम इसकी बात करते हैं तो कुछ लोग 'मेक इन इंडिया' के बारे में बात करते हैं। मैं तो कहता हूँ कि चन्द्रयान-3 अनेक उपलब्धियों के साथ-साथ आत्मनिर्भर भारत का जीता-जागता उदाहरण है। उसमें आप देखेंगे कि अधिकतर कल-पुर्जे 'आत्मनिर्भर भारत' का प्रमाण देते हुए नजर आ रहे हैं। आज हम लोग गौरवशाली हैं कि देश के यशस्वी प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में देश के वैज्ञानिकों ने जो काम किया है, वह किसी से छुपा नहीं है।

महोदय, इस सदन में अनेक बातों पर बहुत देर से चर्चा चल रही है। अभी यहां पर चन्द्रयान की बात हो रही है, स्पेस की बात हो रही है, लेकिन कुछ लोग अन्य बातें भी कर रहे हैं।

साथियों, मैं कहना चाहता हूँ कि जो इतिहास लिखेगा, वह अपने इतिहास का गौरव गान करेगा ही। जब देश के यशस्वी प्रधानमंत्री जी ने इतिहास लिखा तो जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 समाप्त हुई। हम तो अपना गौरव गान करेंगे ही। कुछ लोग कहते थे कि यदि जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 समाप्त होगी तो खून की नदी बह जाएगी। आज हम गौरव के साथ कह सकते हैं कि आदरणीय गृह मंत्री जी के नेतृत्व में, खून की नदी तो छोड़िए, एक पसीने का बूंद भी नहीं बहा है। जब हम इतने बड़े ऐतिहासिक सदन के निर्माण की इतिहास रचेंगे तो निश्चित रूप से अपने इतिहास का गौरव गान करेंगे।

पांच बार महिला आरक्षण बिल की बात आई, लेकिन किसी ने उसे पास नहीं किया। उसके लिए जो इच्छाशक्ति चाहिए थी, वह किसी ने नहीं दिखाई। जब हमने इस देश की बेटियों को उनका हक देने का काम किया, इतिहास रचा, तो निश्चित रूप से हमें इस बात का गौरव है। हमने जो ऐतिहासिक काम किया है, उसका हम गौरव गान करेंगे। माननीय प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में इस देश की 11 करोड़ से ज्यादा बेटियों को शौचालय देने का काम किया गया। यह इतिहास रचा है, तो हम अपने इतिहास का गौरव गान करेंगे। इस देश की बेटियों को, महिलाओं को 10 करोड़ से ज्यादा उज्ज्वला गैस कनेक्शन्स हमने दिए, उनको धुआं रहित रसोई देने का काम किया, तो हम अपने गौरव का गान करेंगे।

माननीय सभापति, मैं कहना चाहता हूं कि जो काम करेगा, निश्चित रूप से अपना गौरव गान करेगा। हम अन्त में निवेदन करते हुए, इसरो के वैज्ञानिकों ने जिस प्रकार का काम किया है, उनका हम अभिनन्दन करते हैं, स्वागत करते हैं और धन्यवाद देते हैं। विशेषकर देश की बेटियों ने, महिलाओं ने इसरो के चन्द्रयान-3 कार्यक्रम में जिस प्रकार का योगदान दिया है, उसके लिए हम उन बेटियों को भी नमन करते हैं और साथ ही साथ उन वैज्ञानिकों का भी अभिनन्दन करते हैं।

महोदय, इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात पूरी करते हुए सभी को धन्यवाद देता हूं।

***DR. D. RAVIKUMAR (VILUPPURAM):** Hon. Chairman Sir, Vanakkam. I wish to say here with a lot of pride that I come from a place called Villupuram, which is also the birth place of the project Director of Chandrayaan-3 Shri Veera Muthuvel. I represent that Constituency. The Success of Chandrayaan- 3 has made India proud. It is big recognition for the knowledge and ability of India in the international arena. It has also informed the world about our victory in the field of Science. Shri Veera Muthuvel is the son of a Railway Employee in Villupuram. He studied in an ordinary Municipal School in Villupuram. He has risen to such a level of spectacular achievement from that humble beginning. This is a testimony to showcase the strength and victory of the prevailing standard of educational system in Tamil Nadu to the entire country. At a time when the whole world is praising India for its splendid achievement in the field of Space Science, many MPs shared with great concern in this House that the Union Government should give encouragement to scientific research in the country. We don't even allocate 1 per cent of our entire Budget to the Research and Development (R&D) activities. To say it precisely, it is just 0.7 per cent that is allocated. Whether it is USA, China or Europe, there is so much of private participation as regards the investments in research and development activities. Whereas in India, only the Union Government has to make investments in the field of research and development. Analysts point out that the patent laws in India are not secure and hence there is hesitation among private players to invest in the research and development activities in the field of science. Inventions made after so much of investments

* English translation of the speech originally delivered in Tamil.

may be plagiarised by others so easily as the patent laws are not so strong. That's why private players are very hesitant to invest in such R & D activities in India. This is the opinion of analysts. I therefore urge that there is a need to bring regulations to such laws. Moreover the institutions of higher learning in India have not contributed much to research. The Science, Technology, Innovation and Advisory Council under the Chairmanship of Hon Prime Minister has made a mention that not even 1 percent of the 40000 odd institutions of higher learning in the country has made an achievement in the field of scientific research. Therefore this is indicating us the need to improve our higher education besides stabilizing it as regards scientific research activities. We have to make a strong foundation at the school level as well when we work on improving our higher education infrastructure and facilities. National Talent Search Scheme was brought in this direction to identify and encourage school students having scientific aptitude to end in research. Unfortunately this Scheme has been scrapped since the year 2021. This has become a real hurdle to those students who want to pursue scientific research. I therefore urge that this Scheme should be implemented. I have already written a letter to Hon Union Minister for Education stressing this demand. I once again urge here that NTSS should once again be implemented in this country. Aspirants suitable for scientific research can be very well identified by this NTS Scheme. We come to know through newspaper reports that lots of discrimination that is taking place in these institutions of higher learning such as IITs and IISCs. If such a discrimination is seen in institutions of higher learning we cannot identify and encourage students who are eager to engage and pursue

scientific research. Particularly in IIT Chennai, there are incidents in the past, that students have committed suicide due to discrimination. In such a situation how will you encourage them to engage in scientific research? Sir, I wish to say that we can take forward the success story of Chandrayaan-3 only when we establish a strong and complete research infrastructure at all levels starting from our schools. Thank you.

***DR. THOL THIRUMAAVALAVAN (CHIDAMBARAM):** Hon Chairman Sir, Vanakkam. The whole world is astonished to see spectacular achievements made by our Indian space scientists. Particularly the Chandrayaan-3 spacecraft has invited the attention of the world. I wholeheartedly congratulate and felicitate the Project Director of Chandrayaan-3 Shri Veera Muthuvel, the Director of Propulsion Modules Centre Dr. Narayanan and all other Scientists who are behind this splendid achievement of India in the field of Space research. India is very much proud of them. Every Indian is holding his head high in esteem. Inventions and achievements of Scientists are meant for the entire humanity. Even if we claim as Indians and become proud as Tamils, Scientists are above all these identities. Their spectacular inventions will be very much useful for the mankind in future also. We are duty-bound to congratulate them wholeheartedly. I demand that Hon President should felicitate these Indian Scientists who made India proud by presenting Certificates of Felicitation or through Awards at the national level. There are several male and female Scientists along with these two Directors who worked tirelessly and sleeplessly toiling hard day and night for this wonderful achievement of Chandrayaan-3. Hon President should invite in person all these Indian Scientists and congratulate them personally. As an encouragement to the fraternity of Scientists, their salaries are to be enhanced. Their infrastructural facilities should be further expanded. I urge that the Union Government should give importance and encouragement to research activities in all the fields including Space Science. I also urge for additional allocation of funds

* English translation of the speech originally delivered in Tamil.

for the same. Our 60 years of achievements have made the world to look up to us with pride and astonishment. Shri Mayilsamy Annadurai made achievement during Chandrayaan-1. Smt. Vanitha made achievement in the Mission of Chandrayaan-2, Now, Shri Veera Muthuvel has made us proud by this spectacular achievement of Chandrayaan-3. It gives me immense happiness as they all belong to Tamil Nadu. Aditya-L1 is into the Orbit of Sun and this will go near Sun and engage in research. Smt. Nigar Shaji, the Project Director of Aditya L1 is a Muslim woman from Tamil Nadu. All these achievements are making the mankind feel proud.

HON CHAIRPERSON: All are Indians.

DR. THOL THIRUMAAVALAVAN: The place where Land Rover landed on Moon's surface has been named as 'Shiv Shakti point' by this Government. I demand that instead it should be named after Dr.Vikram Sarabhai who laid the foundation for this achievement. This should be called as 'Dr. Vikram Sarabhai point'. This will be the real tribute to all those Scientists who worked for this achievement. Pandit Jawaharlal Nehru has sown the seeds, Smt. Indira Gandhi worked for its development. All the Governments thereafter ensured that this work continued further. There should be no political interferences. Scientist should work independently. Do not add any political colour to this achievement. I wholeheartedly congratulate all the Scientists once again. Thank you for this opportunity.

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे (कल्याण): माननीय सभापति जी, आपने मुझे चन्द्रयान-3 पर चर्चा करने का अवसर प्रदान किया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। आज मैं इसरो के वैज्ञानिकों, कर्मचारियों, सरकार, देश और माननीय यशस्वी प्रधान मंत्री मोदी जी को बधाई देता हूँ कि हम चन्द्रयान-3 की लैंडिंग कर पाए। चन्द्रयान इसलिए महत्वपूर्ण नहीं है कि हमने इसे चांद के साउथ पोल पर पहुंचाया बल्कि इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि जहां दुनिया लूनर मिशन के लिए हजारों करोड़ रुपये खर्च कर रही है, वहीं हमारे देश ने सिर्फ 615 करोड़ रुपये में चन्द्रयान-3 को सफलतापूर्वक लैंड किया। मैं सबसे पहले इसरो की पूरी टीम का अभिनंदन करता हूँ। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस मिशन में ज्यादातर महिला वैज्ञानिकों की भागीदारी थी। इस नए सदन के लिए बहुत शुभ संकेत है कि कल ही हमने महिला आरक्षण बिल पारित किया है और आज यहां चन्द्रयान मिशन में महिलाओं की ज्यादा भागीदारी थी, पर चर्चा कर रहे हैं। मैं आज माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी को याद करना चाहूंगा, जिन्होंने सही मायने में चन्द्रयान-3 की नींव वर्ष 1999 में रखी थी। इसका नाम सोमयान से चन्द्रयान रखा गया। मुझे आज उनकी एक कविता भी याद आ रही है।

कदम मिलाकर चलना होगा,
बाधाएं आती हैं आएं,
घिरे प्रलय की घोर घटाएं,
पांव के नीचे अंगारे, सिर पर बरसे यदि ज्वालाएं,
निज हाथों में हंसते-हंसते आग लगाकर जलना होगा,
कदम मिलाकर चलना होगा।

मुझे लगता है कि ये जो कविता है कि सभी लोगों को साथ में लेकर हमें आगे जाना है, आज वही बात हमारे देश के यशस्वी प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी यहां पर कर रहे हैं। सबको साथ में लेकर 'सबका साथ, सबका विश्वास और सबका विकास' आज यहां पर कर रहे हैं। सबका प्रयास भी, क्योंकि सभी के प्रयासों से ही आज चन्द्रयान-3 मिशन सफल हुआ और हम सभी इस नये सदन में बैठे हुए हैं। यह भी एक बड़ी उपलब्धि है। जब हमने वर्ष 2019 का दृश्य देखा था तो मुझे याद है कि वहां पर सभी

वैज्ञानिक हताश हो गए थे। वर्ष 2019 में जब चंद्रयान-2 सफल लैंडिंग नहीं कर पाया तब हमारे प्रधान मंत्री जी ने सभी वैज्ञानिकों को सहारा दिया था।

माननीय सभापति : उनकी विफलता सिर्फ लैंडिंग में थी। वह अभी तक चल रहा है। वह इमैजेज भेज रहा है।

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे : सभापति महोदय, वह चल रहा है और वह फिर से थोड़े दिन में जागृत होने वाला है। मुझे लगता है कि फिर से रिसर्च करने के लिए शुरू हो जाएगा। मुझे लगता है कि उस समय प्रधानमंत्री जी ने उन वैज्ञानिकों को साहस दिया, गले से लगाया, हौसला दिया, प्रोत्साहित किया और कहा कि अब आप चन्द्रयान-3 की तैयारी कीजिए। वह वर्ष 2019 का दिन था और आज का दिन है, जब चन्द्रयान-3 ने सफलतापूर्वक वहां पर लैंडिंग किया। पूरे देश ने ही नहीं बल्कि पूरे विश्व ने आज भारत की ताकत को देखी। इस लैंडिंग को पूरे देश में और पूरे विश्व में एक गर्व और हर्ष का विषय माना गया।

अगर हम आजादी के बाद की बात करें तो हमने वह दृश्य देखा जब बैलगाड़ी और साइकिल पर विक्रम साराभाई और एपीजे अब्दुल कलाम जी ने रॉकेट के पार्ट्स लेकर वहां पर जाने का काम किया था। मुझे 'स्लमडॉग मिलियनेयर' फिल्म भी याद है, जिसमें भारत को सिर्फ एक गरीब राष्ट्र, जादूगरों और सपेरों का देश कहा गया था। लेकिन, आज का दिन है, जहां पर 'इसरो' जैसी संस्था और चन्द्रयान-3 की वजह से आज भारत को स्पेस मिशनस और इनोवेशन का देश कहा जाएगा। हमारा देश एक ऐसी मिसाल है, जो अपने इतिहास और संस्कृति के साथ नई टेक्नोलॉजीज पर भी काम करता है। इसका उदाहरण है कि हमने चन्द्रयान-3 के लैंडिंग स्पॉट का नाम 'शिव शक्ति प्वाइंट' रखा। आज चर्चा है भारत की सफलता और विज्ञान की सफलता की।

माननीय सभापति: आपका समय पूरा हो गया है।

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे : सर, मैं दूसरा सदस्य हूं।

माननीय सभापति: आप फोर्थ मेम्बर हैं।

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे : सर, इस सफलता के पीछे बहुत बड़ा इतिहास है।

माननीय सभापति: अभी आपकी पार्टी से दो सदस्य और बोलने वाले हैं।

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे : सर, दो नहीं हैं, एक ही हैं।

आज भारत को उत्कृष्ट और गौरवशाली बनाने में हमारे वैज्ञानिकों का हमेशा से सहयोग रहा है। चाहे वह आर्यभट्ट हों, जिन्होंने जीरो का अविष्कार किया, अब्दुल कलाम आजाद हों, जिन्होंने परमाणु परिक्षण किया, चरक हों, जिन्होंने पूरे विश्व को आयुर्वेद दिया, सी.वी.रमण हों, जिनको रमण इफेक्ट के लिए नोबेल पुरस्कार मिला, वराह मिहिर हों, जिन्होंने ट्रिगोनोमेट्री की खोज की, विक्रम साराभाई हों, जिन्होंने उस वक्त इसरो की स्थापना की, आचार्य कणाद हों, जिन्होंने परमाणु विज्ञान शुरू किया या होमी भाभा हों, जिन्होंने देश को न्युक्लियर प्रोग्राम दिया, ऐसे अनगिनत उदाहरण हैं। पिछले 2000 साल में भारत ने विज्ञान के माध्यम से पूरे विश्व में अपना परचम लहराया है। विज्ञान हमें अपने इतिहास से सीख लेने के लिए सिखाता है। अभी कुछ दिन पहले यहां पर जी-20 समिट का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। उसमें 'वसुधैव कुटुम्बकम्' एक नारा दिया गया था। यह नारा भी हमारे उपनिषद से लिया गया है, जो हजारों साल पहले लिखा गया था, लेकिन आज भी उसकी प्रासंगिकता है। मैं वह चित्र देख रहा था, जिसमें हमारे प्रधानमंत्री जी यूएस के प्रेसिडेंट जो बाइडेन जी को हमारी संस्कृति दिखा रहे थे। वह चित्र नालंदा विश्वविद्यालय का था। मैंने सोचा कि हमारे देश की संस्कृति और विज्ञान का गौरवशाली इतिहास इतना पुराना है, जिस पर हमें गर्व करना चाहिए।

मुझे लगता है कि चाहे हमारी संस्कृति हो, हिन्दू धर्म हो, सनातन धर्म हो, उस पर सवाल उठा रहे हैं।...(व्यवधान) मैं कहना चाहूंगा कि हमारे धर्म में विज्ञान है, हमारे त्योहारों में विज्ञान में है, हमारे शास्त्रों में विज्ञान है, हमारे मंदिरों में विज्ञान है और हमारी इमारतों में विज्ञान है।...(व्यवधान) मैं बस अपनी बात खत्म कर रहा हूँ। देखिए, सब लोग बोल रहे हैं। मैं एक उदाहरण देना चाहूंगा कि इन इमारतों में किस प्रकार से विज्ञान छिपा है।

माननीय सभापति : समय की भी पाबंदी है।

... (व्यवधान)

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे : महोदय, दिल्ली सरकार के नेता जहां पर आंदोलन करते हैं, जो उनका फेवरेट स्पॉट है – जंतर-मंतर । जंतर-मंतर की जो इमारत है, वह सन् 1724 में एस्ट्रोनॉमिकल ऑब्जर्वेटरी थी । जहां पर 300 साल पहले लोगों को ग्रहों से जुड़ी हुई जानकारी मिलती थी । इतनी पुरानी संस्कृति-धरोहर है, सनातन धर्म है ।...(व्यवधान)

माननीय सभापति : माननीय मंत्री जी, सात या सवा सात बजे बोलेंगे । हमारे सामने लगभग 25 या 30 मेंबर्स की लिस्ट है ।

श्रीकांत एकनाथ शिंदे : महोदय, हम प्राचीन काल में विश्व गुरु थे । पूरी दुनिया के स्कॉलर्स नालंदा में पढ़ने आते थे, तक्षशिला में आते थे, विक्रमशिला में आते थे । भारत पर जितने भी आक्रमण हुए हैं, वे हमारे नॉलेज रिसोर्सेज पर हुए हैं, हमारी सांस्कृतिक धरोहर पर हुए हैं । हम पहले ही जगत गुरु बन जाते, अगर मुगल और ईस्ट इंडिया कंपनी हमारी संस्कृति को नष्ट नहीं करते ।...(व्यवधान)

माननीय सभापति : अभी आप सेवन्थ सेंचुरी में हैं, 21वीं सदी में आइए ।

... (व्यवधान)

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे : महोदय, मैं 21वीं सदी पर आ रहा हूं । आज यहां पर जो अपोजिशन है, उनको आज हिन्दू शब्द, हिन्दू धर्म और सनातन धर्म से एलर्जी हो रही है ।...(व्यवधान) बिट्टू जी, आपको नहीं, आपके जो अलाइंस पार्टनर हैं, मैं उनके लिए कह रहा हूं । वह कुछ दिन पहले हिन्दू और सनातन धर्म को मलेरिया, एड्स, एचआईवी कह रहे थे । मुझे लगता है कि इस बात की कड़े शब्दों में निंदा करनी चाहिए । मैं एक उदाहरण देना चाहूंगा ।...(व्यवधान)

माननीय सभापति : माननीय सदस्य, मैं आपसे रिक्वेस्ट करना चाहूंगा कि आज के दिन माननीय अध्यक्ष जी ने बार-बार कहा है कि हम यहां पर पॉजिटिव वाइब्स पैदा करें ।

... (व्यवधान)

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे : महोदय, सनातन धर्म और विज्ञान किस प्रकार से जुड़े हुए हैं । मैं यहां पर हनुमान चालीसा का एक दोहा दोहराना चाहूंगा - “जुग सहस्र जोजन पर भानु, लील्यो ताहि मधुर फल जानू ।” इसका अर्थ है कि हनुमान जी ने एक युग सहस्र योजन की दूरी पर स्थित भानु यानी सूर्य को

मीठा फल समझकर खा लिया था। गोस्वामी तुलसीदास जी ने प्राचीन समय में ही बताया था कि सूर्य और पृथ्वी के बीच की दूरी कितनी है।...(व्यवधान)

माननीय सभापति : उन्होंने खाया नहीं था।

... (व्यवधान)

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे : महोदय, यह हमारा सनातन धर्म है। इस सनातन धर्म का अर्थ है, जिसका कोई अंत नहीं है। अगर कोई इसे खत्म करने की कोशिश करेगा, तो वह खुद खत्म हो जाएगा ... (व्यवधान)

सभापति महोदय, मैं एक कविता बोलना चाहूंगा। मैं यहां पर हमारे इसरो के वैज्ञानिकों के सम्मान में कुछ बोलकर अपनी बात समाप्त करूंगा। उन्होंने हार नहीं मानी और चन्द्रयान-दो की विफलता को चन्द्रयान-तीन की सफलता में तब्दील किया -

“जीतूंगा मैं ये खुद से वादा किया,
जितना सोचा था कोशिश उससे ज्यादा किया,
तकदीर भी रूठी पर हिम्मत न टूटी,
मज़बूत इतना इसरो ने अपना इरादा किया।”

मैं इसी के साथ यहां पर माननीय प्रधानमंत्री जी, पूरे देश और इसरो के सभी वैज्ञानिकों का बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूं, धन्यवाद अदा करता हूं कि आने वाले समय में हमें और ज्यादा उपलब्धियां मिलें और भारत पूरी दुनिया को फिर से रास्ता दिखाएगा। फिर से एक बार सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद।

माननीय सभापति : आपने इतना अच्छा भाषण दिया, उसके लिए मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं।

श्री रवनीत सिंह जी।

19.00 hrs

श्री रवनीत सिंह (लुधियाना) : चेयरमैन साहब, थैंक्यू। आज नए सदन में चन्द्रयान-3 के बारे में चर्चा हो रही है।

HON. CHAIRPERSON: Dr. Shrikant spoke for 14 minutes. राहुल जी याद रखिए।

... (Interruptions)

श्री रवनीत सिंह : सर, जब आप बैठते हैं तो जो यंग हैं, नौजवान हैं, आप उनको टाइम देते हैं। आज चन्द्रयान-3 की सफलता के बारे में चर्चा है। मेरे ख्याल से इसमें किसी पार्टी की बात नहीं, किसी भी सत्ता की बात नहीं और 140 करोड़ लोगों का योगदान है, जो आज इस चीज़ से खुश हैं। इसके अलावा एक बहुत बड़ा मुद्दा है, जो सदन और देश के सामने रखना बहुत जरूरी है और आपने समय भी दिया है। हमारी जो भी इंडियन फॉरेन पॉलिसी रही है, उसमें जवाहर लाल नेहरू जी से लेकर प्राइम मिनिस्टर मोदी जी तक हमेशा नॉन एलाइनमेंट मूवमेंट की तरफ चले हैं। खास तौर पर अगर मैं कांग्रेस पार्टी की बात करूं तो उसने भी इस पर बहुत कड़ा स्टैंड लिया है, जो कैनेडियन प्राइम मिनिस्टर ट्रूडो ने अपनी पार्लियामेंट में बोला है, मैं एक सिख हूं, इसलिए आज खड़ा हूं।

सर, सिख एक बहुत ही इमोशनल कौम है। इस देश की आजादी में उनका सबसे बड़ा रोल रहा है, इसलिए कोशिश की जाती है कि कैसे उसमें दरार डालें और उसको कैसे तोड़ें। ... (व्यवधान)

यह बहुत ही मजबूत कौम है, जिसने देश के लिए लाखों में अपनी शहादत थी। हमने मजबूती पाई और हमने हमेशा चाहे रशिया हो, उसमें अपनी लाइन ली है, चाहे चाइना हो, अपनी लाइन ली, चाहे रशिया-यूक्रेन की लड़ाई चल रही है, हमने उसमें भी अपनी लाइन ले रखी है। जो नाटो फोर्सेज हैं, वे एक तरफ ज्यादा मदद कर रही थीं, लेकिन फिर भी भारत ने अपना स्टैंड लेकर रखा। यह तकलीफ बहुत देशों को है। जो सेकंड वर्ल्ड वार के बाद कभी नहीं हुआ कि कैनेडियन प्राइम मिनिस्टर ने अपने सदन पार्लियामेंट में हमारे देश के खिलाफ बोला है और हमारे प्राइम मिनिस्टर के अगेंस्ट बोला है। ट्रूडो साहब के पिताजी भी प्राइम मिनिस्टर थे। वहां कुछ मिलिटेंटों ने कनिष्क एयर बंब ब्लास्ट किया था, जिसमें 300 से ज्यादा लोग मरे थे। उसकी इन्वेस्टीगेशन आज तक पूरी नहीं हुई है। निज्जर एक

बहुत बड़ा टेरेरिस्ट है, जिसने मेरे ग्रांड फादर का एसेसेनेशन किया है। जगतार हवारा उसका राइट हैंड था, जिसको वहां इन्होंने पनाह दी। वह खुद एक नशे के वॉर में, ड्रग के वॉर में और गैंगस्टर वॉर में मारा गया। अभी इन्वेस्टीगेशन भी चल रही है और आरोप हमारे देश की एजेंसियों पर लगा दिया। वहां पर कहा गया है और मैं उसका नाम भी इस पार्लियामेंट में नहीं लेना चाहता हूं। दूसरा एक टेरेरिस्ट है, जिसका नाम पन्नू है। उसने यह ऐलान कर दिया कि हम कनाडा में हिन्दुओं को नहीं रहने देंगे। यह एक बड़ी दरार डालने की कोशिश की गई है।

सर, मैं अपनी बात दो मिनट में खत्म करूंगा। एनआईए में पंजाब गवर्नमेंट ने जो लिस्ट दी है, सबसे टॉप मोस्ट वांटेड गैंगस्टर में, out of ten, eight are in Canada. वहां पर उनको पनाह दी हुई है और वहां उनको रखा हुआ है। वे हमारे पंजाब और इण्डिया में ड्रग भेज रहे हैं। जितने गुरुद्वारे हैं, जो भी पंजाबी गुरुनानक देव जी को मानते हैं, जिन लोगों ने उनको जाना है, उनके सैकड़ों गुरुद्वारे हैं, जो पन्नू या निज्जर जैसे के कब्जे में हैं। वहां से लाखों डॉलर पॉण्ड जो चढ़ावा चढ़ता है, वह टूडो की पार्टी को जाता है और उनके मंत्रियों को जाता है। इसलिए वह आधा परसेंट लोगों के हक में बयान दे रहा है। जहां तक सिखों की बात है तो हमारे 99.5 परसेंट लोग वहां पर बिज़नेस करते हैं। वहां उनकी लाखों एकड़ जमीन है, उनका बिज़नेस है, बड़े से बड़े कारोबार हैं। मैं इस सदन में उनसे कहना चाहता हूं कि टूडो और उनकी पार्टी को जाकर कहें। मैं यह क्यों कह रहा हूं, क्योंकि हिन्दुस्तानियों को यहां आना है, पंजाबियों को यहां आना है और यहां से रिश्तेदारों को वहां जाना है।

सर, आज सात लाख हमारे बच्चे वहां पढ़ रहे हैं। पैरेन्ट्स का वहां लाखों-करोड़ों रुपये बच्चों को पढ़ाने पर लग चुका है, लेकिन वहां वीज़ा बंद हो गया। कुछ लोग जो वहां गए हुए हैं, उनकी वहां पीआर होनी है। अगर दोनों देशों के संबंध खराब हो जाएंगे तो किसका नुकसान होगा? इसलिए सारे हिन्दुस्तानियों को वहां मुंहतोड़ जवाब देना चाहिए। हाँ, आप हमें बताइए, अगर आपका जहाज खराब हो गया है, उसकी वजह से आप यहां 36 घंटे गर्मी में रहे। क्या इसमें हमारी गलती है, जो आप वहां पार्लियामेंट में जाकर ऐसे बयान दे रहे हैं? मैं एक बात जरूर कहना चाहूंगा कि हम सिख...(व्यवधान)

माननीय सभापति : पिछली बार भी उनका जहाज खराब हो गया था। वर्ष 2018 में जब ये आए थे, तब भी इनका जहाज खराब हो गया था।

श्री रवनीत सिंह : सर, हम सदन से रिक्वेस्ट कर देते हैं और उनको नया जहाज ले देते हैं।

अब सर वो बातें नहीं रहीं।

माननीय सभापति : भारत सरकार की तरफ से, हमारी तरफ से, देश की तरफ से एक प्लेन उनको ले जाने के लिए भी ऑफर किया गया था।

श्री रवनीत सिंह : तब भी नहीं माने तो गलती उनकी है, हमारी थोड़ी ही ना है!

माननीय सभापति : आप भारत सरकार की फोरन पॉलिसी को सपोर्ट कर रहे हैं। ठीक है, आगे बढ़िए।

श्री रवनीत सिंह : सर, एक बात और है कि सिखों को बीच में क्यों लेकर आते हैं? उनका कोई भी कनेडियन, कोई भी गैंगस्टर, जो वहां टेररिस्ट है और इंडिया में छिपा है तो हम एक दिन में उसको वापस भेज देंगे। सिद्धू मूसेवाला का नाम सभी ने सुना है, उसके कत्ल का ऑर्डर कहां से हुआ और वह कहां बैठा हुआ है? वह कनाडा में बैठा हुआ है। जो भी किलिंग पंजाब में हो रही है, वह सारी की सारी कनाडा में बैठकर गैंगस्टर करवा रहे हैं। मैं एक बात कह दूं कि यहां 99.5 परसेंट लोग इस देश के साथ हैं और अमन पसंद हैं। जो आधा परसेंट लोग हैं, वे टूडो साहब के साथ हैं, क्यों? क्योंकि कनाडा के गुरुद्वारों से पंजाब में नशे का जो खेल चल रहा है, उसका सारे का सारा पैसा टूडो साहब की जेब में जा रहा है। चाहे जी-20 हो, चाहे कोई और हो, उसमें सबसे जरूरी बात क्या होती है कि टेरेरिज्म को कंट्रोल करना है। इस बार टूडो साहब ने जो बात की है, इससे कनाडा की छवि कहीं नहीं रहेगी। कनाडा तो उस देश का एक पपेट है। यह सब कुछ सीआईए के इशारे पर हो रहा है। मैं नाम नहीं लेना चाहता हूं। आज वह हिन्दुस्तान नहीं है जो 70 साल पहले हुआ करता था। जवाहर लाल नेहरू जी से लेकर मोदी जी और मनमोहन सिंह जी तक...

माननीय सभापति : कल आपने देखा होगा कि यूनाइटेड स्टेट्स और आस्ट्रेलिया ने उसके खिलाफ भी बोला है। ब्रिटेन भी बोला है।

श्री रवनीत सिंह : सर, आप ठीक कह रहे हैं, लेकिन उसकी इतनी हिम्मत नहीं है। मैं अंत में यह कह दूँ कि आज यहां तक हमारा देश पहुंचा है, आज हमारा देश दुनिया की एक ताकत है। इन देशों के सामने झुकने वाला नहीं है। हम पन्नू जैसे को सर्जिकल स्ट्राइक करके वहां से भी उठा सकते हैं, कोई भी गलतफहमी में कनाडा या कोई देश न रहे। अगर सिखों को बांटने की कोशिश करेंगे तो बहुत मुंहतोड़ जवाब उनको हमेशा दिया जाएगा।

आपने मुझे बोलने का समय दिया, इसके लिए मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के राज्य मंत्री; पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के राज्य मंत्री; प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री; कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय में राज्य मंत्री; परमाणु ऊर्जा विभाग में राज्य मंत्री तथा अंतरिक्ष विभाग में राज्य मंत्री (डॉ. जितेन्द्र सिंह): सभापति महोदय, मैं सुबह से सभी वक्ताओं को बड़े ध्यानपूर्वक सुन रहा था। इस चर्चा का प्रारम्भ माननीय रक्षा मंत्री जी ने किया। बड़ी संवेदनशीलता के साथ उन्होंने भारत की परम्परा और आधुनिकता का मिश्रण प्रस्तुत किया। एक सुखद संयोग है कि यह जो संसद का विशेष सत्र हो रहा है, इसमें पहले दो दिन जिन विषयों पर चर्चा हो रही है, यह एक तरह से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व की सरकार की प्राथमिकताओं को भी दर्शाता है। एक ओर महिला शक्ति वंदन बिल इस हाउस से पारित हो चुका है, कुछ ही समय में उसको राज्य सभा से भी पास कर दिया जाएगा। दूसरी चर्चा चंद्रयान को लेकर के हुई है।

जिस प्रकार आज सुबह जैसे ही हाउस की बैठक प्रारंभ हुई तो प्रधान मंत्री मोदी जी ने स्वयं यहां पर उपस्थित रहकर के कल रात्रि महिला आरक्षण बिल के पारित होने पर उसका अभिनंदन भी किया और अपने सच्चे मन से धन्यवाद भी प्रकट किया। ठीक उसी तरह जब वे अमेरिका यात्रा से लौटें तो दिल्ली पहुंचने से पहले उन्होंने बेंगलुरु जाकर चन्द्रयान की सफलता पर वहां के वैज्ञानिकों का अभिनंदन किया।

कुल मिलाकर ये दोनों विषय ऐसे हैं, जो इस सरकार की प्राथमिकताओं को भी दर्शाते हैं और जिस प्रकार भारत एक प्रगतिशील यात्रा पर निकल चुका है, उसका भी यह प्रतीक है। जहां एक ओर नारी सम्मान हमारी परंपरा, हमारी सभ्यता का एक हिस्सा रहा है, वहीं दूसरी ओर आधुनिक युग में किस प्रकार भारत के आने वाले अमृतकाल में नारी को इस विकास यात्रा में एक प्रमुख भागीदार बनाना है, वह इस बात का भी प्रतीक है। जिस तरह से चन्द्रमा को लेकर सदा अटकलें लगाई जाती थीं, हमारी कहानियों में, उपन्यासों में बताया जाता था कि चांद की धरती कैसी होगी, कैसे लोग बसते होंगे, कैसा दृश्य होगा, उन पहेलियों का वैज्ञानिक उत्तर ढूंढने का रास्ता भी चन्द्रयान ने ही हमवार किया।

जैसा कि आज सुबह कहा जा रहा था तथा शशि थरूर जी ने और अन्य कुछ हमारे मित्रों ने पूरी क्रोनोलॉजी बताई कि सबसे पहले सन् 1969 में चांद की धरती पर मानव के रूप में नील आर्मस्ट्रांग को उतारा था। वे वहां पर टहले भी थे। उन्होंने वहां पर पहुंचकर के वक्तव्य भी दिया जो बहुत प्रसिद्ध हुआ। उन्होंने कहा – “That is one small step for man, giant leap for mankind.” लेकिन हम सबके लिए, चाहे हम इस तरफ बैठें या उस तरफ बैठें, गर्व का विषय यह है कि नील आर्मस्ट्रांग वहां पर स्वयं होकर आए, टहलगोशी करके भी आए, लेकिन उनको वहां पर पानी नहीं दिखाई दिया। वह हमारा चन्द्रयान था जो जाकर के वहां पर जल होने का प्रमाण लेकर आया।

प्रो. सौगत राय (दमदम): मतलब, हम नील आर्मस्ट्रांग से भी आगे चले गए हैं?

डॉ. जितेन्द्र सिंह: हाँ, बिल्कुल आगे चले गए हैं। कुछेक मित्रों के द्वारा विषय उठाए गए हैं, उनका मैं बिन्दुवार उत्तर देने का प्रयास करूंगा। चूँकि यह खुशमय माहौल है इसलिए मैं पहले पांच मिनट के लिए दूसरी एक बात रखूंगा। चन्द्रयान की इस लगभग ढाई महीने की यात्रा में, चूँकि यह 14 जुलाई को गया था तो इसके बहुत महत्वपूर्ण पड़ाव रहे हैं। कुछेक ऐसे थे, जहां थोड़ी बहुत चिंता भी होती थी, एंगायटी भी होती थी, एप्रेहेंशन भी होती थी, जो संवेदनशील भी थे और यह अटकलें भी लगाई जाती थीं कि ऐसा होगा या नहीं होगा। उसमें सबसे पहला पड़ाव यह था कि उसको धरती के ऑर्बिट से निकलकर चन्द्रमा के ऑर्बिट में जाना था। लगभग 20 बार उसने धरती की परिक्रमा की और उसके बाद जैसा कहा गया कि केवल 600 करोड़ रुपये का यह मिशन था, जबकि रूस का उसी समय जो मिशन चल रहा था, वह 12 हजार करोड़ रुपये का था, यानी कई गुना ज्यादा था, लेकिन हमारी जो बौद्धिक क्षमता थी, cerebral resources were much bigger in proportion. इस तरह से उसने ग्रेविटेशन और फोर्सेस के माध्यम से 20 बार परिक्रमा की जैसे आप गाड़ी को न्यूट्रल पर लगाते हैं और पेट्रोल बचाते हैं। वह एक संवेदनशील क्षण था, जब उससे निकलकर दूसरे ऑर्बिट में जाना था। यह वैसे ही होता है जैसे आप गाड़ी चलाते-चलाते ट्रैक बदलते हैं और देखते हैं कि दूसरे ट्रैक पर जाते हुए कोई मिस हैपनिंग न हो जाए। वह पहला संवेदनशील क्षण था, जिसे उसने सफलतापूर्वक हासिल

किया, कामयाबी से उसको निभाया और वह चन्द्रमा के ऑर्बिट में चला गया, जहां उसने 20 सर्कल लगाए। बाहर से होते हुए धीरे-धीरे अंदर आकर सर्कल लगाए।

जब आखिरी क्षण थे, तो आप सभी ने टेलीविजन पर देखा। जब केवल 400-600 किलोमीटर की दूरी रह जाती है, तब उसकी रफ्तार 6000 किलोमीटर प्रति घंटा से घट कर 150 किलोमीटर हो जाती है और चार इंजन में से दो इंजन बंद हो जाते हैं। उससे रोचक क्षण भी होते हैं और थोड़े-से एंजाइटी वाले क्षण भी होते हैं। जब वह लगभग 100-150 मीटर सतह के करीब पहुंचता है, उस समय उसका कम्युनिकेशन हमारे साथ बंद हो जाता है। फिर यह इम्तिहान है कि हमने बिक्रम को किस तरह से प्रशिक्षित किया था? जैसे आप एक सैनिक तैयार करके फ्रंट पर भेजते हैं, तो मौके पर कब गोली चलानी है, यह उसके हाथ में है। वह हमारी परख थी कि वह वहां लैंड कर पाएगा या नहीं। क्योंकि जब वह बिल्कुल नजदीक पहुंच जाता है, तो फिर उसको दो-चार किलोमीटर के रेडियस में यह तय करने के लिए थोड़ा-सा समय मिलता है कि मैं कहां पहुंचूं और उसकी टाइम लाइन होती है। अगर आप गाड़ी स्वयं ड्राइव कर रहे हैं, तो आप उसे रोक सकते हैं, लेकिन वह नहीं कर पाएगा। वह टाइम लाइन से हट जाए, तो वह लैंडिंग मुलतवी हो जाती है, लेकिन वह क्षण भी बड़ा स्मूथली निभाया गया।

मैं यह घटनाक्रम इसलिए सुना रहा था कि मुझे सदन के साथ यह बात साझा करते हुए हर्ष है। शायद औपचारिक तौर पर यह पहली बार हो रहा है। जब आज भी हम यहां चर्चा कर रहे हैं तो कुछ ही घंटों के बाद हमें इस बात का इंतजार है कि क्या बिक्रम और प्रज्ञान अपनी नींद से जाग जाएंगे। इस वक्त सारा प्रयास उस ओर है। मैं चाहूंगा कि विवाद से ऊपर उठ करके हम चंद्रयान की दूसरे महीने की यात्रा के लिए प्रार्थना भी करें और प्रयास भी करें। अब से कुछ ही समय के बाद ज्यों-ज्यों यहां शाम ढलने लगेगी, सायं काल के साए लंबे होने लगेंगे, हम सभी रात की चादर ओढ़ कर सोने की तैयारी करेंगे, तो धीरे-धीरे चांद पर सूर्योदय होगा। क्योंकि वहां पर हमारा 14 दिन और उनका एक दिन बराबर है। अब वहां पर 14 दिन की रात समाप्त होने लगी है। अब भोर फटने का समय आया है। चिंता केवल यह होती है कि वहां पर रात में टेम्प्रेचर -150 डिग्री जाता है और दिन को +100 डिग्री टेम्प्रेचर रहता है। मैक्सिमम और मिनिमम टेम्प्रेचर में इतना अंतर है।

हमने सोलर बैट्रीज की व्यवस्था कर रखी है। हमारी बैट्रीज भरी हुई हैं और पैनल्स को इस दिशा में रखा है कि ज्योंही सूर्योदय हो, वह फिर से सूर्य की रोशनी को कैच करना शुरू कर दे। अब केवल हम सभी को थोड़ी-सी एंजाइटी होगी, जैसा कि मैंने कहा है कि पहले भी कुछ सेन्सिटिव क्षण थे, वह यह है कि हमारा जो कम्युनिकेशन सर्किट है, वह उस बैट्री से ऐक्टिवेट होना चाहिए। उस कम्युनिकेशन सर्किट को एक तरह से वेक-अप सर्किट कहते हैं। मान लीजिए जैसे एलार्म है, -10 डिग्री से ऊपर टेम्प्रेचर आ पाएगा, तभी वह सर्किट काम करेगा। इतनी ज्यादा ठंड में वह सर्किट काम नहीं करेगा, भले ही बैट्री भरी हुई है।

इसरो टीम के सारे साथी और हम सब इस मिशन से जुड़े हुए हैं और एक-एक क्षण घड़ी देख कर प्रतीक्षा कर रहे हैं कि जैसे सूर्य उदय होगा, तो वहां पर टेम्प्रेचर बढ़ना शुरू हो और वह ऐक्टिवेट हो। जैसे ही वह ऐक्टिवेट होगा, तो वेक-अप कॉल जाएगी। बिक्रम आंखे मलते-मलते जाग उठेगा और प्रज्ञान भी 15 दिनों की नींद के बाद उठ खड़ा होगा और फिर वह अदभूत बात होगी, जो आज तक कभी नहीं हुई है। चांद के साउथ पोल पर जा कर बिक्रम और प्रज्ञान का नींद में सोना और नींद से जाग कर फिर ऐक्टिव होना, पहली बार दुनिया में होगा।

मुझे विश्वास भी है और जिस प्रकार से लगन, निष्ठा और मेहनत से हमारे वैज्ञानिकों ने काम किया है, हम इसमें सफल रहेंगे।

कल जब सारे देश में महिला आरक्षण बिल के पास होने का जश्न मनाया जाएगा, प्रधान मंत्री मोदी जी का अभिनंदन किया जाएगा, तब हमारे पास शायद वह भी अवसर हो कि हम इस बात का जश्न मनाएं कि हिन्दुस्तान वह पहला मुल्क है, जिसने साउथ पोल पर बिक्रम और प्रज्ञान को भेजा। उनको नींद में सोने दिया और जब वह जगे तो उनको फिर से काम पर लगा दिया। अगर हमारी यह वेक अप और पोस्ट वेक अप एक्टिविटी सफल हो जाती है, कुछ ही घंटों के भीतर इसका पता चल जाएगा, तो हम दुनिया के पहले देश होंगे। उसके बाद चूंकि हमारा रोवर थोड़ा चलना शुरू कर गया है, उसने कोई 100 मीटर अपनी पॉजीशन बदली है तो मुमकिन है कि हम उसे थोड़ा और स्थान परिवर्तन करने में सफल रहे। फिर भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रयोग रहेंगे। उसमें तकनीकी तौर पर कुछ सॉयल

एक्सपेरिमेंट्स रहते हैं, जैसे सुबह हमारे कुछेक साथियों ने यहां पर बताया कि सल्फर, एलिमेंट्स और मिनरल्स को लेकर हैं। दूसरी श्रेणी के प्रयोग एनवायर्नमेंटल के हैं और तीसरी श्रेणी के प्रयोग सिस्मिक एक्टिविटीज के हैं। जैसे यहां पर भूकम्प आते हैं, भूचाल के झटके लगते हैं, वैसे ही थरथराहट वहां भी होती रहती है। अगर यह होता है तो हमारा second phase of Chandrayaan-3 is about to take off in the next few hours. The moment of anxiety now is that we are waiting for the wake-up call to get activated, and Vikram and Pragyan to respond to that alarm. Once they do, then the communication from the Earth will begin and we will be the first in the world to have accomplished this.

अब इसके बाद मैं अगली बातें करूँ, कुछेक बिन्दु जो उठाए गए, just to put the record straight. माननीय रक्षा मंत्री जी ने तो बड़े विस्तार से हमारी प्राचीन परंपरा को किस तरह से आधुनिकता के साथ जोड़कर एक मिश्रण भरी, संस्कृति स्थापित करने का प्रयास इस सरकार में हुआ, उसका आपके सामने एक चित्र रखा। कुछ-कुछ बातें उठाई गईं, लेकिन रोचक बात यह है कि हमारे कुछेक मित्रों की उस तरह से जो आलोचना थी, उस आलोचना में ही उत्तर था तो मुझे कोई उत्तर देने में कठिनाई नहीं है। उदाहरण के तौर पर हमारे मित्र शशि थरूर जी कह रहे थे कि हमारे यहां वैज्ञानिक बहुत प्रतिभाशाली थे। वे उस चित्र का उल्लेख कर रहे थे, जिसमें साराभाई बाइसाइकिल पर अपना सामान लेकर जा रहे थे। साथ ही साथ उन्होंने कहा कि ऐसा कहना मुनासिब नहीं कि सब कुछ वर्ष 2014 के बाद ही हुआ, तब भी हो रहा था। लेकिन जाने-अनजाने में वे यह भी स्वीकार कर बैठे कि हालत ऐसी थी कि साइकिल पर सामान ले जाना पड़ता था और वह वर्ष 2014 के पहले का दृश्य था।... (व्यवधान) वर्ष 1950 का दृश्य था। मैं वही कह रहा हूँ। वर्ष 1950 में कौन सी सरकार थी और प्रधान मंत्री कौन थे?... (व्यवधान) यही जवाब आ गया। यही जवाब है। क्योंकि साधनों का अभाव... (व्यवधान) वह कैसे पूरा हुआ, अभी आपको बताएंगे। अभी रात लम्बी है। अभी विक्रम के जागने तक हमने भी नहीं सोना है इसलिए बात लम्बी चलेगी। They were devoid of resources. They did not have resources. Even in those days in 1950, you had carriages, you

had trucks. The hon. Members will bear me out. The best means of carrying loads was not the bicycle. That is the difference between then and now. The answer lies in the question itself. ... (*Interruptions*) I am not yielding. आप बाद में पूछना ।... (व्यवधान) सर, बाद में करेंगे ।... (व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी : सर, मैं एक बात कहना चाहता हूँ ।... (व्यवधान)

माननीय सभापति : अधीर जी, आप इनके बाद ही बोलेंगे ।

... (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: Let him continue.

... (*Interruptions*)

DR. JITENDRA SINGH: He very rightly enumerated names of some of the woman scientists and to the amusement of the House pointed out in his own way.

यहाँ आरक्षण की आवश्यकता हो सकती है, लेकिन वहाँ नहीं है । वहाँ पहले से ही बहुत-सी विमेन साइंटिस्ट्स हैं । Again, the answer lies in the question itself. The women scientists that he has named are from the generation of scientists which has happened now, and not in those Nehruvian days which he was talking about.

Today, in fact, the Deputy Project Director of Chandrayaan-3 is a lady called Kalpana. वे यहाँ नहीं आ पाई but Veeramuthuvel was sitting over here in the gallery. I introduced him in the Rajya Sabha.

SHRI N. K. PREMACHANDRAN : You cannot do that.

DR. JITENDRA SINGH: That was just to make the House know him ... (*Interruptions*) Can I not say that he was there in the gallery? ... (*Interruptions*)

ठीक है, कोई बात नहीं ।... (व्यवधान) The idea was that the Members should also have a glimpse of him. I am not referring to him. I am not quoting him. He is now not there because he had to take a flight for Bengaluru.

माननीय सभापति : अलग अलग से उनको यहाँ बुलाया जाए, तो सारे मेम्बर्स उनसे मिल लेंगे ।

डॉ. जितेन्द्र सिंह : हाँ, हम ऐसा करेंगे । He has left now, but we will call him again. We will again host him with the Members.

The Aditya-L1 Mission is being headed again by a Project Director called Nigar Shaji. There are all women scientists who have come to the surface, who have come to the centre stage only in the last 10 years ... (*Interruptions*)

श्री अधीर रंजन चौधरी : क्या 10 साल पहले वे लोग पढ़ाई-लिखाई नहीं करते थे?... (व्यवधान)

डॉ. जितेन्द्र सिंह : हम उस पर आएंगे ।... (व्यवधान)

SHRI ADHIR RANJAN CHOWDHURY: Sir, these kinds of statements are being made by the hon. Minister ... (*Interruptions*)

DR. JITENDRA SINGH: I will give you the figures.

डॉ. निशिकांत दुबे (गोड्डा) : मंत्री जी को बोलते समय डिस्टर्ब नहीं किया जाता है ।... (व्यवधान)

DR. JITENDRA SINGH: I do not get disturbed. I am the last person to get disturbed ... (*Interruptions*)

But there is one thing. When you are discussing science, let us discuss it on the basis of facts, figures and statistics.

SUSHRI S. JOTHIMANI (KARUR): You are giving the figures... (*Interruptions*)

DR. JITENDRA SINGH: You are translating the figures into politics. I am simply giving you the figures. ... (*Interruptions*)

Just wait. Let more figures come out. You said that the ISRO budget and the space budget is on the decline. Now, the hon. Member will be kind enough to take down all these figures so that she can verify them later on.

The budget of the Department of Space in 2013-14 was Rs. 5,168.96 crore. I would repeat for her convenience. It was Rs. 5,168.96 crore. The budget in the current financial year is Rs. 12,543.91 crore, an increase of 142.68 per cent. Shall I repeat the figures?

SHRI ADHIR RANJAN CHOWDHURY: So what?

DR. JITENDRA SINGH: So what? If I do not say it, then also so what? There is a 142.68 per cent increase. So what? ... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Mr. Minister, please address the Chair.

... (*Interruptions*)

DR. JITENDRA SINGH: First, you asked for figures. Then, you are mixing figures with politics ... (*Interruptions*) This is for your satisfaction, Madam ... (*Interruptions*)

I am requesting the hon. Members to check these figures.

HON. CHAIRPERSON: Please address the Chair. It will be easier.

DR. JITENDRA SINGH: Mr. Chairman, Sir, the total budget for all the Science Departments is up by 172.55 per cent in the last nine years.

Please take down the figures. In 2013-14, the annual Budget for all the Science Ministries and Departments put together was Rs. 21,025.06 crore. In the current year, it is Rs. 57,303.69 crore.

So, when I talk of figures, you say that this is not acceptable. When I talk otherwise, then also you say that it is not acceptable. Rather, I have a grievance.

One of the Members said that there are so many scientists in South, they talk only English, they talk only Tamil, and they do not talk in Hindi. Nobody is imposing Hindi on them. Why I am having a grievance is that ISRO is one of the best bouquets of the composite culture presented by us. You look at the founding trio. We had Sarabhai, a son of Gujarat from where hon. C. K. Patil comes. We had Satish Dhawan, a Punjabi born in Srinagar, Jammu and Kashmir. In the immediate next generation, we had A.P.J. Abdul Kalam from Rameswaram, son of Tamil Nadu. Why are we demeaning this by saying that he spoke Tamil, he spoke English or he did not speak Hindi? Why are you saying this? Is it not amazing that the founding fathers 60 years ago were one Punjabi, one Gujarati, and one Tamilian. ... (*Interruptions*)

SHRIMATI KANIMOZHI KARUNANIDHI (THOOTHUKKUDI): This is exactly what we are trying to say. This is a diverse country, and we have to celebrate this diverse country. ... (*Interruptions*)

DR. JITENDRA SINGH: Absolutely. Thank you. I appreciate that. ... (*Interruptions*) Bhabha was there, but later on he shifted to atomic energy. ... (*Interruptions*)

Now, since Madam Kanimozhi has been very kind to compliment me like a gentleman, I have to return the compliment. ... (*Interruptions*)

SHRIMATI KANIMOZHI KARUNANIDHI: Gentlewoman, not a gentleman. ... (*Interruptions*)

DR. JITENDRA SINGH: Very soon, we will have our next launching station nowhere else but in her Constituency of Kulasekharapatnam in Tamil Nadu. I just solicit your cooperation. Nearly 90 per cent of land acquisition has been done, and 10 per cent is left out. You can easily use your good offices to persuade the State Government so that we can have a ceremony very soon, and you being the elected representative there would be our important guest. So, this is the spirit with which we are working. Somebody said in the morning, why Raksha Mantri ji spoke about scriptures. I have been telling wherever I go that ISRO is a work model which is worth emulating. Here is a team which never retires. A scientist in ISRO never retires/superannuates. He gives his life to the mission. If you see these pictures of landings and other successful missions, you find all the former Chairmen sitting side by side. They remain associated and they follow a cultural SOP which is not seen anywhere else but which is worth emulating. Before and after every landing, they pay obeisance at Tirupati and afterwards they celebrate success by distributing laddoo. इससे सुंदर, इससे पवित्र प्रथा, जिसमें सामूहिक भारत की पूरी संस्कृति झलकती है, क्या होगी? इसलिए संस्कृति को आधुनिकता तक ले जाने की इस यात्रा को आगे बढ़ाने का कारवां हमारा ISRO है। अगर हम संस्कृति को लेकर बात करते हैं, तो इसमें क्या हर्ज है?

There was another observation made by Mr. Karti Chidambaram who said: "Science and spirituality have a close relationship. But at the same time, the Raksha Mantri has sought to confuse that". By saying so he created further confusion by not letting us know what he meant. As far as I know, Swami Vivekananda said in very simple terms that science begins where religion ends

and religion begins where science ends. So, I think that lets go home, ponder on that, educate ourselves on that. Then he said very sarcastically because possibly he is also known to be an intellectual, "I am not sure whether after 1,000 years this new building of Parliament House will stand". Everybody has heard it. ...

(Interruptions)

PROF. SOUGATA RAY: He has expressed doubt. ... *(Interruptions)*

DR. JITENDRA SINGH: Yeah, he has expressed doubt that this new building that we have shifted in is unlike those monumental buildings and temples built by the earlier generations, and he compared it with this building and said: "Who knows whether after 1,000 years this will survive". My humble request is that all of us can wait for three more generations. Let the fifth-generation Chidambaram come to this House elected and decide whether he is in this House or other House.

Why should we be judgmental just to score a point or because that makes it a little bit spicy? We can use this. I can use this. If he is a second-generation politician, let us wait for the fifth generation of the same family. Whether the fifth-generation Chidambaram is there in this House or in the Upper House, let the future decide. What I am trying to say is that let us raise the level of this discussion instead of trying to hit below the belt. This is called hitting below the belt. I think I am quite competitive in doing that, but I am avoiding to do that. I just want to share some information. He also said that many people do not know where ISRO is. That is true. It is true that till a few years ago, whenever launching happened, in a remote column of a remote newspaper you would find the mention of Sriharikota. Nobody could figure out where Sriharikota was. This change has

happened only after 2020. Now, who was the Prime Minister or who was in the Government, I am not going to say this because that will create problems. In 2020, the gates of Sriharikota were thrown open. Aditya launching was watched by 10,000 spectators. You can verify this. The pictures and videos are there. On site, they were watching the launching with their naked eyes. It was the same place where earlier you had just 10 members of the team and all others were forbidden. Who did that? The previous Governments did that. That was the same Government whose Member is alleging this. The allegation is made by a Member of the Party which was responsible for that. During Chandrayaan launching, there were 1000 media persons at the site of launching. Suddenly, within 10 minutes of launching, there was a tweet from one of my friends from the Congress Party. Some of us are very active in tweeting, and so am I. The tweet was: What is the difference? Why this *halla gulla*? And the media person confronted me. He said, see, your friend from the Congress Party has written this tweet, "What is new"? Any response from your side? I asked him, you tell me when you came here last. He said that he was coming there for the first time. I said that this is new. Media was forbidden and everybody was forbidden before. So, that is the difference. All the stakeholders have been brought together. A healthy synergy has been sought to be made among startups, academia, researchers and industries. It is a belief and a considered view that we have to grow further, and we have to live up to global parameters. If we have to discharge a global role, we have to live up to global benchmarks and we have to devise global strategies.

PROF. SOUGATA RAY: You do not forget the failures.

DR. JITENDRA SINGH: I will come to that also. I thought you studied science better than me. Professor sahab is an honourable person to all of us.

श्री रमेश बिधूड़ी (दक्षिण दिल्ली): 10 साल पहले आपका क्या हाल था?... (व्यवधान) अब बढ़िया हो गए ।... (व्यवधान)

डॉ. जितेन्द्र सिंह : रमेश जी, ठहरो ऐकडेमिक बात चल रही है ।... (व्यवधान) ऐकडेमिक बात चल रही है ।... (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: A lot of misgivings are there related to Chandrayaan-2. It is better you clear all the cobwebs because it has been repeatedly said that it was a failure. In this discussion today, many hon. Members said that it is a failure. It is only one part that has failed. There are number of others things which are successful. It has still been rotating for three years.

DR. JITENDRA SINGH: I am glad that Professor has put this query, and I am sure that Professor will take pride in seeing that his student is capable of giving him a new thought, not teaching but a thought. So, Professor should be happy when he finds his student is turning into a teacher. It was not a failure because, as hon. Chairman has said, it is still working. At the last minute, the procedure which had to happen did not happen as it was calculated. Otherwise, it would not be communicating. In fact, Chandrayaan-2 and Chandrayaan-3 are talking to each other saying good morning to each other every morning. And even now, when we are waiting for Vikram and Pragyan to wake up, if the circuit gets charged, we are waiting for the temperature to rise, we will not be surprised if we see a good morning or a hello from Chandrayaan-2. Secondly, even if you go by statistics, as I said, in science let us talk by statistics, most of the other missions

which landed on the moon were unsuccessful in the first attempt, America being more than three times. We have been unsuccessful, if at all, only once.

Now, I settled the issue why ISRO was not known then and known now. But the important point is that it has given us multiple outcomes, First, huge investment in industry with a new policy has come. Second, there is a sense of belonging to the whole nation. Why was the whole nation glued to the TV screen? It was because it was whole of Government plus whole of nation. Every citizen felt as if it was his or her mission because this Government had liberated it from that veil of secrecy. I do not know why we had to work in that confidentiality for all these years when everything is being watched by Google. It was not giving us any reward, but we were restraining ourselves from getting the benefits of the resources available. That has been undone. Rather the same Member said, why not give ISRO fellowships? Actually, what happens in the Parliament also is, when we make up minds to score some political points, we sometimes tend to lose the factual points because the orientation then becomes more politically directioned. If he had just referred to us or referred to some source, he would have realized that the fellowships are being given. In fact, I was personally taking interest. I realized that among most of our training institutes, the best one is in Kerala. Of course, no doubt about it, it is from Mr. Premachandran's constituency. Trivandrum has one of the best institutes we have in space technology teaching with 100 per cent placement. It is a batch of about 160. The selection is done through IIT, JEE in the same format. But many people were not aware of it. So, I thought we should try to expand. Only three years back, I thought that we should

start from North-East and North. So, we started one similar centre in North-East in Agartala in the premises of NIT, Agartala. So, there is the same kind of Department, the same selection pattern through IIT, JEE and the same course. The other one from the Northern most territory is Central University of Jammu. So, we have already launched ourselves in expanding the range of academics as far as the teaching of space is concerned. Now, the other part is that what has happened now. I am not discussing Prime Minister. You only are discussing it again and again. I am not even naming anybody. But we have to trust somebody. We can trust the global parameters. Before 2014, and in fact before 2019 also, we had only four start-ups in Space Department.

After we opened up in 2020, we have 150 startups. The world is watching. It can be verified. The earlier ones like Skyroot have become lucrative entrepreneurs. If you see the startup scene as a whole, we were only 350 to 400 till 2014. Now, in nine years, we have gone up to 1,25,000, and we have more than 110 unicorns. Nobody has said that the earlier Governments did not do anything. It is not the intention also. The hon. Prime Minister has been reiterating that. Nobody has said that. I do not know why some of us sitting that side are very keen of feeling guilty to say, no, it happened only during our times. But the fact points it out. If you see the Independence Day Addresses of all the Prime Ministers, Nehru delivered 17 Independence Day Addresses. The present Prime Minister has delivered 10 so far. The intent and the priority of the Government in place is reflected in the Independent Day Address. That is a declaration of the intent of the Government of its future plans, priorities and flagship schemes.

In the 2014 Independence Day Address from the Red Fort, the Prime Minister's Address refers to *swachhata*, cleanliness and addresses the problem of urinary tract infection and other diseases happening in young adolescent girls. Many of them are suffering from avoidable agony because of the lack of toilets. It is again a scientific declaration. In 2015, the Prime Minister's Address on the Independence Day says, Start-Up India, Stand-Up India. The following year, there is a startup scheme.

प्रो. सौगत राय : उन्होंने 'स्टार्ट-अप भारत' क्यों नहीं बोला?... (व्यवधान)

डॉ. जितेन्द्र सिंह : ठीक है, उसे स्टार्ट-अप भारत कर दीजिए। यह अच्छी बात है।... (व्यवधान)।
think, we will accept it.

HON. CHAIRPERSON: The Government should consider it.

DR. JITENDRA SINGH: Yes, Sir, there is no problem. *Dada*, this happens when you are thinking of how to make a political counter. The casualty is the fact. You understand very well what I mean by saying this. You want me to deviate. But I am not that easily vulnerable to deviations. The next Address of the Prime Minister says, Digital India, Digital Bharat. Okay? It is again a scientific declaration. The next Address, the fourth one, says e-Governance. The subsequent Address says, deep sea mission. And two subsequent, consequent Addresses of the Prime Minister from the Red Fort are referring to deep sea mission. We have 7500 km. long coastal area, longest in the world, beginning from Odisha up to Maharashtra, Gujarat, Kutch. Nobody had ever looked at that.

HON. CHAIRPERSON: It is not the longest.

SHRI ADHIR RANJAN CHOWDHURY: It is one of the longest, not the longest.

DR. JITENDRA SINGH: Okay, one of the longest. But nobody had looked at that. The Samudrayaan has been launched a few years back. The huge wealth lies underneath, metals, minerals, bio-diversity. That is going to be discovered now.

Then, Gaganyaan finds mention in one of the Prime Minister's Addresses on the Independence Day when he said that India has decided to send the human beings. ... (*Interruptions*)

श्री अधीर रंजन चौधरी : वह पहले से है ।... (व्यवधान)

डॉ. जितेन्द्र सिंह : नहीं, इसकी अनाउंसमेंट इंडिपेंडेंस डे एड्रेस में हुई है । इसे चेक कीजिए ।... (व्यवधान) See, I do not know why you want to make this debate Nehru *versus* somebody? You are obsessed with it; I am not because I have the facts on my side. I am giving you the dates. I am making a very holistic, a very academic statement. Our Prime Minister's Address from the ramparts of Red Fort on the Independence Day is considered to be a declaration of intent by the entire world of the Government in place, whichever Party is there. Now, I am referring to the 10 Addresses from the highest forum and the theme they carried, which was primarily scientific. So, that establishes the kind of priority that this Government gives to science, the scientists and the scientific endeavours.

Now, there are two more things. I am coming back to the parameters. In startup, I was talking about startup ecosystem. Dada interrupted me in between. We have 1,25,000 startups but at the same time, the world has recognised us today, recognised Bharat, as number three ecosystem in startups. I am not saying this; Treasury Benches is not saying this; and Prime Minister Modi is not saying

this. The world is saying this. Now, should I tell them that do not say that we are number three because the Nehruvian followers will not like it? That is the logic. We are talking science. Even while discussing science, we are not talking logic.

Then comes the Global Innovation Index. It is one of the most respectable universal indices to measure a country's innovation capacity. We were at position 81 in 2014. So, in 65 years, we reached 81. I am not saying, 'which Government' 'which Prime Minister'. Please, spare me of this. I am talking like a student of science. But the fact is that today we are at 40. So, what I am trying to say is that this jump of 41 has happened only in the last nine years. Now, you will say why this has happened and it should not have happened because Nehru is not the Prime Minister. Please for heaven's sake, let us raise this debate. I can go on and on. I have read books on Nehruvian blunders beginning from the famous Himalayan Blunder which Brigadier Dalvi wrote after 1962. I have the same penchant to read books. But I am not getting into that because that is not the case, and this is something that each MP has to celebrate and we have to put our heads together. ... (*Interruptions*) The whole day it has been Nehru. ... (*Interruptions*)

Now, I come to space economy. In the times to come, when we say that in 25 years we will be on that pedestal, of course, the value addition has to come from somewhere. Where will it come from? It will come from those resources which have remained unexplored or underexplored. One is, of course, the huge ocean resource that I referred to, and the other is, of course, the Himalayan resource. We have vast Himalayan range. Three or four States are lying in the lap

of Himalayas, beginning from Uttarakhand, Arunachal Pradesh, etc. Aroma Mission has also given India a unique identity of Purple Revolution and agri-tech startups. In space economy, I have all the modesty to say that we are not a very big economy as of today. I did not wait for you to say that if Nehru was there, it would not have happened. I am saying, Nehru or no Nehru. ... (*Interruptions*) It is an eight billion US dollar economy today. But the second point is that we reached eight billion US dollar stage in 70 or 75 years. Our projection is that by 2040, we will be 40 billion. So, we reached eight billion US dollar in 75 years, and there will be a jump of up to 40 billion in the next fifteen years. If you do not believe me and think that the projection is being quoted inappropriately, see the last week's report of Arthur D Little (ADL). One of these projections is of the international agency. They have said that even though India is projecting that it might reach 40 billion US dollar by 2040, but their anticipation is that India will go higher up to 100 billion US dollar. This is a projection which was made by a non-Indian agency. According to them, India has started moving on a very fast track which did not happen earlier.

Bharat has started moving on a very fast track which did not happen earlier. Now, the world is recognising this. When the hon. Prime Minister was in Washington DC, it was the Americans who solicited that Indian astronauts should accompany them to the International Space Station. It means they believe the credibility of our astronauts. The Artemis agreement was solicited by them. They also put the offer that we should be part of their semiconductor consortium.

So, I am not saying anything subjectively. I am talking of what the world is saying. Now, the point is that you have something to celebrate like, ours is the fifth largest economy. We were the tenth largest economy in 2014. When we reached to the fifth largest economy, there were huge celebrations across India except for some of the cynics. But I was pleasantly amused that celebration also because we had overtaken the United Kingdom. Similarly, as was mentioned by the Raksha Mantri this morning, the same America which took off much earlier than us has today generated for us a revenue of 174 million US dollars by hiring our launching pad. And out of that, 157 million US dollars have happened only in the last nine years. It was almost 90 per cent.

You were talking of Himalayas. We are talking of oceans. We have a huge resource of biodiversity. But hon. Chairman, Sir, you know in 2014, the number of biotech startups in India were only 50. Today, it is 6,000. It is because we have entered into biomanufacturing. Now, in the next part also, let us put our heads together and try to understand why this has happened because many of us do not feel comfortable that it has happened. Our biotech economy in 2014 was 10 billion US dollars. So, in 74 years, it was 10 billion US dollars. Today, it is 80 billion US dollars, eight times higher in nine years. So, virtually, we have increased one billion every year and the projection is 150 billion US dollars by 2050.

Now, the question is, notwithstanding Nehru or not Nehru, something might have happened which made the world say India has gone on a fast-track.

जब कोई खिलाड़ी सुस्ता कर चल रहा था, जिसको दुनिया बहुत संजीदगी से नहीं लेती थी। अब वह इतनी तेज रफ्तार से दौड़ में आ गया कि दूसरे लोग चौकन्ना हो गए। आखिर हमें पूछना तो पड़ेगा कि उसने कौन सा बूस्टर खाया, उसको कौन सा दूध पिलाया गया, उसको कहां से ऊर्जा आई। मैं किसी प्रधानमंत्री की बात नहीं कर रहा हूं, लेकिन कुछ न कुछ तो हुआ होगा या कोई जादू की छड़ी चली होगी।

The world today is looking at us. Why the other countries have progressed is because they had not confined themselves only to the narrow domain of public sector. This is my belief also that time has come when the demarcation between public and private is going to vanish away. Today, we have heavy engagement of the industry in ISRO after the new policy came in four years ago. We have set up an interface agency called IN-SPACE - that stands for Indian National Space Promotion and Authorization Centre - which coordinates between private sector and public sector. The head of that is a person from corporate sector. He is working with one of the corporate houses and he is not a Government person.

PROF. SOUGATA RAY: There is some problem in Antrix Corporation.

DR. JITENDRA SINGH: That is a different thing. India has won that case. I will come to that later on. That is a legacy problem.

A new PSU has been set up called NSIL – New Space India Limited - to collaborate with the private companies, which has led to a sudden upsurge in investment. It has been thrown open. Coupled with this, the National Research Foundation of India of Bharat has been given a truly Bhartiya name called Anusandhan.

20.00 hrs

So, the name of Bharat National Research Foundation is Anusandhan National Research Foundation now and the hallmark is that nearly 80 or 75 per cent of the budget would be from the non-Government sources. If we have a budget of Rs. 50,000 crore for five years, then Rs. 36,000 crore will come from non-Government sources. It will be an umbrella body consisting of academicians, scientists, researchers and huge presence of industrial representation.

Also, keeping the Bharatiya context in mind, it will have representation from social sciences and humanities so that we do not lose out to our traditional ethos while deciding our future projects. It will also decide the kind of collaborations when we engage with our foreign alliances so that we remain globally competitive. It will have a Governing Body and an Executive Council. The Executive Council will be headed not by a Government Secretary but by ...

(Interruptions)

HON. CHAIRPERSON: The House was extended till 8 p.m. I seek the permission of the House to extend the time by another hour.

SEVERAL HON. MEMBERS: Yes.

DR. JITENDRA SINGH: Sir, as an honest student of research, I am trying to understand what might have happened which has brought this quantum leap, which has generated a world-wide interest in India. If there is something more to add, you can do that. But at least let us understand it. It is not just for saying that since this is the Government in place, this has happened. This Government has taken some measures. It has provided an enabling milieu which was lacking. We

had no dearth of acumen. We had so much of commitment. As was rightly mentioned by one of the Members, when Sarabhai was not given transfer facilities, he carried the baggage on his carriage. But we gave enabling environment so that they could put their potentials to the best use.

Secondly, the deficiency was at the level of policy planning and political leadership. We were waiting for other countries to come out with a new scientific application, use it and when it became popular, then we suddenly woke up.

20.02 hrs

(Dr. (Prof.) Kirit Premjibhai Solanki *in the Chair*)

For example, I mentioned it in the other House also, television came. It happened in America in 1950s. Dada knows more than me. The 1960 presidential debate was a determining point between Nixon and John Kennedy. Suddenly, John Kennedy turned the tables on Nixon on the basis of a television debate. Here in 1960, we were wondering what is TV, what is debate, where is the screen and from where they are speaking. We had never seen it and we had never heard of it. It came here close to 1970 and that was through Chitrahari in Delhi. In Tamil Nadu, it came in 1975 when the match happened. I was there in Chepauk when the test match happened. For the first time, a black and white telecast was put up. So, we waited for 15 years for a new scientific innovation to be adopted in this country.

Similar was the case with the computers. Today, look at quantum technology as one of the Members was mentioning. We are today among three or four nations, a league of nations, which are into quantum technology and we have institutionalised it through Indian Quantum Mission or Bharat Quantum

Mission which was rolled out only six months back. It is for you to decide which Prime Minister and which Government did it. It has happened now. In other words, it is a matter of pride for all of us. Now we have not only taken a giant leap but we are at the same level. In certain ways, we are even ahead of others.

If you take medical science, again going back to the State of Shri Premachandran, the Chitra Tirunal Institute is producing medical equipment which is not only world class but is cost effective also.

We have mastered this skill and shown it to the world how to develop world class space mission, world class scientific equipment and world class projects at the cost which is just one tenth of the costs of others. What I am trying to say is that there is something for which all of us to have to feel proud.

If we talk about only space, there are some landmarks which have been achieved. During the last nine years, we have not only confined ourselves to the launching of rockets. राकेट का लाँच होना अच्छा लगता है, एक अच्छा दृश्य बनता है। Seeing a spaceship going to the moon is a very romantic scene because it is a part of our fantasy. We have grown up seeing that. But there is much more in space technology than this.

Today, space technology has entered every household of our country. We have not confined ourselves only to the launching of rockets. आप एग्रीकल्चर सेक्टर देख लीजिए, सारा स्पेस टेक्नोलॉजी से चल रहा है, स्मॉल हेल्थ कार्ड चल रहा है। Of course, telemedicine is there. Smart cities, unmanned railway crossings, railway tracks, roads, disaster management etc. are there. We are number one in the world as

far as our disaster forecast and prediction is concerned. Earlier, only radar was used for weather forecast. Now, we have combined it with space technology.

I am not saying that this should not have happened earlier. But we have done it. Wherever we thought that we could do, we have done it to the best of our ability, the result of which is that our disaster inputs are now being received by neighbouring countries.

In 2017, precisely on 25th May, a South Asian satellite was launched, which was also popularly called as 'SAARC Satellite', which is providing inputs to all the neighbouring countries including Sri Lanka, Bhutan, Nepal, Bangladesh etc. Pakistan decided to remain out of it. It is to their disadvantage.

Somebody has said that Rs.600 crore is too much. Raksha Mantriji was trying to respond to that. I think the amount of money that we have saved by simply averting disasters is much more than the amount spent on Chandrayaan-3. The cost of launching of Aditya-L1 is just Rs.380 crore.

Somebody has already mentioned about the world record of launching of 104 satellites in one go. Some of our space projects are being cited as role models across the world. One of them is the SVAMITVA Scheme. It is a very fascinating programme by which you map land reforms. It eliminates corruption and brings in transparency. You do not have to approach a patwari or tehsildar and you can yourself access it. We are combining space technology with drones.

Similarly, the other programme which is being cited as a role model is Gati Shakti. This programme was started by this Government a few years back where we have multiple layers. Whenever you are starting a new project, automatically,

you get the information about the forests, rail tracks, rail pipes etc. So, you do not waste your time and money.

Some of our success stories are now being cited in the rest of the world as well. Somebody has said that scientists have gone abroad because you are not providing them enough. Yes, they went abroad because you did not have startup avenues for them; you did not have new institutes for them. If somebody did a course in space, either he had to get absorbed in ISRO or remain unemployed. Today, we have opened up that.

As a result, many of these young scientists are willing to come back. That is why, we have now started a programme called VAIBHAV under the Department of Science and Technology where we facilitate the return of a young scientist who wants to come back. If he wants to take up a Government job, we even give him relaxation in the upper limit of age. We are conscious of that fact. It is because of this, now, they are finding avenues here. In fact, this is going to be a reverse brain-drain.

I was referring to Mr. Premachandran's institute in Trivandrum where they got 160 admissions with 100 per cent placement. But, where is this placement? Out of the total number, 60 per cent went to NASA because you did not have the place to absorb them. Many of them are becoming startups. They are finding their own means. This is a whole ecosystem which has been brought by this Government. This also includes the New Education Policy which is also called the National Education Policy 2020. I said the other day that this National Education Policy should have happened several decades ago. I am not saying

that it should have happened in Nehru's time but it made us prisoners of our aspirations. Somebody objected to that. I explained to him. Suppose, my father wants me to become a doctor but I do not get admission after class 12, what do I do? I do B.Sc. either in botany or zoology. Then, after that, what do I do? I can go for civil services. If I do not get that, what do I do? I do M. Sc. Then, I will try for teaching job in university. If I do not get that, what do I do? I will do Ph.D. So, I get stuck up with that stream. This National Education Policy 2020 gives you the liberty to go by your aptitude and taste. As you evolve, you can also make a choice. After class 12, if I do not get the choice of my stream, subject, and profession, I can change my subjects. I can have economics and botany. I can have economics and literature. It has entry and exit. I can leave the college and come back.

Dada will be interested to listen. The Vice- Chancellor of the Cambridge University was the Professor of microbiology about five years back. He was from the same profession of medical education. Teachers do not retire in US. They carry on their job like *dada* continues. He was fond of me. Whenever he was in India, he would call me up. He told me: "Doc, I must compliment students from India. If I did not have students from Bharat, my Ph.D. would be closed. I have done all my Ph.Ds. from India. When I came out after having a meeting with him, there was another doctor with me. I said: "What is this? Was it a compliment or something else?" He said: "What do you mean?" I said: "The old gentleman does not know that in his country a boy or a girl will go in for Ph.D. only if he or she has decided to devote the rest of the life to research. Here, I go for Ph.D. for

a trophy.” If I get a Ph.D. in biotechnology there, I can come back and become a manager in a computer company. This disconnect between education, learning and skill, and the vocation you follow was happening because of the Old Education Policy. You produced a huge lot of population who came to be very infamously known as ‘educated unemployed’ sitting at *dharnas* outside all the political offices.

So, this whole ecosystem is going to change the entire face of India and make it globally much, much more acceptable, competitive. Then, we say in the next 25 years, we will be reaching that spot and we have already started this journey. The world is looking up to us. They days have gone when India was looking for queues and waiting to be led by the others. Today, the world is ready to be led by Bharat under the leadership of Prime Minister Modi.

Thank you, Sir.

SHRI ADHIR RANJAN CHOWDHURY (BAHARAMPUR): Thank you, Sir. Already, we have got a plentiful of rigmarole statements from our hon. Minister. He has already completed a journey from Alpha to Omega to convince us that everything in this dispensation is going hunky-dory.

But that ground situation is at variance with those congratulatory remarks so nicely made by hon. Minister.

The issue is that today we have engaged ourselves in the discussion on Chandrayaan-3. You know that all the Indians are proud of our space exploration of our country. On August 23, 2023, the entire country was waiting with bated breath to observe the soft landing of Vikram on the surface of the earth. The lander module Chandrayaan-3 while de-boosting, which reduced the orbit to 25 x 134 km around the moon, then powered descent began at 5.45 p.m. on August 27. A few tonnes of that landing also caught our imagination. Rough braking phase I; second is the attitude hold phase; third is the fine braking phase; and the fourth is the terminal descent phase. There was a talking point across the nation about the 15 minutes of terror when all the people of our country were praying to God or to the supreme being to ensure that there was a decent landing on the surface of the moon.

We have observed vividly the horizontal position of the lander to the vertical position before gentle descending. Certainly, now Vikram and Pragyan are in deep sleep. Certainly, all the people of our country will be praying again for their waking up afresh. Certainly, it will be our prayer also.

First of all, I must propose to this Government, to the Minister, and to the House. हमारे देश की राष्ट्रपति अपने नेतृत्व में इसरो के सारे साइंटिस्ट्स, जिन्होंने चंद्रयान-3 का विजन सफल किया, उन सबके लिए एक समारोह सभा का आयोजन करें, जिनको हम 'फेलिसिटेशन' कहते हैं। यह महामहिम राष्ट्रपति जी द्वारा किया जाए, राष्ट्रपति भवन में किया जाए और वहां हम सभी एमपीज को बुलाया जाए, क्योंकि देशवासियों के साथ-साथ हम सब भी तहेदिल से सारे साइंटिस्ट्स को संवर्धना देना चाहते हैं। क्यों हर चीज में हमें हमारे देश की राष्ट्रपति जी नदारद देखने को मिलती हैं।

डॉ. निशिकांत दुबे : सर, मेरा प्वाइंट ऑफ ऑर्डर है। नियम 352 (6) के अनुसार डिबेट को इंप्लूएंस करने के लिए राष्ट्रपति का नाम या उनकी जानकारी इस सदन में नहीं देनी है।

श्री अधीर रंजन चौधरी : सर, मैंने राष्ट्रपति जी का नाम नहीं लिया है।

डॉ. निशिकांत दुबे : सर, ये क्यों सजेशन दे रहे हैं?

राष्ट्रपति क्या करेंगे, क्या नहीं करेंगे, ये क्यों सुझाव दे रहे हैं?... (व्यवधान) ये डेरोगेट्री है।... (व्यवधान)

SHRI ADHIR RANJAN CHOWDHURY: I have not mentioned the name of the hon. President. ... (*Interruptions*)

माननीय सभापति: ठीक है। अधीर रंजन जी, आप विषय पर बोलिए।

... (व्यवधान)

डॉ. निशिकांत दुबे : क्या ये कह रहे हैं कि राष्ट्रपति करें, राष्ट्रपति बुलाएं? क्यों हर बात में राष्ट्रपति को लाया जाता है? ये डेरोगेट्री है।... (व्यवधान)

श्री राकेश सिंह (जबलपुर) : सभापति महोदय, इन्होंने कितने राष्ट्रपतियों को बुलाया?... (व्यवधान)

माननीय सभापति : हमारे प्रधानमंत्री जी और सबके द्वारा इसरो के सभी वैज्ञानिकों का सम्मान किया गया है। जहां कहीं भी जरूरत पड़ेगी, ऐसा होगा। मगर पॉलिटिकल स्टेटमेंट नहीं देना चाहिए। आप अपनी बात शुरू कीजिए। Kindly confine to the subject.

... (व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी : महोदय, इसमें गलत क्या है? मैंने कहा है कि हमारे राष्ट्रपति जी की अगुवाई में राष्ट्रपति भवन में इसरो के सभी वैज्ञानिकों को बुलाया जाए। हम सब वहां जाएं और हम सभी मिलकर हमारे वैज्ञानिकों को सम्मान दें। इसमें गलत क्या है, अन्याय क्या है? आप ये तो बताइए?... (व्यवधान)

माननीय सभापति : मैं आपकी संवेदना का संज्ञान लेता हूं, मगर पॉलिटिकल स्टेटमेंट मत दीजिए।

श्री अधीर रंजन चौधरी : महोदय, कोई पॉलिटिकल स्टेटमेंट नहीं है। मैं दिल की बात करता हूं।... (व्यवधान)

माननीय सभापति : मंत्री जी, क्या आप कुछ बोलना चाहते हैं?

डॉ. जितेन्द्र सिंह : महोदय, अगर अधीर जी का सुझाव नोट भी कर लिया जाए, तो ये प्रश्न उठेगा कि नेहरू जी 17 साल थे, उन्होंने ही स्पेस का काम शुरू किया, फिर इंदिरा जी ने सन् 1969 में इसरो कायम किया। आप सुबह से बोल रहे हैं। अगर उस समय ये प्रेसीडेंस स्थापित कर देते, तो आज चल रहा होता, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।... (व्यवधान)

माननीय सभापति : आप विषय पर बोलिए।

... (व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी : मंत्री जी, शायद आप जानते हैं कि हमारे देश में प्रेसीडेंस बनाने वाला एक ही आदमी है।... (व्यवधान)

माननीय सभापति : आप इस प्रकार की टिप्पणी मत कीजिए। विषय पर बोलिए।

... (व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी : महोदय, सन् 1984 में जब राकेश शर्मा जी अंतरिक्ष में गए थे, आपको याद होगा, उस समय की तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी जी ने उनसे पूछा था कि राकेश वहां से हिन्दुस्तान को देखकर आपको कैसा लग रहा है। उन्होंने जवाब में कहा कि 'सारे जहां से अच्छा'।...(व्यवधान) आप बार-बार टोककर मेरा समय बर्बाद मत कीजिए।...(व्यवधान)

महोदय, मैंने इसलिए प्रधानमंत्री जी की बात की है, इसलिए राष्ट्रपति जी का जिक्र किया है।...(व्यवधान)

माननीय सभापति : ठीक है, संक्षिप्त टिप्पणी करिए।

... (व्यवधान)

डॉ. जितेन्द्र सिंह : महोदय, राकेश शर्मा जी का मिशन हिन्दुस्तानी मिशन नहीं था। वह एक सोवियत मिशन था। वह अपनी कैपेसिटी में गए थे। जो गगनयान है, उसके नट-बोल्ट से लेकर एस्ट्रोनॉट तक हिन्दुस्तानी होगा।...(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी : क्या आप रशिया से हथियार नहीं लेते हैं? हमारे देश की फौज के पास जो हथियार है, वह 60 से 70 प्रतिशत रशिया मेड है।...(व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: Adhir ji, you kindly address the Chair.

श्री अधीर रंजन चौधरी : आपके पीछे जनरल वी. के. सिंह साहब बैठे हुए हैं, उनसे पूछिए। क्या आप रशिया से हथियार नहीं लाते हैं? क्या क्रायोजेनिक इंजन रशिया से नहीं लाते हैं?...(व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: You address the Chair.

श्री अधीर रंजन चौधरी : महोदय, मैं तैयार हूं।...(व्यवधान) मंत्री जी कर रहे हैं, मैं नहीं कर रहा हूं।...(व्यवधान) मंत्री जी को ...* सिखाना जरूरी है।...(व्यवधान)

श्री राकेश सिंह : इस शब्द को वापस लीजिए।...(व्यवधान)

माननीय सभापति : ...* शब्द को रिकॉर्ड से हटाया जाए।

... (व्यवधान)

* Not recorded.

श्री अधीर रंजन चौधरी : महोदय, मैंने इसलिए राष्ट्रपति जी का जिक्र किया है, उसके पीछे एक वजह है। अगर मंत्री जी ध्यानपूर्वक सुनेंगे, तो मुझे खुशी होगी।

मंत्री जी, ज़रा मेरी बात सुनिए। "Madhavan, what evidence are you going to show before the world that we reached the moon?" किसने पूछा था? एपीजे अब्दुल कलाम जी ने। Who was Madhavan Nair? He was the Chairman of ISRO prior to the launch of Chandrayaan-1 in 2008. डॉक्टर कलाम ने क्या कहा था? डॉक्टर कलाम ने उनको सुझाव दिया था।

"When we carried out missions to Everest and Antarctica, we placed our flag there. In the case of the Moon mission, we are relying to convince the world with a lot of digital data. Don't you think we should do something more?"

राष्ट्रपति जी इसरो के चेयरमैन को पूछते हैं। कलाम साहब एक रेस्पेक्टेड साइंटिस्ट थे। माधवन नायर का बयान है that this one simple question modified his entire perspective – giving birth to the concept of the Moon Impact Probe, carried aboard Chandrayaan-1. It means that it was the Moon Impact Probe which सबसे पहले चांद की सतह पर टक्कर मारी थी।

Chandrayaan-3 lands on the Moon today. We recall when India first planted a flag on the Moon. Shri Atal Bihari Vajpayee ji announced India's Moon Mission in his Independence Day speech in 2003. This would be India's first foray outside Earth's gravitational pull and the most challenging task undertaken by the ISRO until then. Five years after Vajpayee's announcement on October 22, 2008, a PSLV blasted off from ISRO's launch site at Sriharikota, beginning Chandrayaan-1's journey to the Moon. The PSLV initially placed Chandrayaan-1 on a high

elliptical orbit around the Earth. Over the next three weeks, the spacecraft carried out some highly complex, extremely precise manoeuvres to finally orbit the Moon. India's maiden attempt to put a spacecraft into a precise orbit around the Moon was a complete success, but this was not enough. The MIP, with the national flag inscribed on it, comprised three instruments – a mass spectrometer, a camera and an altimeter.

सर, मैं राष्ट्रपति जी की बात क्यों कर रहा हूँ, आप सुनते जाइए । The MIP was scheduled to be dropped on the lunar surface on November 14, 2008. An hour before this sequence was to be initiated, Dr. Kalam entered ISRO's Control Room at Peenya, Bengaluru. Nayar depicted the scenario – “I arranged spiced buttermilk – his favourite – for him and explained the details of the mission. He went around the newly built control room and appreciated the internal architecture as well as the sophisticated instrumentation. Dr. Kalam was excited to see the most modern set-up and remarked that he felt as if he was in wonderland.” मैं इसलिए कह रहा हूँ कि वर्ष 2008 में, India entered the elite club of space exploration countries. ... (*Interruptions*)

DR. JITENDRA SINGH: In other words, you are complimenting Shri Atal Bihari Vajpayee for having cleared the Chandrayaan Programme and you are also complimenting Dr. A.P.J. Abdul Kalam, former President, for having taken a close follow up. Both of them were elected by the BJP.

SHRI ADHIR RANJAN CHOWDHURY: Absolutely. I must appreciate it. Before returning to Delhi, however, he made a notable suggestion – to name the impact site after Pandit Nehru, on whose birthday the landing was made and whose

vision was crucial to the creation of ISRO. After receiving appropriate permissions from the Government, the site was named Jawahar Sthal.

मैं इसलिए बोल रहा हूँ कि डॉक्टर कलाम जी ने अपनी तरफ से यह सिफारिश की और उसके बाद जवाहर स्थल बना। ...(व्यवधान) हर बात पर अगर मंत्री जी टोकते रहेंगे तो कहाँ जाएंगे।

DR. JITENDRA SINGH: This is precisely the difference. We did not name it Modi Point. We have named it Shiv Shakti Point and Tiranga Point. You made it Nehru Point and Jawahar Point.

श्री अधीर रंजन चौधरी : बहुत अच्छा किया।

मैंने यह कहा है कि अब्दुल कलाम जी ने यह सिफारिश की थी। उनके कहने पर ही यह हुआ। ...(व्यवधान) उनको सम्मान देते हैं।

DR. JITENDRA SINGH: No. It was the UPA Government which cleared this decision. The President is no way privy to this decision. The decision was taken by the then PMO headed by Dr. Manmohan Singh. Please do not mislead the House.

SHRI ADHIR RANJAN CHOWDHURY: I am not misleading the House.

DR. JITENDRA SINGH: Department of Space is directly under Prime Minister's Office and the decision was taken by the then PMO. It was cleared.

SHRI ADHIR RANJAN CHOWDHURY: There is a proverb that sometimes the chicken crows as if because of his crowing the sun rises. मुर्गा बांग देता है और उसकी बांग के बाद सूर्य उदय होता है तो मुर्गा सोचता है कि उसकी बांग पर ही सूर्य उदय होता है। आप लोगों के साथ भी यही बात है। ...(व्यवधान) आप लोग बुरा मत मानिए। नेपोलियन बोनापार्ट का नाम तो आप लोगों ने सुना ही होगा। नेपोलियन बोनापार्ट वॉटरलू की जंग में समाप्त हो गए।

माननीय सभापति : आप चंद्रयान पर अपनी बात कहिए। आप डेवियट मत होइए, चंद्रयान पर बात कहिए।

श्री अधीर रंजन चौधरी: सर, एक मिनट। उनकी आत्मा पुनर्जागृत हो जाती है और पहले अमेरिका गए और अमेरिका देखने के बाद वह कहते हैं कि अमेरिका में इतना हथियार और असलाह है, अगर यह मेरे पास होता तो वॉटरलू का युद्ध नहीं होता। उसके बाद वह घूमते हुए इजराइल में आए तो उन्होंने टिप्पणी की कि अगर इजराइल की मौसाद जैसी खुफिया एजेंसी हमारे पास होती तो हमें कोई हरा नहीं सकता था। उसके बाद वह हिन्दुस्तान में आए और मोदी जी के जमाने के सारे दृश्य देखने के बाद उन्हें यह लगा कि अगर मोदी जी की तरह का इवेंट मैनेजमेंट होता तो वॉटरलू के युद्ध के बारे में किसी को पता भी नहीं चलता।

माननीय सभापति : अधीर जी, आप विषय पर बात कीजिए।

SHRI ADHIR RANJAN CHOWDHURY: India's experience in rocketry began in ancient times when fireworks were first used in the country, a technology invented in neighbouring China, and which had an extensive two-way exchange of ideas and goods with India, connected by the Silk Road. Military use of rockets by Tipu Sultan during the Mysore war against the British inspired William Congreve to invent the Congreve rocket, predecessor of modern artillery rocket, in 1804. After India gained independence from British occupation in 1947, Indian scientists and politicians recognised the potential of rocket technology in both defence applications, and for research development. Recognising that a country as demographically large as India would require its own independent space capabilities, and recognising the early potential of satellites in the fields of remote sensing and communication, these visionaries set about establishing a space research organisation. This is the history.

In 1947, Homi Bhabha wrote to the then Prime Minister, Jawaharlal Nehru to set up a separate branch of science for atomic energy. Shortly after, the Atomic Energy Commission came into existence in 1948. Bhabha was in charge of the Commission. Nehru famously said: “It is science alone that can solve the problems of hunger and poverty, of insanitation and illiteracy, of superstition and deadening custom and tradition, of vast resources running to waste, or a rich country inhabited by starving people. Who indeed could afford to ignore science today? At every turn, we have to seek its aid.”

माननीय सभापति : आपको बोलते हुए काफी समय हो गया कृपया कनक्लूड कीजिए ।

श्री अधीर रंजन चौधरी : सर, मैं सुबह से सभी को सुन रहा हूँ और मैं यह कहना चाहता हूँ और इंडियन स्पेस ओडिसी को बताना चाहता हूँ । In 1963, the first sounding rocket was launched from the Thumba Equatorial Rocket Launching Station in Kerala. In 1969, the Indian Space Research Organisation was founded. It replaced the Indian National Committee for Space Research set up by the Government of India in 1962. In 1975, the first Indian satellite, Aryabhata, was launched into space from a Russian facility on April 19.

In 1979, the first Indian experimental remote sensing satellite, Bhaskara-I was placed in orbit with TV cameras on board to study hydrology, forestry and geology. In 1980, Satellite Launch Vehicle-3, India's first experimental satellite launch vehicle, was successfully launched from Sriharikota. In 1982, Communications satellite INSAT-1A was launched. In 1984, as part of a joint Indo-Soviet Mission, Indian Cosmonaut Rakesh Sharma spent over a week at Salyut 7, a Russian orbital station. In 1987, first developmental flight of

Augmented Satellite Launch Vehicle (ASLV) failed to send SROSS-1 into orbit. In 1988, Indian Remoting Sensing Satellite IRS-1A and communications satellite INSAT-1C were launched. In 1992, ASLV was successfully launched placing SROSS-C in orbit. In 1993, first developmental flight of Polar Satellite Launch Vehicle (PSLV) failed to place IRS-1E in orbit. In 1994, PSLV was successfully launched. In 1999, PSLV launched more than one satellite for the first time. In 2001, first developmental flight of GSLV injected GSAT-1 into a geosynchronous transfer orbit. In 2002, PSLV launched India's first dedicated meteorological satellite Kalpana-1. In 2003, PSLV put IRS-P6 carrying 1,360 kg payload into orbit. In 2004, first operational flight of GSLV successfully launched the 1,950 kg EDUSAT. In 2005, first mission took off from the second launch pad at Sriharikota. In 2007, after significant hardware upgrade, PSLV successfully launched four satellites including India's Cartosat-2 and SRE-1. In 2008, India's first lunar probe, Chandrayaan-1 was launched successfully aboard the upgraded PSLV-XL. In 2013, PSLV 25th flight launched the Mars Orbit Mission spacecraft. In 2014, Launch Vehicle Mark-3 previously known as Geosynchronous Satellite Launch Vehicle-Mark 3 launched the Crew Module Atmospheric Re-entry Experiment.

HON. CHAIRPERSON: Kindly conclude now.

श्री अधीर रंजन चौधरी : सर, ... * क्यों कर रहे हैं? आपने उनको तो इतना मौका दिया है। मैं तो सारे विपक्ष की तरफ से बोल रहा हूँ।

* Expunged as ordered by the Chair.

In 2016, ISRO successfully test-fired its scramjet engine on board. मैं आपके जमाने की बात कर रहा हूँ। आपको तो खुशी होनी चाहिए।

In 2017, a variant of LVM3 with a functional cryogenic stage successfully launched GSAT-19 in its first orbital test flight. In 2018, second orbital test flight of LVM3 with upgraded High Thrust Vikas Engine (HTVE) launched GSAT-29. Then, in 2019, 2020, 2021, 2022 and 2023 यह सिलसिला चलता है। यह किसी एक सरकार की या एक व्यक्ति की कहानी नहीं है। जिस तरीके से आप लोग भजन कर रहे हैं। भजन करने की यह जगह नहीं है। हमारे जो साइंटिस्ट्स हैं, उनकी मेहनत से, उनके खून-पसीने से आज हम इस कामयाबी तक पहुंच पाए हैं। इसकी सबको सराहना करनी चाहिए। सिर्फ ... * करने से यह सब नहीं हुआ है।

माननीय सभापति : ऐसे मत बोलिए। पूरा सदन साइंटिस्ट्स की रिस्पेक्ट करता है।

... (व्यवधान)

डॉ. जितेन्द्र सिंह: सभापति महोदय, मुझे बताया गया है कि मैं लगभग डेढ़ घंटे तक बोला हूँ तो मेरी प्रार्थना है कि उसमें गिना जाए कि कितनी बार मैंने मोदी जी का नाम लिया और कितनी बार इन्होंने नेहरू जी का नाम लिया है। ... (व्यवधान) ये तो सिर्फ नेहरू जी के ऊपर ही चर्चा कर रहे हैं।

श्री अधीर रंजन चौधरी : सर, वर्ष 2023 में नेहरू जी हैं क्या? मैंने उनका भी जिक्र किया है। क्या वर्ष 2023 में नेहरू जी हैं?... (व्यवधान)

डॉ. निशिकांत दुबे : सर, मेरा एक पॉइंट ऑफ ऑर्डर रूल 352 है। ... (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: I am asking him to conclude.

डॉ. निशिकांत दुबे: सर, इसे कार्यवाही में निकलवाइए। ... (व्यवधान)

माननीय सभापति: निकाल देंगे। निशिकांत जी, हम रिकॉर्ड से निकलवा देंगे।

... (व्यवधान)

* Expunged as ordered by the Chair.

डॉ. जितेन्द्र सिंह: सभापति महोदय, आदरणीय प्रधान मंत्री मोदी जी ने एक संस्कृति को जन्म देने का प्रयास किया है। अगर आप कुल मिलाकर देखें तो देशभर में कितनी ही संस्थाएं एक ही परिवार के नाम पर हैं। वह अपने में अलग कहानी है। हर कॉलेज का नाम उसी परिवार के नाम पर है, हर विश्वविद्यालय का नाम उसी परिवार के नाम है, हर स्कूल का नाम उसी परिवार के नाम पर है, हर वैज्ञानिक संस्थान का नाम उसी परिवार के नाम पर है तथा हर एयरपोर्ट का नाम उसी परिवार के नाम पर है तो मोदी जी ने उस प्रथा को, उस परम्परा को बदलकर एक नई तहजीब, एक नया वर्क कल्चर देने का प्रयास किया है।

माननीय सभापति : अधीर जी, आप कनक्लूड कीजिए।

... (व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी : सर, मेरी बात पर कितनी बाधा हुई है, आप खुद देख लीजिए। मैं यह कहना चाहता हूं कि सुबह से संस्कार की बात हो रही थी। राजनाथ सिंह जी से लेकर जितेन्द्र जी तक, ये सभी संस्कार की बात करते हैं। क्या हम संस्कार को नहीं मानते हैं? हमारा संस्कार क्या है, आप यह जानते हैं? हमारा संस्कार यह है कि

रुचीनां वैचित्र्यादृजु कुटिल नानापथजुषां

नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव।

नदी का जन्म कहीं भी हो सकता है। नदी में बर्फ पिघलने के बाद जब वह पानी में तब्दील होता है, तो शहर, नगर और गांव से गुजर कर समुद्र में जाकर मिलता है। वह समुद्र नदी के लिए सच होता है, सत्य होता है। यह सत्य हिन्दुओं के लिए ईश्वर है, मुसलमानों के लिए अल्लाह है, क्रिश्चन के लिए क्राइस्ट है, बुद्धिस्ट के लिए बौद्ध है। यह हमारी संस्कृति है। इस संस्कृति को मानने के कारण आपको आगे निकलना पड़ेगा।

HON. CHAIRPERSON: Please conclude now.

... (Interruptions)

SHRI ADHIR RANJAN CHOWDHURY: They should not confuse science with superstition, they should not confuse culture with communalism. This is my suggestion to them.

We can feel proud of what our country achieved in medical science at one point of time. We worship Lord Ganesha. There must have been some plastic surgeon at that time who got an elephant's head on the body of a human being and began the practice of plastic surgery. This was quoted by the Prime Minister. I do not know the name of the Prime Minister, but certainly the Prime Minister is proactive and progressive Prime Minister जिन्होंने यह कहा था।

HON. CHAIRPERSON: Please conclude now.

... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: We have so many other speakers also.

... (*Interruptions*)

SHRI KODIKUNNIL SURESH (MAVELIKKARA): Chairman Sir, the hon. Minister spoke for one-and-a-half hours. ... (*Interruptions*)

माननीय सभापति : आपने काफी लंबे समय तक बोला है। आपने लगभग आधा घंटा से ज्यादा बोला है।

... (व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी : मैं संस्कार की बात करता हूँ। डॉ. साहब, हमारी गीता कहती है कि

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः।

दुनिया के सारे ज्ञान को अपनाओ। हमें इसमें कोई शर्म नहीं करनी चाहिए। हमारे देश ने युग-युग से सारी दुनिया को अपनाया है। यही हमारे देश का महत्व है। स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि: "Expansion is life, contraction is death, love is life, hatred is death. Once more the

world must be conquered by India. This is the dream of my life". यह स्वामी विवेकानंद कहते हैं। "I wish that each one of you hearing me today will have the same dream in your minds and stop not till you have realized the dream". यही हमारा संस्कार है। मैं यहां मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि आप इंडस की बात करते हैं।

HON. CHAIRPERSON: Please address the Chair and conclude now.

... (*Interruptions*)

श्री अधीर रंजन चौधरी : सर, मैं यह इसलिए बताता हूं कि Human Development Index क्या है, यह मंत्री जी खुद बताएं। हमारा Poverty Index क्या है, यह मंत्री जी खुद बताएं। आप कहते हैं कि आपने इसरो के लिए राशि बढ़ा दी है, नहीं। दस साल पहले, आज से 10 साल पहले आप जूनियर थे। 10 साल बाद, आज से 10 साल बाद आप ओल्डर होंगे। इस हिसाब से बात करना चाहिए। हम लोगों को गुमराह करने के लिए बात न करें, तो बेहतर होगा।

The allocation for ISRO's annual Budget in 2023-2024 stands at Rs. 12,543.91 crore. Shockingly, this amount reflects an eight per cent reduction compared to the previous Budget with a massive 32 per cent slash in expenditure designated for space science initiatives such as Chandrayaan-3 and Aditya-L1 mission focussed on studying the sun. आदित्य एल-1 मिशन के बारे में ज्यादा कुछ नहीं पता। आदित्य एल -1 Lagrange Point को पार करना चाहता है। सर, उसमें 127-128 दिनों का वक्त लगेगा। उसने 15 लाख किलोमीटर का सफर तय किया है। वह सक्सेफुली गुजर रहा है। हम उनके लिए भी प्रार्थना करें कि वह भी सफल रहे। ... (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: Thank you very much..

... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Shri Ritesh Pandey ji.

... (*Interruptions*)

श्री अधीर रंजन चौधरी : मैं राजनाथ सिंह जी को यह कहना चाहता हूँ। सुबह राजनाथ सिंह जी बार-बार हमारे धर्म और संस्कार के बारे में कह रहे थे। मैं यह कहना चाहता हूँ कि Einstein summarizes the co-existence by writing that science without religion is lame, religion without science is blind. This should be kept in mind.

सर, भारतीय संस्कृति क्या होता है, यह जानते हैं? आप भारतीय संस्कृति की बात करते हैं। अपने कमाओ और अपने खाओ, यह प्रकृति है। दूसरे से लूट कर अपने खाओ, यह विकृति है। खुद कमाओ और सभी को खिलाओ यह भारतीय संस्कृति है। जय हिंद।

डॉ. जितेन्द्र सिंह : महोदय, मुझे अधीर रंजन जी को धन्यवाद देना है। दादा, मुझे आपको धन्यवाद देना है कि जिस सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में सुबह माननीय रक्षा मंत्री जी द्वारा इस चर्चा का आगाज हुआ था, आपने उसी मोड़ पर उसको लाकर, समापन की तरफ लाया है। 'Religion without science is blind and science without religion is blind'. संस्कृति को हाइलाइट किया है।

माननीय सभापति : श्री रितेश पाण्डेय जी।

श्री रितेश पाण्डेय (अम्बेडकर नगर): आदरणीय अधिष्ठाता महोदय, आपने मुझे आज चन्द्रयान-3 की सफल लैंडिंग पर बोलने का अवसर दिया है, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ और साथ-साथ बहन कुमारी मायावती जी का आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे इस भव्य सदन में पहुंचने का अवसर दिया है।

माननीय अधिष्ठाता महोदय, इतने हीटेड डिस्कशन के बाद एक शेर का पहुंचना यहां पर जरूरी है।

कहिए तो आसमां को ज़मीं पर उतार लाएं,
मुश्किल नहीं है कुछ भी अगर ठान लीजिए।

यह शहरयार साहब का एक शेर है। आज यह शेर उन लोगों के लिये एक करारा जवाब है, जिन्होंने भारत की उस वक्त आलोचना की थी, जब भारत ने अपना ध्यान अंतरिक्ष की ओर केंद्रित किया था। उन्होंने कहा था और मैं यह क्वोट कर रहा हूँ। ये कुछ विदेशी पत्रिकाएं थीं, मैं नाम नहीं लूंगा, लेकिन उन्होंने यह कहा था कि क्या जो देश गरीबी, असमानता, शौचालयों की अपर्याप्त पहुंच से जूझ रहा है, क्या उसको अंतरिक्ष अन्वेषण पर ध्यान देना चाहिए?

उस समय इस आलोचना का जवाब देते हुए इसरो के संस्थापक विक्रम साराभाई के कथन को याद करना जरूरी है। उन्होंने यह कहा था कुछ ऐसे लोग हैं —, जो विकासशील देश में अंतरिक्ष गतिविधियों की प्रासंगिकता पर सवाल उठाते हैं। हमारे लिए उद्देश्य की कोई अस्पष्टता नहीं है। हमारे पास चंद्रमा या ग्रहों या मानवयुक्त की खोज में आर्थिक रूप से उन्नत देशों के साथ प्रतिस्पर्धा करने की कल्पना नहीं है। लेकिन हमें आवश्यकता है कि यदि हमें राष्ट्रीय स्तर पर और राष्ट्रों के समुदाय में एक सार्थक भूमिका निभानी है, तो हम मनुष्य और समाज की वास्तविक समस्याओं के लिए उन्नत प्रौद्योगिकियों के अनुप्रयोग में किसी से भी पीछे न रहे। यह अत्यंत ही जरूरी था।

आज भारत की अंतरिक्ष शोध से मिली सफलता इनके लिए एक करारा जवाब है और हमारी सफलता का एक परिणाम आज हमें देखने को मिल रहा है। आज देश को इसरो द्वारा अंतरिक्ष शोध से आपदा प्रबंधन, संचार प्रसारण, हेल्थकेयर, शिक्षा, ग्रामीण विकास, राष्ट्रीय सुरक्षा आदि ऐसे कई क्षेत्रों में हमें सफलता मिल रही है। उनसे निपटने के लिए हमें पहले से जानकारी मिलने का कार्य हो रहा है।

अनुमान है कि अगले दशक में वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में भारत की 10% की भागीदारी हो जाएगी, जो मौजूदा सिर्फ 2% पर है। यह एक दशक के अंदर इसरो की उपलब्धि होने जा रही है।

आदरणीय अधिष्ठाता महोदय, इंडिया ने उच्च स्तरीय स्पेस उपकरणों का निर्माण देश में ही करना शुरू कर दिया है और इसरो ने विदेशी सैटेलाइटों को अंतरिक्ष में भेजने से 144 करोड़ रुपये धन अर्जित भी किया है। आज हम गर्व से कह सकते हैं कि हमारे देश ने 381 उपकरण 34 देशों के लिए अंतरिक्ष में भेजने का काम किया है। यह हमारी एक बड़ी उपलब्धि है।

भारत में प्राइवेट सेक्टर भी स्पेस शोध और उपकरण निर्माण में आगे बढ़ रहा है। देश में प्राइवेट सेक्टर की लगभग 400 कंपनियां इस क्षेत्र में काम कर रही हैं। लेकिन इस उपलब्धि पर गर्व करने के साथ-साथ अब तक के कुछ अनुभवों को लेते हुए हमें आगे बढ़ने की जरूरत है। इस संदर्भ में कुछ चुनौतियों को संज्ञान हमें लेना चाहिए। विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में शिक्षा, शोध और अनुसंधान के लिये निवेश बढ़ाने की जरूरत है। यदि हम अपने समकक्ष और बड़ी अर्थव्यवस्थाओं को देखें तो शिक्षा और शोध पर खर्च के मामले में हम अभी बहुत पीछे हैं। इसे अगर समय से नहीं सुधारा गया तो हमारी अग्रणी भूमिका को बरकरार रख पाना बहुत ही मुश्किल हो जाएगा। ... (व्यवधान) सर, मैं अपनी बात बस खत्म कर रहा हूँ। मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा, दो मिनट और लूंगा।

देश में विज्ञान और तकनीकी संस्थाओं से निकलने वाली प्रतिभाओं का एक अच्छा-खासा हिस्सा पलायन कर जाता है। ऐसा क्यों हो रहा है और इसे कैसे रोका जाएगा या कैसे कम किया जाएगा, इस पर ध्यान देना जरूरी है।

जैसाकि मैंने पहले भी कहा था कि हमें इस क्षेत्र में निवेश करने की जरूरत है। इसके साथ-साथ, बहुत-से शिक्षण संस्थान हैं, जिनमें शिक्षकों, वैज्ञानिकों, टेक्नीशियंस के पद खाली हैं। कभी-कभी तो सुनने में आता है कि वेतन और भत्ते देने में देरी हो रही है। उनको समुचित मानदेय नहीं मिल पाता है। ऐसी शिकायतें न पैदा हों, इनके ऊपर सरकार को खासा ध्यान देने की जरूरत है।

मैं पुनः इसरो को इस वैज्ञानिक सफलता के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ और मैं सरकार से अपील करूँगा कि इसरो के लिए कोई कमी न आने दी जाए।

जैसाकि हम लोग जानते हैं कि यहाँ पर हर जगह से उपकरण आए और देश के बहुत-से साइंटिस्ट्स ने इसमें अपनी भागीदारी निभाई है। उत्तर प्रदेश में रॉकेट वुमेन के नाम से चर्चित रितु श्रीवास्तव जी एवं यहाँ से आने वाले धर्मेन्द्र प्रसाद यादव जी, सुमित कुमार जी, आशीष मिश्रा जी, आलोक पाण्डेय जी, हरिशंकर गुप्ता जी का पूरे देश की तरफ से धन्यवाद देना चाहता हूँ। मैं यह विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि अम्बेडकरनगर से भी इन लोगों के अचीवमेंट्स को देखकर ऐसी प्रतिभाएं निकलना शुरू हो गई हैं।

अंत में, मैं अपनी बात एक शेर के साथ खत्म करूँगा।

ज़मी से आसमाँ तक, आसमाँ से लामकाँ तक है,

ज़रा पर्वाज़-ए-मुश्त-ए-खाक तो देखो कहाँ तक जा सकते हैं।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

KUMARI GODDETI MADHAVI (ARAKU): Sir, thank you for this great opportunity to speak in this new and very beautiful Parliament House. On this auspicious moment, I feel very happy to express our great achievement of Chandrayaan-3's success by the ISRO scientists under the leadership of Shri Somanath and his entire team and also the great support of our dynamic Prime Minister of India. Because of the soft-landing on the lunar surface, India becomes the first country to land a spacecraft in the moon's south polar region on 23rd August, 2023. The primary goal of landing a spacecraft on the moon as a part of Chandrayaan-3 was to conduct scientific experiments to study the moon's environment including its history, geology and potential for resources.

Through this Mission, India will not only have access to wealth of knowledge about lunar surface, but will also explore potential for human habitation in the future. I congratulate the entire ISRO for the success of Chandrayaan-3. With this achievement, our country has entered an elite club of nations achieving such a feat, the other countries being the USA, China and Russia. This achievement will also help India boost its share in the global space business. Currently, our share in the global space business is only two per cent in the USD 600 billion industry.

Now, India's space programme has become self-reliant. ISRO has created history. Because of ISRO scientist's hard work, courage, commitment, their achievement is inspiring 140 crore people of our nation and also the young generation of our country.

As we celebrate ISRO's achievement, let us also recognize the need for continued support and investment in the field of space research. Increased investment in the space sector, more collaborations, establishment and upgradation of scientific educational institutions will result in enhancing our space research and operation capabilities. By doing so, we can look forward to even more path-breaking achievements in the future, further elevating India's status as a global space superpower.

Thanks for giving me this great opportunity. With these words, I conclude my speech.

डॉ. सुकान्त मजूमदार (बालूरघाट) : सभापति महोदय, आपका धन्यवाद ।

सभापति महोदय, आपने मुझे इस नए और बहुत ही सुंदर हाउस में चंद्रयान-3 पर हो रही चर्चा में बोलने का मौका दिया । चंद्रयान-3 की जो यह सफलता है, यह सफलता हमारे देश के लिए एक अभूतपूर्व सफलता है । किसी भी देश को जाना जाता है कि वह साइंस में कितना आगे है और इनोवेशन में कितना आगे है ।

सर, मोदी जी के नेतृत्व में हमारा देश साइंस और इनोवेशन की दिशा में आगे बढ़ रहा है । कुछ लोग, जो बोलते थे, जो लोग मंदिर बनाते हैं, उनको साइंस नहीं आती । मोदी जी ने यह प्रूव कर दिया कि जिनको मंदिर बनाना आता है, वे चांद तक भी पहुंच सकते हैं, चांद तक भी हम जा सकते हैं । हां, यह अलग बात है कि कुछ देशों के फ्लैग में चांद होता है और कुछ देशों का फ्लैग चांद पर होता है । हमारा भारतवर्ष उन चार गिने-चुने देशों में पहुंच गया, जो देश चांद तक पहुंचे हैं । South Pole is considered as the difficult part of the Moon, and India reached there. यह हमारे देश की बहुत बड़ी उपलब्धि है ।

सर, मैं डेटा देख रहा था । हमारी सरकार के काम की वजह से इंडिया की आज ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स में 41वीं रैंक है । वर्ष 2015 में हमारी रैंक 81 थी, जब कांग्रेस की सरकार छोड़कर गई थी । मोदी जी ने इस रैंक को 41 तक पहुंचाया है । आज हमारे जो साइंटिस्ट्स हैं, मैं सबसे पहले उनका शुक्रिया करना चाहूंगा । हमारे पूरे देश के हर भाग के साइंटिस्ट्स ने इसमें भाग लिया । माननीय डॉ. शशि थरूर जी आज सुबह बोल रहे थे कि छोटे-छोटे इंस्टिट्यूशंस, whether they may be an engineering institution, whether they may be a small college in which some people studied physics, they have also contributed in the mission.

सभापति महोदय, यदि हम बंगाल की बात करें तो, जो बंगाल का उत्तरी पार्ट है उत्तरी बंगाल, जिसे सबसे पिछड़ा समझा जाता है, उसी नॉर्थ बंगाल से अनुज नंदी, जलपाईगुड़ी से कौशिक नाथ, उसके साथ-साथ बाकी हिस्सों से सुजॉय दोलोई, अमरनाथ नंदी, साइंटिस्ट एस. सरकेल, निरंजन कुमार और मुकुंद कुमार ठाकुर, ऐसे बहुत सारे जो हमारे युवा साइंटिस्ट्स हैं, उन्होंने कॉन्ट्रिब्यूट

किया। यहां तक कि मैं वर्ष 2010 से लेकर वर्ष 2013 तक जिस कॉलेज तक पढ़ाता था, उसी कॉलेज का एक फिजिक्स का स्टूडेंट इस मिशन से जुड़ा हुआ है। अतः भारत का यह अपना मिशन है, जैसा कि मोदी जी ने हमेशा जो बोला है 'आत्मनिर्भर भारत' —, उस का सपना जो मोदी 'आत्मनिर्भर भारत' जी का है, यह चंद्रयान-3 उसका जीता-जागता सबूत है।

आज मोदी जी के नेतृत्व में जिस तरह पूरा देश आगे बढ़ रहा है, उसी हिसाब से हम साइंस में, इनोवेशन में आगे बढ़ रहे हैं। यह सारी जानकारी डेटा दिखा रहा है। उस दिन, जिस दिन रोवर ने 23 अगस्त को चांद के सीने में हमारे देश के अशोक स्तंभ का चित्र बना दिया था, उस समय पूरे देश का सीना 56 इंच का हो गया था। सारे देशवासी 56 इंच का सीना लेकर खड़े हुए थे कि भारत भी यह कर सकता है।

हममें भी काबिलियत है। हर एक इंसान में काबिलियत होती है। हमारे जो मित्र हैं, जो संस्कार और कुसंस्कार की बात कर रहे थे, सुपरस्टिशियन की बात कर रहे थे। अधीर दा भी उसकी बात कर रहे थे कि हमारे प्रधान मंत्री जी ने बोला है कि गणेश जी का सिर प्लास्टिक सर्जरी का उदाहरण है। संस्कृति में क्या डिफरेंस है, यह हमें समझना है। अधीर दा को याद आ जाता है कि प्रधान मंत्री जी ने गणेश जी को लेकर क्या बोला है, लेकिन यह याद नहीं आता कि मोनिका बेसा की नाम की एक महिला का ट्यूमर किसी के हाथ देने से खत्म हो जाता है और उस महिला को saint घोषित किया जाता है। उनका नाम अधीर दा को याद नहीं आता। यही संस्कृति में डिफरेंस है। चंद्रयान-3 की यह जो सक्सेस है, यह हमारे साइंटिस्ट्स, जो हर जगह काम कर रहे हैं, देश को आगे ले जाने में उनको इन्सपिरेशन मिलेगी।

सर, आप जितना भी पढ़ लें, लिख लें, जब तक अपने ऊपर गर्व नहीं होगा, आप देश के लिए कुछ अच्छा नहीं कर सकते, कुछ बड़ा नहीं कर सकते। आप कॉपी-पेस्ट कर सकते हैं, लेकिन साइंस में यूनीकनेस लाने के लिए पहली बात यह है कि आपको अपने ऊपर, अपने सामर्थ्य के ऊपर विश्वास होना चाहिए।

21.00 hrs

मैं दो बातें बोलकर अपनी बात समाप्त करना चाहता हूँ। कभी हमारे जो मेडिसिनल साइंटिस्ट थे, मैं उन लोगों को साइंटिस्ट ही बोलता हूँ, उन्हें ऋषि बोला जाता था। उन्होंने एक मंत्र की रचना की थी।

अमंत्रं अक्षरं नास्ति नास्ति मूलं अनौषधं।

अयोग्यः पुरुषो नास्ति, योजकस्तत्र दुर्लभः॥

अगर इसका मतलब निकाला जाए तो वह यह है कि ऐसा कोई अक्षर नहीं है, जिससे मंत्र नहीं बन सकता।

माननीय सभापति : माननीय सदस्य, एक सेकेंड रूकिए।

माननीय सदस्यगण, यदि सभा की सहमति हो तो सदन की कार्यवाही एक घंटे के लिए बढ़ा दी जाए।

कई माननीय सदस्य : महोदय, ठीक है।

माननीय सभापति : धन्यवाद।

डॉ. सुकान्त मजूमदार : इस मंत्र का मतलब है कि हर अक्षर से मंत्र बन सकता है। हर आदमी में पोटेंशियल है, आपको योजक खोजना है, तो इस नीति को सामने रखते हुए हमें आगे बढ़ना है। इस घटना के बाद सारे देश ने बधाई दी, लेकिन सबसे अनोखी बधाई पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री की तरफ से आयी। उन्होंने बताया कि राकेश रोशन चाँद पर गये थे। अब तब से मैं ढूँढ़ रहा हूँ कि ऋतिक रोशन एक बार मिल जाए तो मैं उनसे पूछ लूँगा कि राकेश रोशन जी कब चाँद पर गए थे और उन्होंने चाँद पर जाकर कौन सी फिल्म की शूटिंग की थी। ... (व्यवधान)

माननीय सभापति : आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

... (व्यवधान)

डॉ. सुकान्त मजूमदार : ऐसा पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ने कहा । ... (व्यवधान) उसके दूसरे दिन उन्होंने इन्दिरा गाँधी जी को चाँद पर भेज दिया । ... (व्यवधान) उन्होंने बोला कि इन्दिरा गाँधी चाँद पर गई थीं । ... (व्यवधान) अब कांग्रेस वाले, अधीर दा बोलेंगे । ... (व्यवधान)

माननीय सभापति : आपका बहुत- बहुत धन्यवाद ।

श्री सुशील कुमार रिंगू ।

***SHRI SUSHIL KUMAR RINKU (JALANDHAR):** Hon. Chairman, Sir, I am thankful to you for giving me opportunity to speak on the successful landing of Chandrayaan-3 on South Pole of Moon.

Sir, after this successful landing, the prestige of our country has risen manifold among the comity of nations. Indian diplomacy has been successful after this mega event. The data provided by Chandrayaan's rover will be of precious value for the future generations of the entire world. India has got this success by investing very less amount. It is a very economical mission. I congratulate the scientists and all those associated with this successful mission. I also congratulate the Government for this successful mission. All those who initiated this mission, I thank them too for this.

I hail from Patiala district. There is a village called Maggar. A poor farmer's son from this village Kamaldeep Sharma has also played his part in the successful soft landing of Chandrayaan-3 rover on Moon. He works in ISRO.

Punjabis have always been at the vanguard on the borders to defend the country. Today, drones from Pakistan are dropping drugs and weapons in Punjab. We must check this menace.

The Rural Development Fund for last 3 crops has not been given to Punjab ever since AAP Government has come to power in Punjab. It is an amount of Rs.4000 crores. If we get this amount, our farmers will gain out of this. Our Government in Punjab headed by our CM provides one crore rupees to families of each martyred soldier. It helps those families.

* English translation of speech originally delivered in Punjabi.

Day before yesterday, Hon. P.M. Sir had given a very good speech. He said that India must adopt international parameters in all fields. I agree with this.

Along with Punjab, whether it is Bihar, Gujarat, Maharashtra, Tamil Nadu or UP, our students go for studying in foreign countries. They also do jobs there. The degrees of our students are not recognized in those countries. I urge the hon. P.M. to intervene in this matter. We must provide international level courses for studying to our students. Then, our money will be saved.

Sir, I am concluding. I again congratulate the entire country and the Government on the occasion of successful landing of Chandrayaan module on South Pole of Moon.

Thank you.

SHRI D.M. KATHIR ANAND (VELLORE): Hon. Chairman, Sir, today, we gather here in this temple of democracy to celebrate the triumph not just for India but for all humankind. The success of the Chandrayaan-3 mission is monumental milestone, and as proud Tamils, we have an extra layer of joy and pride in the achievements of our country in the realm of space exploration.

The Tamil people have a rich history of pioneering in various fields and today, we see that same spirit reflected in the advancements India has made in space.

Many of our community have been part of this grand endeavour contributing with their expertise, knowledge and passion.

The poetic beauty of our ancient Tamil literature speaks of the Panch Bhutas, that is *neer, nilam, thee, vali, visambodu*. Humans have the ability to conquer all five and do greater deeds for the future generations.

Today, it fills our hearts with joy to see that the dreams once written in verses by our ancestors are now being realized as we reach out to the stars.

The journey of Chandrayaan-3 is not just about reaching the Moon but also about the journey of countless minds which dared to dream. It is about the collective spirit of India and the special touch that the Tamil community adds to this vibrant tapestry.

In a world where technological prowess defines the future, it is heartening to see our nation with the significant contributions from Tamils leading the way and carving our place in history. Congratulations to everyone for this success!

Space science has got a unique space in ancient India. From Aryabhata to Abdul Kalam, the contribution of India to space science is monumental.

Our pride in the success of Chandrayaan-3 is not just a moment of joy. Let it be a stepping stone for our younger generation, inspiring them to dream big, aim high, and contribute passionately to the ever-evolving story of our great nation.

The success of Chandrayaan-3 is an exceptional feat, not just for India but for all of humanity. It stands as a testament to the power of human perseverance, innovation and collaborative spirit.

In a world that often sees nations divided, it is heartening to witness the unification of people across the globe, coming together to applaud India's space prowess.

The Chandrayaan-3 mission has not only expanded our understanding of our only natural satellite, the Moon but it also showcases how far we have come in mastering the art of space exploration.

The name 'Chandrayaan' literally translates to 'Mooncraft'. And just as the name suggests, this craft has been instrumental in carving India's signature on the lunar surface.

With this mission, India has once again demonstrated its commitment to pushing the boundaries of science and technology. The dedication, hard work and relentless pursuit of excellence displayed by the Indian Space Research Organisation and its team of scientists, engineers and support staff are nothing short of inspiration.

But beyond the technological marvel, there is a bigger story to tell. It is a story of hope, determination and the belief that no dream is too big to achieve. The success of Chandrayaan-3 is a reminder to every child gazing up at the stars that their aspirations, no matter how distant they seem, are always within reach.

The mission has sown the seeds of curiosity in millions, igniting imagination and inspiring future generations to dream even bigger. The ramifications of such success are manifold. Beyond the scientific knowledge we gain from studying the moon, the advances in technology trickle down to the benefit of various sectors like health care, communication, transportation and so on. Furthermore, it fortifies India's position as a leader in the global space community paving the way for even a more ambitious ventures in years to come.

Let us take a moment to appreciate every single person who contributed to make Chandrayaan – 3 mission a roaring success. This is through their tireless efforts, sleepless nights and unparalleled passion that we stand here looking towards the stars with a renewed hope and excitement.

Chandrayaan – 3 mission is not just a story of success for India but a beacon of inspiration for the entire world. Thank you, Sir.

SHRI ASIT KUMAR MAL (BOLPUR): Hon. Chairman Sir, many thanks for giving me a chance to say something on the subject.

Prof. Saugata Ray, senior most Member of Parliament gave all the details about Chandrayaan- III and I fully agree with him.

Sir, yet, I want to say a few words. I would like to convey my heartiest congratulations to the scientists of ISRO. The success of Chandrayaan -3 has raised our country to a glorious position in the world.

I would like to draw the kind attention of the hon. Prime Minister to look into the problems of the scientists of ISRO specially so that they do not suffer due to monetary problems.

सर, यह बहुत खुशी की बात है कि पश्चिम बंगाल के बहुत साइंटिस्ट्स इसरो में हैं। हमारी पार्लियामेंट्री कंस्टीट्युन्सी बोलपुर है। वहां से एक साइंटिस्ट विजय कुमार दाय चन्द्रयान-3 प्रोजेक्ट में काम करते हैं। हमारे राज्य में बीरभूम पार्लियामेंट्री कंस्टीट्युन्सी है। वहां की एम.पी. शताब्दी रॉय जी यहां प्रेजेन्ट हैं। हमारे पश्चिम बंगाल के तीन साइंटिस्ट्स – सौम्यजीत चटर्जी, मुशरफ हुसैन, दिव्यज्योति धर - चन्द्रयान-3 में काम करते हैं। यह गर्व का विषय है। सभी साइंटिस्ट्स के साथ-साथ इन तीनों साइंटिस्ट्स को फिर से एक बार बहुत-बहुत अभिनन्दन करता हूं।

श्री राजू बिष्ट (दार्जिलिंग): सभापति महोदय, आपको बहुत धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे चन्द्रयान-3 पर बोलने का मौका दिया। सबसे पहले तो मैं हमारे देश के प्रधान मंत्री जी को धन्यवाद देना चाहूंगा, जिन्होंने चाहे प्रधान मंत्री जन-धन योजना हो, चाहे चन्द्रयान की योजना हो, उसे लेकर आए, जिसके कारण भारत का विश्व भर में मान बढ़ा। पर, चन्द्रयान-3 की सफलता मानवता के लिए एक बहुत बड़ी जीत है।

सर, मैं अधीर दा को बहुत गम्भीरता से सुन रहा था। वैसे मैं उनसे उम्र में छोटा हूँ और मेरा अनुभव भी बहुत थोड़ा है। परन्तु, फिर भी बैठे-बैठे एक चीज़ मैं उनको ज़रूर कहना चाहूंगा और शायद कांग्रेस को यह चिंतन करना चाहिए कि जिस कांग्रेस पार्टी ने 70 सालों तक भारत में शासन किया और आज भी नेहरू जी को स्थापित करने के लिए इतना जोर लगाना पड़ रहा है, तो इसका मतलब है कि कुछ तो गलत था।

सर, एक विषय बार-बार सांसदों की तरफ से आया कि सन् 1962 से हम स्पेस मिशन की ओर आगे बढ़े। मुझे लगता है कि वह इंडिया का युग था। मगर उससे भी पहले जब भारत का युग था, तब भी हम स्पेस मिशन में आगे थे। अनुभव और उदाहरण बहुत सारे हैं, लेकिन मैं एक ही बात आपके सामने रखना चाहूंगा कि आर्यभट्ट जी ने कोपरनिकस से एक हजार साल पूर्व यह बता दिया था कि पृथ्वी गोल है।

सर, मैं एक-दो बातें और आपके सामने रखना चाहूंगा। 1920 के दशक में भारत में मॉडर्न डे स्पेस रिसर्च शुरू हुआ। एस.के. मित्रा, नोबल प्राइस विजेता सी.वी. रमन, मेघनाथ साह जैसे साइंटिस्ट्स जो स्पेस रिसर्च में अग्रणी थे, उनके माध्यम से हुआ और फिर 1962 में जा कर इंडियन नेशनल कमिटी फॉर स्पेस रिसर्च का गठन हुआ। सन् 1963 में भारत ने पहला रॉकेट लॉन्च किया। बाद में इंडियन स्पेस रिसर्च सन् 1969 में इसरो के नाम से कनवर्ट हुआ। इसरो ने अब तक 90 सैटेलाइट मिशन लॉन्च किए हैं। इसमें से 48 स्पेस मिशन मोदी जी के कार्यकाल में 9 वर्षों में हुए हैं। इसरो ने ही पिछले 9 वर्षों में जो 48 स्पेस मिशन लॉन्च किए हैं, उनमें 424 सैटेलाइट ले कर गए थे। यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। अगर हम भारत सरकार का बजट भी देखें, वर्ष 2013-14 में जहां यह

5,615 करोड़ रुपये हुआ करता था, वह वर्ष 2023-24 में बढ़ कर 12,500 करोड़ रुपये से अधिक हो गया है। कई सारे फॉरन सैटेलाइट भी इसरो ने लॉन्च किए हैं। जिनसे 3,000 करोड़ रुपये से ज्यादा की आमदनी हुई है और इस आमदनी का 90 पर्सेंट हिस्सा पिछले 9 सालों का ही है। ये सारी उपलब्धियां रही हैं।

सर, मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा और यह जरूर कहना चाहूंगा कि हमारे क्षेत्र दार्जिलिंग से भी निरुपम शर्मा, अनुज नंदी जो इस्लामपुर, नॉर्थ दिनाजपुर के थे और कौशिक नाग जी जो जलपाईगुड़ी के थे, ऐसे तमाम लोग पश्चिम बंगाल से भी इसरो मिशन टीम का हिस्सा रहे हैं। हमारा अगला टारगेट गगनयान है।

महोदय, अब मैं बंगाल की दृष्टि से एक-दो विषय रखना चाहूंगा। क्योंकि बहुत सारी बातें बंगाल के हमारे टीएमसी के सांसदों ने भी रखी हैं। हम सबको भी गर्व होता है कि बंगाल की इतनी बड़ी भूमिका रही और बहुत अधिक संख्या में उनका इस टीम में योगदान रहा। लेकिन आज बंगाल की सरकार को यह चिंतन और अध्ययन करने की आवश्यकता है कि आज की युवा पीढ़ी को जिस तरह के संस्कार हम डाल रहे हैं, क्या आने वाले समय में, क्या भविष्य में वह गरिमा पश्चिम बंगाल की रहेगी? आज पश्चिम बंगाल जाना जाता है बम के लिए, बारूद के लिए, हिंसा के लिए, हत्या के लिए, महिलाओं के ऊपर होने वाले अपराधों के लिए, तुष्टीकरण के लिए, परिवारवाद के लिए और सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार के लिए। ... (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: Please conclude now.

श्री राजू बिष्ट : सर, मैं बस दो मिनट में अपनी बात समाप्त करा हूँ। ... (व्यवधान) मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि अर्जुन दा वहीं बैठे हैं, सबसे ज्यादा भुक्तभोगी तो वे ही हैं, उनसे पूछ सकते हैं। ... (व्यवधान) सर, इतना ही नहीं, आज पश्चिम बंगाल में, टीएमसी के नेता यहां बैठे हैं, वे जवाब दें कि 50 पर्सेंट से ज्यादा यूनिवर्सिटीज में रेग्युलर वाइस-चांसलर क्यों नहीं हैं। 8,500 से ज्यादा स्कूल पश्चिम बंगाल में बंद हो रहे हैं, क्योंकि टीचर्स को तनखावा नहीं दे पा रहे हैं। सरकारी कर्मचारियों का टीए

और डीए नहीं मिल रहा है। यह वास्तविकता है। सर, एक बात और कि सीपीएम ने 35 सालों तक बंगाल में शासन किया। ... (व्यवधान)

माननीय सभापति : धन्यवाद, अब आप अपनी बात समाप्त कीजिए।

श्री जसबीर सिंह गिल।

... (व्यवधान)

माननीय सभापति : राजू जी आपका समय समाप्त होता है, अब आप बैठ जाइए।

... (व्यवधान)

श्री जसबीर सिंह गिल (खडूर साहिब): धन्यवाद, चेयरमैन साहब। आज मैं अपने पंजाबवासियों की तरफ से इस देश के वैज्ञानिकों को बधाई देता हूँ। हमारे पंजाब के साइंटिस्ट महेन्द्रपाल सिंह जी हैं, जो इस चन्द्रयान मिशन में शामिल रहे हैं। यह देश के लिए एक गौरवमयी समय है। आज हम इसका जश्न मना रहे हैं। हम चन्द्रयान-2 का जश्न भी जरूर मनाएंगे, चाहे वह मिशन विफल हुआ हो, मगर उसमें हमारे वैज्ञानिकों ने एक साथ मेहनत की है। हमें चन्द्रयान-1 का भी जश्न मनाना चाहिए, क्योंकि वह भी एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी। हमारा यह भी जश्न मनाना बनता है कि हम एक फूड डेफिसिट देश होते हुए, पंजाब की खेती और किसानों की वजह से आज हम फूड सरप्लस हुए हैं।

महोदय, इस देश में कई सरकारें आईं, कई प्रधानमंत्री आए और उन्होंने अपनी योग्यता और क्षमता के मुताबिक काफी योगदान दिया। उन्होंने इस देश को ऊंचा उठाने के लिए योगदान दिया है। जवाहर लाल नेहरू जी ने 10 आईआईटीज और आईआईएमस बनाए। हमारे लालबहादुर शास्त्री जी हरित क्रांति लेकर आए। इंदिरा गांधी जी ने पाकिस्तान को नेस्तनाबूद कर दिया। उसके बाद राजीव गांधी जी टेलिकॉम और गाड़ियों में क्रांति लेकर आए। नरसिम्हा राव जी ने हमारे देश के लिए बहुत बड़ा काम किया। उन्होंने एक बार फिर से आईटी क्रांति का झंडा उठाया। हमारे वाजपेयी जी ने दूसरा परमाणु परीक्षण किया और सड़क मार्ग बनाने में योगदान किया। डॉ. मनमोहन सिंह जी ने राइट टू इंफॉर्मेशन, राइट टू एजुकेशन, राइट टू फूड और मनरेगा जैसे बड़े काम किए। यहां तक कि जब सारी दुनिया इकोनॉमी में नीचे जा रही थी, तब उन्होंने देश को संभाल कर रखा। नरेन्द्र मोदी जी ने हमें ऐसा बढ़िया सदन दिया। चन्द्रयान-3 का जो काम हुआ है, उसको सभी लोगों ने किया है।

महोदय, मैं एक बात बताना चाहता हूँ। अभी इस काम में हमें रुकना नहीं चाहिए, बल्कि और आगे बढ़ना चाहिए। हमारे पक्ष और विपक्ष के सदस्यों ने काफी बातें कहीं। वर्ष 2013-14 में इसरो का बजट 500 करोड़ रुपये था और आज 12,000 करोड़ रुपये है। वर्ष 2013-14 के बाद अगर महंगाई की दर देखें तो यह भी उतनी ही बनती है। हमें इसमें भी संतुष्ट नहीं होना चाहिए। हमें और मेहनत करनी चाहिए। हमारा जो महान देश है, इसमें हिमालय जैसे ग्लेशियर और पहाड़ हैं। इसमें इंडियन ओशन और बे ऑफ बंगाल जैसी दरिया हैं। इसमें पंजाब जैसे खेत-खलिहान हैं और थार जैसा डेजर्ट

है। हमारे अमृतसर में गोल्डन टेम्पल है। अयोध्या में श्री राम जी का मंदिर बन रहा है। यहां पर अक्षरधाम मंदिर है। हमारे राजस्थान में अजमेर शरीफ है। गया में बौद्ध धर्म की कितनी बड़ी जगह है। मैं समझता हूं कि हम टूरिज्म में बहुत पीछे हैं। दुनिया में जो सेकेंड हाइएस्ट है, वह टूरिज्म है। यह सैक्टर काफी नौकरी प्रदान करता है और सरकार को टैक्स देता है। मैं समझता हूं कि टूरिज्म में हम काफी पीछे चल रहे हैं। सर, मेरी एक विनती है। आज हमें चारों तरफ से खतरा है। आज दो तरफ से दुश्मन बैठे हैं। इसमें पाकिस्तान भी है और चाइना भी है। हम सबको एक साथ होकर ड्रग्स के खिलाफ भी लड़ाई लड़नी चाहिए।

माननीय सभापति : बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री जसबीर सिंह गिल : सर, मैं एक मिनट में अपनी बात समाप्त कर रहा हूं। यह नहीं सोचना कि कोई स्टेट बच जाएगा। यह हम सभी की जिम्मेदारी है। हम सबको इस पर बैठकर, रणनीति बनाकर इस लड़ाई को लड़ना पड़ेगा। धन्यवाद।

माननीय सभापति : श्री श्याम सिंह यादव जी।

... (व्यवधान)

माननीय सभापति : आप बोलना शुरू करिए।

... (व्यवधान)

माननीय सभापति : आप कृपया बैठ जाइए।

... (व्यवधान)

माननीय सभापति : श्याम सिंह जी, आप बोलिए।

... (व्यवधान)

श्री श्याम सिंह यादव (जौनपुर): माननीय सभापति जी, मैं आपका बहुत शुक्रगुजार हूँ कि आपने मुझे आज बोलने का मौका दिया। मैं वूमेन रिजर्वेशन बिल पर किसी वजह से नहीं बोल पाया। मैं एक लाइन कहना चाहता हूँ कि चन्द्रयान-3 ने तो साफ्ट लैंडिंग की, लेकिन वूमेन रिजर्वेशन बिल ने पिछड़ों और माइनोरिटी पर बहुत हार्ड लैंडिंग की है। It was a very rough handling. Through you, hon. Chairperson, in one line I would put my point. I demand sub-quota among quota for women's reservation. I demand this.

माननीय सभापति : आप चंद्रयान पर बोलिए।

श्री श्याम सिंह यादव : महोदय, मैं चंद्रयान पर आता हूँ। यह स्पेशल सेशन तारीफ करवाने के लिए बुलाया गया, अच्छी बात है। लेकिन, मुझे और खुशी होती अगर इस स्पेशल सेशन में एक दिन महंगाई पर चर्चा होती, बेरोजगारी पर चर्चा होती और भ्रष्टाचार पर चर्चा होती, शिक्षा पर चर्चा होती और सेहत पर चर्चा होती। अगर इन पर भी चर्चा होती, तो बहुत अच्छी चीज थी। शायद हम सभी लोग समझते हैं कि ये देश के लिए इस मुद्दे से ज्यादा इंपॉर्टेंट मुद्दे हैं।

मैं आपको इस मौके पर एक एग्जांपल देना चाहता हूँ। आप किसी रेस्टोरेंट में जाते हैं, होटल में जाते हैं, ईटरी में खाने के लिए जाते हैं, तो तरह-तरह की डिश होती हैं।

माननीय सभापति : माननीय सदस्य, आप बहुत सीनियर हैं, विषय पर आइए।

श्री श्याम सिंह यादव : वही विषय है। प्लीज आप सुनिये। आप मुझे 5 मिनट तो टाइम देंगे। उसका शेफ एक डिश बनाने के लिए, छोले बनायेगा तो रात को भिगोयेगा, बुखारा दाल बनायेगा तो रात को भिगोयेगा, कितनी मेहनत के बाद वह डिश बनाता है और जब हम खाने जाते हैं तो एक वेटर उसको परोस देता है। मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि खाना बनाने का क्रेडिट किसको जाएगा, शेफ को जाएगा या वेटर को जाएगा? मेरा इशारा समझने के लिए काफी है। वैसे भी जिस तारीफ करने के लिए बुलाया गया है, वह तारीफ मैं नहीं कर पाऊंगा।

अभी अधीर रंजन चौधरी जी ने कहा कि साल दर साल, परत दर परत, लेयर टू लेयर इसका जो बेस खड़ा किया, वह कांग्रेस गवर्नमेंट ने, यूपीए गवर्नमेंट ने खड़ा किया। आज आप चलकर ...* में मुफ्त में उसका क्रेडिट लेने जा रहे हैं।

माननीय सभापति : ...* शब्द हटाया जाए।

श्री श्याम सिंह यादव : माननीय सभापति जी, क्या ...* शब्द अनपार्लियामेंट्री है।...(व्यवधान)
सभापति जी, मैं आपसे बहुत ...* शब्द कतई अनपार्लियामेंट्री नहीं है। मैं आपसे बहुत ...*...
(व्यवधान)

माननीय सभापति : इस शब्द को निकाल रहे हैं।

श्री श्याम सिंह यादव : मैं एक बात कहकर अपनी बात खत्म करता हूँ। चेयरमैन, एस. सोमनाथ जी, उनकी साइंटिफिक टीम, इसरो और स्पेस आर्गनाइजेशन से जुड़े हुए तमाम लोगों को मैं बहुत मुबारकबाद देता हूँ, बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। असल में वे मुबारक के, बधाई के पात्र हैं। मैं इसी के साथ अपनी बात को खत्म करता हूँ। बहुत-बहुत धन्यवाद।

* Not recorded.

श्रीमती रमा देवी (शिवहर): सभापति महोदय, माननीय प्रधानमंत्री जी ने नामकरण कर दिया है। आज हम सभी को बोलने का अवसर मिल है। शिव शक्ति के नाम से जाने जाना वाला चन्द्रयान-3, लोगों की भावना, लोगों के विचार, सदन में जो लोग बोल रहे हैं, ऐसा लग रहा है कि प्रत्येक आदमी को बोलना है, इस विषय की जानकारी उनको जैसे भी मिला, उनके अंदर उत्साह है।

21.30 hrs

(Shri Kodikunnil Suresh in the Chair)

काम करने की भावना हमारे प्रधानमंत्री जी के अंदर आई, प्रधानमंत्री जी जिस नीयत से, जिस मन से, जिस भावना से काम करते हैं, उसे पूरी दुनिया देखती है। साढ़े नौ वर्षों में उन्होंने जो भी काम किए हैं, उनमें सफलता मिली है। भाव भी ठीक है, भावना भी ठीक है, इसे धरातल पर उतारने की क्षमता भी ठीक है। लोग खामियां निकालेंगे लेकिन हम खूबियां देखते हैं, जो आदमी खामियां निकाल रहे हैं, जो देख कर सोच रहे हैं कि ऐसा काम हम करते हैं, लेकिन 60 वर्षों में नहीं हुआ।

आज हम लोग जो देख रहे हैं, इसको अक्षरशः पालन करने के लिए हम सोचते हैं। हम सोचते हैं कि लोगों में समझदारी आनी चाहिए कि प्रधानमंत्री जी का विचार कैसा है। हम देखते हैं कि यह सफलता का महत्वपूर्ण पल है। मैं भी यहां गर्व से खड़ी हूं ताकि हम सभी मिलकर एक ऐतिहासिक पल के बारे में चर्चा कर सकें। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के यशस्वी नेतृत्व में यह देश के वैज्ञानिकों की मेहनत का परिणाम है, महत्वपूर्ण कदम है। न केवल भारतीय विज्ञान तकनीकी क्षेत्र में बल्कि विश्व भर में हमारे वैज्ञानिकों की मेहनत एवं विजय की मान्यता देने के लिए हैं। यह मिशन हमें न सिर्फ चन्द्रमा के पास ले गया, बल्कि भारत की आत्मविश्वास और वैज्ञानिकों के सामर्थ्य को भी नई ऊंचाई पर पहुंचाया है। हमारे देश के वैज्ञानिकों, हमारी शक्ति स्वरूपा महिला, सैकड़ों लोगों ने उसमें सहयोग किया और अपनी इतनी विद्वता दिखायी है। लोग कहता है महिला घर में रोटी बनाएं, चूल्हा चौका करे, लेकिन आज के दिन में हमारे प्रधानमंत्री जी नारी शक्ति को महत्व दिए हैं, उनको अधिकार दिए हैं। वर्षों से लोग सोच रहा था, देख रहा था केवल बात बना रहे थे। अधीर रंजन जी ने इतनी बातें बनाईं, मुर्गी बांग दे दिए, उनको यह भी पता नहीं है कि मुर्गी बांग देता है मुर्गा देता है या इनको क्या स्त्रीलिंग पुलिंग समझाएं। थोड़ी अच्छी शिक्षा ले लें तो अच्छा रहेगा। जिन्होंने इस कठिनाई भरे मार्ग

पर अपनी सीमाओं को पार कर दिखाया है कि आगे बढ़ना संभव है। ये वैज्ञानिक हमारे देश के गौरव हैं। इनकी मेहनत एवं संघर्ष को हम सभी समर्थन करते हैं। यह क्षण 140 करोड़ भारतीयों का समर्थन मिल रहा है। यह क्षण भारत की नई ऊर्जा नई चेतना का है। यह क्षण भारत के भाग्य का आह्वान का है। अमृत काल की वेला में अमृत वर्षा हुई है। यह सब लोगों को महसूस हो रहा है कि अमृत काल ऐसे ही नहीं कहा गया है। प्रत्येक आदमी इसको लेने के लिए तैयार है। नए सदन में आकर लोगों ने अपने विचार व्यक्त किए हैं। हमने धरती पर संकल्प लिया और चांद पर उसे साकार किया। चन्द्रयान-3 का विक्रम लैंडर ने चांद के दक्षिणी ध्रुव पर उतरने वाला भारत दुनिया का पहला देश बन गया। यह उपलब्धि भारतीयों को गर्व महसूस कराने वाली है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। चन्द्रयान-3 की कामयाबी भारत की उपलब्धि के रूप में देखी जानी चाहिए क्योंकि स्पेस में भारत जैसे-जैसे ताकतवर होते जाएगा, कृषि क्षेत्र को खूब फायदा मिलेगा। आज जो लोग कहते हैं कि हमें ये कमी है, ये भूखे मर रहे हैं, थाली में रोटी नहीं है। इनके लिए सारे उपाय हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी कर रहे हैं कि कैसे-कैसे उपलब्धि हो। इसरो दुनिया में अपनी किफायती कमर्शियल लांचिंग के लिए जाना जाता है।

चन्द्रयान-2 का ऑर्बिटर आज भी काम कर रहा है, इसी ने चन्द्रयान-3 के लिए लैंडिंग साइट खोजी। इसके अलावा मंगलयान पर परचम तो पूरी दुनिया देख चुकी है, इससे दुनिया में संदेश जाता है कि भारत के पास वह क्षमता है जो कम बजट और कम संसाधनों में भी काम कर सकता है जिसे बड़े-बड़े देश भी नहीं कर सके। चन्द्रयान-3 की सफलता के बाद इसरो का नाम दुनिया की सबसे बड़ी स्पेस एजेंसियों में शामिल हो गया है। यह सोचने की बात है कि हमने इसमें कितनी बड़ी सफलता हासिल की है। हम मंगल पर जाएंगे, बुध पर जाएंगे और सूरज पर जाने की जो चेष्टा कर रहे हैं, वह भी पूरी होगी। चन्द्रयान-3 की सफलता के बाद भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र में प्रोत्साहन मिलेगा। अब इस क्षेत्र में ज्यादा स्टार्टअप की गुंजाइश बढ़ने की उम्मीद है। इससे देश में नए स्टार्टअप स्थापित हो सकते हैं तथा इससे जुड़े स्टार्टअप को बेहतर फंडिंग मिलने की संभावना बढ़ेगी और कई देश भी जुड़ सकते हैं। हम कहते हैं – 'जय जवान, जय किसान, जय अनुसंधान, जय विज्ञान, जय भारत देश'।

महान्, यह नारा अब सार्थक सिद्ध हो रहा है। कृषि क्षेत्र में अभी तक मिट्टी की जांच नमूने लेकर होती थी, अब एआई का इस्तेमाल भी मिट्टी की जांच के लिए होने लगा है। स्पेस में ताकत बढ़ने के साथ अब यह काम बहुत आसान हो जाएगा और विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण साबित होगा। हम अपनी आंखों के सामने ऐसा इतिहास बनते देख गर्व महसूस करते हैं। जब पूर्व में मिशन फेल हुआ था, स्वाभाविक है कि तब देश के वैज्ञानिकों को निराशा हुई थी। माननीय प्रधानमंत्री जी ने उस समय साहस बढ़ाने के लिए सहलाते हुए कहा था कि असफल आदमी ही सफल होता है, जो आदमी आगे बढ़ता है उसे ठोकर तो लगती है लेकिन सफलता उसे ही मिलती है।

मैं एक कविता की कुछ पंक्तियां बोलना चाहती हूँ –

“यह क्षण मुश्किलों के महासागर को पार करने का है

यह क्षण जीत के चंद्रपथ पर चलने का है।”

मैं अपने और अपने क्षेत्र के लोगों की ओर से यशस्वी माननीय प्रधान मंत्री जी को इसके लिए धन्यवाद और आभार प्रकट करती हूँ और दो लाइनें बोलना चाहती हूँ -

“हारे नहीं जब हौसले तो कम हुए कुछ फासले

दूरी कहीं कोई नहीं हमें समर्पण चाहिए।

कुछ कर गुजरने के लिए मौसम नहीं मन चाहिए।

साधन सभी जुट जाएंगे बस संकल्प का धन चाहिए,

धन चाहिए, धन चाहिए।”

जय हिंद, जय भारत।

श्री राहुल रमेश शेवाले (मुम्बई दक्षिण-मध्य): माननीय सभापति जी, आपने मुझे इस विषय पर बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

मैं साउथ-सेंट्रल मुम्बई से आता हूँ। मेरे संसदीय क्षेत्र में भाभा एटामिक रिसर्च सेंटर है। मैं इसी क्षेत्र में रहता हूँ। मुझे बहुत गर्व महसूस होता है कि मेरे संसदीय क्षेत्र में भाभा एटामिक रिसर्च सेंटर है। इस क्षेत्र में साइंटिस्ट और स्टाफ रहते हैं और वे मुझे वोट भी देते हैं, मैं उनको यहां रिप्रेजेंट कर रहा हूँ और मैं इस बात के लिए बहुत गर्व महसूस करता हूँ।

महोदय, मैं सबसे पहले चन्द्रयान-3 के यशस्वी अभियान के लिए सर्वप्रथम एस. सोमनाथ जी, इसरो के चेयरमैन, श्री वीरामुथुवल, प्रोजेक्ट डायरेक्टर, उन्नीकृष्णन जी, डायरेक्टर ऑफ वीएसएससी, मोहना कुमार, मिशन डायरेक्टर, एस. शंकरन, डायरेक्टर ऑफ यूआरएससी, ए. राजरंजन, लैब चीफ और सभी साइंटिस्ट्स का अभिनंदन करता हूँ।

महोदय, चन्द्रयान-3 के सफल प्रयोग के बाद इसरो के सामने सात मिशन्स के चैलेंज हैं। पहला प्रोजेक्ट ऑलरेडी लांच किया हुआ है। India's next space-centric mission – Aditya-L1 – is not for a planet, but rather it is for the brightest star as viewed from Earth. The second project is Mangalyaan-2. The original Mangalyaan Mission was launched on November 5, 2013 and its successor Mangalyaan-2 Mars Mission is expected to be launched next year. The third project is Gaganyaan – India's first manned mission. The fourth project is NISAR Satellite. ISRO has a space mission in collaboration with the National Aeronautics and Space Administration, NASA.

पांचवा प्रोजेक्ट स्पैडेक्स है। ISRO will also launch an experimental mission called SPADEX. छठा प्रोजेक्ट शुक्रयान है। Apart from the Moon, Mars, and Sun, ISRO will also be launching a mission to study Venus. The seventh project is this. After Chandrayaan-3, India's next moon mission will be LUPEX Exploration Mission.

चन्द्रयान-3 अभियान यशस्वी करने के बाद, ये सात प्रोजेक्ट्स जो इसरो के लिए चैलेंजेज हैं, उनके लिए भी मैं उनको हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

सभापति महोदय, मैं पोलिटिकल भाषण न करते हुए यहां पर टेक्निकल चीजें रखना चाहता हूँ। इसरो के जो चैलेंजेज और ऑपॉर्चुनिटीज हैं, उनके बारे में मैं बात करना चाहता हूँ। The most notable of these have been the Chandrayaan and the Mangalyaan missions, with a manned space mission, Gaganyaan, planned for its first test flight next year. These missions are not just for technology demonstration but also for expanding the frontiers of knowledge in space sciences. None of this would have been possible without mastering the launch-vehicle technology. Beginning with the Satellite Launch Vehicle, SLV and the Augmented Satellite Launch Vehicle, ASLV, ISRO has developed and refined the Polar Satellite Launch Vehicle, PSLV as its workhorse for placing satellites in low earth and sun-synchronous orbits. The Geosynchronous Satellite Launch Vehicle, GSLV programme is still developing with its MkIII variant, having undertaken three missions, and is capable of carrying a 3.5 MT payload into a geostationary orbit.

Today, the value of the global space industry is estimated to be \$350 billion and is likely to exceed \$550 billion by 2025. Despite ISRO's impressive capabilities, India's share is estimated at \$7 billion, just two per cent of the global market, covering broadband and Direct-to-Home television, accounting for two-thirds of the share, satellite imagery and navigation. Already, over a third of transponders used for Indian services are leased from foreign satellites and this proportion will rise as the demand grows. So, this is also a challenge.

Developments in Artificial Intelligence and big data analytics has led to the emergence of New Space. New Space entrepreneurship has emerged in India with many start-ups which seek value in exploring end-to-end services in the Business-to-Business and Business-to-Consumer segments using new space. However, these startups have yet to take off in the absence of regulatory clarity.

Chairman Sir, I would like to explain the term New Space. The term New Space is used to refer to a global sector of new aerospace companies and ventures working independently of Governments to develop faster, better, and cheaper access to space and spaceflight technologies, driven by commercial ends as distinct from political or socio economically-oriented ends. New space ventures may include space tourism, asteroid mining, satellite servicing, etc. SpaceX, Blue Origin are some examples of companies involved in New Space. Another revolution underway is the small satellite revolution. Globally, 17,000 small satellites are expected to be launched between now and year 2030. ISRO is developing a Small Satellite Launch Vehicle, SSLV expected to be ready in 2029. It is a prime candidate, along with the proven PSLV, to be farmed out to the private sector. In this context, The Assembly, Integration and Testing, AIT, role, which is restricted to ISRO must now be outsourced. Also, years ago, ISRO launched the idea of Village Resource Centres to work in collaboration with local panchayats and NGOs but only 460 pilots have begun.

Expanding this to rural areas is a formidable challenge but has the potential to transform rural India if properly conceived as a part of the India Stack and the Jan Dhan Yojana. India Stack refers to the ambitious project of creating a unified

software platform to bring India's population into the digital age. India Stack is a set of APIs that allows Governments, businesses, startups and developers to utilize a unique digital infrastructure to solve India's hard problems towards presence-less, paperless, and cashless service delivery. Aadhaar forms the core of India stack.

सभापति महोदय, मैं सिर्फ एक सुझाव देना चाहता हूँ। इसरो ने इसके पहले वर्ष 2013 की इंडियन स्पेस पॉलिसी रिलीज की थी। उस पर मेरे दो सुझाव हैं, मैं उसके बारे में बताना चाहता हूँ। उसमें जो गैप्स हैं, मैं उसके बारे में भी बताना चाहता हूँ।

The policy sets out an ambitious role for IN-SPACe but provides no timeframe for the necessary steps ahead. Neither is there an indicative timeline for ISRO's transitioning out of its current practice nor is there a schedule for IN-SPACe to create the regulatory framework. IN-SPACe is a regulatory body but does not have a regulatory authority.

My point is that the Space Policy 2023 is a forward looking document reflecting good intentions and a vision. But it is not enough. The timeframe is urgently needed to provide the necessary legal framework to translate this vision into reality.

With these words, I conclude. Thank you.

श्री अनिल फिरोजिया (उज्जैन) : सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर प्रदान किया, उसके लिए मैं आपको हृदय से धन्यवाद दूंगा।

महोदय, आज मैं इस विषय पर सदन में अपने विचारों को साझा करके गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। मैं 23 अगस्त की शाम को 6 बजकर 4 मिनट के उस गोल्डन समय की बात कर रहा हूं, जब हमारे देश के वैज्ञानिकों ने चांद के माथे पर अशोक स्तम्भ की छाप छोड़कर दुनिया को यह विश्वास दिलाया कि अगर चांद पर सफल लैंडिंग करने व रोवर को वहां पर चलाने की काबिलियत किसी के पास है, तो वह है - भारत। मिशन चन्द्रयान-3 सिर्फ स्पेस साइंस में भारत के दबदबे एवं रुतबे को नहीं दिखाता है, बल्कि संपूर्ण विश्व को संदेश भी देता है कि भारत के वेदों में वर्णित ज्ञान-विज्ञान का खजाना आज भी भारत के पास है। इस मिशन को हमने अपनी काबिलियत से प्रदर्शित किया है। हमारे इस मिशन से दुनिया को भारत के ज्ञान और भारत की तकनीक पर भरोसा है। दुनिया का हमारी तकनीक पर यह भरोसा इसलिए भी हुआ है, क्योंकि हमने चांद के उस दक्षिणी ध्रुव पर तिरंगा लहराया है, जहां जाने का विचार अब तक दुनिया के किसी भी देश ने नहीं किया है।

महोदय, चांद के दक्षिणी ध्रुव पर चन्द्रयान-3 को इसलिए भी लैंड कराया गया, क्योंकि वहां का तापमान 100 डिग्री सेल्सियस तक है। हमारा यह मिशन चांद पर पानी की खोज करने के साथ ही चन्द्रमा की सतह पर मौजूद अन्य तत्वों की भी जानकारी करेगा। इस मिशन से वैज्ञानिकों को आने वाले समय में धरती पर मौसम में होने वाले बदलाव को समझने में भी मददगार साबित होगा। मैं आपको यह भी बताना चाहूंगा कि भारत की स्पेस इंडस्ट्री 1 मिलियन डॉलर से 16 मिलियन डॉलर तक बन रही है। आपको यह जानकार भी आश्चर्य होगा कि चार सालों में स्पेस सेंटर के स्टार्टअप्स की संख्या 4 से बढ़कर 150 हो गई है। आप देखेंगे कि वर्ष 2014 के बाद देश में हर क्षेत्र में तेजी से उन्नति हो रही है।

महोदय, मुझे यह बात कहने में कोई संकोच नहीं है कि देश के मुखिया माननीय श्रीमान् मोदी जी के नेतृत्व में यह हो रहा है। जैसा कि मैं अभी यहां पर सुन रहा था।... (व्यवधान) मैं सदन में सुबह से सबको सुन रहा हूं। यहां हमारे कई मित्र इसमें मोदी जी का नाम ले रहे हैं। कांग्रेस पार्टी ने किया,

इसने किया, उसने किया। अगर सेनापति मज़बूत हो, शक्तिशाली हो, तो सेना भी मज़बूत होती है। मैं आपको तीन उदाहरण देता हूँ। सरदार सरोवर बांध का भूमि पूजन माननीय नेहरू जी ने किया था, लेकिन अगर किसी ने उसको लोकार्पित करा है, तो वह हैं - श्रीमान् नरेन्द्र मोदी। आज से 2,000 साल पहले उज्जैन के राजा विक्रमादित्य जी ने राम मंदिर का जीर्णोधार और सौंदर्यीकरण कराया था। भगवान भी जिससे काम कराना चाहता है, उसको खुद चुनता है। अगर राजा विक्रमादित्य के बाद किसी ने राम मंदिर की जीर्णोधार और सौंदर्यीकरण करा है, तो उसका नाम है - नरेन्द्र मोदी। पहले हमारे देश पर कोई आपदा या विपत्ति आती थी, तो हम याचक के रूप में रहा करते थे। जब कोविड की आपदा आई, जिस वैक्सीन का प्रोसेस पांच सालों में होता और डब्ल्यूएचओ से उसको पास किया जाता है, वैज्ञानिकों के अनुसंधान में जाकर, उनको मोटिवेट और प्रोत्साहित किया और नौ महीने में डब्ल्यूएचओ से वैक्सीन अप्रूव कराके, अगर किसी ने 140 करोड़ की जनता को वैक्सीन लगाने का काम किया है, तो उसका नाम है - नरेन्द्र मोदी।...(व्यवधान)

माननीय सभापति जी, दो मिनट और दे दीजिए। आज से 127 वर्ष पहले एक नरेन्द्र स्वामी विवेकानंद ने शिकागो में कहा था कि 20वीं सदी पश्चिमी देशों की होगी और 21वीं सदी में भारत विश्व गुरु बनेगा। उस नरेन्द्र ने कहा था और इस नरेन्द्र ने करके दिखा दिया, जिसका नाम है - नरेन्द्र मोदी। मैं आज इसरो की पूरी टीम को बहुत-बहुत शुभकामनाएं और बधाई देता हूँ। आपने मुझे बोलने का समय दिया, इसके लिए धन्यवाद।

डॉ. अमर सिंह (फतेहगढ़ साहिब) : सभापति जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। मुझे चन्द्रयान की सफलता पर बोलने का मौका मिला है। मैं इस मौके पर सारे मुल्क को और इसरो के साइंटिस्ट्स को, जो बैकग्राउण्ड में साइंटिस्ट्स और टेक्निशियंस काम करते हैं, उन सबको बधाई देना चाहता हूँ। इसके साथ ही पंजाब के भी हमारे दो साइंटिस्ट्स कमलदीप शर्मा और मनीष गुप्ता जी थे, उनको भी बधाई देना चाहता हूँ। इन सबका एक टीम एफर्ट था। इन सबको बधाई और सारे मुल्क को भी बधाई।

सर, मेरे बहुत सारे साथियों ने बहुत सारी बातें बोल दी हैं तो मैं इतिहास में नहीं जाना चाहता हूँ, लेकिन यह सफलता क्यों प्राप्त हुई, यह सफलता इसलिए प्राप्त हुई कि इस मुल्क में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने साइंटिफिक टेम्पर की एक नींव रखी थी। हम यकीन नहीं कर सकते हैं कि वर्ष 1952 में एमआईटी की लीक पर आईआईटी खड़गपुर रख दिया था और उसका शिलान्यास रख दिया था। इसके बाद वर्ष 1962 में इसरो बनता है। बहुत सारी लंबी कहानी है, मैं उस सब में नहीं जाना चाहता हूँ। इसरो की तो इतनी कहानियां हैं कि वर्ष 1975 में रशिया की मदद से आर्यभट्ट भेजा, वर्ष 1982 में हम कलर टीवी लेकर आए और फिर इनसेट वर्ष 1983 में आया। मैं इन बहुत सारी बातों में नहीं जाना चाहता हूँ, लेकिन सवाल यह उठता है कि साइंटिफिक टेम्पर, साइंटिफिक इंस्टीट्यूशन, साइंटिस्ट्स चाहिए, जो यह काम करते हैं और पॉलिटिकल सपोर्ट चाहिए, ब्यूरोक्रेटिक सपोर्ट चाहिए तथा फाइनेंशियल सपोर्ट चाहिए।

सर, हमारा पहला मुल्क है, जिसने चांद के सदर्न पोल पर लैंड किया है, वैसे चांद पर पहुंचने वाला दुनिया का फोर्थ देश है। यह बहुत बड़ी प्राप्ति है, इसमें कोई शंका वाली बात नहीं है। अगर दूसरे मुल्कों से हम अपने आपको कंपेयर करें तो नासा का बजट 25 बिलियन डॉलर पर-एनम है और हमारा साढ़े बारह हजार करोड़ रुपये, डेढ़ बिलियन डॉलर है। यहां रक्षा मंत्री जी बैठे हैं। इतनी बड़ी प्राप्ति हो गई, लेकिन इस साल उनका बजट कम हो गया है, जो 8 परसेंट कम है। मेरी विनती है कि कम से कम इतनी बड़ी प्राप्ति पर यह सरकार इतना तो करे कि उनका 20 परसेंट बजट बढ़ाए। नासा के बराबर तो नहीं जा सकते हैं, लेकिन इसरो का कुछ तो बजट बढ़ाइए। मेरी यह मांग है। ... (व्यवधान)

सर, अभी तो शुरुआत ही की है। दूसरी बात मुझे यह कहनी है कि 1950 और वर्ष 1960 से नेशनल साइंटिफिक लेबोरेट्रीज बनाई जा रही थीं और वहीं पर साइंटिस्ट्स पैदा हुए। रक्षा मंत्री जी, कुछ नेशनल साइंटिफिक लैब्स पंजाब की ओर भेजिए, मेरी कॉन्स्टीट्यूएन्सी की ओर भेजिए और कुछ इस तरह के इंस्टीट्यूट्स उधर भी भेजिए। हमारे पंजाब की इतना ज्यादा प्रॉब्लम है, मैं उसका रोना-धोना यहां नहीं करना चाहता हूं, लेकिन हमारे पंजाब को भी कोई इंस्टीट्यूट दीजिए और मेरी कॉन्स्टीट्यूएन्सी को भी कोई इंस्टीट्यूट दीजिए। उसमें आपकी बहुत मेहरबानी होगी। आप इसरो का बजट बढ़ाइए। नासा के बराबर तो नहीं, लेकिन थोड़ा सा बढ़ाइए। उसमें आपकी मेहरबानी होगी। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री शंकर लालवानी (इन्दौर): धन्यवाद सभापति महोदय । बहुत ही गर्व की बात है कि चन्द्रयान-3 चांद के साउथ पोल पर उतरा । उस समय पूरे देश में खुशी का माहौल था । यह समय से आगे की सोच है, जिसे इसरो के वैज्ञानिकों ने, वहां की पूरी टीम ने माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में पूरा किया । सभी वैज्ञानिकों को और सरकार को इसके लिए बधाई । पूरी दुनिया में इसको लेकर भारत का डंका बज रहा है ।

चंद्रयान जब लैंड हुआ तो पूरे देश में खुशी का माहौल था । माननीय प्रधानमंत्री जी उस समय विदेश में थे लेकिन जैसे ही देश में आए, सीधे इसरो पहुंचे और सभी वैज्ञानिकों को और पूरी टीम को बधाई दी । पूरा देश जब सो रहा था तब प्रधानमंत्री जी पूरी टीम को बधाई दे रहे थे ।

पूर्व के प्रधानमंत्री कहते थे- जय जवान, जय किसान । माननीय प्रधानमंत्री जी ने इसमें जोड़कर के जय विज्ञान और जय अनुसंधान किया । यह चंद्रयान स्वदेशी तकनीक से कम लागत में बना हुआ है । कहते हैं कि हॉलीवुड की फिल्म से भी कम लागत पर बना हुआ है जो कि हमारे वैज्ञानिकों ने बनाया है । इसमें एमएसएमई उद्योग का सबसे बड़ा योगदान है । बहुत सारे पुर्जे एमएसएमई उद्योग ने बनाए हैं । मैं इंदौर के एमएसएमई उद्योग ने जो पुर्जे बनाए हैं, मैं उनको बधाई देना चाहता हूं और इंदौर के जो वैज्ञानिक इससे जुड़े हैं, उनको भी मैं बधाई देना चाहता हूं ।

चंद्रयान की सफलता के दस दिन बाद ही आदित्य एल-1 का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण हुआ है । कई देश अब भारत के साथ स्पेस मिशन में शामिल होना चाहते हैं । यह माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में अमृतकाल का श्रीगणेश है । मैं माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी को और इसरो की पूरी टीम को बधाई देता हूं ।

HON. CHAIRPERSON: Shri K. G. Madhav – not present.

Shri R. K. Singh Patel.

श्री आर. के. सिंह पटेल (बांदा): धन्यवाद सभापति महोदय, आज नये संसद भवन में पहली बार मुझे बोलने का आपने मौका दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ तथा इस संसद भवन के शिल्पी भारत के प्रधानमंत्री, विश्व के लोकप्रिय नेता, श्री नरेन्द्र मोदी को तहेदिल की गहराइयों से साधुवाद देता हूँ, बधाई देता हूँ।

महोदय, आजाद भारत में हम अमृतकाल की 75वीं वर्षगांठ मना रहे हैं और इस मौके पर 23 अगस्त, 2023 का वह दिन हमारे लिए गौरवशाली दिन है, जब हमारे वैज्ञानिकों ने चन्द्रयान-3की सफलतापूर्वक लैंडिंग की थी। मैं इसरो के वैज्ञानिकों को, उनकी पूरी टीम को बधाई देता हूँ। देश आजाद होने के बाद से हमारे देश के बहुत सारे वैज्ञानिकों ने भारत को विश्व क्षितिज पर आगे लाने का काम किया है, उन सभी को मैं आज नमन और वंदन करता हूँ।

महोदय, हम आजादी की 75वीं वर्षगांठ मना रहे हैं तथा उन अमर सपूतों को हम श्रद्धासुमन अर्पित कर रहे हैं, जिन्होंने इस देश को आजाद कराने में अपनी अहम भूमिका निभाई है। उन तमाम स्वतंत्रता सेनानियों को मैं नमन करता हूँ। आज माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की अगुवाई में हम “मेरी माटी, मेरे देश” कार्यक्रम के तहत उन तमाम बलिदानियों को गांव-गांव में शिलापट्ट लगाकर के उन शहीदों को याद कर रहे हैं। ऐसे मौके पर मैं उन बलिदानियों को बहुत-बहुत नमन और वंदन करता हूँ। आज उन बलिदानियों की बदौलत जिन्होंने हमारे देश को आजादी दिलाने में बड़ा योगदान दिया है। उन्हीं की बदौलत इस लोकतंत्र के नये संसद भवन में माननीय प्रधानमंत्री जी की अगुवाई में इस देश की आधी आबादी, हमारी मातृशक्ति के लिए हमने 33 परसेंट का आरक्षण का कानून, भागीदारी का कानून लाने का काम किया है।

22.00 hrs

सभापति महोदय, उन 1500 सालों की गुलामी की मार झेलकर के हमारा भारत आज आगे बढ़ा है। उन 1500 सालों की गुलामी की मार को झेलने के बाद आज हम यहां पर खड़े हुए हैं। हमारा देश कभी विश्वगुरु हुआ करता था। विश्व को ज्ञान-विज्ञान देने वाला भारत देश था। इस देश के विषय

में उस समय जब हमारे देश को मुगलों ने गुलाम बनाया तो उस मुगलकाल की एक कविता उस समय के कवि ने लिखी थी ।

हाय वहै भारत भुव भारी, सब ही विधि से भई दुखारी
सबके पहिले जेहि ईश्वर सभ्य विधाता कीनो
सबके पहिले जेहि ईश्वर, बल, बुद्धि, विद्या दीन्हो
अब सबके पीछे सोई परत लखाई, हाय वहै भारत भुव भारी
सब ही विधि से भई दुखारी ।

उस कविता की पंक्तियों में 1500 सालों की गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हमारा देश था । आज माननीय प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी की अगुवाई में वह फिर से विश्वगुरु, फिर से वह खोई हुई सभ्यता, फिर से वह खोया हुआ ज्ञान-विज्ञान प्राप्त कर रहा है । हमारे रामायण काल में दुनिया में कहीं भी, विश्व में कहीं भी हेलिकॉप्टर और वायुयान नहीं थे, उस समय सीता माता का हरण इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है । हमारे यहां पर वायुयान बनते थे । हमारे वैज्ञानिक विश्व के गुरु हुआ करते थे ।

SHRI KURUVA GORANTLA MADHAV (HINDUPUR): Sir, thank you very much for giving me the opportunity to acknowledge the remarkable achievements of the Indian Space Research Organisation, better known as ISRO.

As we look towards the stars, we are filled with immense pride and awe at the strides ISRO has made in the field of space exploration. These accomplishments are not just a testament to the dedication and ingenuity of our scientists, but also a source of immense pride for every Indian.

Dr. A.P.J. Abdul Kalam, whose dream was to see India as a prominent player in the field of space exploration would undoubtedly be filled with immense pride if he were with us today. ISRO's remarkable achievements are a testament to the realization of his vision.

In recent times, the Indian Space Research Organisation has continued to make significant strides in space exploration with the successful launch of Chandrayaan-3, and India's first solar mission, Aditya-L1.

ISRO's journey, which began in 1969, has been nothing short of extraordinary. Currently, ISRO is among the top six space agencies in the world. Through a network of centres, offices, and research institutes dispersed around the nation, broadcasting, weather forecasting, disaster management, geographic information systems, navigation, cartography, telemedicine, remote education satellites, and other services are all provided by ISRO.

In conclusion, ISRO's achievements are a source of immense pride for every Indian. They remind us that there are no limits to what we can achieve, when we set our sights on the stars. From Chandrayaan-3's lunar success to

Aditya-L1's solar mission, ISRO continues to inspire not only our nation, but the entire world. Our achievements in space exploration are a gift, not just to India, but to all of humanity, and they are a testament to the indomitable spirit of scientific discovery.

HON. CHAIRPERSON: Please wind up.

Shri Janardan Singh Sigriwal ji.

... (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: There are many speakers. Within half-an-hour, we have to finish. Most of the Members are from BJP.

श्री जनार्दन सिंह सीग्रीवाल (महाराजगंज): सभापति महोदय, मैं अपनी एवं अपनी पार्टी की ओर से आपको बधाई देता हूँ कि आपने मुझे चन्द्रयान-3 पर बोलने का मौका दिया है।

सभापति महोदय, चन्द्रयान-3 की चन्द्रमा पर ऐतिहासिक सफल लैंडिंग के लिए पूरा देश भारत के वैज्ञानिकों और देश के यशस्वी प्रधान मंत्री जी का कृतज्ञ है। यह अन्तरिक्ष में भारत के वैज्ञानिक सामर्थ्य का शंखनाद है, जिसने विश्व पटल पर देश का मस्तक गर्व से ऊंचा कर दिया है। अन्तरिक्ष की दुनिया में 23 अगस्त, 2023 का वह ऐतिहासिक दिन है, जब भारत का चन्द्रयान-3 के मून लैण्डर ने चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर अंगद की तरह पैर जमा कर स्वर्णिम इतिहास रच दिया।

सभापति महोदय, भारत ने वह कर दिखाया है जो पहले कभी किसी ने नहीं किया था। चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचने वाला भारत विश्व का पहला देश है। माननीय प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी का जो प्रयास और वैज्ञानिकों के प्रति जो श्रद्धा है, वह सर्वविदित भी है और सबने उसे देखा भी है। वह एक दिवसीय ग्रीस यात्रा पूरी करने के बाद सीधे बेंगलुरु पहुंचे, जहां उन्होंने चन्द्रयान-3 की चांद पर ऐतिहासिक सॉफ्ट लैंडिंग को सफल बनाने वाले वैज्ञानिकों से इसरो कमांड सेक्टर में मुलाकात की। ... (व्यवधान) उन्होंने देश की 140 करोड़ जनता की ओर से आभार व्यक्त करने के साथ बधाई देते हुए उनकी कोशिशों और जज्बे को सलाम किया। साथ ही, इसरो प्रमुख एस. सोमनाथ को गले लगाकर पीठ थपथपायी। वैज्ञानिकों से वार्ता के दौरान प्रधान मंत्री बेहद भावुक हो जाते हैं। ... (व्यवधान) वैज्ञानिकों से उनका यह कहना हर भारतीय को भाव विह्वल करने वाला है कि चन्द्रयान की लैंडिंग पर आप देश को जिस ऊंचाई पर लेकर गये, यह कोई साधारण सफलता नहीं है। यह आज का भारत है, निर्भीक और जुझारू भारत है जो डार्क जोन में जाकर भी दुनिया में रोशनी की किरण फैला देता है। मैं आपका जितना गुणगान करूँ, जितनी सराहना करूँ, वह कम है। उन्होंने महिला वैज्ञानिकों की भी भूरि-भूरि प्रशंसा की है, जिन्होंने चन्द्रयान-3 मिशन में बड़ी भूमिका निभायी है। अपने सम्बोधन में प्रधान मंत्री जी ने स्वयं तीन घोषणाएं की हैं, जिसकी समय की शिला पर अमिट छाप बनेगी।

पहला, 23 अगस्त को हर साल भारत राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस के रूप में मनाएगा। दूसरा, चांद पर लैंडर जिस जगह उतरा उस जगह का नाम शिवशक्ति स्थल होगा। महोदय, यह सामान्य बात नहीं है। तीसरा, चांद पर जिस जगह चंद्रयान-2 के पदचिह्न हैं, उस पॉइंट का नाम 'तिरंगा' होगा। इस दौरान प्रधानमंत्री जी ने 'जय जवान, जय अनुसन्धान' का नारा भी दिया। साथ ही, उपस्थित लोगों से 'जय विज्ञान, जय अनुसन्धान' का नारा भी लगवाया। चन्द्रमा का शिवशक्ति पॉइंट जहां सदियों तक भारत की वैज्ञानिक क्षमता का साक्षी बनेगा, वहीं आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देगा, जिससे मानवता के विकास को नयी दिशा मिलेगी।...(व्यवधान)

सभापति महोदय, यह ऐसे नहीं हुआ है। भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री जी और भारत सरकार की देन है। कहने के लिए उधर से कुछ भी कहें, लेकिन जो कोशिश हुए, प्रयास हुआ, उस प्रयास का फल है। वैज्ञानिकों में जो विश्वास जगा, देश में वैज्ञानिकों के लिए आशीर्वाद और स्नेह दिखा, उसी का परिणाम है कि हमारे चंद्रयान ने सफल लैंडिंग की है। आज दुनिया में भारत का नाम रौशन हो रहा है। यह ऐसे नहीं हुआ है, भले वे कहने के लिए कहें, लेकिन ऐसा करके किसी ने नहीं दिखाया है। यह नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने करके दिखाया है। यह नरेन्द्र मोदी जी के प्रयास ने करके दिखाया है। इसलिए मैं उन वैज्ञानिकों और माननीय प्रधानमंत्री जी को हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

श्री संजय सेठ (राँची): सभापति महोदय, आपने मुझे दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र और लोकतंत्र के सबसे बड़े मंदिर, सबसे आधुनिक मंदिर में चन्द्रयान-3 पर चर्चा करने का मौका दिया, उसके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ।

महोदय, मैं देश के आदरणीय प्रधान मंत्री जी, जो इस देश के नव निर्माण के विश्वकर्मा हैं, उनका अभिनंदन और वंदन करना चाहता हूँ, जिन्होंने देश की बेटियों के लिए पिछले 9 साल से सारे द्वार खोले। चाहे वह शौचालय के रूप में हो, चाहे वह आवास के रूप में हो, चाहे उज्ज्वला योजना के रूप में हो, चाहे जनधन खाता के रूप में हो, चाहे आयुष्मान भारत के रूप में हो, चाहे लाडली लक्ष्मी योजना के रूप में हो, चाहे जल से नल योजना के रूप में हो। आज यह ऐतिहासिक दिन है। भारत की आज़ादी के 76 साल बाद इस अमृत काल में आज देश की बेटियों को, देश की दीदियों को आरक्षण मिलने जा रहा है। आज इस ऐतिहासिक दिन पर हम चन्द्रयान-3 की चर्चा कर रहे हैं। हम चन्द्रयान-3 की चर्चा कर रहे हैं। पहले जय जवान, फिर जय किसान, फिर जय विज्ञान अब जय अनुसंधान, कितनी उत्तम सोच है। जवान, किसान, विज्ञान और अनुसंधान ये चार चीजें जिस देश में परफेक्ट हो जाएं, उस देश की तरक्की को, उन्नति को, प्रगति को दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक सकती है। उस देश में हर तरफ उमंग का वातावरण होगा। आज भारत में हमको देखने को मिल रहा है। इसीलिए हम यह कहते हैं कि:

अंतरिक्ष में गूँज उठे हम
चन्द्रयान का गान लिए
चांद तिरंगे रंग में रंगा,
देखो नई पहचान लिए।
हे भारत के वैज्ञानिकों,
तुम ही गौरव हो भारत के,
मस्तक ऊंचा लिए खड़े हम,
सच्चा एक अभिमान लिए।

महोदय, चन्द्रयान-3 की सफलता भारत के विज्ञान को जोड़ती है और भारत चन्द्रयान को जोड़ता है। आज हमने दुनिया को दिखाया है और जिस दिन चन्द्रयान लैंडिंग कर रहा था, उस समय मैं ग्रामीण क्षेत्रों में था। मैंने ऐसा उत्साह कभी नहीं देखा। हां, वर्ल्ड कप में पाकिस्तान-हिन्दुस्तान का मैच देखते थे, जो उत्साह होता था, लोग आरती करते थे, हनुमान चालीसा पढ़ते थे, मंदिर, गिरजाघरों में प्रार्थना करते थे। उस दिन हमने देखा कि रेहड़ी वाले, पटरी वाले, टेम्पो वाले, हर कोई अपने ईश्वर को याद कर रहा है कि सफल लैंडिंग हो जाए। प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी के उस संकल्प को पूरा कर दे, पूरे 140 करोड़ देशवासी यह प्रार्थना कर रहे थे। इसलिए हम कहते हैं कि-

स्वप्न देखा था हमने आज वह हर धड़कन में है,
 एक नया भारत बनाने का मजबूत इरादा हमारे मन में है
 एक ऐसा भारत जिसमें एक नया विश्वास हो,
 सबकी आंखों में चमक हो, हर तरफ नव उल्लास हो
 हो मान-सम्मान जहां अंत्योदय का,
 गरीब कल्याण और सुशासन का लक्ष्य जिसके पास हो
 हम बढ़ रहे हैं प्रगति के पथ पर जिस रफ्तार से,
 कर रहा नमन हमको विश्व भी हर उस पार से।

सभापति महोदय, पूरी दुनिया हमको नमन कर रही है। मैं अपने लोक सेभा क्षेत्र रांची और सिल्ली के लोग जो इसरो में काम कर रहे हैं, उनका अभिनंदन करना चाहता हूं। ऐसे वैज्ञानिकों को इस भारतीय लोकतंत्र के सबसे बड़े मंदिर से हम सैल्यूट करना चाहते हैं। देश के आदरणीय प्रधान मंत्री, जो नए भारत के नए विश्वकर्मा हैं, यह दौड़ता हुआ भारत है, यह रुकता हुआ भारत नहीं है, बल्कि इस दौड़ते हुए भारत का मैं अभिनंदन करना चाहता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री दिलीप शङ्कीया (मंगलदोई): सभापति महोदय, मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ कि आपने मुझे चन्द्रयान-3 की सफलता और स्पेस सेक्टर में भारत की अन्य उपलब्धियों के महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का मौका दिया।

महोदय, आज स्पेस एंड साइंस के क्षेत्र में भारत अपनी अनगिनत उपलब्धियों के चलते ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स, 2022 में 41 पोजीशन पर पहुंच गया है, जो भारत के लिए गौरव का क्षण है। महोदय, हम सब लोग इस बात को मानते हैं कि चन्द्रयान-3 की जो एक हिस्टोरिक सफलता हमें मिली है, इससे केवल भारत का ही फायदा होगा, ऐसा नहीं है, बल्कि पूरे विश्व में रहने वाले जो 800 करोड़ मनुष्य हैं, उन सभी के लिए यह फायदेमंद होगा।

लेकिन आज अफसोस की बात है कि पिछले कुछ दिनों से, जब चन्द्रयान का मिशन हाथ में लिया गया है और इसमें सफलता प्राप्त की गई है, तो उस समय भी कुछ लोगों को, यहाँ बैठे हुए कुछ दलों के सांसदों को संदेह था कि यह सफल होगा या नहीं। लेकिन भारत के प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में इसरो के साइंटिस्ट्स ने जो काम करके दिखाया है, वह सचमुच में भारत के भविष्य के लिए और विश्व के कल्याण के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। मैं आज सुबह से अपोजिशन पार्टीज़ के साथियों की बातें सुन रहा था। उनमें क्रेडिट लेने का एक कम्पीटिशन था कि इसका क्रेडिट कौन लेगा, इसरो को किसने बनाया आदि बातों के ऊपर ही उनके भाषण रहे। लेकिन चन्द्रयान-3 से पहले चन्द्रयान-2 था, वह भी विफल नहीं हुआ है। आज माननीय मंत्री जी के माध्यम से पता चला कि चन्द्रयान-2 भी काम कर रहा है और चन्द्रयान-3 भी और क्षमता से काम करेगा। इसलिए मैं अपने साथियों से विनम्रता से प्रार्थना करना चाहता हूँ कि भारत जिस तेज गति से आगे बढ़ रहा है, विशेषकर स्पेस के क्षेत्र में, अगर हम इस गति को कंटेन्यू रखेंगे, तो वर्ष 2047 तक नहीं, बल्कि उसके पहले ही भारत विश्व में स्पेस के क्षेत्र में पहला स्थान जरूर प्राप्त करेगा। यह मेरा विश्वास है।

महोदय, मैं अपने साथियों से कहना चाहता हूँ। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की एक रचना है, जिसे मैं कहना चाहूँगा।

छोटे मन से कोई बड़ा नहीं होता,

टूटे मन से कोई खड़ा नहीं होता ।

अगर किसी का मन टूटा भी है, तो किसी का मन नहीं टूटना चाहिए । इसलिए आप अपना मन बड़ा करो और इसे भारत के लिए बड़ा करो, इंडिया एलायंस के लिए नहीं । भारत के लिए मन को बड़ा करो, भारत ही हमारा भविष्य है, भारत ही विश्व का भाग्य-विधाता है । इसलिए भारत के साथ रहो ।

मैं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को विशेष रूप से धन्यवाद देता हूँ । इसरो के सभी साइंटिस्ट्स, विशेषकर 20 परसेंट महिला साइंटिस्ट्स को बधाई देता हूँ । इसके साथ ही, नॉर्थ-ईस्ट के हमारे भाई-बहन भी तीन साल से इस चन्द्रयान-3मिशन के साथ जुड़े हुए थे, मैं उनका भी अभिनन्दन करता हूँ क्योंकि नॉर्थ-ईस्ट से काफी छात्र-छात्राएं स्पेस के क्षेत्र में इसरो के साथ जुड़े हुए हैं । इसरो के इस अभियान में उनका भी बहुत बड़ा योगदान है । इसलिए उनको भी धन्यवाद देते हुए, एक बार फिर से मैं हमारे प्रधानमंत्री जी को बहुत बधाई देता हूँ, उनका अभिनन्दन करता हूँ, उनका वंदन करता हूँ ।

बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री जुगल किशोर शर्मा (जम्मू) : माननीय सभापति महोदय, आपने चन्द्रयान-3 मिशन की सफलता और अंतरिक्ष क्षेत्र में उपलब्धियों के बारे में मुझे चर्चा में भाग लेने का जो मौका दिया है, इसके लिए मैं आपका आभार प्रकट करता हूँ।

इस विषय पर डॉ. जितेन्द्र सिंह जी ने डिटेल में चर्चा की है। मैं कहना चाहता हूँ कि प्रधानमंत्री नरेन्द्रभाई मोदी जी के नेतृत्व में विकास के साथ-साथ विश्व में भारत का जो मान-सम्मान बढ़ाया है, मैं उसकी सराहना भी करता हूँ और यह अद्भुत भी है।

इस बार 23 अगस्त को चन्द्रयान-3 की सफलता ने जो अद्भुत सफलता दिलाई है, वह बहुत ही सराहनीय है। हर एक व्यक्ति की साँसें तब रुक गई थी, जब चन्द्रयान-3 की लैंडिंग हो रही थी। वह एक अनोखा सुखद पल था, जब चन्द्रयान-3 ने चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफल लैंडिंग की। इसके साथ-साथ तभी इसरो ने विश्व को एक सुखद समाचार दिया कि चन्द्रयान-3 की सफलतापूर्वक लैंडिंग हो गई है। देश भर में के जयकारे गूंज उठे 'भारत माता की जय'।

मैं प्रधानमंत्री नरेन्द्रभाई मोदी जी का आभार प्रकट करना चाहता हूँ, जिन्होंने वैज्ञानिकों का मान-सम्मान करते हुए, 23 अगस्त को नैशनल स्पेस डे के रूप में मनाने की घोषणा की। यह भी अपने आप में एक बहुत बड़ी बात है।

चन्द्रयान-3 की सफलता में अन्य वैज्ञानिकों के साथ-साथ, हमारी जो वैज्ञानिक बहनें हैं, उनका भी एक बहुत बड़ा योगदान रहा है। मैं यह कहना चाहता हूँ कि हमारे वैज्ञानिक आज बड़ी-से-बड़ी चुनौती का सामना करने के लिए तैयार हैं।

तब ही तो आपने देखा कि चन्द्रयान-3 की सफलतापूर्वक लैंडिंग हुई थी, उसके बाद सूर्य तक पहुंचने के लिए भी कदम उठाए थे।

महोदय, यह तब ही संभव हो पाया, जब देश के प्रधान मंत्री जी ने चंद्रयान-2 की असफलता के बावजूद भी वैज्ञानिकों का मनोबल बढ़ाया। उनका मनोबल बढ़ाने के साथ-साथ ही वे उनके साथ खड़े रहे और उन्होंने कहा कि हम हारकर भी जीतेंगे, आज से ही एक नई उड़ान की तैयारी करो।

महोदय, वैज्ञानिकों ने दिन-रात मेहनत और लगन के साथ काम किया, जिससे उन्हें सफलता प्राप्त हुई।

महोदय, मैं आपके माध्यम से बस इतना ही कहना चाहता हूँ कि ISRO के वैज्ञानिकों के साथ-साथ, हमारी बहनों के साथ-साथ मैं देश के नागरिकों को भी बधाई देना चाहता हूँ कि चन्द्रयान-3 की जो हमारी सफलता है, वह एक अद्भुत सफलता है। देश का मान-सम्मान तो बढ़ा ही है, लेकिन इससे देश का नागरिकों का, देश का नौजवानों का मनोबल भी बढ़ा है।

धन्यवाद।

SHRIMATI PRATIMA MONDAL (JAYNAGAR): Sir, I thank you for giving me the opportunity to speak on the discussion on Chandrayaan-3.

At the outset, I would like to pay my respect to Shri Vikram Sarabhai, Shri Homi Bhabha, scientist Dr. A.P.J. Abdul Kalam, Shri Satish Dhawan and Shri U.R. Rao for their contributions in the field of science. Our country is grateful to Pandit Nehru for setting up ISRO in 1962 and to Shrimati Indira Gandhi for carrying the legacy.

I am congratulating the Director, Shri Somanath and all other scientists of ISRO. Now, due to their efforts and hard work in the field of research, launching of Chandrayaan-3 became successful and thus, India has become a powerful country in the world. we have sent 150 satellites since 1975. This is the new one where the satellite had to change its course to go into the gravitational force of moon. We are successful in our soft landing. Our next programme is to go to Mangal and Shukra. We must make them successful. Space science has given us many benefits like weather prediction, communication, navigation, etc. We must multiply these benefits.

Sir, my request to the Government is to increase the salaries of all the scientists of ISRO and the budget of the Ministry concerned also should be increased. Today, we started this discussion around 11.15 a.m. Now, it is 10.25 p.m. and we are still discussing this subject. But it is unfortunate that despite our repeated requests to the Government to at least give one hour for discussion on Manipur, but the Government denied it. It is good and we are proud that India has launched Chandrayaan-3.

HON. CHAIRPERSON: Speak on Chandrayaan.

SHRIMATI PRATIMA MONDAL: Yes, Sir. I am speaking on Chandrayaan. My request to the Government is that scientists should be given all the scope so that they can research more effectively for the betterment of our country.

I would like to conclude by saying two lines from Kabiguru Rabindranath Tagore:

“Manush churnilo aaj,

Nijo matribhumi”.

Thank you, Sir.

श्री संतोष पान्डेय (राजनंदगाँव): सम्माननीय सभापति महोदय, मेरा सौभाग्य है कि आज मुझे इस नए भवन में बोलने का अवसर मिला है। मैं आपका आभारी हूँ। मैं एक पंक्ति के साथ अपनी बात रखूँगा।

क्या कभी किसी ने सुना है सूर्य छिपता तिमिर भय से,
 क्या कभी सरिता रुकी है बांध से वन पर्वतों से,
 जो न रुकते मार्ग चलते चीरकर सब संकटों को,
 वर्ण करती कीर्ति उनको तोड़ कर सब असुर दल को,
 राष्ट्र मंदिर के पथिक को, कंटकों का ही सहारा,
 संकटों पर मात कर यह राष्ट्र विजयी हो हमारा।

आज हमारे राष्ट्र भारत का पूरी दुनिया में जो डंका बज रहा है, उसे पूरी दुनिया देख रही है, सुन रही है, अहसास कर रही है।

महोदय, हँसी-मजाक में पहले कहा करते थे, उस समय स्थिति ऐसी थी, सरकारें ऐसी थी, यदि इस देश की चले तो ये कटोरा लेकर चन्द्रमा पर भी पहुँच जाए, ऐसा मजाक करते थे और गिरवी भी रखे गए थे। कई प्रकार की बातें हैं, आज मैं उन्हें नहीं कहना चाहूँगा। किन्तु वे स्थितियाँ थीं, हम सब उस स्थिति से अवगत हैं। इस देश को और भी क्या-क्या नहीं कहा गया, सपेरो का देश कहा गया, लकड़हारों का देश कहा गया और उसके बाद आज इस देश ने अपनी उच्च स्थिति प्राप्त की है, यह हम सबके लिए गौरव की बात है। आज हमने पूरी दुनिया को दिखा दिया कि उसे क्यों भविष्य की महाशक्ति कहा जा रहा है और महाशक्ति की तरफ भारत जा रहा है। दुनिया में चन्द्रमा पर फतह कर जिस सबसे कम लागत वाले चन्द्रयान-3 मिशन को भारत ने जिस अंदाज से पूरा किया, उसने दुनिया के विकसित राष्ट्रों की आँखें खोलकर रख दी हैं।

महोदय, विपक्ष लाख सर पीटे, चन्द्रयान मिशन की अवधारणा के समानान्तर जिस प्रकार से नारी शक्ति वंदन विधेयक यहाँ लाया गया और हम सबने मिलकर उसे पास किया। वास्तव में यह कहें कि यह निःसंदेह है, ऐसे दृढ़ निश्चयी संकल्पवान व्यक्ति जब होते हैं तो यह श्रेय भी, जिस प्रकार से मेरे

एक सांसद मित्र ने कहा कि गोल करने वालों को उसका श्रेय जाता है, राष्ट्र नायक को उसका श्रेय जाता है, इसको कोई रोक नहीं सकता ।

महोदय, मैं केवल एक पंक्ति कहकर अपनी बात समेट रहा हूँ ।

विद्या, कला-कौशल में सबका अटल अनुराग हो,

उद्योग का उन्माद हो, आलस्य-अघ का त्याग हो ।

सुख और दुख में एक-सा सब भाइयों का भाग हो,

अंतःकरण में गूंजता राष्ट्रीयता का राग हो ।

मानस भवन में आर्यजन जिसकी उतारें आरती,

भगवान भारतवर्ष में गूँजें हमारी भारती ।

पूरे भारत में, पूरे विश्व में यह गूँजें । धन्यवाद ।

श्री विजय कुमार दुबे (कुशीनगर): महोदय, चन्द्रयान-3 की चर्चा में और वह भी इस ऐतिहासिक नए भवन में हमें बोलने का अवसर प्रदान किया, इसके लिए आपका धन्यवाद ।

महोदय, किसी की भी सफलता पर हम अगर विशेष सम्मान देते हैं तो अक्सर कह देते हैं कि आपकी सफलता ने चार चाँद लगा दिए हैं । आज कोई दो राय नहीं है कि हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय मोदी जी के प्रयासों से और इस देश के वैज्ञानिकों ने अपने अथक प्रयासों से चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर चन्द्रयान-3 उतारकर इस देश के गौरवशाली सम्मान को चार चाँद लगाने का कार्य किया है । अगर बीते समय को याद करें, बहुत दिन नहीं हुए, वर्ष 2014 तक आते-आते इस देश में पूर्ववर्ती सरकारों की व्यवस्थाओं ने इस देश के हर विभाग को खोखला करके, छिन्न-भिन्न करके रख दिया था ।

माननीय मोदी जी ने जब इस देश की कमान हाथ में ली, तब हर विभाग को हर दिशा में उन्नति की तरफ ले जाते हुए बीमार पड़े देश को दुनिया में केवल सम्मान ही नहीं दिलाया, बल्कि इस देश में पूर्ववर्ती सरकारों की उदासीनता के चलते जो हमारे देश के वैज्ञानिक हाशिये पर थे, उनको भी सुविधा तथा मनोबल बढ़ाकर पूरी दुनिया में आगे बढ़ाने का सामर्थ्य हमारे वैज्ञानिकों को प्रदान करने का काम किया । जब कोविड ने पूरी दुनिया के साथ इस देश को घेर लिया था, तब हमारे इन विपक्षी सरकारों के विद्वानों ने कल्पना की थी कि दुनिया के विकासशील देशों के रहमोकरम पर यह देश वैक्सीन की सुविधा लेगा, लेकिन मोदी जी ने इस देश के वैज्ञानिकों का मनोबल तथा उत्साह बढ़ाते हुए जब वैक्सीन का निर्माण किया गया तो पूर्ववर्ती सरकार के नेताओं ने कहा कि यह वैक्सीन भाजपा का है, यह वैक्सीन मोदी जी का है । अपनी जान बचाने के लिए भले ही बाद में इन्होंने तीनों डोज ले लिए हों । आज मैं कह सकता हूँ कि माननीय मोदी जी के अथक प्रयासों से इस देश के वैज्ञानिकों ने चन्द्रयान-3 उतार कर इस देश के गौरवशाली सम्मान को बढ़ाने का काम किया है ।

श्री हेमन्त पाटिल (हिंगोली): सभापति जी, चन्द्रयान-3 की सफलता पर आपने बोलने का मौका दिया, इसके लिए आपको धन्यवाद देता हूं। कई सदस्यों ने कहा कि इस अभियान में चार वैज्ञानिक मुस्लिम थे और कई लोगों ने कहा कि हमारे राज्य से यह मिशन चला है। मुझे लगता है कि इसके लिए जो वैज्ञानिक काम कर रहे थे, वे किसी जाति या धर्म के लिए काम नहीं कर रहे थे। ये हिंदुस्तान के लिए काम कर रहे थे, देश के लिए काम कर रहे थे। मैं सर्वप्रथम सभी वैज्ञानिकों का मन से अभिनंदन देता हूं। मैं देश के पंथ प्रधान माननीय मोदी जी का भी अभिनंदन करता हूं और उनका धन्यवाद भी करता हूं। मैं जिस क्षेत्र से आता हूं, वह महाराष्ट्र का पिछड़ा क्षेत्र हिंगोली है। मेरे क्षेत्र में पिछले 13 सालों से नासा ने एक प्रोजेक्ट लिया था, वहां गुरुत्वाकर्षण की शक्ति औंधा नागनाथ ज्योतिर्लिंग क्षेत्र में सबसे ज्यादा है। नासा ने यह क्षेत्र चूज किया था लेकिन पिछले 13 सालों से वहां कोई काम नहीं हुआ है। मैं माननीय जितेन्द्र सिंह जी का और प्रधान मंत्री जी का धन्यवाद देता हूं कि इन्होंने लाइगो प्रयोगशाला के लिए 2600 करोड़ रुपये दिए हैं और इस प्रयोगशाला के माध्यम से दुनिया की सबसे नम्बर-2 की ऑब्जर्वेटरी मेरे क्षेत्र में बनने जा रही है। इससे मेरे क्षेत्र का बहुत फायदा होगा और हमारा क्षेत्र जो हल्दी के लिए जाना जाता था, वह अब इस प्रयोगशाला के लिए जाना जाएगा।

श्री संगम लाल गुप्ता (प्रतापगढ़): सभापति जी, आपने मुझे इस विषय पर बोलने का अवसर प्रदान किया, इसके लिए आपका धन्यवाद। यह बड़े संयोग का विषय है कि भारत के गौरवशाली इतिहास में परचम लहराने के लिए संसद में मौका मिला है, जो पूरे जीवन मेरे स्मृतिपटल पर स्थायी रहेगा। वर्ष 1965 में श्रद्धेय लता मंगेशकर जी ने एक गीत गाया था। ... (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: Hon. Members, the House is extended for another half-an-hour.

... (Interruptions)

कुंवर दानिश अली : सभापति जी, आप बता दीजिए कि कितना समय लगेगा?... (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: Now, four to five Members are pending. Few more Members want to speak. Chandrayaan is a very important matter. Those who wants to speak, we are allowing.

... (Interruptions)

श्री संगम लाल गुप्ता : माननीय सभापति महोदय, वर्ष 1965 में श्रद्धेय लता मंगेशकर जी ने फिल्म त गाया था मैं गी 'भौजी' -

चंदा मामा आरे आवा, पारे आवा

नदिया किनारे आवा,

सोने के कटोरिया में, दूध भात लेहले आवा,

बबुआ के मुहवा में घुट्टूँ

आवा हो उतरी आवा हमरी मुंडेर,

कब से पुकारी लें भइल बड़ी देर।

सभापति जी, मेरी दादी बचपन में लोरी सुनाया करती थी -

चंदा मामा दूर के, पूए पकाए बूर के,

आप खाए थाली में, मुन्ने को दे प्याली में,

प्याली गई टूट, मुन्ना गया रूठ,
 नई थाली लायेंगे, मुन्ने को मनाएंगे
 उड़न खटोले पर बैठ कर, मुन्ना चंदा के घर जाएगा,
 तारों के संग आंख मिचौली खेल के, दिल बहलाएगा
 मुन्ने का दिल भर जाएगा, मुन्ना वापस घर आएगा ।

माननीय सभापति जी, मेरी दादी समेत जो हमारी पुरानी पीढ़ी हैं, पीढ़ी दर पीढ़ी, उनकी लोरियों की आकांक्षा चांद पर जाने की और वहां से संदेश लाने की रही है। सिरमौर भारत को विश्व में इस दिशा में सर्वश्रेष्ठ स्थान पाने की एक लालसा, जो पीढ़ियों से चली आ रही थी, उस लालसा को हमारे चन्द्रयान-3मिशन के वैज्ञानिकों ने हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी के प्रोत्साहन स्वरूप प्राप्त कर लिया। इस बात के लिए मैं आज सदन में माननीय प्रधानमंत्री जी समेत सभी वैज्ञानिकों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

माननीय सभापति जी, 14 जुलाई, 2023 को जिस समय चन्द्रयान-3मिशन का प्रक्षेपण हो रहा था तो पूरी दुनिया हमें आशा भरी निगाह से देख रही थी। 140 करोड़ देश की जनता यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी के दृढ़ संकल्प को लेकर पूरी तरह से आश्चस्त थी कि हम होंगे 'दिन कामयाब एक, और वह समय आया जब 23 अगस्त, 2023 को, सायं 6 बजकर 8 मिनट पर, भारत का गौरवशाली चन्द्रयान-3मिशन अपनी कामयाबी के मंजिल पर पहुंचा, तो पूरी दुनिया ने नतमस्तक होकर हमारे शीर्ष नेतृत्व को स्वीकार किया और हमारा लोहा माना।

माननीय सभापति जी, आज इस मिशन के जरिए, चंद्रमा के उस दक्षिणी ध्रुव की सतह पर उतरने वाला, जहां इससे पहले दुनिया के किसी भी देश को उपग्रह उतारने में सफलता नहीं मिली थी, 40 दिनों की लंबी यात्रा करके, भारत ने यह प्रथम गौरव प्राप्त किया। इस बात के लिए मैं बारम्बार अपने शीर्ष नेतृत्व एवं देश के उन वैज्ञानिकों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ और धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

माननीय सभापति जी, हम यहीं नहीं रुके । हमने एक और गीत अपनी बाल्यावस्था में पढ़ा था –

वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो,
सामने पहाड़ हो, सिंह की दहाड़ हो,
तुम कभी रुको नहीं, तुम कभी झुको नहीं ।

हमने चन्द्रयान-3 मिशन की सफलता हासिल कर दुनिया को अपनी कामयाबी का डंका बजा कर दिखा दिया । फिर भी हम रुके नहीं । हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में हमने चरैवेति-चरैवेति की नीति अपनाकर अपनी दूसरी कामयाबी के मिशन की ओर भी कदम बढ़ा दिया । आज इस दिशा में कदम बढ़ाकर हमने चंद्रमा पर फतह हासिल करने के साथ-साथ पूरी दुनिया को ऊर्जा का संचार देने वाले ग्रह सूर्य पर भी अपना रिसर्च जारी करने के लिए की नीति पर कार्य 'वीर तुम बढ़े चलो' करते हुए, आदित्य एल-1 का भी प्रक्षेपण कर दिया, जो अभी तक अपनी कामयाबी के शिखर पर आगे बढ़ रहा है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि जिस तरह वर्ष 2014 के बाद से भारत का नेतृत्व संभालने के बाद यशस्वी प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत ने पूरी दुनिया को अपने नेतृत्व का लोहा मनवाया है, उसी भांति हम अपने चन्द्रयान-3मिशन की कामयाबी के बाद आदित्य एल-1 मिशन पर भी निश्चित रूप से कामयाबी हासिल करेंगे ।

माननीय सभापति जी, मैं आपके माध्यम से अपने संसदीय क्षेत्र प्रतापगढ़ और अपने कमिश्नरेट प्रयागराज मंडल के उन वैज्ञानिकों के प्रति भी आज आभार प्रकट करना चाहता हूँ, जिन्होंने चन्द्रयान-3मिशन में सहभागी बनकर हमारे संसदीय क्षेत्र प्रतापगढ़ और हमारे मंडल प्रयागराज का गौरव बढ़ाया है । मैं उनके यशस्वी भविष्य एवं उज्ज्वल मिशन की कामना करते हुए उनके प्रति आभार प्रकट करता हूँ ।

जय हिन्द, जय भारत ।

श्री प्रसून बनर्जी (हावड़ा): महोदय, मैं दो मिनट बोलूंगा। मैं स्पोर्ट्समैन हूँ। मैं फुटबॉल खेलता था। मुझे अर्जुन अवार्ड मिला, इंडियन कैप्टन का दायित्व मिला और फर्स्ट फुटबॉलर एम.पी. के रूप में मैं इधर आया। हमारे स्पोर्ट्स मिनिस्टर अनुराग जी बैठे हैं। मुझे यही कहना है कि आज इतनी खुशी का दिन है। हम चाहते हैं कि आज कोई लड़ाई न हो, कोई झमेला न हो, आराम से चलिए, आज कोई पॉलिटिकल बात नहीं होगी।

आज एक ही बात चलेगी कि जो साइंटिस्ट बच्चे लोग हैं, उनको बहुत अच्छे से, प्यार से हम सब लोग मिल कर रखें। पहले भारतवर्ष में ऐसा हुआ नहीं है। इस बार इतना अच्छा हुआ कि हम सब देख कर, समझ और सीख रहे हैं। पहले हम लोग सोचते थे कि इस काम को अमेरिका करेगा, रशिया करेगा, जापान करेगा, लेकिन हमारे बच्चे भी इतने सुंदर हैं। मैं सच बोल रहा हूँ, हाथ जोड़ कर बोल रहा हूँ कि उन लोगों को हम सभी मिल कर बधाई दें। किसी पार्टी की बात अभी नहीं होनी चाहिए। सब मिल कर करेंगे। जैसे हम लोगों की फुटबॉल टीम मिल कर जीतती है, वैसे ही जीतेंगे। हम लोग जीते भी हैं।

सर, मैं एक और बात कहना चाहूंगा। यहां बड़े-बड़े मिनिस्टर साहब बैठे हैं, सभी अच्छे आदमी हैं। उनसे विनती है कि यह जो टीम है, इन जितने लोगों ने जो अच्छा काम किया है, उन लोगों को आप मेहरबानी कर के पद्म श्री दीजिए, सबको पद्म श्री दीजिए। फिर देखिए कितना सुंदर चलेगा। आप सबको बधाई। नमस्कार, आप लोग अच्छे से रहिए। जय हिंद। वंदे मातरम्।

श्री सुशील कुमार सिंह (औरंगाबाद): सभापति जी, आपने मुझे लोकतंत्र के सबसे बड़े मंदिर, इस ऐतिहासिक और आधुनिक भवन में चन्द्रयान-3 पर होने वाली चर्चा में हिस्सा लेने के लिए अनुमति दी है।

महोदय, मैं काफी देर से पक्ष-विपक्ष के बहुत सारे अपने सहयोगियों और माननीय सांसदों की बातों को सुन रहा था। इसमें कोई बहस नहीं है, यह विवाद का विषय कहीं से नहीं है कि इसकी सफलता का श्रेय हमारे वैज्ञानिकों को जाता है। इसके लिए मैं इसरो की पूरी टीम को अपनी तरफ से और देशवासियों की तरफ से हृदय से आभार प्रकट करना चाहता हूँ, उनको धन्यवाद देना चाहता हूँ। मैं अपने कई साथियों को सुन रहा था। यह सही है कि वे जहां एक तरफ वैज्ञानिकों को धन्यवाद दे रहे थे, वहीं देश के शीर्ष राजनीति नेतृत्व को इस बात के लिए कटघरे में भी खड़ा कर रहे थे। पुरानी बातों को दोहरा कर कह रहे थे। हमारे एक माननीय सदस्य ने यहां तक भी कहा कि खाना बनाने वाले शेफ को क्रेडिट जाएगा या उसको परोसने वाले वेटर को क्रेडिट जाएगा। वे माननीय सदस्य अभी उपस्थित नहीं हैं, लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि कोई भी अनुसंधान, कोई रिसर्च वैज्ञानिक ही करते हैं और आगे भी वही करेंगे। लेकिन उनको अनुसंधान के लिए जो साधन-संसाधन चाहिए, उनको अनुसंधान करने के लिए जो बजट चाहिए, जो धन चाहिए, साथ-साथ उनको जो मोरल सपोर्ट चाहिए, नैतिक समर्थन चाहिए, वह कौन देगा? वह तो वही राजनीतिक नेतृत्व देगा, जो वर्तमान में देश का नेतृत्व कर रहा है।

महोदय, ज्यादा नहीं मैं दो उदाहरण दे कर अपनी बात को समाप्त करना चाहूंगा। पहला, देश के वैज्ञानिकों ने अनुसंधान कर के काफी पहले अणु बम तैयार कर लिया था, लेकिन विदेशी शक्तियों के दबाव में, दुनिया के ताकतवर देशों के भय से उसका परीक्षण करने की हिम्मत अटल जी की सरकार के पहले कोई नहीं कर रहा था। अटल जी ने यह हिम्मत दिखाई, पोखरण का सफल परीक्षण हुआ तो मैं उन सदस्यों से पूछना चाहता हूँ कि आप क्रेडिट किसको देंगे? महोदय, मैं दूसरी बात कहना चाहता हूँ कि दुनिया का इतिहास है कि हर 100 साल के अंतराल पर कोई न कोई महामारी किसी न किसी रूप में आती है और वर्ष 2020 में ठीक उसी प्रकार से कोविड की महामारी भी आई। उसके पहले का

भी इतिहास यही है कि जब-जब कोई महामारी इस देश के अंदर आई, तब उस महामारी के लगभग 20 से 25 साल के बाद उससे बचाव के लिए टीके आए।

वे टीके कहां से आए, विदेशों से आए! लेकिन, इस बार जब वर्ष 2020 में कोविड महामारी आई तो एक साल के अंदर हमारे देश के वैज्ञानिकों ने अपने अनुसंधान के ताकत पर एक नहीं, बल्कि दो-दो टीकों का निर्माण किया। मैं उन सभी सदस्यों से पूछना चाहता हूँ कि इसका क्रेडिट आप किसको देना चाहेंगे? ... (व्यवधान)

महोदय, मैं एक मिनट में अपनी बात समाप्त कर रहा हूँ। बहस का विषय यह नहीं है कि श्रेय किसको जाना चाहिए। जिसके पास नेतृत्व होगा, हमारे आदरणीय प्रधानमंत्री जी प्रयोगशालाओं में जाकर वैज्ञानिकों का मनोबल बढ़ाते हैं, सफलता पर उनसे गले मिलते हैं, तो क्यों नहीं उनका उत्साह बढ़ेगा, तो क्यों नहीं वे देश के लिए दोगुनी नहीं, बल्कि सौ गुनी उत्साह के साथ काम करेंगे। यह चर्चा राजनैतिक बहस के लिए और क्रेडिट लेने की होड़ का नहीं था। हमारे कुछ सदस्यों ने जब यह बात कह दी तो मुझे इस बात को सदन में कहना पड़ा कि इसका श्रेय वैज्ञानिकों को जाता है। आज एक तरफ जहां पूरी दुनिया हिन्दुस्तान का लोहा मान रही है और भारत का डंका पूरी दुनिया में बज रहा है, चाहे वह चन्द्रयान-3 की सफलता हो या जी-20 की सफलता हो।

दूसरी तरफ, हम अपने ही सदन में बैठ कर अपनी सरकार और नेतृत्व को सवालियों के कटघरे में खड़े कर रहे हैं। महोदय, मैं फिर से यह कहना चाहूंगा कि हमारे वैज्ञानिकों को जो मोरल सपोर्ट और नीतिगत समर्थन मिलना चाहिए, उन्हीं के आधार पर ये सफलताएं हुई हैं। सफलताएं तो बहुत हैं, लेकिन हमारे पास समय नहीं है, इसलिए मैं अपनी बात को यहीं समाप्त करता हूँ। धन्यवाद।

DR. KALANIDHI VEERASWAMY (CHENNAI NORTH): Hon. Chairperson, Sir, I thank you for giving me this opportunity to talk on the successful launch of Chandrayaan-3.

Sir, I would like to congratulate all the scientists and staff who have been instrumental in ensuring that this mission was successful. I am not talking only about the people who are there at present; I am talking about the people who were there in the past as well. So, I would like to say that this was a success not only for the people of India, but it is a success also for the people of the whole world.

If you look at the evolution of rocket science, it is something which was started during World War-II. The Germans were the ones who were able to start off this project though it was for a destructive purpose. They were initially intending to send missiles for inflicting wounds on other neighbouring countries like Britain and France. But this technology has been successfully used in the launch of missiles.

During the Cold War between the US and Russia, Russia was ahead in missile technology and in space programme, but they were not able to land a person in space. As the hon. Member who spoke earlier said, Valentina Tereshkova was the first woman who has been in space. Subsequently, there have been many missions where even Indian astronauts have been to space and Kalpana Chawla, a woman from India, has also been there.

At this kind of a juncture, while talking about the greatness of what the scientists in ISRO have achieved, I think, we cannot undermine the efforts which

have been taken. Whenever you are talking about launching a rocket or a satellite into space, and landing on the Moon and having a rover going on the Moon, is something which is unfathomable because it requires thousands and thousands of calculations which need to be done where not a single one can go wrong. In fact, for Chandrayaan-2, I do not blame anyone. It is just that whenever you are doing science, there are bound to be some mistakes which can happen and you have to learn from them and see how we can ensure that there is a successful mission again. So, I congratulate the scientists for not giving up on their mission. I also support this Government for having supported the scientists to ensure the success of Chandrayaan-3 and especially for being the first country to land on the South Pole of the Moon.

Sir, I would also like to say that the hon. Minister for Science and Technology has already expressed his views about how successful this Government has been and I congratulate him. At the same time, he should also understand that launching a satellite in the space is only one particular field.

If you are looking at development, we have to look at development holistically. You cannot look at it as a single aspect and say that we have launched a satellite, landed on the moon, that is the first for any country in this world and, so we are great. This is not how I would like to look at it. I would like to give an example of Japan. We proudly say that we were able to land when Japan's mission failed. But I would like to point out that Japan has a rail network which has one of the highest speeds. It runs at 280-320 kmph. They have not

recorded a single incident of casualty for the past several decades. So, I would like this Government to take lessons from those countries also.

When you are talking about holistic growth, we are talking about development in all kinds of aspects, development in every area. Also, when we are talking about infrastructure development, you talk about road network. The hon. Minister for road network is here. They are doing a fantastic job. We keep talking about statistics where during the Congress Government it was one kilometre per month. Then, during Vajpayee ji's Government it was one kilometre per day. Now, it is about 8-10 kilometres per day. I congratulate the Government on this. But if you look at the statistics for infrastructure development, the need of the hour is to ensure that inland waterways are developed. It is the need of the hour to ensure that the network for freight trains is developed. We are pathetically very bad in developing these networks. We have a Bharatmala programme which is involving some Rs. 6 lakh crore over several years. But we are not able to establish any of those things which will not only help in boosting the economy of this country but it will also help in achieving our hon. Prime Minister's vision of \$5 trillion economy.

Every State should be given an opportunity to perform well and especially when you look at this country, half the population are women. If you are looking at opportunities, we have to say that we have come a far, far way from the last 150 years. If you look, there was a period where sati was being practiced. Even today, there are some people who glorify this concept of sati but now, it has been abolished. It is against the law but still, oppression of women is happening, not

only women but also people from certain communities. They feel threatened in this country.

So, when you are talking about development, we have to ensure that each and every citizen of this country has an opportunity to say that I am afraid of nothing and the Government is here to support me. Also, the jobs are terribly, terribly lacking. For the last few years, post-COVID, though we say the economy has boomed, it has boomed only for a select few and not for the whole population.

Thank you very much, Sir.

श्री रमेश बिधूड़ी (दक्षिण दिल्ली): सभापति जी, आपका बहुत बहुत धन्यवाद कि आपने मुझे बहुत ही महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का अवसर दिया। इससे हमारा देश गौरवान्वित हुआ है, 140 करोड़ लोग गौरवान्वित हुए हैं। यह चंद्रयान मिशन हमारे वैज्ञानिकों के द्वारा, भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के द्वारा सम्भव हो पाया है। दुनिया का कोई व्यक्ति नहीं कह सकता कि उनके कारण सम्भव नहीं हुआ है। ...(व्यवधान) सर, मैं बताना चाहता हूँ कि क्यों सम्भव हुआ है? अगर किसी कार्य करने वाले व्यक्ति को आप प्रोत्साहित नहीं करेंगे, उसका मनोबल नहीं बढ़ायेंगे, तो वह कुछ नहीं कर पायेगा। अगर सेकेंड चंद्रयान फेल हुआ, तो देश के प्रधान मंत्री मोदी साहब ने उन साइंटिस्ट्स को गले लगाकर और जिम्मेदारी देकर कहा था कि चिंता मत करो, अगली बार आप लोग सफल होकर रहेंगे। यह जिम्मेदारी प्रधान मंत्री जी ने उनके साथ खड़े होने के बाद कंधे से कंधा मिलाकर थी। जहां इस देश के 140 करोड़ लोगों ने इसकी खुशी मनाई है, वहीं चंद लोगों को बड़ा दुख हुआ होगा, बड़ा बुरा लगा होगा। क्या जेएनयू, क्या एम्स, क्या एयरपोर्ट, क्या 660 संस्थायें, ये क्या किसी खानदान ने बनाई थीं? सब के सब नाम उस खानदान पर रख दिए गए हैं। इन्हें भी भारत के लोगों ने, मजदूरों ने बनाया था। उनका नाम भारत के अन्य लोगों के नाम पर क्यों नहीं रखा? आज चंद्रयान अगर दक्षिण पोल में पहली बार पहुंच जाता है तो दर्द हो रहा है कि गरीब का बेटा, एक चाय बेचने वाले का बेटा, ...* ये पचा नहीं पा रहे हैं। मोदी साहब श्रेय क्यों ले रहे हैं? मोदी साहब श्रेय नहीं ले रहे हैं। ...(व्यवधान) देश के वैज्ञानिक श्रेय ले रहे हैं। ...(व्यवधान)

ये ...*, ये ...*, कभी खड़ा होगा तो बोलने नहीं दूंगा। ये ...*। ...(व्यवधान) अगर इसका श्रेय किसी को जाता है तो देश के प्रधानमंत्री जी को जाता है। ...(व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: Danish Ali ji, please take your seat.

... (*Interruptions*)

श्री रमेश बिधूड़ी : ये ...* हैं, ये ...* हैं। ...(व्यवधान) ये ...* है। इसीलिए मैं यह बताना चाहता हूँ। ... (व्यवधान)

* Expunged as ordered by the Chair.

HON. CHAIRPERSON: Bidhuri ji, please address the Chair.

... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Danish Ali ji, please take your seat.

... (*Interruptions*)

श्री रमेश बिधूड़ी : अधीर रंजन जी, अभी शोर मचा रहे थे । ... (व्यवधान) अभी लिस्ट पढ़ रहे थे ।

... (व्यवधान) वर्ष 1975 से अभी तक का लिस्ट पढ़ रहे थे । ... (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: If there is anything wrong said by him, it will be expunged from the proceedings.

... (*Interruptions*)

KUNWAR DANISH ALI : How dare he say like this? ... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: If there is anything wrong said by him, it will be removed from the proceedings.

... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Danish Ali ji, please listen to the Chair. Take your seat.

... (*Interruptions*)

श्री रमेश बिधूड़ी : महोदय, इसरो ने वर्ष 1975 से अब तक 52 प्रक्षेपण किए और 126 आंतरिक यान मिशन निष्पादित किए थे । पिछले नौ वर्षों में मोदी जी के नेतृत्व में 52 प्रक्षेपण हुए हैं । ... (व्यवधान) पूरे 50 साल में 92 प्रक्षेपण हुए और पिछले नौ सालों में 52 हुए । नौ साल में 57 आंतरिक यान मिशन पूरे किए गए । ... (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: You cannot question the Chair. Please take your seat.

... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Danish Ali ji, if there is anything wrong said by him, we will expunge it.

... (*Interruptions*)

श्री रमेश बिधूड़ी : महोदय, यह प्रधानमंत्री जी का नेतृत्व है, ... (व्यवधान) मोदी साहब का नेतृत्व है, इसके अतिरिक्त, इसरो द्वारा 424 छोटे और बड़े उपग्रह का प्रक्षेपण किया गया है। जिनमें से 424 में से 389 गत नौ वर्षों के अंदर लांच किए गए हैं। ... (व्यवधान) 50 सालों में 400 में से 389 में लांच किए गए तो गत नौ वर्ष में लांच किए।

HON. CHAIRPERSON: Let him complete.

... (*Interruptions*)

KUNWAR DANISH ALI: Sir, I am on a point of order.

HON. CHAIRPERSON: What is your point of order? Under what rule you want to raise your point of order?

... (*Interruptions*)

KUNWAR DANISH ALI: Sir, the hon. Member is using the word ...^{*}. Whom is he calling as a ...^{*}? Are there ...^{*} in this House? Can ...^{*} enter in this House? ... (*Interruptions*) He must apologise.

HON. CHAIRPERSON: We will verify it from the records.

KUNWAR DANISH ALI: What is this? How can he be allowed to speak like this? ... (*Interruptions*)

श्री रमेश बिधूड़ी : सभापति महोदय, मैं दोहराना चाहता हूं, 424 छोटे-बड़े विदेशी उपग्रह का भी प्रक्षेपण किया गया।

^{*} Expunged as ordered by the Chair.

HON. CHAIRPERSON: Bidhuri ji, please continue.

... (*Interruptions*)

श्री रमेश बिधूड़ी : महोदय, इनमें 424 में 389 गत नौ वर्षों में मोदी जी के नेतृत्व में लांच किए गए।

HON. CHAIRPERSON: If he has used that word, we will remove it from the proceedings.

... (*Interruptions*)

श्री रमेश बिधूड़ी : महोदय, चन्द्रयान की सफलता भी मोदी जी के कारण हुई है। ... (व्यवधान)
वैज्ञानिकों के साथ देने के कारण हुई है। ... (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: We will verify it. If he has used that word, it will be expunged from the records.

... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Danish Ali ji, please take your seat.

श्री रमेश बिधूड़ी : महोदय, चन्द्रयान के साथ-साथ मैं पूछना चाहता हूं ... (व्यवधान) हमारे बच्चे विदेशों में पढ़ते हैं। अगर दूसरे राज्य में बच्चे पढ़ने के लिए जाएं, माँ के कलेजे से पूछ कर देखिए, यूक्रेन-रूस युद्ध में हमारे देश के 23 हजार बच्चे फंस गए थे, ... (व्यवधान) चाहे यूक्रेन के राष्ट्रपति हों चाहे रूस का राष्ट्रपति हों। ... (व्यवधान) यह प्रधानमंत्री मोदी जी की इच्छाशक्ति थी कि दोनों राष्ट्रपतियों से बात करने के बाद देश के 23 हजार बच्चों को युद्ध रुकवार कर सुरक्षित निकाल कर लाए। ... (व्यवधान) यह मोदी जी के कारण हुआ है। बांग्लादेश और पाकिस्तान के बच्चे भारत के झंडे लेकर आए। ... (व्यवधान) भारत का तिरंगा लगाकर बांग्लादेश और पाकिस्तान के बच्चों की जान बचाने का काम किया है। ... (व्यवधान)

SHRI N. K. PREMACHANDRAN: Sir, expunging it from the records is not enough. ... (*Interruptions*)

श्री रमेश बिधूड़ी : महोदय, अभी आपके सामने महिला बिल पास हुआ है। देश की महिला शक्ति के लिए आपने देखा है ...(व्यवधान) प्रधानमंत्री जी ने महिला बिल पास किया है। ...(व्यवधान) केवल राजनीतिक इच्छा के लिए नहीं किया है। ...(व्यवधान) मैं पूछना चाहता हूँ।

KUNWAR DANISH ALI: He has to apologise ... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: I have already given my ruling. Please take your seat now.

श्री रमेश बिधूड़ी : महोदय, ये लोग... * के नाम से ...(व्यवधान) इसमें दिल्ली का दुर्योधन है, ...(व्यवधान) उसको नहीं भूला जाना चाहिए। दिल्ली का मुख्यमंत्री ...(व्यवधान) मैंने बताया था, बौना दुर्योधन ...(व्यवधान) जिनकी इच्छाशक्ति लोगों की सेवा करने के अलावा देश में अव्यवस्था फैलाने की रहती है। ...(व्यवधान) अभी जी-20 सम्मेलन आपने देखा है ...(व्यवधान)।

23.00 hrs

KUNWAR DANISH ALI: He must apologize. ... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Please sit down.

... (*Interruptions*)

KUNWAR DANISH ALI: How can it be? ... (*Interruptions*) I can say ...* to him and he can say ...* to me. ... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: I have already given a Ruling. Why are you raising it again?

... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: If he has used any unparliamentary word, then it will be expunged.

... (*Interruptions*)

* Expunged as ordered by the Chair.

HON. CHAIRPERSON: I have already given a Ruling.

... (*Interruptions*)

SHRI D.M. KATHIR ANAND : Sir, he has to apologize. ...

(*Interruptions*)

कुंवर दानिश अली : यह क्या बात है? ... (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: No need. I have already given a Ruling.

... (*Interruptions*)

SHRIMATI KANIMOZHI KARUNANIDHI: Sir, can I speak for a minute? ...

(*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: I have already called another Member.

... (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Please sit down, Mr. Danish Ali. Please take your seat.

... (*Interruptions*)

SUSHRI S. JOTHIMANI : Sir, this is not done. ... (*Interruptions*)

श्री जगदम्बिका पाल (डुमरियागंज): डॉ. जितेन्द्र सिंह जी ने अपनी बात में कहा कि चन्द्रयान-3 गया है, विश्व में पहली बार दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग हुई है। ... (व्यवधान)

श्री राज नाथ सिंह: माननीय सभापति जी, जब सम्मानित सदस्य श्री रमेश बिधूड़ी जी बोल रहे थे, मैं उनकी पूरी बातें नहीं सुन पाया, लेकिन विपक्ष की बेंच पर बैठे सम्मानित सदस्यों ने कहा कि उन्होंने कुछ ऐसी बात कही है जिससे इनकी फीलिंग हर्ट हुई है। मैं आपसे विनम्र अनुरोध करूंगा कि रिकॉर्ड में दिखवा लें कि क्या उन्होंने ऐसी बात कोई कही है तो रिकॉर्ड तो उसे डिलीट कर दिया जाना चाहिए, बाहर कर दिया जाना चाहिए। ... (व्यवधान) प्लीज़. एक मिनट आप मेरी बात सुनिए। ... (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: I have already given a Ruling that the word will be deleted. It is already deleted.

... (*Interruptions*)

श्री राज नाथ सिंह: उन्होंने यदि ऐसा कुछ कहा है जिससे इनकी फीलिंग हर्ट हुई है, उसके लिए मैं खेद व्यक्त करता हूँ। ... (व्यवधान)

SHRI BENNY BEHANAN : Sir, you have shown greatness. ... (*Interruptions*)

श्री जगदम्बिका पाल : इस सदन में आज चन्द्रयान-3 की सफलता पर चर्चा जिस माहौल में शुरू हुई थी, उसी माहौल को बनाए रखते हुए मैं अपनी बात कहना चाहता हूँ।

माननीय मंत्री जी ने जो कहा, मैं सुन भी नहीं पाया, लेकिन उसके बावजूद भी खेद प्रकट करता हूँ। शायद इस सदन में इस तरह का उदाहरण पहली बार हुआ होगा कि सरकार के इतने वरिष्ठ मंत्री ने केवल फीलिंग हर्ट होने पर ऐसा कहा। यह क्या शब्द है, कार्यवाही में आप देखिए, मुझे लगता है कि इससे बड़ी गंभीरता इस सदन में नहीं हो सकती।

HON. CHAIRPERSON: Shri Pal, please come to the subject. Your time is limited.

... (*Interruptions*)

श्री जगदम्बिका पाल : डॉ. जितेन्द्र सिंह जी ने चन्द्रयान की सफलता के बाद आज कहा कि वहां की रात 14 दिन की होती है। हम इस बात की कल्पना करें कि जब सुबह होगी तो फिर से प्रज्ञान रोवर काम करना शुरू कर देगा। मुझे लगता है कि इतनी रात तक चन्द्रयान की सफलता पर चर्चा कर रहे हैं तो सदन को इस बात की शुभकामनाएं देनी चाहिए कि इसरो में बैठकर सारे साइंटिस्ट वाच कर रहे हैं कि वहां सुबह होने वाली है और सुबह होने के बाद फिर से चन्द्रयान-3 का प्रज्ञान रोवर फंक्शनल हो जाएगा। यह देश के लिए ही नहीं बल्कि दुनिया के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि होगी। इसके लिए हम सब शुभकामनाएं देते हैं। चन्द्रयान के लिए सुबह से लेकर सभी पक्ष के लोगों ने सहमति जताई है।

महोदय, चन्द्रयान की सॉफ्ट लैंडिंग हुई है। हम कम से कम हम इस बात की कल्पना करें कि न केवल सफलतापूर्वक सॉफ्ट लैंडिंग हुई है, we should also think what other discoveries

have been made by Chandrayaan-3 so far. यह हमारे लिए ही नहीं, दुनिया के लिए उपलब्धि है । Two major discoveries have been found to be made by Chandrayaan-3 so far since it has soft landed on the lunar surface. लूनर सरफेस पर दो चीजों की presence of sulphur and oxygen अभी तक संभावनाएं हैं । यह कितनी बड़ी चीज है । इससे पहले चन्द्रमा पर गए थे और इसकी चर्चा हो रही थी कि वहां पानी भी नहीं खोज पाए थे, आज वहां आइस वाटर की बात हो रही है । वहां सल्फर और ऑक्सीजन प्रेजेंट है । मुझे लगता है कि प्रज्ञान रोवर ने जिस तरह से कन्फर्म किया है, presence of sulphur in the lunar surface near the south pole, other elements like Aluminium, Calcium, Iron, Chromium, Titanium, Manganese, Silicon, and Oxygen (O) are also detected.

आप देख सकते हैं कि यह कितनी बड़ी चीज होगी और इसका महत्व भारत में क्या होगा । यदि हम देखें कि इस चन्द्रयान-3 की सफलता हो गई । हमने अपने वैज्ञानिकों को बधाई दी । हमारे प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में चंद्रयान-2 की असफलता से जिस तरह से पूरे देश के लोग इसरो के वैज्ञानिकों के साथ खड़े थे, उसी वजह से आज चन्द्रयान-3 की सफलता प्राप्त हुई है लेकिन चन्द्रयान-3 की सफलता के बाद यह देखने की बात है कि इसका भारत के लिए क्या महत्व होगा । मुझे लगता है कि इसके तीन पहलू बड़े महत्वपूर्ण हैं । पहला टेक्नोलॉजिकल एडवांसमेंट का है कि हमारे इसरो ने कितना एडवांसमेंट प्राप्त किया है । दूसरा हमारा इंटरनेशनल स्टेटस कितना बढ़ा है और तीसरा इकोनॉमिक पोटेंशियल कितना हुआ, मुझे लगता है कि ये तीन बहुत महत्वपूर्ण बिंदू हैं । मैं कहना चाहता हूं कि आज टेक्नीकल एडवांसमेंट में यह Moon mission allows these countries to demonstrate their technological capabilities and expertise in space exploration. Achieving successful lunar missions showcases their ability to compete in global space industry. जो आज पूरी दुनिया में ग्लोबल स्पेस इंडस्ट्री में यूएसए की बात होती थी, रूस की बात होती थी, चाइना की बात होती थी, आज चन्द्रयान-3 की सफलता ने पूरी दुनिया के ग्लोबल स्पेस इंडस्ट्री में भारत के उस स्पेस की सफलता के झंडे को गाड़ दिये हैं । यह पूरे भारत के लिए गौरव का

विषय है और देश के 140 करोड़ देशवासियों का विषय है। इसमें यह भी देखने की बात है कि हमारा इंटरनेशनल स्टेटस कहां तक बढ़ा है। Successful moon missions enhance a country's international prestige and reputation in the space community. It demonstrates their ability to participate in global scientific and technological collaboration hand in hand with the developed powers. आज हम कहते थे कि हम विकासशील देश हैं। हमारे साथ पाकिस्तान भी बना था। साउथ एशिया में आप देखिए। वहां की जनता कह रही है कि आज हम रोप वे नहीं बना पा रहे हैं लेकिन भारत श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में चांद के दक्षिणी ध्रुव पर अपना चंद्रयान उतार रहा है। यह तारीफ जहां भारत के लोग कर रहे हैं, वहां पाकिस्तान के टीवी पर सारी जनता कह रही है और अपनी लीडरशिप को लानत दे रही है। आज अपने यहां के सशक्त नेतृत्व की बात मैं कहना चाहता हूं। आप यह भी देखें कि इसका इकोनॉमिक पोटेंशियल क्या होगा। The moon may contain resources such as water or ice which can be used for life support and rocket fuel. चंद्रयान की सफलता का जो इकोनॉमिक पोटेंशियल है, ये मून पर जो रिसोर्सेज हैं, जो वॉटर राइज का है जो अभी तक हमें संभावना नहीं थी, which can be used for life support and rocket fuel also. Establishing a presence on moon can serve as a stepping stone.

अधिष्ठाता महोदय, इस सफलता ने पूरे विश्व में एक स्टेपिंग स्टोन कर दिया है, for missions to other planets like Mars also. जो बात आदित्य एल के बारे में डाक्टर साहब ने कही, वह इससे आगे है। मैं यह बात भी कहना चाहता हूं। इसी तरीके से मैं आपसे कहना चाहता हूं कि आज हमसे पहले the Russian Moon Mission that was unsuccessful cost Rs. 16,000 crore. यह दुर्भाग्य है, लेकिन लूना-25 अन-सक्सेसफुल हुआ। 16,000 करोड़ रुपये का जो लूना-25 जा रहा था, उसको देखने से ऐसा लगता था कि शायद हमारे चंद्रयान के तीन दिन पहले वह मून पर सॉफ्ट लैंडिंग हो जाएगी। हम उम्मीद करते थे कि हम दुनिया के सबसे पहले देश हों, जिसको दक्षिणी ध्रुव पर उतरने का सौभाग्य मिले। लेकिन, उससे पहले रशिया का जा रहा था। उसका बहुत बड़ा

एक्सपेंडिचर था। उसकी कॉस्ट 16,000 करोड़ रुपये थी, जबकि चन्द्रयान-3 मिशन की कॉस्ट केवल 600 करोड़ रुपये है।

आज हमने 600 करोड़ रुपये में चन्द्रयान-3 मिशन को सफल बनाया है। पूरी दुनिया के वैज्ञानिकों के सामने आज यह विषय है कि इतने कम पैसे में हमने कैसे कर दिया। इससे ये साबित हो गया है कि हमारे देश एवं इसरो के वैज्ञानिकों ने केवल चन्द्रयान-3 की सफलता नहीं अर्जित की है, बल्कि पूरी दुनिया में भारत के वैज्ञानिकों ने इस बात को सिद्ध कर दिया है कि जो कुशाग्रता या उनकी जो जीनियस है, यह भारत के वैज्ञानिकों के दिमाग की देन है। जिसकी कीमत 16,000 करोड़ रुपये आएगी, आज उसको 600 करोड़ रुपये में बना दिया और चन्द्रयान-3 की सॉफ्ट लैंडिंग करा दी। आज तो हॉलीवुड में मून और स्पेस मिशन पर जो पिक्चर बन रही है, उस पिक्चर की कीमत 600 करोड़ रुपये है। हमने एक पिक्चर की कीमत के बराबर इसको किया है। विश्व का यह पहला देश है, अभी तक चन्द्रमा पर जिन देशों ने यान भेजा है, उसमें अमेरिका, रूस और चाइना हैं। हमने दक्षिणी ध्रुव पर जिस तरीके से चन्द्रयान भेजा है, यह विश्व का पहला देश है। आज यहां बजट की बात हुई। हमारे विपक्ष के बहुत से साथी बोल रहे थे कि इसका बजट...(व्यवधान)

अधिष्ठाता महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि आज प्रधानमंत्री मोदी जी ने...(व्यवधान) उन्होंने इसलिए नहीं लॉन्च किया है।...(व्यवधान) आप सुनिए आपका ज्ञान बढ़ेगा।...(व्यवधान) मैं कहना चाहता हूं कि बात केवल चन्द्रयान-3 की सफलता का नहीं है, हमारे स्पेस के उस रिसर्च की यात्रा की बात हो रही है।...(व्यवधान) पूरी दुनिया में किसी राष्ट्र ने ऐसा नहीं किया है। हमने इसरो का बजट 157 प्रतिशत तक बढ़ाया है। डॉक्टर जितेन्द्र सिंह जी ने विस्तार से उसका जवाब दिया है। मैं उसका उल्लेख नहीं करना चाहता हूं। उससे बड़ा काम हुआ है। दुनिया में पहले ऐसे प्रधानमंत्री हैं। PM Modi ji made a unique provision by earmarking 10 per cent of CSR budget of companies for R&D.

अभी तक रिसर्च एंड डेवलपमेंट करने का काम केवल अमेरिका करता था, डेवलप्ड और यूरोपियन कंट्रीज़ करती थीं। जब हम पूरी दुनिया में डेवलपिंग कंट्रीज़ माने जाते थे, आज चाहे कोई भी

कंपनी हो, पीएसयूज हों या प्राइवेट कंपनीज हों, उनके कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (सीएसआर) का 10 प्रतिशत मैन्डेट हो गया है कि वे रिसर्च एंड डेवलेपमेंट पर खर्च करेंगी। आगे आने वाले दिनों में हम पूरी दुनिया में रिसर्च में सबसे आगे होंगे।

मैं आपसे एक और बात कहना चाहता हूँ। अभी अधीर रंजन चौधरी जी एक लंबी फ़ेहरिस्त पढ़ रहे थे कि कांग्रेस या यूपीए के जमाने में क्या-क्या हुआ था। मैं बहुत लंबी फ़ेहरिस्त नहीं पढ़ूंगा। मैं कुछ उल्लेख करना चाहूंगा कि हमने वर्ष 2014 से क्या-क्या किया है।

HON. CHAIRPERSON: You have no time.

SHRI JAGDAMBIKA PAL: Sir, I will take only two minutes.

Altogether 44 spacecraft missions, 42 launch vehicle missions and 5 technology demonstrators have been successfully realized since 2014 till date. In January 2014, the first successful flight with indigenous Cryogenic Upper Stage, in the GSLV-D5 launch vehicle was achieved and GSAT-14 was placed into GTO. In September 2014, India's Mars Orbiter Spacecraft successfully entered into an orbit around planet Mars, putting India into a league of select nations which had sent a spacecraft to the Red Planet. In December 2014, the country witnessed the experimental flight of the next generation launch vehicle, the GSLV MKIII. The LVM3-X/CARE Mission, the first experimental suborbital flight of the vehicle, launched the Crew Module Atmospheric Re-entry experiment (CARE).

AstroSat, which was launched by PSLV in September 2015, is the first dedicated Indian astronomy mission aimed at studying celestial sources in X-ray, optical and UV spectral bands simultaneously. AstroSat has made major breakthroughs by discovering five new galaxies. In 2017, PSLV C-37 created a world record by successfully placing 104 satellites in orbit during a single launch.

As idea mooted by the hon. Prime Minister in 18th SAARC Summit, ISRO has launched the 2.2 Ton communication satellite in 2017 to support neighbouring countries. The first development mission of GSLV-Mk III-D1 was successfully accomplished in June 2017 and boosted GSAT-19 satellite into geosynchronous transfer orbit.

In the Independence Day address of 2018 -- as has already been mentioned by Dr. Jitendra Singh -- the hon. Prime Minister announced the Gaganyaan Programme.

GSAT-29 high throughput communication satellite was successfully launched on November 14, 2018, on-board GSLV-Mk III-D2. It is providing satellite-based connectivity to Jammu and Kashmir and North Eastern regions of India. In 2018, ISRO's next generation high throughput communication satellite, GSAT-11 was successfully launched on December 5, 2018, from Kourou, French Guiana by Ariane-5 VA-246. Weighing about 5854 kilogram, GSAT-11 is the heaviest satellite built by ISRO.

The number of space startups has gone up from just four in 2014 to 150 now; out of 424 foreign satellites launched by ISRO since 1990s, more than 90 per cent launched in last nine years. I am just expressing my feelings to my friends sitting in the Opposition Benches. यह तो इतिहास गवाह है कि 90 परसेंट सेटेलाइट्स हमने नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में लॉन्च किए हैं। यह देश ही नहीं, पूरी दुनिया स्वीकार रही है तो कम से कम इसको मानना चाहिए।

Chandrayaan-3 mission is expected to send home information about moon's atmosphere, soil, minerals, etc. which may be the first of its kind for the

scientific community across the world and of far-reaching implications in the times to come. Vikram Lander started performing the mission's objectives exactly as per the schedule.

Thank you very much for giving me time to speak.

HON. CHAIRPERSON: Now, Shri Manoj Kotak ji.

... (*Interruptions*)

श्री सुदीप बन्दोपाध्याय (कोलकाता उत्तर) : राजनाथ जी, हमें कुछ बताइए कि कितनी देर बैठना पड़ेगा?

HON. CHAIRPERSON: The Chair will tell you.

... (*Interruptions*)

श्री मनोज कोटक (मुम्बई उत्तर-पूर्व) : सभापति महोदय, चन्द्रयान की सफलता हमने दक्षिणी ध्रुव के चन्द्रयान की सफल लैंडिंग करके प्राप्त की है। जब पूरे विश्व की नजर हमारे ऊपर थी तो हमारे वैज्ञानिकों ने हमारे यशस्वी प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में इस तरह का गौरव हमें दिलाया है, जिसका गौरवगान करने के लिए हम सब इस सदन में इकट्ठा हुए हैं।

सभापति महोदय, जब चन्द्रयान की सफलता का हम गौरवगान करते हैं तो वैज्ञानिकों के साथ-साथ सरकार ने जिस तरह से प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में पूरे तरीके से सभी स्पेस मिशन के ऊपर स्केल बढ़ाया, वैज्ञानिकों की स्किल को पहचाना और स्केल बढ़ाने के साथ-साथ न केवल चन्द्रयान, बल्कि इसके साथ-साथ गगनयान और आदित्ययान इन दोनों को भी गति देने का काम हुआ। पिछले कई वर्षों में यह यश गाथा रुकी हुई थी। वर्ष 2014 में माननीय मोदी जी के प्रधान मंत्री बनने के बाद इस गौरवगाथा को और अधिक बलशाली होने का भाग्य मिला।

मैं आपके माध्यम से इन वैज्ञानिकों का अभिनंदन तो करता हूँ लेकिन देश के प्रधानमंत्री जी का भी अभिनंदन करता हूँ क्योंकि सफलता मिलने के बाद जब उन्होंने अपना वक्तव्य दिया तो उन्होंने कहा कि जिस तरह से हमने चांद पर चन्द्रयान-3 उतारा है, इसका उपयोग मानवजाति के कल्याण के लिए होगा। यही हमारी संस्कृति है और यही हमारी परम्परा है। जब हम गौरवगान करते थे तो विपक्ष के साथी नेहरू जी की बात ले आए। नेहरू जी की बात लाते तो हमें समझ में आता, लेकिन आपको नेहरू जी की बात करनी ही है तो आप पांच हजार वर्षों का सनातन इतिहास भी याद कर लेते। अगर जीरो आर्यभट्ट ने दिया ही नहीं होता, दशमलव की शोध भारत ने नहीं की होती तो चांद का यह डिस्टेंस पता कैसे चलता। हमारी संस्कृति को एडमायर करने के लिए भी विपक्ष के पास शब्द नहीं थे। अगर सनातन धर्म का इतिहास वे लोग पढ़ते तो वेदों और पुराणों में सूर्य का डिस्टेंस मापने का काम हमारे उस समय के ऋषि मुनियों ने किया था, यह उन्हें पता चलता।

श्री पी. पी. चौधरी (पाली): धन्यवाद सभापति महोदय, बहुत ही महत्वपूर्ण विषय चन्द्रयान-3 पर चर्चा हो रही है। इससे केवल भारत में ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में हमारे देश का जो कीर्तिमान स्थापित हुआ है, वह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हुआ है। इससे हमारे देश को बहुत जबरदस्त कामयाबी मिली है। अभी हमने देखा कि मेरे से पूर्व वक्ताओं ने, खासकर के कांग्रेस ने यह बखान किया कि हमारे टाइम पर यह हुआ, वह हुआ और हमने यह-यह किया। मैं सिर्फ यही बात बताना चाहूंगा कि आपके टाइम में पूरे विश्व में आपने जो एग्रीमेंट किए, जिस हिसाब से देवास मल्टीमीडिया एक ऐसी फ्रॉड कम्पनी है, जिसने इसरो की एक कम्पनी अंतरिक्ष के साथ वर्ष 2005 में एक एग्रीमेंट किया। जिसमें एस बैंड स्पेक्ट्रम जो कि 80 परसेंट डिफेंस का था और बाकी 20 परसेंट रूरल के लिए काम आ रहा था। एक फ्रॉड कम्पनी ने 579 करोड़ रुपये बाहर से लेकर वापस 85 परसेंट पैसा साइफन किया। उसके बाद आपने यह रियलाइज किया कि यह एक फ्रॉड कम्पनी है तो आपने वर्ष 2011 में उस एग्रीमेंट को कैंसिल कर दिया। उसको कैंसिल करने से यह परिणाम हुआ कि उस देवास कम्पनी ने विदेश में जगह-जगह जाकर, पेरिस और इंग्लैंड में जाकर भारत के खिलाफ आर्बिट्रेशन प्रोसिडिंग्स शुरू करवायी। आर्बिट्रेशन अवार्ड इनकी गलती से देश के खिलाफ हुआ और हजारों करोड़ों का हुआ और पूरे विश्व में चाहे इंग्लैंड हो या अमेरिका हो, भारत की प्रॉपर्टी अटैच हुई। इसरो के वैज्ञानिकों को हमें जो प्रोत्साहन देना था, इस फ्रॉड कम्पनी के साथ इन्होंने डील की, वर्ष 2011 में एग्रीमेंट कैंसिल करने के बाद वर्ष 2014 तक इन्होंने कुछ नहीं किया। हजारों करोड़ों का जो आर्बिट्रेशन हुआ उसको प्रधानमंत्री मोदी जी ने अपनी सूझबूझ से, पूरे विश्व में जब हमारी प्रॉपर्टी अटैच होने लगी तो प्रॉपर्टी को जिस हिसाब से देखा और देवास मल्टीमीडिया कम्पनी एक फ्रॉड कम्पनी थी, वह लिक्विडेशन में गयी। एनसीएलटी का ऑर्डर हुआ और सुप्रीम कोर्ट से अपहोल्ड हुआ। सुप्रीम कोर्ट ने ये माना कि देवास मल्टीमीडिया कम्पनी फ्राइयूलेट इंटरेशन से इनकॉर्पोरेट हुई है। सुप्रीम कोर्ट ने माना, जिसे मैं कोट करता हूँ- "It is a case of fraud of a huge magnitude which cannot be brushed under the carpet as a private list."

इससे साफ जाहिर होता है कि यह जो फ्रॉड हुआ है, it is fraud of the Congress, fraud by the Congress and fraud for the Congress. आप एक तरफ बात करते हैं और मानते हैं कि हमें वैज्ञानिकों को बहुत श्रेय देना चाहिए, लेकिन इसके साथ-साथ आपने वैज्ञानिकों को श्रेय देने के बजाय ऐसी फ्रॉड कंपनी के साथ डील की, जिससे देश की इमेज पूरे विश्व में खराब हुई। उस इमेज को अगर वापस किसी ने संभाला, कोई कंपेनसेशन नहीं दिया और सूझबूझ से काम किया तो प्रधान मंत्री मोदी जी ने किया।

मैं यह भी बताना चाहूंगा कि वर्ष 2014 से इसरो ने करीब 3,300 करोड़ रुपये फॉरेन्स सेटेलाइट्स लॉन्च करके अर्न किए हैं। कांग्रेस के समय में वर्ष 2013-2014 तक स्पेस बजट सिर्फ 5,616 करोड़ रुपये का था। उसको बढ़ाकर मोदी जी ने वैज्ञानिकों को प्रोत्साहन देने के लिए, वैज्ञानिक अच्छे एटमॉस्फियर में काम करें, उनके पास पूरा बजट हो, उसके लिए 12,543 करोड़ रुपये का बजट किया गया।

आप देखिए, यह गवर्नेंस का फर्क है। मोदी जी का डिजीजन फास्ट है, लेकिन आपकी गवर्नेंस में इतना फर्क है कि वर्ष 2014 तक सेटेलाइट्स प्रति वर्ष 1.2 परसेंट लॉन्च हो रही थीं और अब वर्ष 2014 से वर्ष 2023 के बीच में 5.7 परसेंट, मतलब पांच गुना ज्यादा सेटेलाइट्स लॉन्च हुई हैं। अगर हम स्टूडेंट सेटेलाइट्स की बात करें तो वर्ष 2014 तक सिर्फ 4 लॉन्च हुईं और वर्ष 2014 के बाद 11 लॉन्च हुईं।

आप देखिए, भारत के सेटेलाइट्स की क्वालिटी में कोई कॉम्प्रोमाइज नहीं है। आप देखिए, भारत का चन्द्रयान 600 करोड़ रुपये का बना और रूस का 16 हजार करोड़ रुपये का बना। आप यह फर्क देखिए। हमारा चन्द्रयान 600 करोड़ रुपये का सक्सेसफुल रहा और वह ऐसी जगह पर उतरा है कि दक्षिण ध्रुव पर उतरने वाला भारत विश्व में पहला देश बन गया। पूरे विश्व में भारत ने कीर्तिमान बनाया है। अगर भारत का मान-सम्मान बढ़ा है तो प्रधान मंत्री मोदी जी के नेतृत्व में बढ़ा है। जहां तक फॉरेन सेटेलाइट्स को लॉन्च करने की बात है तो वर्ष 2014 तक सिर्फ 35 सेटेलाइट्स लॉन्च हुईं और वर्ष 2014 के बाद 389 सेटेलाइट्स, जो कि बहुत बड़ी फिगर है, लॉन्च की गईं।

आप देखिए, पूरा विश्व आश्चर्यचकित रहा। हमारे वैज्ञानिकों को भी हम धन्यवाद देते हैं। प्रधान मंत्री मोदी जी के नेतृत्व में जो काम हुआ है, उनके बारे में मैं बताऊँ तो 15 फरवरी, 2017 को 104 सेटेलाइट्स एक साथ लॉन्च हुईं, उनमें से करीब 101 सेटेलाइट्स फॉरेन सेटेलाइट्स थीं।

मैं अंत में यही कहना चाहूंगा कि इसमें हमारे देश की महिला वैज्ञानिकों का कॉन्ट्रिब्यूशन है। करीब 54 विमेन साइंटिस्ट्स और इंजीनियर्स ने इसमें काम किया। मैं उनका नाम लेकर उनको धन्यवाद देना चाहूंगा जैसे कल्पना के, डिप्टी प्रोजेक्ट डायरेक्टर, चंद्रयान-3; डॉ रितु करिधाल (रॉकेट विमेन ऑफ इंडिया), डिप्टी प्रोजेक्ट डायरेक्टर ऑफ मंगलयान; वनिता मुथय्या, नंदिनी हरिनाथ, मौमिता दत्ता, डॉ वी आर ललिताम्बिका (डायरेक्टर ऑफ गगनयान), तो हम देखते हैं कि प्रधान मंत्री मोदी जी के नेतृत्व में जिस तरह से काम हुआ है, उससे पूरे विश्व में हमारा मान-सम्मान बढ़ा है। इन्हें गुमान था कि हमारे में वह हिम्मत नहीं है।

उन्हें था गुमान हमारी उड़ान में, कहां दम है

उन्हें था गुमान हमारी उड़ान में, कहां दम है

हमें था भरोसा, आगे आसमान भी कम है

हमें था भरोसा, आगे आसमान भी कम है।

श्री बिद्युत बरन महतो (जमशेदपुर): सभापति महोदय, आपने मुझे चन्द्रयान-3 की चर्चा पर बोलने का अवसर दिया है, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। चन्द्रयान-3 की चन्द्रमा पर ऐतिहासिक सफल लैंडिंग के लिए पूरा देश भारत के वैज्ञानिकों के प्रति कृतज्ञ है। यह अनंत अन्तरिक्ष में भारत के वैज्ञानिक सामर्थ्य का शंखनाद है, जिसने विश्व पटल पर देश का मस्तक गर्व से ऊंचा कर दिया है। अन्तरिक्ष की दुनिया में 23 अगस्त, 2023 का यह ऐतिहासिक दिन है, जब भारत के चन्द्रयान-3 के मून लैण्डर ने चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर अंगद की तरह पैर जमा कर स्वर्णिम इतिहास रच दिया। प्रधान मंत्री जी ने चन्द्रयान-3 की चांद पर ऐतिहासिक सॉफ्ट लैंडिंग को सफल बनाने वाले वैज्ञानिकों से इसरो कमांड सेंटर में मुलाकात की।... (व्यवधान) देश के यशस्वी प्रधान मंत्री, भाई नरेन्द्र मोदी जी ने देश की 140 करोड़ जनता की ओर से आभार व्यक्त करने के साथ-साथ बधाई देते हुए उनकी कोशिशों और जज्बे को सलाम किया। साथ ही, इसरो प्रमुख एस. सोमनाथ को गले लगाकर पीठ थपथपायी। वैज्ञानिकों से वार्ता के दौरान प्रधान मंत्री बेहद भावुक दिखे। (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: Now, please conclude.

श्री बिद्युत बरन महतो : वैज्ञानिकों से उनका यह कहना हर भारतीय को भाव विह्वल करने वाला है कि चंद्रयान की लैंडिंग से आप देश को जिस ऊंचाई पर लेकर गये, यह कोई जिसने साधारण सफलता नहीं है। यह आज का भारत है, निर्भीक और जुझारू भारत है जिसने डार्क जोन में जाकर भी दुनिया में रोशनी को फैलाया है।

सभापति महोदय, जवाहर लाल नेहरू के समय से ही इस दिशा में प्रयास शुरू किए गए थे, लेकिन यह भी कहना होगा कि प्रधान मंत्री भाई नरेन्द्र मोदी जी ने जय विज्ञान और जय अनुसंधान का नारा लगा कर जाहिर कर दिया था कि वे विज्ञान और अनुसंधान को खासा तवज्जो देने वाले हैं। बेशक, पहले की सरकारों ने भी इस दिशा में सराहनीय कार्य किया है, लेकिन मोदी सरकार ने विज्ञान और अनुसंधान को प्राथमिकता पर रखा है, और इस दिशा में सक्रियता बढ़ाई। इस क्षेत्र में बजटीय समर्थन देने के साथ ही अच्छे परिणाम लाने की गरज से निजी क्षेत्र की भी मदद लेने में गुरेज नहीं किया और आज देश उस मुकाम पर आ खड़ा हुआ है, जब संकल्पबद्ध हुआ जा सकता है कि नई पीढ़ी

को भारत के शास्त्रों में वर्णित खगोलीय सूत्रों को वैज्ञानिक ढंग से सिद्ध करने और उनका नए सिरे से अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। इसलिए कि भारत के पास वैज्ञानिक ज्ञान का जो खजाना है, वह गुलामी के लंबे कालखंड में दब गया था। बेशक, यह वैज्ञानिकों को सैल्यूट करने का समय है। आपने मुझे बोलने का अवसर प्रदान किया है, इसके लिए मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ।

श्री सुनील कुमार सिंह (चतरा): माननीय सभापति जी, मैं आपका आभारी हूँ कि आपने मुझे चन्द्रयान-3 अभियान पर बोलने का मौका दिया है। मैं देश के वैज्ञानिकों का और हमारे देश के यशस्वी प्रधान मंत्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी का अभिनंदन करना चाहता हूँ, वंदन करना चाहता हूँ, जिन्होंने हमारे वैज्ञानिकों को यह अवसर दिया है, यह माहौल उपलब्ध करवाया, जिसके कारण देश ने गौरवमयी इतिहास में प्रवेश किया है।

23.33 hrs

(Hon. Speaker in the Chair)

माननीय अध्यक्ष जी, हमारे विपक्षी दलों में यह होड़ चल रही है कि किसे श्रेय दें और किसे न दें। संस्कारों की बात हो रही है, संस्कृति की बात भी हो रही है, लेकिन एक संस्कार यह भी होता है कि अगर अभिभावक ने अपने बच्चों पर, अपने लोगों पर ध्यान नहीं दिया तो सारी व्यवस्था होने के बावजूद भी इच्छित परिणाम प्राप्त करना होता है तो हम वह प्राप्त नहीं कर सकते। इसलिए माननीय प्रधान मंत्री जी ने वह नेतृत्व दिया, जिस नेतृत्व की तलाश लोगों को थी।

अधीर दा, आपकी अधीरता भी समझ में आती है।

आप बार-बार उठ रहे हैं, मजबूर कर रहे हैं।... (व्यवधान) आप खड़े हो गए तो मुझे भी याद आया। अगर श्रेय लेना चाहते हो तो पराजय का भी श्रेय लेना चाहिए। आप देश में इतिहास पढ़ाते हैं, आपने उठ कर याद दिला दिया। हम इतिहास पढ़ाते हैं, हम वर्ष 1948 का युद्ध जीत गए, हम वर्ष 1965 का युद्ध जीत गए, हम वर्ष 1971 का युद्ध जीत गए, बदले में क्या मिला? देश यह भी जानना चाहता है। 93 हजार सैनिकों ने आत्मसमर्पण किया और आपने पीओके समझौते के टेबल पर छोड़ दिया। वहां की जेलों में, कारावास में हमारी सेनाओं को छोड़ दिया। उसका श्रेय आप नहीं लेंगे, लेकिन जो अच्छा हो रहा है, उसका श्रेय लेना है।... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, चन्द्रयान-3 पर बोलिये।

श्री सुनील कुमार सिंह : आप उसका श्रेय नहीं लेंगे। हमारी सेनाओं ने जान दी।... (व्यवधान) इसलिए अधीर दा, आप छेड़ा नहीं करिये, बात निकलेगी तो दूर तक जाएगी।... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप प्लीज कनक्लूड कीजिए।

श्री सुनील कुमार सिंह : इसलिए मैं इस चन्द्रयान-3 के अभियान के लिए अपने आदरणीय यशस्वी प्रधान मंत्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी और सभी वैज्ञानिकों को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ, अभिनंदन करता हूँ, वंदन करता हूँ। मैं अपने लोक सभा क्षेत्र चतरा की जनता और झारखंड की जनता ओर से उनका स्वागत और वंदन करता हूँ। बहुत-बहुत धन्यवाद।

23.36 hrs

**RESOLUTION RE: SUCCESS OF CHANDRAYAN – III MISSION AND
OTHER ACHIEVEMENTS OF OUR NATION IN SPACE SECTOR**

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, चन्द्रयान-3 मिशन की सफलता और अंतरिक्ष क्षेत्र में हमारे देश की अन्य उपलब्धियों पर एक अत्यंत सार्थक, रचनात्मक चर्चा संपन्न हुई।

अब मैं निम्नलिखित संकल्प सदन के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ:

“हमारे देश का अंतरिक्ष कार्यक्रम राष्ट्र के लिए एक गौरव का स्रोत है। चन्द्रयान-3 मिशन की सफलता, अंतरिक्ष क्षेत्र में देश की अन्य उपलब्धियाँ हमारे देश में अंतर्निहित वैज्ञानिक और तकनीकी क्षमता के प्रमाण हैं। सकारात्मक वातावरण तंत्र और दूरदृष्टि नेतृत्व ने हमारे वैज्ञानिकों को इसके लिए सक्षम बनाया है कि वे पूरी तरह से अपनी क्षमता को यथार्थ रूप दे सकें। अपनी ऊर्जा का उपयोग कर इस प्रकार की ऐतिहासिक उपलब्धि को प्राप्त कर सकें। यह सदन अभी तक अजेय चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर चन्द्रयान-3 की सफल सॉफ्ट लैंडिंग के साथ इस कठिन और अविस्मरणीय उपलब्धि को हासिल करने के लिए हमारे वैज्ञानिकों विशेष रूप से महिला वैज्ञानिकों की उपलब्धि को मान्यता देता है तथा उनकी सराहना करता है। अन्य अंतरिक्ष मिशनों के साथ यह उपलब्धि निश्चित रूप से समाज में वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देगी तथा हमारे देश को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विश्व में अग्रणी स्थान पर रखेगी।”

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

माननीय अध्यक्ष : इस बारे में सकारात्मक चर्चा रही और सब ने इस संकल्प को सर्वसम्मति से पारित किया, इसके लिए सब का बहुत-बहुत धन्यवाद ।

23.39 hrs**VALEDICTORY REFERENCE**

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, अब हम 17वीं लोक सभा के ऐतिहासिक 13 वें सत्र की समाप्ति की ओर आ गए हैं। इस विशेष सत्र का आरंभ 18 सितम्बर, 2023 को प्रारंभ हुआ था। इस विशेष सत्र में हमने चार बैठकें कीं। यह सदन लगभग 31 घंटे तक चला। 18 सितंबर, 2023 को माननीय प्रधान मंत्री जी ने सदन में संविधान सभा से अब तक की 75 वर्ष की इस संसदीय यात्रा, उपलब्धियां, अनुभव, स्मृतियां और सीख विषय पर एक चर्चा आरंभ की। इस चर्चा में कुल 36 माननीय सदस्यों ने हिस्सा लिया और अपने विचार एवं अनुभव सभा के समक्ष प्रस्तुत किए।

यह चर्चा 6 घंटे 43 मिनट तक चली।

माननीय सदस्यगण, यह सत्र हमारी संसद के इतिहास में एक अत्यंत उल्लेखनीय सत्र के रूप में जाना जाएगा क्योंकि इस सत्र के दौरान हमने संसद के नये भवन में सभा की कार्यवाही आरंभ की।

सत्र के दौरान, एक सरकारी विधेयक – ‘संविधान (एक सौ अट्ठाइसवां संशोधन) विधेयक, 2023’ लोक सभा में पुरःस्थापित किया गया। तत्पश्चात सभा ने इस अत्यन्त महत्वपूर्ण विधेयक पर विचार किया।

इस विधेयक पर हुई चर्चा में कुल 60 माननीय सदस्यों ने भाग लिया। चर्चा के दौरान 32 महिला सदस्यों ने अपने विचार रखे। यह चर्चा 9 घंटे और 57 मिनट तक तक चली।

चर्चा के उपरांत, इस संविधान संशोधन विधेयक को संविधान में निर्दिष्ट प्रावधानों के अनुसार दो-तिहाई से भी अधिक बहुमत से पारित किया गया।

आज दिनांक 21 सितम्बर, 2023 को “चन्द्रयान-3 मिशन की सफलता और अंतरिक्ष क्षेत्र में हमारे देश की अन्य उपलब्धियां” विषय पर चर्चा हुई, जिसमें कुल 87 माननीय सदस्यों ने हिस्सा लिया और यह चर्चा 12 घंटे 25 मिनट तक चली।

सत्र के दौरान, लोक सभा की विभागों से सम्बद्ध स्थायी समिति का एक प्रतिवेदन सभा में प्रस्तुत किया गया।

दिनांक 20 सितम्बर, 2023 को निदेश 73 (क) के अधीन सभा में एक वक्तव्य दिया गया।

सत्र के दौरान, कुल 120 पत्रों को सभा पटल पर रखा गया।

लोक सभा के इस सत्र की कार्य उत्पादकता लगभग 160 प्रतिशत से भी ज्यादा रही।

माननीय सदस्यगण, मैं सभा की कार्यवाही को पूरा करने में सभापति तालिका में शामिल अपने माननीय साथियों का उनके योगदान के लिए आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं माननीय प्रधानमंत्री जी, संसदीय कार्य मंत्री, विभिन्न दलों के नेताओं और माननीय सदस्यों के प्रति भी उनके सहयोग के लिए अत्यधिक आभारी हूँ।

मैं आप सभी को एवं प्रेस और मीडिया के मित्रों को भी धन्यवाद देता हूँ।

इस अवसर पर मैं सभा को प्रदान की गयी समर्पित और त्वरित सेवा के लिए लोक सभा सचिवालय के महासचिव और अधिकारियों तथा कर्मचारियों की सराहना करता हूँ।

मैं सभा की कार्यवाही के संचालन में सम्बद्ध एजेंसियों को भी उनके द्वारा प्रदान की गई सहायता के लिए धन्यवाद देता हूँ।

माननीय सदस्यगण, अब हम "वन्दे मातरम्" की धुन के लिए खड़े होंगे।

23.43 hrs

NATIONAL SONG

The National Song was played.

माननीय अध्यक्ष : सभा की कार्यवाही अनिश्चित काल के लिए स्थगित की जाती है।

23.44 hrs

The Lok Sabha then adjourned sine die.

INTERNET

The Original Version of Lok Sabha proceedings is available on Parliament of India Website and Lok Sabha Website at the following address:

www.sansad.in/ls

LIVE TELECAST OF PROCEEDINGS OF LOK SABHA

Lok Sabha proceedings are being telecast live on Sansad T.V. Channel. Live telecast begins at 11 A.M. everyday the Lok Sabha sits, till the adjournment of the House.